उनके पदचिन्हों पर

भाग III - 1977 से 1980 तक

श्री पी. राजगोपालाचारी

उनके पद चिन्हों
पर
भाग- 3

पार्थसारथी राजगोपालाचारी

श्री राम चन्द्र मिशन
शाहजहाँपुर (उ.प्र.)

अंग्रेजी की पुस्तक 'इन हिज फूट स्टेप्स वाल्यूम-III ' का हिन्दी अनुवाद
'उनके पद चिन्हों पद भाग-3

प्रथम संस्करण
जुलाई 2008
7000 प्रतियाँ

First Edition
July 2008
7000 Copies

© सम्पूर्ण अधिकार सुरक्षित

आई.एस.बी.एन. 81 - 7894 - 105 - 8

© All rights reserved

ISBN 81 - 7894 - 105 - 8

मूल्य रु. 250/-

Price : 250/-

श्री राम चन्द्र मिशन
"गायत्री" 19 नार्थ स्ट्रीट, श्री रामनगर
चेन्नई - 600 018 (भारत)
http:/www.srcm.org

Sri Ram Chandra Mission
"Gayatri" 19 North Street
Sri Ramnagar, Chennai-600018
(INDIA)

प्रकाशक :
प्रकाशन समिति (हिन्दी भाषा)
श्री राम चन्द्र मिशन
"आशीर्वाद"
68/11, 'इन्द्रप्रस्थ', स्टेनली रोड
इलाहाबाद - 211 002

Publishers :
Publication Committee
(Hindi Language)
Sri Ram Chandra Mission
"Ashirwad" 68/11, 'Indraprastha'
Stanley Road, Allahabad - 211002

मुद्रक :
आस्था ऐसोसियेट्स
इलाहाबाद

Printed by :
Astha Associates
Allahabad

'श्री राम चन्द्र मिशन', 'सहज मार्ग', 'SRCM' 'सतत् स्मरण' (Constant Remembrance) और मिशन का चिन्ह (Emblem) श्री राम चन्द्र मिशन के पंजीकृत सर्विस मार्क्स और/या ट्रेडमार्क हैं।

विषय - सूची

विषय	.....	पृष्ठ
1977	.....	5
1978	.....	120
1979	.....	230
1980	.....	315

1977

1 जनवरी 1977–शनिवार

विरुदनगर, यहाँ के सेन्टर में काफी अव्यवस्था है तथा यहाँ की गतिविधियाँ काफी धीमी हैं।

18 जनवरी 1977–मंगलवार (दिल्ली)

सुबह 6.45 पर विमान (आईएसी फ्लाइट) से नागपुर के रास्ते होते हुए दिल्ली की ओर रवाना हुए एवं रात्रि 11.20 पर दिल्ली के ब्राडवे होटल पहुँचे, डॉन सेबोरियन तथा उनकी पत्नी जैकी भी रात्रि 11.30 पर कनाडा से टोक्यो होते हुए दिल्ली पहुँचे, टोक्यो में उनका प्रवास दो दिन रहा। वो मेरे लिये बहुत उपयोगी और प्यारा जैकेट तोहफे में ले कर आये हैं जिसके दो भाग हैं जिन्हें एक साथ और अलग–अलग भी आवश्यकतानुसार पहना जा सकता है। लगभग आधी रात्रि तक उनके साथ बातचीत चलती रही।

19 जनवरी 1977–बुधवार

सुबह का समय दिल्ली में व्यस्तता में गुजरा। डॉन, जैकी और मैं काशी विश्वनाथ एक्सप्रेस से दोपहर 2 बजे शाहजहाँपुर के लिये रवाना हुए तथा निर्धारित समयानुसार रात्रि 8 बजे शाहजहाँपुर पहुँचे तथा सीधे आश्रम गये जहाँ पर बसंत पंचमी के उत्सव के लिए हम सभी एकत्रित हुए हैं।

25 जनवरी 1977–मंगलवार

शाहजहाँपुर से सुबह 10 बजे कार से श्री बी.राजगोपाल और श्री पी.के.वेंकटेशन के साथ दिल्ली के लिये रवाना हुए, दोनों विरुदनगर सेन्टर के प्रशिक्षक हैं, दिल्ली शाम 6.30 पर पहुँचे।

27 जनवरी 1977 – गुरुवार

दिल्ली से शाम 6.30 की फ्लाइट से मद्रास की ओर रवाना हुए जो हैदराबाद हो कर थी। रात्रि को 10.30 पर मद्रास पहुँचे तथा रात्रि 11.15 पर घर पहुँचे।

13 फरवरी 1977 – रविवार

सुबह 11.45 पर राजापलायम से श्री पुनाई द्वारा यह दुःखद समाचार प्राप्त हुआ कि राजापलायम सेन्टर के सेन्टर इन्चार्ज एवं प्रशिक्षक श्री आर.ए.मीनाक्षीसुन्दरम् का देहावसान सुबह 11.15 पर हो गया है।

मीनाक्षीसुन्दरम् बसंत उत्सव पर शाहजहाँपुर आये थे और स्वस्थ थे किन्तु टेन्ट में कुछ अधिक सर्दी थी जिसके कारण उनका गला और छाती चोक हो गयी थी। उसके बाद मुझे पता चला कि घर लौटने पर उनकी हालत और बिगड़ गयी थी जिसकी तरफ उन्होंने ठीक से ध्यान नहीं दिया। आखिर में स्थिति और नाजुक हो गयी तथा उन्हें मदुरई के अस्पताल में भर्ती किया गया जहाँ से उनकी जिद पर उन्हें राजापलायम ले जाया गया और वहाँ पहुँचने के कुछ समय के पश्चात् ही उनका देहावसान हो गया । वह एक अत्यंत उत्साही कार्यकर्ता थे। उनके द्वारा मदुरई, कोयम्बटूर एवं त्रिची में भी काफी अधिक कार्य किये गये। उनके निधन से मिशन को तमिलनाडु में अत्याधिक क्षति पहुँची है। मालिक से मेरी प्रार्थना है कि उनकी आत्मा को आगे की यात्रा के लिये आशीर्वाद प्रदान करें।

30 मार्च 1977 – बुधवार

मैं, सुलोचना और कृष्णा मीनाम्बक्कम हवाई अड्डे पर शाम 9.20 बजे पूज्य मालिक के स्वागत के लिये पहुँचे जहाँ पर लगभग छः, सात अभ्यासी पहले से ही मौजूद थे। कुछ तो अति उत्साह के कारण शाम 7. 30 पर हवाई अड्डे पहुँच गये थे। रात्रि 10 बजे तक लगभग 25 अभ्यासी एकत्रित हो गये थे। उनमें से अधिकतर एयरपोर्ट की खुली छत पर जो कि आगमन अहाते के ऊपर थी, में इन्तजार कर रहे थे ताकि वे विमान के उतरने का दृश्य देख सकें।

मालिक का विमान बोईंग 737 ठीक समय के अनुसार रात्रि 10. 10 पर उतरा, मालिक स्वस्थ नजर आ रहे थे। मालिक पर मेरी पहली नजर जब पड़ी तब मालिक बैगेज एरिया (सामान प्राप्त करने के स्थान) के एक कोने में अपने पैरों पर बैठ कर दवाइयों के बैग को टटोल रहे थे। यह एक पुराने किस्म का बैग है जो लगभग 30 साल पुराना है, ऐसा

महसूस हुआ कि बैग नीचे से कुछ गीला हो गया है और मालिक गलियारे में पैरों के बल बैठ कर उसका परीक्षण कर रहे थे कि बैग में रखी हुई दवाइयाँ कहीं गीली तो नहीं हुई हैं। मालिक के साथ उनके व्यक्तिगत सहायक श्री ए.एच.कृष्णा भी आये हैं। दिल्ली के एक अभ्यासी श्री सी. रामकृष्णा भी उनके साथ उसी विमान से साथ में आये हैं। जब मालिक बाहर आये, सारे अभ्यासी मालिक के कोट पर मिशन के बैज को देखकर आश्चर्यचकित रह गये। यह अभ्यासियों के लिये अनुशासन का अनूठा उदाहरण था। क्योंकि उनमें से कई अभ्यासी बिना बैज के ही उपस्थित थे। बहुत से व्यक्तियों ने अभी बैज को मान्य नहीं किया है। यहाँ तक कि कई प्रशिक्षकों का भी इसके प्रति नकारात्मक रवैया है। मालिक का इस तरह से बैज पहने दिखना आवश्यक रूप से चमत्कारिक प्रभाव दिखाएगा।

मालिक आगन्तुक कक्ष में लगभग 15 मिनट के लिये बैठे। यहाँ अभ्यासियों ने मालिक का स्वागत किया, उसके बाद मालिक के पुत्र चि. उमेश उन्हें अपने साथ बसन्त नगर अपने घर ले गये और हम वापिस अपने घर आ गये क्योंकि इतनी रात मालिक को परेशान करना उचित नहीं था ।

31 मार्च 1977 – गुरुवार

मैं, सुलोचना और कृष्णा के साथ बसन्त नगर सुबह 8 बजे पहुँचा, मालिक सामान्य कमजोरी महसूस कर रहे थे तथा उन्हें लो ब्लॅड प्रेशर की शिकायत थी। इसमें और बढ़ोत्तरी हो जाती है जब मालिक चलते हैं, बिस्तर पर बैठते हैं और घूमते फिरते हैं तो उन्हें चक्कर से आते हैं, दोपहर में मालिक का मेडिकल चैकअप कराने का निर्णय लिया गया।

दोपहर में मैं बसंत नगर पहुँचा तथा मालिक को अपने साथ गायत्री ले आया। जैसे ही हमने घर में प्रवेश किया हमारे पारिवारिक चिकित्सक डॉ.जी.एस.सुन्दरराजन भी वहाँ पहुँच गये। उनके द्वारा सबसे पहले मालिक का ब्लॅड प्रेशर चैक किया गया जो सामान्य निकला–130/84 जो मालिक के हिसाब से थोड़ा अधिक ही था। डॉ. का भी कहना था कि मालिक की पल्स एकदम ठीक है जैसे किसी ऐथीलीट की होती है। मैंने मालिक को इसकी सूचना दी, मालिक ने कहा "मैं इसको लेकर काफी

चितिंत था। मेरा ब्लॅड प्रेशर तीन चार दिन पहले काफी कम था और जैसा तुम जानते हो कि यह सामान्यतया कम ही रहता है। आज डॉक्टर कह रहा है कि यह ठीक है। यह सब लालाजी की मेहरबानी है और विशेष मदद है जो मैं इस कार्य के लिये ऊपर से प्राप्त कर रहा हूँ, वरना बिना दवाइयों और इलाज के यह कैसे सम्भव हो सकता है कि यह इतनी जल्दी सामान्य हो जाये। यह सब लालाजी की कृपा है। तुम लोगों को ऐसा गुरु कहाँ मिलेगा। खैर अब मैं निश्चित हूँ, यह दिव्य सहायता है जो मैं प्राप्त कर रहा हूँ।'' डॉक्टर ने मालिक को मलेशिया के प्रस्तावित दौरे के लिये उपयुक्त बताया।

मालिक इसके बाद निश्चिंत हो गये तथा रात्रि 8 बजे तक गहरी नींद सोये। बहुत से अभ्यासी जो मालिक के दर्शन के लिए हमारे घर एकत्रित हुए थे निरुत्साहित हो गये। मालिक ने जगने के बाद इडली, सांभर और नारियल चटनी (जो उनका पसंदीदा व्यंजन है) का हल्का आहार लिया, तत्पश्चात् हम उन्हें छोड़ने बसंत नगर गए और तुरंत वापस आ गये ताकि मालिक आराम कर सकें। लेकिन हमें संदेह था कि मालिक इतनी जल्दी सो पायेंगे, क्योंकि वहाँ लगभग बीस व्यक्ति मौजूद थे और साथ में मालिक का हुक्का भी ।

1 अप्रैल 1977 – शुक्रवार

कार्यालय जाने से पहले मैंने मालिक के साथ लगभग एक घंटा व्यतीत किया। दोपहर बाद लगभग 4 बजे चि.उमेश मालिक को हमारे घर ''गायत्री'' लेकर आये जहाँ उन्होंने थोड़ी देर विश्राम किया। शाम 5.15 बजे मैं और मेरे पिताजी, मालिक के साथ श्री सी.ई.गुप्ता के घर नुन्गाम्बक्कम पहुँचे जहाँ पर सार्वजनिक किन्तु अनौपचारिक बैठक आयोजित की गयी थी । हमारे सेन्टर इन्चार्ज श्री आर.वीरराघवन, मेरे पिताजी तथा मैंने सहज मार्ग पर अपना उद्‌बोधन दिया। बैठक लॉन में खुले में आयोजित की गयी थी। उद्‌बोधन इत्यादि समाप्त होने के उपरान्त मालिक ने 20 मिनट की एक सिटिंग दी जिसमें प्राणाहुति अत्यंत सूक्ष्म तथा विलक्षण थी एवं उसका प्रभाव बड़ा अनूठा नाड़ी के फड़कने के समान

था। एक समय मुझे महसूस हुआ कि मैं गहरी समाधि में चला गया हूँ पर मैं उसके साथ साथ अपने आस–पास क्या घट रहा है इससे अवगत भी हूँ। यह अपने आप में एक अनूठा अनुभव था। प्रसाद का वितरण हुआ और बैठक शाम 7.30 बजे समाप्त हुयी। उसके पश्चात् मालिक चि.उमेश के साथ घर चले गये जब कि मैं और पिताजी सीधे घर वापिस आ गये।

2 अप्रैल 1977– शनिवार

कार्यालय जाने से पूर्व मैंने मालिक के साथ बसन्त नगर में सुबह एक घंटे का समय व्यतीत किया। मालिक ने प्रत्येक अभ्यासी के डायरी लिखने की आवश्यकता पर जोर दिया और मुझसे पूछा "क्या तुम डायरी लिख रहे हो" जिसका मैंने ईमानदारी से उत्तर दिया कि मैं डायरी अलग प्रकार से लिख रहा हूँ जिसमें शाब्दिक लेख, वार्तालाप तथा प्रश्नोत्तर इत्यादि का समावेश है। यह बहुत अधिक आध्यात्मिक डायरी की तरह नहीं है। बाबूजी ने कहा "जो भी दिमाग में आता है लिखते रहो अपनी अवस्था का अध्ययन करो और लिखो। इसके बहुत फायदे हैं।"

उसके बाद मालिक ने मुझे बताया कि उन्होंने एक विशेष कार्य अपने हाथ में लिया है। उन्होंने कहा "देखो संसार में आत्महत्या के प्रकरण बहुत बढ़ गये हैं और यह बड़े दुःख की बात है। अब यह बीमारी हमारे देश में भी फैल रही है। मैं इस प्रवृत्ति को खत्म करना चाहता हूँ। मैंने लालाजी साहब से पूछा कि क्या यह काम किसी और को दिया जा सकता है तो उन्होंने तुम्हारी ओर इशारा करते हुए कहा कि तुम इस काम को कर सकते हो, तुम्हें समझ में आया ? लालाजी साहब ने कहा कि तुम (मेरी ओर इशारा करते हुए) इस काम को कर सकते हो। फिर मैंने लालाजी से सरनाड के बारे में पूछा, वे बहुत अच्छे व्यक्ति हैं तथा समर्थ भी हैं किन्तु इस प्रश्न का कोई उत्तर नहीं मिला। वैसे तो राघवेन्द्र राव भी हैं पर उनका काम बड़ा अस्त–व्यस्त होता है।"

फिर उनके द्वारा आंध्रप्रदेश में मंदिर पूजा के सम्बन्ध में ध्यान आकर्षित किया गया। मालिक ने कहा "दक्षिण में यह बीमारी अधिक फैली हुयी है। इधर तमिलनाडु में भी बहुत थी पर अब शायद इसमें थोड़ी कमी

आयी है। मैंने यह काम राघवेन्द्रराव को दिया था और उसके कुछ परिणाम भी आ रहे हैं। वह सक्षम तो है पर गल्तियाँ बहुत करता है। वह समर्पित भी है। मैं चाहता हूँ कि मंदिर पूजा की प्रथा पूरी तरह से समाप्त हो जाये और इसमें समय लगेगा। यह प्रवृत्ति बहुत गहरायी तक है।''

तत्पश्चात् मालिक चि.उमेश के फ्लैट के छोटे हॉल में बैठे और लगभग 35 अभ्यासी उन्हें घेरकर बैठ गये जिनमें से अधिकतर आंध्रप्रदेश के थे। वह लगभग 10 मिनट शान्त बैठे रहे तथा मैं जब कार्यालय जाने के लिये निकलने की तैयारी में था इसी समय उन्होंने मुझे, हिन्दी में उनके द्वारा कहे जाने वाले वाक्यों को अंग्रेजी में अनुवाद करने के लिये कहा ताकि उपस्थित अभ्यासी इसे समझ सकें। उन्होंने कहा, ''यदि कोई चाहता है कि उसकी साधना फलदायी हो तो यह आवश्यक है कि उसे ठीक वैसे ही साधना करना चाहिए जैसे मालिक द्वारा करने के लिये बताया गया है, उसे ठीक उसी प्रकार से करें। मैंने ऐसा पाया है कि आप सबने या आप में से अधिकतर ने बहुत से अपने स्वयं के तरीके खोज लिये हैं जो आपके दिमाग की उपज हैं। यदि आप अपने स्वयं द्वारा निर्मित की गयी सृष्टि समाप्त करते हैं तो उसकी सृष्टि परिलक्षित हो जाती है। आप सभी अब ध्यान में बैठ सकते हैं।''

मालिक ने उसके बाद एक छोटी सिटिंग दी जो लगभग 15 मिनट की अवधि की रही। अभ्यासियों के चेहरे पर खुशी छलक रही थी जिन्होंने कभी भी यह उम्मीद नहीं की थी कि ऐसे मौके पर मालिक की कृपा उन पर बरसेगी। मैंने महसूस किया कि मेरी आँखों में आँसू आ रहे हैं जबकि इसके लिये न तो इच्छा शक्ति का प्रयोग करना पड़ रहा था और न ही मैं ऐसा चाह रहा था। यही मेरे मालिक की विलक्षण प्रतिभा है। अचानक ही मेरे मन में स्वतः ही एक विचार आया और मैंने सोचा कि मालिक का अभ्यासियों से दिव्य प्रेम, उनका अनवरत नम्र व्यवहार, उनका हम छोटे से छोटे से भी भद्र व्यवहार, उनका हमेशा खुश मिजाज रहना, उनका मजाक इत्यादि, अचानक मन में विचार आया कि यह भी शायद हमारी सफाई का ही एक हिस्सा है। शायद मेरे मन पर मालिक के गुणों की छापें चाहे वे

अच्छी ही क्यों न हों, सफाई के माध्यम से निकाली जानी जरूरी हैं। यह मेरे मन में दूसरा विचार आया, जिसका कारण यह है कि यदि यह छाप मन में है तो मालिक के प्रति प्रेम उनके प्रति न होकर उनके गुणों के प्रति होगा तथा यह पंचगुण जनित प्रेम मालिक के प्रति सच्चा प्रेम न होकर सशर्त प्रेम होगा। एक और विचार मन में आया कि हम मनुष्यों में जिससे भी प्रेम करते हैं वह एक दूसरे में इन्हीं गुणों को ध्यान में रखते हुए करते हैं। इन गुणों को यदि निकाल दें तो प्रेम भी समाप्त हो जाता है, पर सच्चे प्रेम में इन गुणों के होने न होने से कोई फर्क नहीं पड़ता, वह इसके बिना भी जीवित रहता है। इसके साथ ही यह विचार भी आया कि हमारे मालिक हमें इसी तरह प्रेम करते हैं, बल्कि उनका प्रेम तो इससे भी बढ़कर है क्योंकि जो अभ्यासी अप्रिय और घृणात्मक प्रवृत्ति के होते हैं उनसे भी वह प्रेम करते हैं। उसके बाद मेरे अंदर दिव्य और शाश्वत प्रेम क्या है के बारे में आभास सा हुआ। यह प्रेम सर्वव्यापी होता है और इसके लिये गुणों और क्षमताओं का कोई मापदण्ड नहीं होता। इस तरह के प्रेम की अपनी अलग पहचान होती है जो अपने प्रियतम में गुणों अवगुणों को नहीं देखता। यह सब विचार मेरे मन में उस छोटी सी सिटिंग के दौरान आये और मुझे सफाई प्रक्रिया की गहराई और उसकी ठोसता के सम्बन्ध में आभास हुआ कि यह कितनी प्रभावशाली और विस्तृत है।

शाम 5 बजे चि.उमेश मालिक को गायत्री लेकर आये। मालिक के स्वागत और दर्शन के लिये बहुत बड़ी संख्या में अभ्यासी उपस्थित थे। आंध्रप्रदेश के कुडप्पा, येरागुन्टला और प्रोदातुर सेन्टर से लगभग 2 बसें भरकर अभ्यासी आये थे। मालिक अभ्यासियों के साथ आराम करने के लिए जाने से पहले लगभग आधा घंटे तक रहे। हमने पहले मंजिल की खुली छत पर एक शामियाना लगा रखा था। शामियाना तथा पूरा घर अभ्यासियों से भरा हुआ था (लगभग 200 अभ्यासी रहे होंगे)। देर शाम रात्रि 8 बजे तक मालिक गहरी नींद सोते रहे। उठने के बाद मालिक ने रात्रि भोजन के लिये मना कर दिया और बसंत नगर रवाना हो गये। उन्होंने भोजन अवश्य लिया होता किन्तु मालिक उमेश और उसके परिवार

को निराश नहीं करना चाहते थे और उनका हुक्का भी बसंत नगर में ही रह गया था इस कारण से वह वापसी के लिये उत्साहित थे।

3 अप्रैल 1977–रविवार

पूज्य मालिक व्यक्तिगत तौर से रविवारीय सत्संग कराने के लिये सुबह 8 बजे हमारे घर गायत्री आये। सामान्यतः यह 7.30 बजे होता था किन्तु बाहर से आने वाले अभ्यासियों की सुविधा को ध्यान में रखते हुए इसे 9 बजे कर दिया था। पूरा घर अभ्यासियों से भरा हुआ था, लगभग 500 की संख्या में अभ्यासी रहे होंगे। सुबह एक बस नैल्लोर से आयी थी। गायत्री के पश्चिम में खाली प्लाट पर 5 बसें और 6 कारें खड़ी थीं बसन्त पंचमी जैसा माहौल था, माहौल में खुशी, भाई–चारा और आध्यात्मिकता का आभास हो रहा था। पूरा वातावरण मालिक के प्रेम से प्रत्यक्ष रूप से चार्ज किया जा चुका था। हमारे घर के नीचे का बैठक कक्ष 140 अभ्यासियों से खचाखच भरा हुआ था, 30 लाइब्रेरी में, 250 ऊपर की छत पर शामियाने के नीचे, जो हमने कल दोपहर को लगाया था, और बाकी सभी बाहर के पोर्च के नीचे बरामदे और गेट तक फर्श पर थे।

पूज्य मालिक अपने कमरे में थे और उनके द्वारा लगभग 40 मिनट की सिटिंग दी गयी जो बहुत अच्छी थी। सिटिंग के बाद नाश्ते में इडली, बडाई, केले और चाय दी गयी। सारा कार्यक्रम पोर्च में हुआ। नाश्ते का कार्यक्रम लगभग डेढ़ घंटे तक चला, मालिक ने यह नजारा अपने कमरे की खिड़की से देखा जो पोर्च के ऊपरी भाग में थी, मालिक का चेहरा खुशी से चमक रहा था। उन्हें अभ्यासियों का ध्यान रखना अच्छा लगता था, जहाँ भी वे जाते थे । सुबह 11.30 बजे अभ्यासी इधर–उधर हो गये । मालिक ने दोपहर के भोजन में घर की बनी हुयी इडली, चटनी और सांभर लिया, उसके बाद सारी दोपहर मालिक सोते रहे। अभ्यासी पुनः शाम 4 बजे एकत्रित हुए, घर पुनः भर गया, बहुत सारे वक्ताओं ने क्रमवार ऊपर और नीचे बैठे अभ्यासियों से बातचीत की। वक्ताओं में श्री एस. के. राजगोपालन, मेरे पिताजी डॉ. सी. ए. राजगोपालाचारी और श्री पी. वेंकटपति थे, जिन्होंने अंग्रेजी, तमिल और तेलगू में अपने विचार दिये।

प्रश्नोत्तरी सत्र भी रखा गया।

दिन में दोपहर 2.30 बजे मालिक ने मुझे और सुलोचना को एक सिटिंग दी, जो 25 मिनट तक चली। सिटिंग के दौरान मैं पूरे समय समाधि में डूबा रहा। मैंने महसूस किया कि मैं गहराई में और गहराई में डूब रहा हूँ और इसका कोई अन्त नहीं है और मुझे किसी चीज का अहसास भी नहीं है, मालिक ने मुझे बाद में बताया, कि "मैंने कुछ भारीपन हटाया है, क्या तुम्हें अच्छा लग रहा है ?"

शाम 6.30 बजे मालिक ने पुनः एक सत्संग कराया। इस समय सिटिंग कम समय लगभग 20 मिनट की रही किन्तु सिटिंग में आश्चर्यजनक गहराई का अनुभव हुआ जिससे आँखो में आँसू आ गये।

मालिक ने हमारे साथ रात्रि भोजन लिया और रात्रि 9 बजे बसंत नगर के लिये रवाना हो गये। नैल्लोर, कडप्पा इत्यादि की सारी बसें अभ्यासियों को लेकर रवाना हो चुकी थीं। रायचूर के भाई श्री राघवेन्द्र राव अभी–अभी एक दिन के लिये आये थे और बैंगलोर के लिये रात्रि मेल ट्रेन से रवाना हो गये। यह बहुत महत्वपूर्ण दिन था, पूर्णतया खुशी और आनन्द से भरा हुआ जिस के दौरान मालिक की आध्यात्मिक कृपा सभी पर बरसती रही। जाने से पहले मालिक ने विभिन्न शहरों से उनके साथ रहने आये अभ्यासियों के लिये अपनी खुशी जाहिर की।

4 अप्रैल 1977– सोमवार

मैं बसंत नगर गया और मालिक के साथ सुबह 8.30 से 9.30 बजे तक 1 घंटे के लिये रहा। कार्यालय बन्द होने के बाद मैं पुनः बसंत नगर गया और 2 घंटे मालिक के साथ रहा। मालिक शाम को गायत्री आने के लिये राजी हो गये और मैं उन्हें घर ले आने के लिये बसंत नगर पहुँचा, किन्तु मालिक की इच्छा बसंत नगर में ही रहने की थी। बहुत से अभ्यासी जो गायत्री में एकत्र हो गये थे, इस परिवर्तन से दुखित थे। उनमें से अधिकतर के लिये बसंत नगर जाने के लिये बहुत देर हो चुकी थी।

शाम को 6.30 बजे मालिक ने लगभग चालिस अभ्यासियों को उमेश के घर की छत पर खुले में एक सिटिंग दी जो लगभग 20 मिनट

तक चली लेकिन पूरी सिटिंग के दौरान मैंने अपने आपको व्याकुल और अशान्त महसूस किया।

जब हम वापिस उनके कमरे में आये, मालिक ने अभ्यासियों मे संवेदनशीलता की कमी पर अपने विचार दिये। मालिक ने कहा, "मैं इन लोगों पर कई सालों से कार्य कर रहा हूँ, फिर भी उनमे संवेदनशीलता विकसित नहीं हुयी है, मुझे समझ में नहीं आता इसके क्या कारण हैं। यदि मैं कहूँ कि अभ्यासी इसके लिये प्रयास नहीं करते तो गलत नहीं होगा। प्रत्येक व्यक्ति यह चाहता है कि मैं ही उनके लिये सब कुछ करूँ। जो कुछ हो सकता था मैंने अभी तक किया और भविष्य में भी करता रहूँगा। किन्तु प्रत्येक व्यक्ति को अपनी भूमिका भी निभानी चाहिए और फिर उसे देखना चाहिए कि क्या प्राप्त किया जा सकता है। मैं तुम्हें एक छोटा सा वाक्य सुनाता हूँ कि लोग कितने गैरसंवेदनशील हैं। आज सुबह एक व्यक्ति मुझसे मिलने आया और मेरे साथ देर तक बैठा रहा और जाते समय वह मेरी सैंडल पहन कर जाने लगा। मैं देखता रहा कि यह क्या हो रहा है, वह मेरी सैंडल पहन कर जा रहा है। मैंने उसे टोका कि सैंडल तुम्हारे हैं या मेरे और साहब जब उसने देखा कि वह मेरे सैंडल पहने हुये है तो उसे ध्यान आया कि अपने सैंडल तो वह नीचे छोड़ कर आया था। अब ऐसे व्यक्ति कैसे संवेदनशील बन सकते हैं, वह अपने सैंडल कहीं और छोड़ कर आया था और यह जानने के बाद भी कि उसके सैंडल नीचे पड़े हुये हैं वह मेरे सैंडल पहन कर जा रहा था। उसे पता ही नहीं था कि वह क्या कर रहा है। भाई उसे कम से कम मेरी सैंडल पहनने के बाद तो पता चल जाना चाहिए था कि यह उसके नहीं हैं पर साहब उसमें इतनी भी संवेदनशीलता नहीं है। ऐसे व्यक्तियों के साथ मैं क्या कर सकता हूँ।"

उसके बाद मालिक ने श्री आर. वीर राघवन और श्री डी. एस. के. सुब्रामन्याशास्त्री (कावली के) से प्रशिक्षकों के काम के बारे में बात की। उन्होंने प्रशिक्षकों के अभ्यासियों की अवस्था न पढ़ पाने की क्षमता के लिये अपनी अप्रसन्नता व्यक्त की। उन्होंने कहा, "जो कुछ मैं कर सकता हूँ वह प्रत्येक प्रशिक्षक भी कर सकता है, ऐसा क्या है इस काम में? केवल अपनी

इच्छा शक्ति लगाने की आवश्यकता है, किन्तु जब प्रशिक्षक शुरूआत से ही यह सोच लेता है कि वह अवस्था नहीं पढ़ पायेगा तो वह कभी सफल नहीं होगा। यह गलत है। मालिक की शक्ति प्रत्येक प्रशिक्षक में है और जब वह गलत विचार बना लेता है तो भाई मैं तो इतना ही कह सकता हूँ कि यह मालिक की क्षमता में अविश्वास और उनका अनादर करना है। उसे काम करने की कोशिश करने दो और देखो।''

उन्होंने आध्यात्मिक कार्य में शक्ति के सही उपयोग के सम्बन्ध में बोलना जारी रखा। उन्होंने कहा, ''यह सही है कि शक्ति तो है पर यह जरूरी है कि इसका उपयोग सही तरह से हो। सबकुछ सही मात्रा पर निर्भर करता है, एकदम सही मात्रा। यह बहुत जरूरी है, केवल अनुभव ही इसे सिखा सकता है। व्यक्ति सही क्षमता का उपयोग नहीं करते हैं और यही उनकी सबसे बड़ी परेशानी है।''

उन्होंने कहा कि मुझे जानकारियाँ मिली हैं, जिसमें प्रशिक्षक का कहना है कि उन्हें मालिक ने स्वप्न में अथवा ध्यान के दौरान कुछ करने के निर्देश दिये हैं। उन्होंने यह भी कहा कि ऐसे प्रशिक्षक दावा करते हैं कि उनका मालिक से आन्तरिक सम्पर्क है। मालिक ने कहा इतने बड़े दावे करने की प्रवृत्ति भारत के प्रत्येक हिस्से में है, विशेष कर दक्षिण में। उन्होंने इसे बहुत हानिकारक बताया। उन्होंने कहा इससे मतिभ्रम पैदा हो सकता है। उन्होंने कहा ''देखो कितनी बड़ी मूर्खता है कि भाई जब मालिक भौतिक रूप से मौजूद हैं और जब व्यक्ति को इस तरह का स्वप्न आता है, तो उसे सीधे मालिक से सम्पर्क करना चाहिए और उनसे पता करना चाहिए, इससे क्या परेशानी हो सकती है और जब तक मुझे इसकी स्वीकारोक्ति नहीं मिल जाती उन्हें कार्यवाही नहीं करना चाहिए। मैं आपसे एक प्रश्न पूछना चाहता हूँ। मान लीजिए मालिक किसी व्यक्ति के स्वप्न में आते और आदेशित करते हैं कि वह अपने घर को आग लगा ले!'' (हँसते हैं) ''तो क्या वह व्यक्ति इसके लिये तैयार होगा? अतः यह सब कुछ अपनी शेखी बघारने के लिये है और यह खतरनाक भी है।''

मालिक ने कहा कि मालिक के साथ आन्तरिक सम्पर्क आध्यात्मिक

उन्नति के लिये जरूरी नहीं है। उन्होंने कहा यह क्षेत्र तो केवल उन लोगों के लिये है जिन्हें उच्च क्षमता के कार्य करने होते हैं और जब इसकी आवश्यकता होती है यह क्षेत्र स्वतः ही सीधे मालिक के माध्यम से खोल दिया जाता है।

रात्रि 10 बजे मालिक घर वापस चले गये ।

5 अप्रैल 1977–मंगलवार

मैं मालिक के साथ बसंत नगर में सुबह 8 से 9 बजे तक एक घंटे के लिये रहा और उसके बाद कार्यालय जाकर लम्बित काम निपटाये, क्योंकि कल हमें मलेशिया के लिये रवाना होना था। दोपहर में 3 बजे मैं फिर मालिक के पास गया और उनका सूटकेस तैयार किया। ज्यादा कुछ ले जाने के लिये नहीं था, क्योंकि मालिक को मलेशिया में गर्म कपड़ों की कोई आवश्यकता नहीं थी। मालिक के पुराने हुक्के को तिलांजलि दे दी गयी, क्योंकि यह कई जगहों से टूट चुका था और इसे उठा कर ले जाने वाली पट्टियाँ भी खराब हो चुकी थीं। अतः पुराना हुक्का जो मालिक की यूरोप की दो यात्राओं में साथ था, उस के स्थान पर नये हुक्के की बाल्टी रख दी गयी थी।

मालिक ने मुझे मनुष्य तंत्र के अन्दर मौजूद तीन तत्वों के बारे में बताया। इसके अनुसार मनुष्य में पहला पृथ्वी तत्व, दूसरा जल तत्व, तीसरा वायु तत्व मौजूद रहता है। उन्होंने कहा, "सामान्यतः अधिकतर व्यक्तियों में हम केवल पृथ्वी और जल तत्व पाते हैं, मैंने आज तक ऐसा एक भी प्रकरण नहीं देखा जहाँ पर वायु तत्व पहले से ही मौजूद हो। यह अद्‌भुत तथ्य मालिक के द्वारा बताया गया।" मैंने मालिक से हिन्दू शास्त्रों के अनुसार अन्य दो तत्वों आकाश तत्व और अग्नि तत्व के बारे में जानना चाहा। यह पाँचों मिलकर पंचभूत कहलाते हैं। जब मैंने यह प्रश्न किया तो मालिक जोर से हँसे। उन्होंने कहा "यह दोनों तत्व आकाश और अग्नि, मनुष्य तंत्र में मौजूद नहीं हैं, इससे मानव तंत्र नहीं बनता, तुम्हें समझना चाहिए यदि अग्नि तत्व व्यक्ति के अन्दर मौजूद होगा तो वह स्वाहा हो जायेगा।" ऐसा कहते ही मालिक जोर से हँसने लगे ।

मलेशिया यात्रा

6 अप्रैल 1977– बुधवार

मैं सुबह 5.00 बजे तैयार हो गया तथा सुलोचना और मैं 5.30 बजे उमेश के घर बसंत नगर पहुँचे। ज्ञात हुआ कि मालिक पहले से ही जग चुके थे। उसके बाद उन्होंने अपना हुक्का पिया और स्नान करने की तैयारी कर रहे थे। वास्तव में मालिक अपने शरीर की मालिश कर रहे थे। मैंने उन्हें बताया कि हमें अगले 10 मिनट में निकल जाना चाहिए। उन्होंने तेजी से अपना स्नान इत्यादि का कार्य निपटाया तथा हम सुबह 6 बजे मीनाम्बक्कम विमानतल के लिये रवाना हुये।

लगभग 30 अभ्यासी हवाई अड्डे पर पहले से ही मालिक के आत्मीय स्वागत के लिये मौजूद थे, यह मालिक की पहली पश्चिम की यात्रा थी। मालिक ने उनके साथ थोड़ा समय व्यतीत किया और मैं यात्रा सम्बन्धित औपचारिकतायें पूरी करने में लग गया। जब हमने अभ्यासियों से बिदा ली तथा रवाना होने के लिये तैयार हुये, तभी मालिक ने देखा कि मेरा बैज नहीं है, मालिक ने मुझसे पूछा "तुम्हारा बैज कहाँ है?" मैंने मालिक को बताया "मेरा बैज मेरे सूटकेस में है" जो मैंने आर. स्वामीनाथन से उधार लिया है और मैंने बैज लगा लिया। विदेश प्रवास की तथा कस्टम इत्यादि की औपचारिकतायें निपटाने के पश्चात् हम एयर इंडिया के विमान बोईंग 707 एयर क्राफ्ट "मकालू" उड़ान संख्या ए.आई. 102 पर सवार हुए जो सीधे कुआलालम्पुर के लिये थी। हमेशा की तरह इस मर्तबा भी हम टूरिस्ट क्लास में यात्रा कर रहे थे। एयर क्राफ्ट तीन चौथाई यात्रियों से भरा था, इसलिए हम आराम से बैठे थे (तीन की कतार में दो के हिसाब से) और हाथ टिकाने के लिए दो सीटों के बीच में लगे हत्थे को भी हटा दिया ताकि और आराम से बैठ सकें। मालिक ने अपने दोनों पैर सीट पर रखे हुए थे और आराम से बैठे हुए थे। एयर क्राफ्ट 7.40 बजे रवाना हुआ।

कप्तान ने जहाज मार्ग की घोषणा करते हुये बताया कि हमारा जहाज निकोबार द्वीप के दक्षिण से होता हुआ सुमात्रा और आखिरी में हमारे गंतव्य स्थान कुआलालम्पुर पहुँचेगा। मद्रास से कुआलालम्पुर की दूरी 1610 हवाई मील है, जो लगभग 3 घंटे 10 मिनट में तय होगी। कुआलालम्पुर में पहुँचने का अनुमानित समय, स्थानीय समयानुसार दोपहर 1.00 बजे बताया गया था जो कि भारतीय समय के अनुसार सुबह 11.00 बजे के बराबर था और दोनों समय में 2 घंटे का अंतर था।

हवाई यात्रा के दौरान मालिक ने तत्वों के विषय में पुनः चर्चा छेड़ी जिसके विषय में कल बसंत नगर में चर्चा चल रही थी। उन्होंने कहा, "मेरे अनुभव के अनुसार जल तत्व अधिकतर गोरी चमड़ी के व्यक्तियों में मौजूद रहता है जबकि काली चमड़ी के लोगों में यह उतना अधिक नहीं पाया जाता।" मैंने उनसे पूछा कि उनका इशारा केवल गोरी चमड़ी के भारतीयों के लिये है या यह सामान्यतः सभी गोरे लोगों के लिये है जैसे येरोपियन, अमेरिक़न, जापानी इत्यादि। मालिक ने उत्तर दिया, "व्यक्ति की जाति और राष्ट्रीयता का इससे कोई लेना देना नहीं है, जहाँ तक मैंने देखा है यह सभी गोरे लोगों पर लागू होता है। उनमें जल तत्व की अधिकता होती है।" मैंने मालिक से पूछा कि क्या इसका मतलब यह हुआ कि गोरी चमड़ी के लोगों में आध्यात्मिक उन्नति की क्षमता काली चमड़ी के भाई–बहनों की अपेक्षा अधिक होती है। मालिक शरारत भरी हँसी हँसे और कुछ नहीं बोले। मैंने पुनः अपना प्रश्न दोहराया। उन्होंने मेरी तरफ देखा और बोले, "मैं इसका कोई सटीक जबाव नहीं दे सकता लेकिन पश्चिम के लोग उतने बुरे नहीं हैं जितना उनके बारे में लोग सोचते हैं।" उनके द्वारा घुमाफिरा कर दिये गये पहेली बुझे उत्तर ने मुझे सोचने पर मजबूर कर दिया। इसके बाद मालिक शान्त हो गये।

मद्रास से रवाना होने के 2 घंटे के पश्चात् हमारी उड़ान निकोबार श्रृंखला के द्वीप के दक्षिण स्थित द्वीप के दक्षिण से गुजर रही थी जो ग्रेट निकोबार द्वीप कहलाता है। यह हमारे बाँयीं तरफ से स्पष्ट नजर आ रहा था। मालिक ने इसे पैनी निगाहों से देखा। दोपहर का भोजन परोसा गया

और मालिक ने एक प्लेट गर्म पुलाव का आनन्द उठाया जिसके साथ सब्जियाँ और पापड़ भी परोसे गये थे। मालिक ने भोजन के बाद परोसी गयी बंगाली मिठाई (रसमलाई) का भरपूर आनन्द लिया। जैसे ही हमारा भोजन समाप्त हुआ हमारे दाँयी तरफ सुमात्रा का उत्तरी छोर आ गया, हम इसके ठीक उत्तर में उड़ान भर रहे थे और यह हमारे जहाज से उस समय 30 हजार फीट की ऊँचाई पर उड़ रहा था जो साफ दिखाई दे रहा था। मालिक भूगोलीय शास्त्र में रुचि होने के कारण इसे देखना चाहते थे। हम जहाज के दाहिनी ओर खाली पड़ी सीटों पर बैठ गये ताकि मालिक इसे ठीक से देख सकें, किन्तु उन्हें ठीक से दिखाई नहीं पड़ रहा था, क्योंकि बादलों की एक परत भी द्वीप के ऊपर थी और यह दोपहर की धूप में बहुत तेज चमक रहा था और मालिक के लिए बादल और द्वीप के बीच सही अनुमान लगा पाना कठिन हो रहा था।

जल्द ही हम मलेशिया के दक्षिण तटीय क्षेत्र के ऊपर उड़ान भर रहे थे, यह भूमध्य रेखा पर बसा हुआ चमकीला हरा–भरा देश है। यहाँ हर जगह छोटी–छोटी पहाड़ियाँ थीं और हर जगह बड़ी संख्या में पाम के वृक्ष लगे हुए थे। अधिकतर घरों में बल्ली का उपयोग किया गया प्रतीत होता था, छतें अधिकतर लहरियादार टीन की चद्दर की बनी हुयी थीं। हम तेजी से हवाई पट्टी की तरफ बढ़ रहे थे जो कांक्रीट की एक लकीर की तरह नजर आ रही थी। बाकी आस–पास के क्षेत्र में खूबसूरत हरियाली दिख रही थी जैसा नजारा भारतीय वनस्पति में कभी कभार ही देखने को मिलता है। हमारा जहाज स्थानीय समयानुसार 12.42 बजे उतरा। मद्रास से यहाँ तक पहुँचने में कुल 3 घंटे 2 मिनट का समय लगा। यह समय मद्रास से दिल्ली के बीच लगने वाले समय से मात्र 20 मिनट अधिक था, इसलिए मालिक केवल चिंता और तनाव की कुछ लकीरों को छोड़कर ज्यादा परेशानी महसूस नहीं कर रहे थे, वह भी इसलिये क्योंकि पिछली कुछ रातें वे मद्रास में ठीक से सो नहीं सके थे।

विमान से उतरने वाले व्यक्तियों में से हम पहले क्रम पर थे। विमान से उतर कर हम टर्मिनल भवन की ओर रवाना हुये तथा कुछ 50

गज ही चले होगें कि मलेशिया के प्रभारी प्रशिक्षक के. वी. रेड्डी तीव्रता से मालिक के सम्मान और स्वागत के लिये आगे बढ़े तथा उन्होंने बड़ी आत्मीयता से मालिक का स्वागत किया। उन्होंने बताया कि विमान निर्धारित समय से लगभग आधा घंटे पूर्व ही आ पहुँचा है, इसलिए वह मालिक के स्वागत के लिये विमान की सीढ़ियों पर नहीं पहुँच सके ।

के. वी. रेड्डी दिल्ली के प्रशिक्षक प्रो. हरनामसिंह के मित्र हैं और ऐसा प्रतीत होता है कि पिछले लगभग 10 वर्षो से एक दूसरे को जानते हैं। के. वी. रेड्डी ने मुझे बताया कि वे पिछले कई वर्षो से अच्छे आध्यात्मिक गुरु की तलाश में थे तथा इस खोज के दौरान वह भारत के जाने माने लगभग सभी स्वामियों और गुरुओं के सम्पर्क में आये तथा उनके आश्रम भी देखे, जिसकी उन्हें तलाश थी। वह उन्हें नहीं मिला। जुलाई 1976 में वह भारत में थे, उसी दौरान हरिद्वार के समीप एक स्वामी के दर्शन के लिये गये थे और जब वापस दिल्ली की ओर जा रहे थे, तभी संयोगवश उनकी मुलाकात डॉ. हरनाम सिंह से हुई जो कि उनके सामने की ओर से आ रहे थे। दोनों ने सड़क के किनारे खड़े होकर थोड़ी देर तक बातचीत की। के. वी. रेड्डी ने उन्हें अपनी हरिद्वार यात्रा के बारे में बताया और लम्बे समय से गुरु के लिए चल रही उनकी खोज के विषय में जानकारी दी। तब प्रो. हरनाम सिंह ने उन्हें बताया कि उनके गुरु मद्रास की यात्रा से उसी शाम को दिल्ली पहुँच रहे हैं। प्रो. हरनाम सिंह ने के. वी. को मालिक से मिलवाने का निमंत्रण दिया और इस तरह भाग्य से संयोगवश के. वी. अपने प्रारब्ध के अनुसार मालिक के चरणों में पहुँचे और पहली बार मालिक से 12 जुलाई 1976 को मिले और उसी शाम को उन्होंने सहज मार्ग की साधना शुरू कर दी। उसके बाद के.वी. और उनकी आयरिश पत्नी बैइब्रे मेडेन रेड्डी, दोनों अक्टूबर 1976 में शाहजहाँपुर गये और बैइब्रे ने भी साधना शुरू कर दी और उसके कुछ दिनों के बाद दोनों पति पत्नी को प्रशिक्षक के कार्य हेतु अग्रिम अनुमति दे दी गयी। के.वी. तथा बैइब्रे के मिशन में आने की यह संक्षिप्त दास्तान है।

के. वी. ने टर्मिनल तक मालिक का मार्गदर्शन किया और उन्हें वी.

आई.पी. लाउंज ले गये ताकि सामान इत्यादि के आने तक कुछ देर के लिये मालिक ठीक तरह से विश्राम कर सकें जब तक पासपोर्ट और वीसा इत्यादि की औपचारिकतायें पूरी कर ली जायें। मैंने देखा कि लगभग एक दर्जन अभ्यासी गुलदस्ते और फूल माला इत्यादि के साथ मालिक का विशुद्ध भारतीय शैली में स्वागत करने के लिये इंतजार कर रहे हैं जिनमें बैइब्रे रेड्डी और उनका पुत्र कुमार भी मौजूद हैं, जो आयरलैंड से अपनी छुट्टियाँ बिताने आये हुये थे जहाँ पर माँ और पुत्र दोनों पढ़ाई कर रहे हैं।

प्रथम तल पर स्थित वी.आई.पी. बरामदे में आने के लिए तिरछे बने रैम्प के माध्यम से चढ़कर आना पड़ा था, जिसके कारण मालिक थोड़ा थक गये थे। इसलिए मालिक ने लगभग आधा घंटा बरामदे में विश्राम किया, तत्पश्चात् के.वी. हमें अपने घर पैतालिंग जाया ले गये जो कुआलालम्पुर का जुड़वाँ शहर है। यह 15 मील की (सड़क से) दूरी पर बसा हुआ एक आधुनिक आवासीय क्षेत्र है, तथा अत्यंत ही उच्च कोटि का आवासीय क्षेत्र है जैसे कि बम्बई का मालावार हिल। यहाँ काफी गर्मी और उमस थी लगभग वैसी ही जैसे कि मद्रास में रहती है। मुझे अत्यन्त आश्चर्य हुआ, शायद इसलिए क्योंकि इतना हरा–भरा और पूरी तरह से पेड़ पौधों से ढँका क्षेत्र भी इतना गर्म होगा, यह मैंने सोचा नहीं था, ऐसा प्रतीत हो रहा था जैसे हम त्रिवेन्द्रम में हैं।

घर पहुँचने पर सबसे पहली कार्यवाही हुक्के को खोलकर मालिक के लिए तैयार करने की गयी । स्थानीय अभ्यासी इसके बारे में हवाई अड्डे पर पूछ रहे थे तथा बड़ी उत्सुकता से पहली बार इसे देखने के लिये उतावले थे। मेरे विचार से मालिक का हुक्का मालिक के प्रति लोगों के प्रेम के बीच की एक कड़ी की तरह है जो दूसरी अन्य चीजों की अपेक्षा ज्यादा रुचिकर है, उनका एकदम सीधा सादा व्यक्तित्व, उनकी पारदर्शित ईमानदारी, उनकी व्यवहार कुशलता, उनका प्रेम यह सब तो उनमें है ही; किन्तु उनका हुक्का पीना लोगों के बीच उनको अतिमानवीय दर्शाने में उनकी मदद करता है। और कुछ नहीं तो उन्हें मानवीय दर्शाने में एक छोटा सा दोष ही सही। मालिक ने एक गिलास दूध पिया और हॉल में

आराम से हुक्का पीने बैठ गये। शाम 5.30 बजे मालिक ने इस दौरे की पहली सिटिंग दी, सिटिंग लगभग 20 मिनट तक चली और काफी गहरायी भरी थी। मैंने महसूस किया कि मालिक द्वारा अभ्यासियों में बीजारोपण किया जा रहा था एवं तत्पश्चात् उसकी दशा का फैलाव किया जा रहा था। शाम 6.45 बजे मालिक ने पुनः अभ्यासियों के एक नये समूह को सिटिंग दी, जो अभी–अभी आये थे। यह कम समय की सिटिंग थी किन्तु इसमें गहराई पहली सिटिंग के अनुरूप ही थी ।

तुन्कु अब्दुल्ला और उनकी पत्नी श्रीमती चेस्टेरीना (पूरा नाम येंग अमत मूलिया तुन्कु अब्दुल्ला इब्ने अलमारहुन तुन्कु अब्दुल रहमान और चे उंग्कु चेस्टेरीना) को मालिक ने थोड़ी देर पश्चात् बुलाया। तुन्कु मलेशिया के राजा स्व. तुन्कु अब्दुल रहमान का बेटा है और चेस्टेरीना डच है। वे के. वी. के घर के पीछे एक बड़े बंगले में रहते हैं। दोनों ने सहज मार्ग के अन्तर्गत अभ्यास शुरू किया है ।

रात्रि के भोजन के बाद मालिक लॉन में बैठे और प्रशिक्षकों के कार्य पर विस्तार से बोले। मालिक ने कहा, "लालाजी महाराज की कृपा से शक्ति तो वहाँ है तथा जब किसी को काम करने की अनुमति दी जाती है तो आवश्यक शक्ति भी उसके साथ दी जाती है। अब यह बिल्कुल जरूरी नहीं कि व्यक्ति सिर्फ इसलिये माने कि मैं इसे कह रहा हूँ बल्कि उन्हें स्वयं ट्रांसमिट कर इसे परखने का प्रयास करना चाहिए और इसके पश्चात् उन्हें क्या परिणाम प्राप्त हुआ यह देखना चाहिए, इतना पर्याप्त है।"

उन्होंने आगे बताया, "एक बार दक्षिण भारत से एक व्यक्ति उनसे शाहजहाँपुर मिलने आया और उसने मुझे केवल एक घंटे का समय दिया तथा उतने समय में ही मैंने उसे पूर्ण स्वीकृति के लिये तैयार कर दिया, लेकिन भाई उसने मुझे बताया कि वह कुछ भी महसूस करने योग्य नहीं था। मैंने उसे बताया कि उसे उस शक्ति का उपयोग करना चाहिए जो उसे दी गयी है। यह भी बताया कि वह उसके लिये प्रयास करे और उसके पश्चात् उसके जो भी अनुभव हों, उनके बारे में मुझे लिखे। उसने तब कुछ भी नहीं कहा लेकिन मैंने देखा कि उसे मेरी बातों में जरा भी

विश्वास नहीं था। उसके बाद शायद कुछ महीनों बाद या कुछ वर्षो बाद मुझे अब ठीक से याद नहीं है मैं उसके स्थान पर गया, अब उस व्यक्ति की मूर्खता देखो उसके सेन्टर से जुड़े अभ्यासी मालिक की फोटो के सम्मुख बैठे हुये थे। उन्हें बताया गया था कि उन्हें फोटो से प्राणाहुति प्राप्त होगी। मैंने उससे पुनः आग्रह किया कि उसे स्वयं प्राणाहुति देने का प्रयास करना चाहिए, पर उसने उत्तर दिया कि उसने अपने अन्दर कभी भी शक्ति को महसूस नहीं किया है और इस कारण वह प्राणाहुति देने का कार्य नहीं कर सकता। अब ऐसे व्यक्तियों के साथ मैं क्या कर सकता हूँ। उसे इस बात का विश्वास था कि फोटो के माध्यम से प्राणाहुति प्राप्त की जा सकती है, पर वह इस बात को मानने के लिये तैयार नहीं था कि वह स्वयं शक्ति ट्रांसमिट कर सकता है। मैं केवल आवश्यक शक्ति दे सकता हूँ पर कार्य तो प्रशिक्षक को ही करना होगा। अब देखो मैंने उसे पूर्ण स्वीकृति दी थी कम से कम उसे प्रयास तो करना चाहिए था और देखना चाहिए था कि उसे कुछ परिणाम मिल रहे हैं अथवा नहीं, भले ही उसे मुझमें विश्वास था अथवा नहीं। उन दिनों मैं प्रत्येक को पूर्ण स्वीकृति दिया करता था किन्तु आंजकल मैं इस मामले में कुछ सतर्क हो गया हूँ।''

मालिक रात्रि 11.30 बजे सोने के लिये चले गये। उनकी रात व्याकुलता में बीती।

7 अप्रैल 1977– गुरुवार

नाश्ते के बाद मालिक ने पेतालिंग जया, कुआलालम्पुर और नये और पुराने आमापोंग गाँव के आसपास के क्षेत्र में भ्रमण किया। मालिक ने एक टिन की खदान को दूर से देखा, जो आमापोंग के पास थी और उसकी विस्तृत जानकारी चाही। उलूकलांग पहाड़ी पर मालिक पुआन श्री जुडे वुड के घर गये और वहाँ लगभग आधा घंटा व्यतीत किया। उसने उन्हें और हमें कुछ घर के बने हुये बिस्कुट और तरोताजा ठण्डा पिलाया। हम दोपहर के भोजन के लिये घर वापस आ गये।

दोपहर 3–4 बजे तक काफी तेज गरज के साथ मूसलाधार बारिश हुयी जिसके साथ–साथ तेज बिजली भी चमक रही थी। बारिश के

बाद असहनीय गर्मी और उमस हो गयी किन्तु शाम 7 बजे के पश्चात् वातावरण खुशनुमा हो गया और ठण्डक भी हो गयी। मालिक ने शाम 7 बजे सामूहिक सत्संग कराया जिसमें लगभग 15 अभ्यासी उपस्थित थे। केलंग के समूह जिनके आने की सम्भावना थी शायद बरसात के कारण नहीं आ सके। अभ्यासी रात्रि 8 बजे वापस चले गये । मालिक ने शानदार और स्वादिष्ट भोजन किया और रात्रि 10 बजे तक हुक्के का आनन्द लिया।

मालिक ने कहा, "मैं माफी चाहता हूँ कि हमारे देश में बहुत पुराने समय से सारी चीजें बहुत गोपनीय रखी गयी हैं। इस मानसिकता के कारण हमारे देश का और हमारे लोगों का बहुत नुकसान हुआ है, यह मैंने हर क्षेत्र में पाया है। एक समय था जब प्रत्येक घर में देशी दवाइयों का उपयोग किया जाता था, चाहे वह हर्बल हो या अन्य कोई। घर की औरतें आसानी से उन्हें एकत्र कर उनकी दवाइयाँ बना लेती थीं जब भी उन्हें इसकी जरूरत होती थी और इसके लिये विशेष शिक्षा की भी कोई जरूरत नहीं होती थी। प्रत्येक घरेलू महिला इसे कर सकती थी और बीमार व्यक्ति को इसका भरपूर लाभ मिलता था। मेरी माँ के समय में ऐसे बहुत से आसान और प्रभावशाली उपचार थे, विशेषकर साँप और बिच्छू के काटने के मामले में, यहाँ तक कि सफेद दाग (ल्यूकोडर्मा) और पीलिया के लिये भी देशी उपचार उपलब्ध थे।"

मालिक ने 30–40 वर्ष पूर्व प्रचलित सोने का गुम्बद (डोम) बनाने की एक विशेष तकनीक का जिक्र किया। उन्होंने कहा कि वह व्यक्तिगत तौर पर दो अति कुशल कारीगरों को जानते थे और केवल उन दोनो में से एक हैदराबाद में था और दूसरा शाहजहाँपुर में ही था। उन्होंने कहा कि व्यक्तिगत जानकारी के अनुसार ये दो आखिरी कारीगर थे जिनके पास सोने के गुम्बद निर्माण की जानकारी उपलब्ध थी। मालिक ने दुःख प्रकट किया कि दोनों अपनी जानकारी और कारीगरी किसी को बताये बिना ही इस दुनिया से चल बसे, इस कारण यह कला ही लुप्त हो गयी। मालिक ने कहा "अब देखो हमारे लोग कितने मूर्ख हैं। यह दुःख का विषय है कि ये लोग कितनी संकीर्ण मानसिकता के थे। आप स्वयं ही

सोच सकते हैं कि इस खोयी हुयी कला को हम पुनः कैसे प्राप्त कर पायेंगे। आजकल दिन प्रतिदिन नई चीजों की खोज हो रही है पर यह सब उच्च तकनीक पर आधारित है और अत्यंत उलझन भरी है। वह उतनी आसान और सरल नहीं है जितनी पुराने समय में थी। मैं तो केवल इतना ही कहना चाहता हूँ कि जब किसी राष्ट्र के गिरावट का समय आता है, तो उसकी जनता पर इस तरह की मूर्खता और बेवकूफी सवार हो जाती है। हमने इसके कारण बहुत कुछ खोया है।''

उन्होंने अपनी बात को जारी रखते हुये बताया, ''एक व्यक्ति के पास सफेद दाग (ल्यूकोडर्मा) के उपचार की जानकारी थी, पर उसने इसकी जानकारी किसी को भी देने से इन्कार कर दिया। उसका कहना था कि यदि यह जानकारी किसी को दे देगा तो उसे डर है कि इसके उपचार का व्यवसायीकरण हो जायेगा और वह व्यक्ति बहुत पैसा कमायेगा। मैंने उससे कहा यदि कोई व्यक्ति इससे पैसा कमाता है तो उसे क्या परेशानी हो सकती है। यदि वह कुछ लाखों में भी हो तो, इसे बनाने की जानकारी तो हमारे पास ही रहेगी और व्यक्तियों को इससे लाभ भी मिलेगा। बहुत प्रयासों के बाद उस दवाई के नुस्खे की जानकारी मुझे उससे मिल पायी, जब मैंने उससे वायदा किया कि मैं इससे पैसा नहीं कमाऊँगा। ऐसे ही बबासीर (पाइल्स) का भी एक बहुत अच्छा उपचार है। मैंने इसका कई बार सफल उपयोग किया है और यह हमेशा कारगर रहा है, शायद यह 100 प्रतिशत सफल नहीं है, पर किसी भी हालत में 99 प्रतिशत सफलता से कम नहीं है। लोगों को इसकी आवश्यकता के सम्बन्ध में समझने की कोशिश करनी चाहिए। लेकिन भाई मैं तो इतना कह सकता हूँ कि जब इस तरह की मूर्खता लोगों पर सवार हो जाती है तो यह निश्चित ही इस बात के लक्षण हैं कि उस देश की बरबादी का समय निकट आ चुका है।''

उसके पश्चात् हम सोने के लिये चले गये। मेरे सोने के पहले मालिक ने मुझे अचानक ध्यान में बैठने के लिये कहा और मुझे 20 मिनट की सिटिंग दी, सिटिंग के लगभग मध्य में मैंने एक दृश्य देखा। मैंने देखा

कि मैं मर चुका था और मेरा शव जमीन पर पड़ा हुआ था। सिटिंग के पश्चात् मैंने जब मालिक को इसके बारे में बताया तो मालिक मुस्कुराये और बोले यह लय अवस्था की गहराई के लक्षण हैं। मैंने मालिक से पूछा कि लय अवस्था की गहराई कितनी थी तो मालिक हँसे और बोले कि लय अवस्था की गहराई का प्रतिशत आंकना सम्भव नहीं था। उन्होंने यह भी बताया कि उन्होंने तंत्र के कुछ चक्रों की सफाई की है। उसके पश्चात् लगभग 11 बजे हम सोने के लिये गये।

यह अत्यंत बेचैनी भरी रात थी। मालिक सो नहीं सके। उनकी नींद थोड़ी देर के लिये लगती थी और उनके शरीर पर एक झटके के साथ ही उनकी नींद खुल जाती थी और ऐसा लगता था कि वह किसी पर क्रोधित हो बड़बड़ा रहे हैं, जो हमारे कमरे में ही है। वो बार–बार किसी वस्तु की ओर इशारा करते थे और क्रोधित हो बड़बड़ाते थे। जैसे वह उसी कमरे में हो। ऐसा कई मर्तबा हुआ। अगली बार मालिक के ऐसा करने से पहले ही मैंने कमरे की बत्तियाँ जला दीं ताकि वे उस वस्तु को देख सकें जिसकी ओर वे इशारा कर रहे थे और क्रोधित हो रहे थे। यह लगभग सुबह 4 बजे तक जारी रहा।

8 अप्रैल 1977 – शुक्रवार

मैंने श्रीमती बालगोपाल (कुमारा) को सुबह 7.30 बजे एक विशेष सिटिंग दी ताकि उन्हें अग्रिम अनुमति के लिये तैयार किया जा सके। सुबह 9 बजे मालिक ने भारतीय उच्चायोग के श्री श्रीवास्तव को एक सिटिंग दी।

हम सुबह ठीक 9.30 बजे केलंग के लिये रवाना हो गये। केलंग एक बंदरगाह है जो कि पैतालिंग जाया के पश्चिम के लगभग 25 मील की दूरी पर स्थित है। कुछ महीने पूर्व तक यह शहर सेलंगोर राज्य की राजधानी कहलाता था। हम केलंग से आधी दूरी पर स्थित सेलंगोर की नयी राजधानी शाहआलम से भी गुजरे। यहाँ पर सुल्तान का नया महल एक छोटी पहाड़ी पर थोड़ी ऊँचाई पर स्थित था। केलंग पहुँचने में मात्र आधा घंटे का समय लगा, जब हम सुश्री कमालामबिगई के घर पहुँचे।

मालिक ने देखा कि लगभग 30 अभ्यासी पहले से ही वहाँ एकत्रित थे उनमें से सभी मालिक का दर्शन जीवन में पहली बार कर रहे थे। अधिकतर अभ्यासी सीलोन और भारत के तमिल अभ्यासी हैं जिनके पिता या दादा मलाया आकर बस गये हैं, जो उस समय खेतिहर मजदूर और खदान कारीगर कहलाते थे।

मालिक ने सुबह 10.30 बजे सामूहिक सत्संग कराया और उसके पश्चात् अपने कमरे में विश्राम के लिये चले गये। के. वी. और मैंने अभ्यासियों से चर्चा की, उन्हें तमिल में एक संक्षिप्त उद्‌बोधन दिया। मालिक ने चावल, सांभर, रसम, पायासाम, रसेदार सब्जी इत्यादि का विशुद्ध दक्षिण भारतीय भोजन किया जो कि केले के पत्तों पर ठेठ तमिल पद्धति के अनुसार परोसा गया था। मालिक ने भोजन का आनन्द लिया और बड़े चाव से खाया। तत्पश्चात् वे सोने चले गये और शाम 4 बजे तक आराम करते रहे।

शाम 4 बजे से 5 बजे तक मालिक प्रत्येक अभ्यासी से व्यक्तिगत रूप से अपने कमरे में मिलने में व्यस्त रहे। शाम 5 बजे मैंने तमिल में उद्‌बोधन दिया। इसके पश्चात् मालिक ने 25 मिनट का सामूहिक सत्संग कराया। हम केलंग से शाम 6 बजे रवाना हुये और शाम 6.30 बजे पैतालिंग जाया अपने घर पहुँचे।

केलंग में मैंने श्री के. विवेकानन्थन को विशेष सिटिंग दी (सुबह 11 बजे और शाम 3 बजे) ताकि उन्हें अग्रिम अनुमति के लिये तैयार किया जा सके।

घर वापस आने पर हम लगभग 6–7 अभ्यासियों को मालिक का इन्तजार करते देख आश्चर्य में पड़ गये। मालिक ने कुछ समय आराम करने के पश्चात् उन्हें सिटिंग दी। श्री श्रीवास्तव रात्रि भोजन के लिये रुक गये और मालिक रात्रि 9 बजे ही एकांत पा सके जब वे रात्रि भोजन के पश्चात् आराम से हुक्का पी रहे थे। मालिक ने के.वी.रेड्डी को अहम् के बारे में बताया और कहा, "मान लो कि हम एक बक्सा या पेटी देखते हैं, जिसका वजन लगभग 3 टन है और हम यदि सोचते हैं कि हम इसे उठा सकते हैं, तो यह मैं है जो सोचता है कि वह बक्से को उठा सकता है

और यही अहम् है। और मैं तुम्हें बताना चाहूँगा कि अहम् को पूरी तरह से समाप्त किया जाना सम्भव नहीं है। यह मेरे विचार हैं और मैं गलत भी हो सकता हूँ पर यह मेरा व्यवहारिक अनुभव है। इससे आगे मेरा यह भी विचार है कि अहम् जरूरी भी है और इसे निकाल फेंकना अनावश्यक है क्योंकि इसे सही तरीके से इस्तेमाल भी किया जा सकता है। तुम्हें यह जानकारी देना चाहूँगा कि एक मात्र अहम् ही है जिसके माध्यम से हम तरक्की करते हैं, पर दूसरी तरफ यह हमें नीचे गिराने में सहायक होता है। अहम् को पूरी तरह से समाप्त किया जाना सम्भव नहीं है पर इसका यदि सही तरीके से इस्तेमाल किया जाये तो यह हमारी आध्यात्मिक उन्नति में उपयोगी हो सकता है, हमारी गलती अहम् को शरीर के साथ जोड़ने के कारण होती है जो गलत है। इसे आत्मा के साथ जोड़ा जाना चाहिए, समझ में आया? हालाँकि उच्च अवस्था वह है जिसमें अहम् न तो शरीर और न ही आत्मा के साथ आंका जाता है। क्या तुम समझे ?''

उसके बाद मालिक ने मुझे फुसफुसाते हुये गोपनीय रूप से बताया कि उन्हें लालाजी महाराज का सीधा संदेश प्राप्त हुआ है, लालाजी ने उन्हें दो बिन्दु बताये हैं, जो वह चाहते हैं कि मैं सावधानी पूर्वक नोट करूँ।

1) लालाजी चाहते थे कि एक कन्ट्रोलर को मिशन के प्रत्येक सेन्टर के लिये नियुक्त किया जाना चाहिए, मैंने मालिक से पूछा कि क्या यह भारत पर भी लागू होता है। उसका उत्तर उन्होंने ''हाँ'' में दिया।
2) मालिक ने कहा वह दूसरा बिन्दु भूल गये ।

के.वी.रेड्डी ने मालिक से भविष्य में मलेशिया की आध्यात्मिक उन्नति के सम्बन्ध में विस्तृत चर्चा की और उनसे फिजी, बाली, इन्डोनेशिया, कोरिया और जापान में भी बढ़ाने के लिये उनके विचार जाने। मालिक ने कहा, ''यह आप पर है कि मानवता की इस पद्धति को किसी भी जगह और सभी जगह फैलायें। लालाजी साहब चाहते हैं कि लोगों को इस सरल और कारगर पद्धति का लाभ मिले, इसके लिये मुझसे पूछने की आवश्यकता नहीं है, अपना काम करना जारी रखो और यदि किसी

मार्गदर्शन की आवश्यकता हो तो तुम पार्थसारथी से सम्पर्क कर सकते हो और उससे सुझाव ले सकते हो।''

के. वी. ने अपने नेपाल के काम के बारे में बताया और मालिक से प्रार्थना की वह इस वर्ष नेपाल अवश्य जायें। मालिक तत्क्षण राजी हो गये और दिसम्बर 1977 का कार्यक्रम निर्धारित कर लिया गया। मैंने मालिक को उनके यूरोप में पिछले वर्ष लिये गये निर्णय के बारे में बताया तथा उन्हें उनके द्वारा किसी भी विदेश यात्रा पर न जाने के निर्णय के बारे में स्मरण कराया, मालिक ने शरारत भरी हँसी हँसते हुये कहा, ''इससे यह प्रमाणित होता है कि मैं भी एक इन्सान हूँ, मैं भी एक नियम बनाता हूँ और उसे तोड़ता हूँ।''

मालिक ने मुझसे अकेले में भारत के बाहर कार्य करने के लिये और अधिक प्रशिक्षकों को प्रशिक्षित किये जाने के बारे में लम्बी चर्चा की। उन्होंने इस बात पर दुःख व्यक्त किया कि उन्हें इसके लिये कोई भी उपयुक्त व्यक्ति नहीं मिला। एस. ए. सरनाड के प्रकरण पर चर्चा की गयी किन्तु मालिक ने इसे अस्वीकार कर दिया और कहा, ''देखो इसमें कोई संदेह नहीं कि व्यक्ति तो सक्षम है लेकिन कुछ कारण हैं जिसके कारण मैं उस पर विचार नहीं कर सकता।'' मैंने भाई राघवेन्द्र का नाम सुझाया, मालिक ने कहा, ''वह सफल है लेकिन जब वह बोलता है तो भ्रमित कर देता है।'' उसके बाद बी.राजागोपाल का नाम सुझाया गया, मालिक का सोचना था कि वह अन्य छोटे कार्यो के लिये उपयोगी हो सकते हैं, पर उसे हमारी पद्धति की ठीक से जानकारी नहीं है और न ही उन्होंने कभी भी स्वयं आगे बढ़कर काम करने की कोई इच्छा जाहिर की है, मालिक उससे नाखुश नजर आये।

मालिक ने चर्चा जारी रखते हुये कहा कि आदमी का हृदय वास्तव में मुलायम होना चाहिए। उन्होंने मुझे एक अभ्यासी के बारे में बताया जिसका नाम गाँधीजी था और वह लालाजी के छोटे भाई चाचा जी के सानिध्य में अभ्यास कर रहा था। गाँधीजी की माली हालत ठीक नहीं थी। वह और उसकी पत्नी सुबह 4 बजे उठते थे, आटा पीसते थे तथा

उसकी चपाती बनाकर बिना सब्जी के खाते थे। बहुत छोटी आमदनी में से भी वह कुछ रुपये हर महीने बचा लिया करता था और जरूरतमंद लोगों की मदद किया करता था। एक दिन उसके यहाँ चोरी हो गयी और चोर, जो कुछ भी उसके पास था, चोरी करके ले गये। वह इतनी परेशानी में आ गया कि अपना पेट भरने के लिये नदी के किनारे जो भी कन्द मूल मिल जाया करता था उसे खाकर वह अपना पेट भरता था। चोरों में से एक चोर ने उसकी इस दयनीय हालत को देखा। वह उसके पास आया और अपना जुर्म कबूल करते हुये बताया कि वह उन चोरों में से है जिन्होंने उसके घर चोरी की थी और जो भी उसने चोरी किया है वह उसे लौटा देना चाहता है, किन्तु गाँधीजी ने उसे वापस लेने से इन्कार कर दिया। चोर ने जोर देकर कहा कि वह उनके घर पर सब कुछ वापस कर देगा किन्तु गाँधीजी ने इन्कार करते हुये कहा कि यदि चोर को आवश्यकता न होती तो वह चोरी न करता। इस पर चोर ने गिड़गिड़ाते हुये गाँधीजी से सामान वापस ले लेने का आग्रह किया तो गाँधीजी ने उससे कहा कि वह केवल एक शर्त पर ऐसा कर सकते हैं यदि वह कभी भी चोरी न करने का उनको वचन दे। चोर इसके लिये सहर्ष तैयार हो गया और इस तरह वह एक अच्छा इन्सान बना ।

मालिक ने कहा, "देखो उसका हृदय कितना कोमल था तथा मैं चाहता हूँ कि आप सब भी ऐसा ही हृदय विकसित करें।" मालिक ने पुनः दोहराया कि प्रशिक्षक को एक आदर्श व्यक्ति होना चाहिये तथा अपने मालिक का अनुशरण करते हुये एक आदर्श प्रस्तुत करना चाहिये। उन्होंने विनोदपूर्वक कहा, "इसका अभिप्राय यह नहीं है कि उसे हुक्का पीना प्रारम्भ कर देना चाहिये क्योंकि मैं हुक्का पीता हूँ। मेरे कहने का तात्पर्य है कि चरित्र में, व्यवहार में, व्यक्तियों तक पहुँच बनाने में उसे आदर्श प्रस्तुत करने का प्रयास करना चाहिये। मैं आपको जानकारी देना चाहता हूँ कि किसी को भी लालाजी जैसा गुरु नहीं मिल सकता, उनके जैसा आदर्श व्यक्तित्व कोई दूसरा नहीं हो सकता। आप लोगों को यह तो जानकारी है कि लालाजी की माली हालत बहुत अच्छी नहीं थी किन्तु

उन्होंने कभी भी किसी को भी मदद देने के लिये इन्कार नहीं किया। हम सभी का हृदय भी ऐसा ही कोमल होना चाहिये।''

रात्रि बारह बजे, हम विश्राम के लिये अपने शयन कक्ष में चले गये।

9 अप्रैल 1977– शनिवार

के.वी.रेड्डी, उनकी पत्नी बेइरब्रे तथा पुत्र कुमार केलंग के भ्रमण पर मालिक के साथ थे। हम 9.45 बजे पैतालिंग जाया से रवाना होकर सुबह 10.55 बजे केलंग पहुँचे।

मालिक ने सामूहिक सत्संग कराया। लगभग तीस अभ्यासी उपस्थित थे। इसी दौरान मैंने मालिक की अनुमति से श्री के.विवेकानन्थन को उसकी अंतरिम अनुमति की तैयारी के लिये तीसरी सिटिंग दी।

इसके पश्चात् प्रश्न और उत्तर का एक लम्बा सत्र चला, जिसमें अधिकतर सामान्य विषयों पर ही प्रश्न पूछे गये। प्रश्नोत्तरी सत्र दोपहर तक चलता रहा, तत्पश्चात् दोपहर 12.30 बजे मालिक ने दोपहर का भोजन किया जिसमें दक्षिण भारतीय व्यंजन, चावल तथा अन्य सभी तरकारी परोसी गयी थी, जिसे मालिक ने बड़े चाव से खाया। तत्पश्चात् मालिक ने एक घंटे तक विश्राम किया। दोपहर 2.30 बजे हम केलंग से पैतालिंग जाया की ओर रवाना हो गये।

शाम 5.00 बजे हम दीवान बेलिया की ओर रवाना हो गये, जहाँ पर ''मजालिस बेलिया हिन्दू मलेशिया'' जो एशियन युवा परिषद् का एक हिन्दू युवा संगठन है, के द्वारा उनके कार्यकर्ताओं की वार्षिक बैठक आयोजित की गयी थी, अतएव सम्पूर्ण मलेशिया के हिन्दू युवा संस्थाओं के कार्यकर्ता बैठक में उपस्थित थे। इस प्रकार से इस बैठक में, 29 संस्थाओं के कुल 125 कार्यकर्ताओं द्वारा अपनी संस्था का प्रतिनिधित्व किया जा रहा था। मलेशिया के हिन्दू युवा संगठन का प्रतिनिधित्व उनकी संस्था के दस पदाधिकारियों द्वारा किया जा रहा था जो हमारे अभ्यासियों तथा कुछ अन्य आमंत्रितों के साथ बैठक में उपस्थित थे। इस तरह सभागृह में लगभग 150 व्यक्ति उपस्थित थे।

अध्यक्ष श्री के.वैथीलिंगम तथा उपाध्यक्ष श्री के. कुमार द्वारा अपना

अपना सम्बोधन दिया गया, तत्पश्चात् मैंने लगभग चालीस मिनट तक उन्हें सम्बोधित किया जिसे उन्होंने बड़े ध्यान पूर्वक सुना। के.वी.रेड्डी ने कार्यक्रम समाप्ति पर अपना संक्षिप्त उद्‌बोधन दिया। तत्पश्चात् मालिक द्वारा दी गयी पन्द्रह मिनट की सिटिंग के साथ ही बैठक समाप्त हो गयी।

शाम 7.00 बजे हम दीवान बेलिया से भारतीय स्टेट बैंक के श्री साहनी के निवास की ओर रवाना हो गये जहाँ लगभग पन्द्रह व्यक्ति मालिक से भेंट करने के लिये एकत्रित थे जिनमें कुछ अभ्यासी भी थे। हमने रात्रि भोजन श्री साहनी के निवास पर ही किया जिसमें पंजाबी शैली के व्यंजन, जैसे पूरी, छोले, आलूमटर, रोटी, स्वादिष्ट करेला इत्यादि परोसे गये। भोजन के पश्चात् रात्रि लगभग 10.00 बजे हम पैतालिंग जाया वापस लौट आये। मालिक सारी रात बैचेन रहे तथा ठीक से सो नहीं सके, रात भर डरावने स्वप्न उन्हें परेशान करते रहे तथा वे बिस्तर पर पड़े पड़े करवटें बदलते रहे। अतः हम लोगों को सोने में रात्रि के दो बज गये।

10 अप्रैल 1977– रविवार

सुबह 8.00 बजे हम कुआलालम्पुर की ओर रवाना हुये तथा सुबह 8.30 बजे सनातन धर्म सभा के श्री लक्ष्मीनारायण मंदिर पहुँचे जो आइपोह मार्ग पर जालान कासी पिल्लई में स्थित था तथा के.वी.रेड्डी के निवास से इसकी दूरी लगभग 10 मील थी। यह मंदिर राम मंदिर के नाम से जाना जाता था। सभा के सचिव श्री जगदीश शर्मा द्वारा मालिक का स्वागत किया गया। हमारे मंदिर पहुँचने पर वहाँ मात्र दस–बारह व्यक्ति ही उपस्थित थे, लेकिन शीघ्र ही यह संख्या बढ़कर साठ के लगभग पहुँच गयी थी। कुछ व्यक्तियों द्वारा हारमोनियम तथा तबले के साथ भजन गायन प्रस्तुत किया गया तथा मेरे द्वारा दिये जाने वाले सम्बोधन के परिपेक्ष्य में भी उनके द्वारा दो भजन गाये गये। सुबह 9.30 बजे मैंने अपना सम्बोधन देना प्रारम्भ किया, मुझे उन्हें हिन्दी में सम्बोधित करना था, अतः हिन्दी के अधूरे ज्ञान के लिये मैंने उपस्थित जन समूह से क्षमा माँगी तथा लगभग आधे घंटे तक उन्हें सम्बोधित किया। मेरे उद्‌बोधन का शीर्षक था कि "ईश्वर के विषय में हमें क्या जानने की आवश्यकता है"। मेरे

उद्‌बोधन की समाप्ति के पश्चात् श्री शर्मा द्वारा मेरे अच्छे हिन्दी ज्ञान के लिये मेरी सराहना की गयी, उन्होंने मेरी तारीफ के पुल बाँधते हुये कहा कि मुझे मेरे हिन्दी ज्ञान के लिये डाक्टरेट की उपाधि मिलनी चाहिये जो अतिशयोक्ति थी।

वार्ता के बाद मालिक द्वारा पन्द्रह मिनट का ध्यान कराने के पश्चात् हम घर की ओर रवाना हो गये।

शाम 5.00–6.00 बजे के मध्य मालिक के निर्देशानुसार मेरे द्वारा दो व्यक्तियों को अग्रिम अनुमति प्रदान की गयी। 1. श्रीमती कुमारा रत्नम बालगोपाल और 2. श्री के विवेकानन्थन (केलंग)। उपर्युक्त दोनों व्यक्ति मलेशिया के सर्वप्रथम व्यक्ति हैं जिन्हें मिशन का प्रशिक्षक नियुक्त किया गया है।

मालिक द्वारा दो समूहों को सिटिंग दी गयी। पहली सिटिंग शाम 6.30 बजे तथा दूसरी शाम 7.30 बजे दी गयी। रात्रि भोजन के पश्चात् मालिक लगभग दो घंटे तक के.वी.रेड्डी से चर्चा करते रहे। रात्रि में वे आज के दिन का अंतिम हुक्का गुड़गुड़ाते हुये लालाजी के जीवन पर किस्से सुना रहे थे। उन्होंने चमकीली आँखो से हमारी ओर देखकर हमसे पूछा क्या हमें नींद तो नहीं आ रही है? तथा विनोदपूर्वक बोले, "मैं तो उल्लू की भाँति हूँ। क्या आपको उल्लू के बारे में जानकारी है? यह रात का पक्षी है। इसी की तरह मैं भी रात में आनन्द से रहता हूँ। अब देखो उल्लू एक चतुर पक्षी है, पश्चिम में तो इसे बुद्धिमानी का प्रतीक माना जाता है, लेकिन इसका दूसरा पहलू यह है कि यह विनाश भी लाता है। इसके पीछे एक अत्यन्त ही महत्वपूर्ण तथ्य छिपा हुआ है। हमारे देश में लोग उल्लू से भयभीत रहते हैं, कहीं–कहीं तो गाँवो में लोग उल्लू की चीख सुनकर सतर्क हो जाते हैं तथा विनाश की आशंका के कारण रात भर जागते रहते हैं।" तत्पश्चात् उन्होंने हँसते हुये कहा, "मैं भी उल्लू की भाँति हूँ लेकिन मैं जानता हूँ कि तुम (रेड्डी की ओर देखते हुये) मुझसे नहीं डरते, यद्यपि यह सत्य है कि मुझे भी इसी तरह के कार्य करने पड़ते हैं, लेकिन भाई यह अत्यन्त आवश्यक है क्योंकि बुराई को तो समाप्त करना ही पड़ता है

तथा आवश्यक रूप से यह सन्त का ही कार्य है।"

मालिक के.वी. रेड्डी से निरन्तर यह कहते रहे कि उसे इस कहानी से डरने की आवश्यकता नहीं है। अपने इस कथन का कि वे उल्लू की भाँति हैं, उन्होंने भरपूर आनन्द लिया तथा इसे बारम्बार दोहराते रहे। आधी रात हम सोने चले गये।

11 अप्रैल 1977– सोमवार

आज मालिक के विश्राम का दिन था अर्थात् कार्यक्रम की रूपरेखा में मालिक के लिये आज कोई कार्य निर्धारित नहीं किया गया था।

प्रातः 8.30 बजे तुन्कु अब्दुल्ला तथा उनकी पत्नी मालिक से भेंट करने के लिये पधारे तथा मालिक के साथ उनकी लम्बी चर्चा चली। तत्पश्चात् सारा दिन कोई गतिविधि नहीं रही।

सुबह 10.00 बजे हम संग्रहालय की ओर रवाना हुये, मालिक, मलेशिया के रेंगने वाली प्रजाति के जीव जंतुओं की प्रदर्शनी देखना चाहते थे, जो आजकल सैलानियों के लिये आकर्षण का मुख्य केन्द्र है। मालिक ने बच्चों की भाँति आश्चर्य चकित मुद्रा बनाते हुये एक लम्बे चौड़े अजगर के कंकाल को देखा जो अभी तक पकड़े गये अजगरों में सबसे अधिक लम्बा था तथा जिसकी लम्बाई 28 फीट थी। इसी के बगल में एक छोटे आकार का मृत अजगर देखा जिसकी लम्बाई कुछ इंचों में रही होगी। मालिक ने अत्यन्त ध्यान पूर्वक अनेक जहरीले जीवित सर्पों को देखा जिन्हें काँच के बने बक्से में बंद करके रखा गया था। मालिक आँखो पर चश्मा चढ़ाकर बच्चों की भाँति अत्यन्त आश्चर्य एवं ध्यान पूर्वक यह सब देख रहे थे तथा शीघ्र ही वे थक भी गये। एक दृश्य देखकर तो उन्हें उबकाई सी आने लगी जब उन्होंने देखा कि एक व्यक्ति ने तीन जीवित सर्पों के फन को अपने मुँह में डाल रखा है। यह दृश्य वहाँ उपस्थित लोगों के लिये कोतूहल का विषय था, किन्तु जब सर्पों ने अपने मुँह से झाग निकालना प्रारम्भ किया जो हमें स्पष्ट दिखायी दे रहा था, तब हमारा वहाँ खड़ा रहना दूभर हो गया। मालिक को तो यह दृश्य देखकर मितली सी आने लगी जो हमारे लिये स्पष्ट संकेत था कि अब हमें वहाँ से खिसक जाना चाहिये।

इसके पश्चात् हमने संग्रहालय के अन्य हिस्सों को भी देखा जहाँ मलेशिया की जीवन शैली पर आधारित प्रदर्शनी लगायी गयी थी जिससे ग्रामीण, आधुनिक, सामान्य, राजसी सभी प्रकार की जीवन शैली को प्रदर्शित किया गया था।

संग्रहालय भ्रमण के पश्चात् के.वी.रेड्डी मालिक को विजया सेन्ट्रल भवन ले गये, जहाँ उसके एशियन युवा संगठन का छः मंजिला कार्यालय है। रेड्डी के कार्यालय के कुछ कर्मचारी मालिक के दर्शनों के लिये आतुर थे, उनका व्यक्तिगत रूप से मालिक से परिचय कराया गया, उन सभी के लिये यह खुशी का अवसर था। घर जाने के आधा घंटे पूर्व तक हम रेड्डी के कार्यालय में रहे, दोपहर 12.45 बजे हम पैतालिंग जाया में अपने निवास पर पहुँच गये।

मालिक का आज विश्राम का दिन है, इससे सभी लोग भिज्ञ थे अतः आज मालिक से मिलने कोई नहीं आया तथा दोपहर के पश्चात् कोई गतिविधि नहीं रही। शाम 4.30 बजे से लगभग आधे घंटे तक बारिश हुयी जिसके कारण वातावरण में उमस हो गयी थी। यहाँ पर शाम को प्रतिदिन नियमित रूप से बारिश होती है जिसके कारण शाम 7.00 बजे तक वातावरण में उमस रहती है। किन्तु रातें अपेक्षाकृत सर्द होती हैं तथा रात 11.00 बजे के पश्चात् तो पंखे की भी आवश्यकता नहीं रहती। इसी कारण पैतालिंग जाया में वर्ष भर हरियाली बनी रहती है।

शाम को तुन्कु अब्दुल्ला तथा उनकी पत्नी विशेष रूप से के.वी.रेड्डी की पत्नी बेइरब्रे से भेंट करने के लिये पधारे। बेइरब्रे तथा उनका पुत्र कुमार आज रात्रि की उड़ान से लन्दन की ओर रवाना हो रहे हैं जो डबलिन के मार्ग से लंदन की ओर जाती है। के.वी. अपनी पत्नी तथा पुत्र को लेकर रात्रि 10.00 के पश्चात् हवाई अड्डे की ओर रवाना हो गये तथा मालिक और मैं विश्राम के लिये शयन कक्ष में चले गये।

12 अप्रैल 1977– मंगलवार

विगत रात्रि में मालिक को अच्छी नींद आयी। सुबह मालिक तरोताजा नजर आ रहे थे। प्रातः मौसम थोड़ा गर्म था तथा उमस भी थी।

सीढ़ियों से नीचे उतरते हुये मालिक बोले कि बेइरब्रे तथा कुमार के बिना घर सूना–सूना लग रहा है। के.वी.रेड्डी किसी आवश्यक कार्य हेतु प्रातः जल्दी ही अपने कार्यालय चले गये थे, तथा सुबह 11.00 बजे तक वापस लौट आये। दोपहर में हम तीनों तुन्कु अब्दुल्ला की मर्सिडीज बेंज से पैतालिंग जाया से सुबंग अन्तर्राष्ट्रीय हवाई अड्डे की ओर रवाना हो गये। मालिक ने मुस्कुराते हुये कहा कि यह तुन्कु की मेहरबानी है कि उन्होंने अपनी व्यक्तिगत कार हमारे लिये उपलब्ध करायी है।

हम तीनों दोपहर 1:00 बजे मलेशिया एयर लाइन सिस्टम की उड़ान संख्या 306 के बोईंग 737 विमान से कुआलालम्पुर से पीनांग की ओर रवाना हुये। यद्यपि यह अत्यंत कम दूरी की यात्रा थी जिसमें मात्र 35 मिनट का समय लगा तथापि एम ए एस द्वारा बिना किसी हड़बड़ी के स्वल्पाहार परोसा गया। यात्रा अत्यंत आरामदायक रही तथा हममें से किसी ने भी कोई स्वल्पाहार नहीं लिया, लेकिन हमें इस बात पर आश्चर्य हो रहा था कि परिचारिकायें निरन्तर मालिक के पास आकर पूछ रही थीं कि वे कुछ नाश्ता तथा पेय इत्यादि क्यों नहीं ले रहे हैं। ऐसा प्रतीत हो रहा था जैसे शहद के बर्तन पर मक्खियाँ भिनभिना रही हों, मालिक अपने चश्मे के पीछे से मंद मंद मुस्कुरा रहे थे, जिसका उन्होंने विशेष तौर पर उड़ान के दौरान पहनने के लिये चुनाव किया था तथा वे इसे यात्रा के दौरान पूरे समय तक पहने रहे। दोपहर 1.35 बजे हम पेनांग पहुँच गये। आगमन अहाते से बाहर आने पर श्री कुमार स्वामी, उनकी पत्नी तथा श्रीमती बालगोपाल के माता पिता ने मालिक का स्वागत किया। विमानतल से हम चार मील दूरी पर मेडेन हाइट में स्थित उनके निवास पर पहुँचे। उनके विशाल भवन में मालिक के लिये ऊपरी तल पर अलग से एक छोटे से शयन कक्ष की व्यवस्था की गयी थी।

पेनांग में सहज मार्ग का न कोई ग्रुप है तथा न ही कोई गतिविधि। वास्तव में आईपोह के एक मात्र अभ्यासी के पैर में फ्रैक्चर होने के कारण वहाँ का दौरा निरस्त करना पड़ा था तथा उसके स्थान पर पेनांग का दौरा निर्धारित किया गया था तथा ठहरने की समस्या का श्रीमती

बालगोपाल ने हमें अपने माता पिता के निवास पर व्यवस्था करवा कर निराकरण कर दिया था।

मालिक ने शाम 5.00 बजे तक विश्राम किया। यहाँ का वातावरण अत्यंत गर्म तथा उमस भरा था तथा प्यास बुझाने के लिये बारम्बार पेय पदार्थ की आवश्यकता प्रतीत हो रही थी। शाम 5.00 बजे श्री कुमारा स्वामी मालिक को बॉटनीकल गार्डन घुमाने के लिये ले गये। यहाँ पर मालिक ने बंदर की प्रजाति के एक विचित्र से दिखने वाले जानवर जो चिपांजी जैसा दिखाई पड़ रहा था, को देखकर भरपूर आनन्द लिया। यह जानवर मलेशिया में ही पाया जाता है तथा हमने अपने जीवन में इससे पूर्व इस तरह के जन्तु को नहीं देखा था। मालिक अपना चश्मा चढ़ाकर कुछ देर तक अत्यंत ध्यानपूर्वक इसे देखते रहे तथा इसके हू–बहू मानव जैसा दिखने के बारे में चर्चा करते रहे, विशेष रूप से इसका माथा तथा चेहरा किसी बड़ी उम्र के मनुष्य की भाँति दिखायी पड़ रहा था।

बॉटनीकल गार्डन से मालिक स्लीपिंग बुद्धा के मंदिर गये जिसका निर्माण विशुद्ध थाई शैली के अनुरूप किया गया था। मंदिर की मुख्य इमारत के सामने विष्णु तथा अप्सराओं की मूर्तियाँ थीं जो इसके भारतीय मूल का होने का प्रमाण प्रस्तुत कर रही थीं। मंदिर के अन्दर 108 फीट लम्बी बुद्ध की लेटी अवस्था में एक मूर्ति थी तथा एक बड़े से अहाते में अनेकों सूचना पटल पर सूचक बोर्ड लगे हुये थे जिन पर बुद्ध के जीवन पर आधारित उनके जन्म से लेकर उनके महानिर्वाण प्राप्त करने तक की समस्त जानकारी अंकित की गयी थी। मंदिर से मालिक को कुछ मील की दूरी पर स्थित समुद्र तट पर ले जाया गया, तत्पश्चात् मालिक एक विशाल तालाब के मुहाने पर स्थित एक छोटा सा बगीचा देखने गये, यह बगीचा बम्बई के मालाबार हिल पर स्थित हैगिंग गार्डन जैसा प्रतीत हो रहा था। अंधेरा गहराने लगा था। अतः हम शाम 7.30 बजे अपने घर वापस लौट आये।

रात्रि 8.30 बजे हमने भोजन में विशुद्ध दक्षिण भारतीय व्यंजनों का आनंद लिया जिन्हें केले के पत्ते पर परोसा गया था। श्रीमती कुमार स्वामी

एक बूढ़ी महिला हैं, पीनांग में उनके परिवार में कोई अभ्यासी नहीं है तथा न ही उनकी इसके प्रति कोई रुचि है। वे अत्यंत ही रूढ़िवादी पद्धति से पूजा पाठ इत्यादि में विश्वास रखते हैं। मालिक ने अत्यंत चाव से भोजन का आनंद लिया। रात्रि भोजन के पश्चात् पीनांग शाखा के हिन्दू युवा संगठन के सचिव श्री रामलिंगम से, मानव विकास में सहज मार्ग तथा साधना की क्या भूमिका हो सकती है, इस विषय पर लम्बी चर्चा हुई। के. वी.रेड्डी के एशियन युवा संगठन का अंग होने के कारण अथवा उसके क्षेत्र के अंतर्गत आने के कारण श्री रामलिंगम ने हमारी बात को अत्यंत विनम्रतापूर्वक सुना, लेकिन मुझे नहीं लगता कि हमारी चर्चा तथा बीच–बीच में मालिक द्वारा की गयी टिप्पणी का उन पर कोई असर पड़ा हो। रात्रि 10.30 बजे हम विश्राम के लिये अपने शयन कक्ष में चले गये।

यहाँ दिन में अत्यंत गर्मी तथा उमस रहती है एवं यहाँ की स्थिति कुआलालम्पुर से भी बदतर है। पीनांग एक छोटा सा द्वीप है जिससे अनुमान लगाया जा सकता है कि यहाँ का मौसम शुष्क होगा, लेकिन यहाँ अत्यंत चिपचिपा मौसम है। पीनांग की कुल परिधि 50 मील से भी कम है। श्री कुमार स्वामी ने बताया कि विगत तीन माह से यहाँ बिलकुल बारिश नहीं हुई है, इसी कारण से मौसम इतना गर्म तथा उमस भरा है।

उनके द्वारा हमारे शयन कक्ष में एक टेबल फैन की व्यवस्था की गयी थी लेकिन इसकी हवा भी बेअसर साबित हो रही थी। अत्यत गर्मी तथा उमस के कारण हम रात भर ठीक से नहीं सो सके। पैतालिंग जाया तथा यहाँ के मौसम में यही भिन्नता है। पैतालिंग जाया में लगभग प्रतिदिन शाम को बारिश होती है तथा रातें सर्द एवं सुहावनी होती हैं तथा भोर के समय तो कभी–कभी सर्दी इतनी बढ़ जाती है कि चादर तक ओढ़नी पड़ती है।

13 अप्रैल 1977– बुधवार (पीनांग)

सुबह अत्यंत शान्त थी। मालिक तरोताजा नजर आ रहे थे यद्यपि विगत रात्रि वे ठीक से सो नहीं सके थे।

श्री कुमार स्वामी के पुत्र श्री अरीरत्नम द्वारा किये गये प्रयासों के कारण, उसके कुछ मित्र जिन्हें वह कल से फोन पर सम्पर्क कर रहा था,

मालिक से भेंट करने के लिये आये। इसके लिये वास्तव में वह धन्यवाद का पात्र था जिसके परिणागस्वरूप आज। मैंने छः व्यक्तियों को प्रथम सिटिंग दी। उन छः व्यक्तियों के नाम निम्नानुसार थे –

1) श्री कुमार स्वामी की पत्नी श्रीमति के.परमेश्वरी

2) श्री कुमार स्वामी का पुत्र श्री अरीरत्नम उम्र 29 वर्ष जो पुलान पीनांग में रहता है।

3) पीनांग के श्री एस.कुलासिंगम उम्र 27 वर्ष

4) उदिनी के श्री जी. रमन

5) एवं 6. श्री एवं श्रीमती कनागासाबाई

सारा दिन भयंकर गर्मी तथा उमस रही। लगभग ऐसा ही वातावरण मद्रास का भी रहता है, कम से कम कपड़ो में भी हम पसीने से तरबतर हो रहे थे तथा थोड़े–थोड़े अन्तराल से प्यास बुझाने के लिये पानी पी रहे थे।

आज तमिल नव वर्ष का दिन है जिसके उपलक्ष्य में श्रीमती कुमार स्वामी ने तमिल उत्सव पर बनाया जाने वाला विशुद्ध भारतीय भोजन बनाया था, जिसमें बड़ा तथा पायसम के साथ–साथ एवियाल, सांभर तथा रसम इत्यादि सम्मिलित थे। मालिक ने पहले ही कह दिया था कि वे आज दोपहर का भोजन नहीं करेंगे, लेकिन श्रीमती कुमार स्वामी ने उन्हें अपने साथ डायनिंग टेबल पर बैठने के लिये मना ही लिया। तत्पश्चात् उन्होंने मालिक से एक के पश्चात् एक व्यजंन को चखने के लिये आग्रह किया और इस तरह से मालिक ने डटकर भोजन किया, तत्पश्चात् मालिक हँसते हुये बोले "जब भी भोजन में सांभर परोसा जाता है, वे अपने आप को रोक नहीं पाते हैं, वैसे तो यह कभी कभार मेरे घर पर भी बनता है। मेरा तात्पर्य शाहजहाँपुर से है, लेकिन उसका स्वाद ऐसा नहीं होता, रसम भी मुझे अत्यधिक रुचिकर है। मुझे गर्मा–गर्म दक्षिण भारतीय भोजन अत्यंत रुचिकर है लेकिन मेरे साथ परेशानी यह है कि जब भी मुझे मौका मिलता है मैं कुछ ज्यादा ही खा लेता हूँ।"

शाम 6.00 बजे हम पीनांग मार्ग पर स्थित कृष्णा मंदिर पहुँचे, यह

कुंज बिहारी के नाम से जाना जाता है, यहाँ पर मैंने अपने पीनांग भ्रमण का प्रथम सम्बोधन दिया, इस दौरान मैंने उपस्थित जनसमूह को लगभग चालीस मिनट तक सहज मार्ग के विषय में जानकारी दी। श्रोताओं की संख्या अधिक नहीं थी, उपस्थित जन समूह में अधिकांश युवा हिन्दू संगठन के सदस्य थे। तत्पश्चात् मालिक द्वारा उन्हें 15 मिनट की एक सिटिंग दी गयी तथा रात्रि 8.30 बजे हम अपने घर लौट आये। घर पहुँचने के शीघ्र पश्चात् हमने रात्रि भोजन किया।

कुंज बिहारी मंदिर में उपस्थित श्रोताओं में से दो व्यक्ति श्री प्रेमस्वरूप चीफ इन्सपेक्टर ऑफ पुलिस तथा पीनांग के ही डॉक्टर पी.के. राव, बी.वी.एस.सी., एम.आर.सी.वी.एस. (12 अप्रैल 1926) जिन्होंने मेरे उद्‌बोधन को ध्यान पूर्वक सुना था, रात्रि 9.00 बजे मालिक से भेंट करने के लिये पधारे। दोनों ने अपनी प्रथम सिटिंग मालिक से प्राप्त की। पी.के. राव ने बताया कि उनका एक भाई तिरुपति में है जिसने सहज मार्ग के अन्तर्गत अपना ध्यान, डॉ.वी. पाण्डुरंगाराव के माध्यम से 1976 में प्रारम्भ किया था। दुनिया वाकई बहुत छोटी है। तत्पश्चात् उपरोक्त दोनों अभ्यासियों द्वारा अनेक प्रश्न इत्यादि पूछे गये।

प्र. :– ईश्वर कौन है?

मालिक : जो अपने आप स्वयं में से प्रगट होता है ।

प्र. : मैं पिछले आठ महीनों से एक दूसरे गुरु की शरण में हूँ , जिनके द्वारा मुझे मंत्र उच्चारण करने के लिये दिया गया है। क्या दोनों पद्धतियों का एक साथ अनुसरण कर सकता हूँ ?

मालिक : नहीं! मैं तुम्हें स्पष्ट बता देना चाहता हूँ कि एक साथ दो मार्गों का अनुसरण नहीं किया जा सकता, क्योंकि एक मार्ग दूसरे के लिये व्यवधान उत्पन्न कर सकता है। तुम कुछ समय के लिये एक पद्धति को छोड़कर दूसरी पद्धति के अनुसार ध्यान करो तथा उसके पश्चात् स्वयं ही निर्णय करो कि तुम्हारे लिये कौन सा मार्ग उचित है। मुझे समझ में नहीं आता कि लोग गुरु बदलने के इच्छुक क्यों नहीं होते। गुरु की आवश्यकता तो अपनी स्वयं की आध्यात्मिक उन्नति के लिये होती है।

यदि वह आपको, आपकी इच्छानुसार प्रगति देने में अक्षम है तो आपको निःसंकोच दूसरे गुरु की शरण में चले जाना चाहिये। यदि आवश्यक हो तो हमें अपना गुरु बदल लेना चाहिये। हमारे शास्त्रों में भी इसके विरुद्ध कुछ नहीं लिखा गया है। बेशक तुम्हें गुरु का आदर करना चाहिये, लेकिन उसे यह स्पष्ट कर देना चाहिये कि वह तुम्हारी अपेक्षानुसार वह सब कुछ नहीं दे पा रहा है जो तुम चाहते हो। अतएव तुम किसी अन्य गुरु की शरण में जा रहे हो।

प्र. : मंत्र के बारे में आपके क्या विचार हैं, क्या आप कोई मंत्र उच्चारण इत्यादि का परामर्श देते हैं?

मालिक :– सामान्यतया मैं मंत्र इत्यादि का परामर्श नहीं देता किन्तु यदि आवश्यक हो तो मैं ऐसा कर सकता हूँ लेकिन आज तक मुझे इसकी आवश्यकता नहीं पड़ी है। तुम्हें पांतजलि योग– सूत्र पढ़ना चाहिये तथा जानकारी लेना चाहिए कि उनके द्वारा मंत्र के परिपेक्ष्य में क्या कहा गया है। मेरे विचार से यह 30 सेकेण्ड का सूत्र अथवा ऐसा ही कुछ है, जिसमें उनके द्वारा स्पष्ट किया गया है कि यदि मंत्र का उच्चारण किया जाना हो तो इसे इसके भावार्थ के साथ किया जाना चाहिये ।

प्र. : क्या आपके शिष्यों में ऐसी कोई आत्मा है जिसने साक्षात्कार प्राप्त कर लिया है? मैं ऐसा इसलिये पूछ रहा हूँ क्योंकि यदि है तो मैं उनका भी दर्शन चाहूँगा। मैं उन सभी महान आत्माओं के दर्शन करना चाहता हूँ।

मालिक : ठीक है! मैं तुम्हें यह जानकारी अवश्य दे सकता हूँ, ऐसी कुछ आत्मायें हैं जो उच्चस्थिति पर पहुँच चुकी हैं तथा अन्य भी अपने लक्ष्य की ओर प्रगति कर रही हैं।

पी.आर. (श्री पार्थसारथी राजगोपालाचारी) : दर्शन से अभिप्राय है "देखना" तथा आध्यात्मिक सन्दर्भ में जब कोई किसी महान् आत्मा अथवा गुरु के दर्शन करता है जो यह पर्याप्त नहीं है कि वह मात्र गुरु के भौतिक शरीर तक ही सीमित रहे। सही मायने में गुरु के दर्शनों से अभिप्राय है गुरु को आन्तरिक रूप से देखना जो गुरु के भौतिक शरीर के आवरण के

पीछे अदृश्य रहता है। गुरु के अन्तर के दर्शन ही सच्चे दर्शन हैं। मेरे मालिक ने अनेकों मर्तबा कहा है कि उन्हें देखने तो बहुत से लोग आते हैं किन्तु उनमें से कुछ ही सही मायने में उनके दर्शन प्राप्त कर पाते हैं।

प्र. : क्या मैं उन पहुँचे हुये व्यक्तियों के सम्बन्ध में जानकारी प्राप्त कर सकता हूँ ?

मालिक : मेरे विचार से तुम्हारे लिये यह जानना आवश्यक नहीं है। यह उनका व्यक्तिगत मामला है तथा यह आम चर्चा का विषय भी नहीं है।

प्र. : कुण्डलिनी के बारे में आपके क्या विचार हैं? क्या आपके योग में इसका कोई महत्व है ।

मालिक : यदि कुण्डलिनी शक्ति जागृत हो जाती है तो इसका उपयोग उच्च स्तरीय सांसारिक कार्यों के लिये किया जाता है। प्रत्येक को उच्च स्तरीय सांसारिक कार्य करने की जिम्मेदारी नहीं दी जाती है, अतः यह शक्ति (कुण्डलिनी शक्ति) प्रत्येक के लिये आवश्यक नहीं है, मात्र एक अथवा दो व्यक्ति हो सकते हैं जिन्हें यह उच्चस्तरीय कार्य दिया जाता है तथा आध्यात्मिक उन्नति के लिये इसकी कोई आवश्यकता भी नहीं है।

प्र. : क्या आपके मिशन में कुछ ऐसे व्यक्ति हैं जिनकी कुण्डलिनी जागृत हो चुकी है ।

मालिक : मैं आपको बताना चाहता हूँ कि मान लीजिये किसी व्यक्ति के समस्त चक्र मालिक की कृपा से जागृत हो चुके हों तब इस एक मात्र बिन्दु को छोड़ने का क्या औचित्य है, अतः ऐसे प्रकरणों में यह सब किया जाता है। क्या आपको जानकारी है कि आउसपेन्सकी ने कुण्डलिनी के संदर्भ में क्या लिखा है। उसने इसे "Kunda Buffer" (कुण्डा बफर) कहा है अर्थात् प्रगति में बाधक, उसका ऐसा मानना था कि यह वास्तव में प्रगति में बाधक है। आप भी पढ़े लिखे व्यक्ति हैं। अतः आप स्वयं इस पर विचार कर सकते हैं।

प्र. : मैं सारी जानकारी प्राप्त करना चाहता हूँ। यह कैसे किया जा सकता है?

मालिक : एक फारसी कहावत है जिसमें एक संत ने कहा है "जो

सब कुछ मैंने जाना है वह यह है कि मैं कुछ नहीं जानता।''

इस प्रश्नोत्तरी सत्र के पश्चात् मालिक के आदेशानुसार मैंने उन अभ्यासियों को जिनके द्वारा आज प्रातःकाल से ही पूजा प्रारम्भ की गयी थी, दूसरी सिटिंग दी। अपने शयन कक्ष में विश्राम के लिये जाने में हमें रात के बारह बज गये। मैं अभी बिस्तर पर लेटा ही था कि मालिक हँसे और बोले ''पार्थसारथी! सो गये क्या? मैं तुम्हें कुछ बताना चाहता हूँ। यदि तुम्हें वास्तव में किसी मूर्ख व्यक्ति की तलाश है तो उसे बुद्धिमानों में ढूढ़ो, तुम्हें एक न एक मूर्ख व्यक्ति मिल जायेगा।''

चिपचिपाहट भरी तेज गर्मी के कारण हममें से कोई भी रात भर सो नहीं सका। पसीने के कारण चादर शरीर से चिपक रही थी। सारी रात बेचैनी बनी रही। मालिक बीच–बीच में कुछ क्षण के लिये झपकी ले लेते थे तथा पुनः जग जाते थे।

14 अप्रैल 1977 – गुरुवार

मालिक से भेंट करने तथा उनके बारे में जानकारी प्राप्त करने के लिये अनेक व्यक्ति कुमार स्वामी के यहाँ पहुँचे। मेरे द्वारा पाँच व्यक्तियों को प्रथम सिटिंग दी गयी। उन पाँच व्यक्तियों के नाम निम्नानुसार थे।

के. नित्रे, पीनांग
एस. कन्डा स्वामी, पीनांग
एस.रामकृष्णनन, पीनांग
एम. रवीन्द्रन, पीनांग
आर. राजगोपाल, पीनांग

उसी समय के.वी.रेड्डी द्वारा भी दो व्यक्तियों बालचन्द्रन पेनांग तथा टी. थंगामोनी केलन्टन को प्रथम सिटिंग दी गयी।

दोपहर भोजन से पूर्व अत्यन्त सरगर्मी रही तथा लोगों का आना जाना लगा रहा। सुबह 10.00 बजे श्री लेखी तथा डॉ. राव यहाँ पधारे। उनके पश्चात् पाँच अन्य व्यक्ति भी यहाँ आ पहुँचे। मालिक ने सुबह 11.00 बजे उन्हें सामूहिक सिटिंग दी। श्री लेखी तथा श्री आर.राजगोपाल द्वारा अनेक फोटोग्राफ इत्यादि लिये गये, बाद में ज्ञात हुआ कि वे अनुभवी

फोटोग्राफर हैं। दोपहर भोजन के तुरन्त पश्चात् मालिक अपने शयन कक्ष में विश्राम के लिये चले गये तथा मैं और के.वी. रेड्डी, श्री लेखी तथा डॉ. राव से सहज मार्ग के विभिन्न पहलुओं पर चर्चा करते रहे।

श्री के.वी.रेड्डी द्वारा मालिक के प्रस्तावित दौरा कार्यक्रम में पीनांग को सम्मिलित नहीं किया था। प्रस्तावित कार्यक्रम में आईपोह तथा तेलाक एन्सोन का कार्यक्रम निर्धारित किया गया था। आईपोह का एकमात्र अभ्यासी मालिक के मलेशिया पहुँचने के तुरन्त पश्चात् अस्वस्थ हो गया था, जिसके कारण आईपोह का दौरा निरस्त करना पड़ा तथा तेलाक एन्सोन जाने के लिये मालिक को अत्यन्त घुमावदार रास्ते से कार की लम्बी यात्रा करनी पड़ती, जिससे मालिक को चक्कर आने की समस्या हो सकती थी, अतएव तेलाक एन्सोन का कार्यक्रम भी निरस्त कर दिया गया तथा उसके स्थान पर पीनांग दौरे का कार्यक्रम निर्धारित कर लिया गया। वास्तव में देखा जाये तो यहाँ पहुँचने से पूर्व तक रेड्डी का भी किसी से कोई सम्पर्क नहीं था, उसके पश्चात् भी आज दोपहर तक पन्द्रह अभ्यासियों द्वारा सहज मार्ग साधना के अन्तर्गत अभ्यास प्रारम्भ किया गया। यह सब मालिक की आकर्षण शक्ति का ही परिणाम है।

दोपहर 3.45 बजे हम श्री कुमारा स्वामी के निवास से ही रवाना हुये। पूर्वानुसार आज भी कार कुमारा स्वामी ही चला रहे थे। एक अन्य कार में लेखी तथा डॉ. राव श्रीमती कुमारा स्वामी के साथ हमारा अनुसरण कर रहे थे। हवाई अड्डे जाने के मार्ग पर हम बोधियों के सर्प मंदिर भ्रमण के लिये गये। यह पर्यटकों के लिये विशेष आकर्षण का केन्द्र है। इस मंदिर में बड़ी संख्या में हरे जीवित सर्प हैं जो वृक्षों के समान बनाई गई टेक के सहारे लटक रहे थे। इस प्रकार की टेक मंदिर में यहाँ–वहाँ विभिन्न स्थानों पर रखी हुई थी। मंदिर में सभी ओर सर्प ही सर्प नजर आ रहे थे। टेबल के नीचे, रेलिंग पर, यहाँ तक कि पूजा स्थल पर, सभी जगह सर्प ही सर्प दिखाई पड़ रहे थे। कुछ सर्प तो बुद्ध की प्रतिमा के चारों ओर लिपटे हुए थे। हमें जानकारी दी गयी थी कि वर्ष की एक विशेष ऋतु के दौरान समूचे द्वीप के समीपवर्ती क्षेत्रों के सर्प स्वयंमेव ही यहाँ पहुँच जाते

हैं, यद्यपि सैकड़ों की संख्या में सर्प यहाँ हमेशा ही रहते हैं जैसा कि हम प्रत्यक्ष रूप से देख ही रहे थे। मालिक ने बुद्ध की प्रतिमा के समीप एक दर्जन से भी अधिक साँपों को रेंगते हुए देखा। पर्यटक लोग इन साँपों को बड़ी ढिठाई से छू रहे थे– कम से कम बाहरी तौर पर वे ढिठाई कर ही रहे थे। उनमें से अधिकांश पर्यटक तो सर्पों को अपने शरीर पर रेंगाते हुये तथा गले में लपेट कर फोटो खिंचवा रहे थे। एक न एक फोटोग्राफर मंदिर में हमेशा उपलब्ध रहता है यद्यपि पर्यटकों को, सूचना पटल पर लिखी चेतावनी के माध्यम से सचेत रहने के लिये आगाह किया गया है। मालिक ने सर्पों के नजदीक जाने से इन्कार कर दिया, मैंने देखा कि मालिक बेचैनी महसूस कर रहे थे।

थोड़ी देर पश्चात् मालिक ने कहा कि मेरी समझ में नहीं आता कि पर्यटकों के आकर्षण मात्र के लिये पूजा स्थलों की अवमानना करना कहाँ तक उचित है। उन्होंने कहा "यह कहने के लिये मैं क्षमा चाहता हूँ कि आज आप कहीं भी चले जाइये, वहाँ आप पायेंगे कि मन्दिरों को भी लोगो ने दूषित कर दिया है तथा जिन स्थानों पर पूजा अर्चना की जानी चाहिये थी ऐसे स्थानों को पर्यटन स्थल बना दिया गया है। देखिये मानवीय स्तर कितना गिर गया है।"

मंदिर से हम हवाई अड्डे की ओर रवाना हो गये जहाँ मालिक ने पीनांग के अभ्यासियों से विदा लेने से पूर्व एक ग्लास संतरे का जूस पिया। शाम 4.45 बजे हम एम.ए.एस. के बोइंग 737 बी विमान से उड़ान संख्या 305 द्वारा पीनांग से रवाना हुये तथा ठीक पैंतीस मिनट पश्चात् कुआलालम्पुर के सुबंग अन्तर्राष्ट्रीय हवाई अड्डे पहुँचे। सामान की कस्टम जाँच पर हमें आश्चर्य हो रहा था जबकि हमने घरेलू उड़ान द्वारा यात्रा की थी। पहले पीनांग फ्री पोर्ट हुआ करता था तथा वहाँ से आने वाले यात्रियों को कस्टम जाँच से गुजरना पड़ता था। वही पुरानी प्रक्रिया तथा नियम आज भी लागू हैं। इस छोटी सी घटना पर भी मालिक ने यह निष्कर्ष निकाला कि प्राचीन मान्यताओं से चिपके रहना, चाहे इसकी उपयोगिता हो अथवा न हो तथा नये को अपनाने का विरोध करना चाहे इसकी कितनी

ही आवश्यकता क्यों न हो एक मानवीय प्रवृत्ति है।

हवाई अड्डे से बाहर आने पर मैंने देखा कि श्री बालगोपाल मालिक की अगवानी के लिये इन्तजार कर रहे हैं। हम तुन्कु अब्दुल्ला की मर्सिडीज बेंज कार में सवार होकर पेतालिंग जाया में अपने घर की ओर रवाना हो गये।

पीनांग की यात्रा हमारे लिये उपयोगी रही तथा मालिक पीनांग में मिले सहयोग से संतुष्ट नजर आ रहे थे। इस बात से मालिक विशेष तौर पर प्रसन्न थे कि कुमारस्वामी द्वारा अपना घर मालिक के हवाले कर दिया गया था ताकि वहाँ सत्संग कराया जा सके।

शाम 6.30 बजे सिंगापुर के श्री तेन की लेंग मालिक से भेंट करने के लिये रेड्डी के घर पर पधारे। वे मलक्का के मूल निवासी हैं तथा विगत 10–12 वर्षो से उनकी के.वी. रेड्डी से मित्रता है लेकिन उन्होंने अभी तक साधना प्रारम्भ नहीं की थी तथा आज भी वे मात्र मालिक से भेंट करने तथा रेड्डी से मालिक के सिंगापुर कार्यक्रम के सम्बन्ध में चर्चा करने के लिये ही यहाँ पधारे थे जिसके पश्चात् उनका सिंगापुर वापस लौटने का कार्यक्रम था। वे साधना की शुरूआत अपने शहर से ही करना चाहते थे। मालिक हँसे तथा मुझे तेन की लेंग को रामायण की उस किवदंती के बारे में बताने के लिये कहा, जब यह महासंग्राम समाप्त हो चुका था तथा युद्ध भूमि में रावण मरणासन्न अवस्था में पड़ा था तब राम लक्ष्मण को यह अंतिम उपदेश देते हुए कहते हैं जिसका सार यह है कि "नेक काम में देरी नहीं करना चाहिये"।

मैंने यह किवदंती तेन की लेंग को सुनाई इसके समाप्त होते ही तेन की लेंग जो अपने मित्रों में जॉनी के नाम से जाने जाते थे, ने साधना प्रारम्भ करने के लिये अपनी इच्छा प्रगट की तथा मालिक के आदेश पर मैंने उसे प्रथम सिटिंग दी। तेन की लेंग, टेंगलिंग हाल्ट रोड सिंगापुर।

तत्पश्चात् उन्होंने मालिक की सिंगापुर यात्रा के सम्बन्ध में रेड्डी से चर्चा की तथा मलक्का के लिये रवाना हो गये।

तत्पश्चात् हमने स्वादिष्ट भोजन का आनन्द लिया जिसे रेड्डी की

घरेलू नौकरानी गोविंदाम्मा ने तैयार किया था। गोविंदाम्मा को मालिक से अत्यन्त लगाव हो गया है। बेइब्रे की अनपुस्थिति में वह मालिक की हर जरूरत का ध्यान रखती हैं, उनके लिये खाना पकाना, उन्हें दूध देना, स्वयं अपने हाथों से उनके लिये खाना परोसना उनके कपड़े धोना इत्यादि। गोविंदाम्मा की मालिक से एकमात्र शिकायत यह है कि वे बहुत कम मात्रा में भोजन करते हैं, उनकी खुराक एक छोटे शिशु के लिये भी अपर्याप्त है। वह मालिक की देखभाल इस तरह करती हैं जैसे एक माँ अपने बच्चे की करती है। वह इस बात से भी अति प्रसन्न है कि हुक्के की भी जिम्मेदारी उन्हें ही मिली हुई है। वह हुक्के के कोयलों को सुलगाने का काम करती है। वह मालिक तथा उनकी जरूरतों के प्रति इतनी समर्पित है कि मैं तथा रेड्डी आपस में बात करते वक्त मजाक में उसे दूसरी मालकिन कहते हैं। जब हमने विनोदपूर्वक मालिक को यह जानकारी दी तो मालिक बोले कि वे उसके हृदय में प्रेम उमड़ता हुआ महसूस कर रहे हैं।

प्रेम के विषय पर बोलते हुये उन्होंने एक अभ्यासी के बारे में जिक्र किया, उन्होंने कहा, ''पश्चिम की एक अभ्यासी मुझे उसका नाम तो याद नहीं है, कुछ समय पूर्व मेरे पास शाहजहाँपुर आयी थी। उसी दिन मुझे पार्थसारथी का मलेशिया दौरे के सन्दर्भ में पत्र प्राप्त हुआ था तथा मैं उससे इसी यात्रा के विषय पर चर्चा कर रहा था। मुझसे बात करते–करते ही उसने अचानक रोना प्रारम्भ कर दिया तथा जब मैंने उससे उसके रोने का कारण पूछा तो वह बोली बाबूजी अब आपने पूर्व की तरफ ध्यान देना प्रारम्भ कर दिया है अतः मुझे आशंका है कि अब आप पश्चिम में कभी नहीं आयेंगे। देखो कितना प्रेम था उसके हृदय में। इस विचार मात्र से ही वह कितनी व्यथित हो गयी तथा रोने लगी थी। मैं चाहता हूँ कि सभी के हृदय में इसी तरह का सर्मपण होना चाहिये लेकिन कुछ ही व्यक्ति हैं जिनमें मालिक के प्रति प्रेम तथा सर्मपण की भावना परिलक्षित होती है।''

मालिक को पीनांग की हवाई यात्रा के कारण थकान महसूस हो रही थी अतः आज हम जल्दी ही रात्रि 10.30 बजे विश्राम के लिये अपने शयन कक्ष में चले गये। बारिश होने के कारण रात सर्द हो गयी थी बाद

में सर्दी और बढ़ गई थी।

15 अप्रैल 1977– शुक्रवार

सुबह 7.00 बजे सोकर उठने के पश्चात् मालिक तरोताजा नजर आ रहे थे। इस दौरे में अभी तक मालिक के स्वास्थ्य में कोई परेशानी नहीं आयी तथा हिन्दुस्तान से रवाना होने के पश्चात् से अभी तक उन्हें दवाइयों की भी कोई आवश्यकता महसूस नहीं हुई। मुझे जहाँ तक याद पड़ता है, 1974 की उनकी भयंकर बीमारी के पश्चात् दवाइयों के बिना रहने का उनका यह सबसे लम्बा समय है। यहाँ तक कि ''एन्टासिड'' जो कि रोजाना की झंझट है, की भी आवश्यकता महसूस नहीं हुई। उनका अच्छा स्वास्थ्य, उनका प्रफुल्लित रहना तथा उनकी वाक्पटुता, उनसे भेंट करने आने वालों के लिये तथा जो पिछले दस दिनों से उनके साथ हैं, उन सभी के लिये वास्तव में सुखद अनुभव है। मालिक ने स्वयं कहा कि वे ऐसा महसूस कर रहे हैं जैसे कि वे पूर्व की ही भाँति, मानसिक क्रिया कलाप करने में सक्षम हैं, यद्यपि यह बहुत छोटे पैमाने पर ही है। यहाँ के अधिकतर अभ्यासियों ने मेरी पुस्तकों ''इंडिया इन द वेस्ट'' तथा ''सहज मार्ग इन यूरोप'' का अध्ययन किया है। उपरोक्त वर्णित दोनों पुस्तकों में मालिक के 1972 तथा 1976 के यूरोप दौरे का विवरण दिया गया है, इस कारण अधिकांश अभ्यासी मालिक के गुणों के बारे में जानकारी रखते हैं। स्वाभाविक तौर पर वे हुक्के के बारे में भी जानते हैं। अतः मालिक के विषय में यहाँ पूर्व जानकारी थी, किन्तु उनकी उपस्थिति की वास्तविकता तो उनकी अपेक्षाओं से कहीं अधिक बढ़कर मिली।

तुन्कु अब्दुल्ला तथा उनकी पत्नी चेस्टेरीना सुबह 9.00 बजे मालिक से भेंट करने के लिये पधारे। तुन्कु आज सुबह रवाना हो रहे हैं, अतः जाने से पूर्व वह मालिक से विदा लेने के लिये आये थे, उन्हें वहाँ से फिलीपीन्स भी जाना है। अतः मालिक के सिंगापुर के लिये रवाना होने से पूर्व उनका वापस लौटना सम्भव नहीं था। चेस्टेरीना ने मालिक के साथ आधा घंटा व्यतीत किया तथा मालिक से सिटिंग प्राप्त करने के पश्चात् वह वहाँ से रवाना हो गयी।

पुआन सिरी जुने वुड सुबह 11.00 बजे मालिक से भेंट करने के लिये आयी तथा लम्बी चर्चा करने के पश्चात् उन्होंने मालिक से व्यक्तिगत सिटिंग प्राप्त की। तत्पश्चात् उनकी एक मित्र श्रीमती पुष्पबाला तिलक जो कि केरल की मूल निवासी हैं तथा मलेशिया में बस गयी हैं, मालिक से भेंट करने के लिये पधारीं। मेरे द्वारा उन्हें प्रथम सिटिंग दी गयी ।

इसके पश्चात् विश्राम का समय था। विश्राम करने के पश्चात् हम 6.00 बजे बालगोपाल के निवास की ओर रवाना हुये जहाँ लगभग पच्चीस अभ्यासी जिनमें 10 केलंग के अभ्यासी भी सम्मिलित थे, मालिक से भेंट करने के लिये हमारे पहुँचने से पूर्व ही वहाँ एकत्रित हो चुके थे। मालिक द्वारा उन्हें पच्चीस मिनट तक सामूहिक सिटिंग दी गयी जो बहुत अच्छी रही, इसमें अत्यंत शान्ति तथा गइरायी का अनुभव हुआ। इस दौरान मुझे भी अत्यंत गहराई का अनुभव हुआ तथा लगभग समाधि की अवस्था निर्मित हो गयी थी।

सामूहिक सिटिंग के पश्चात् मुझे श्रीमती के.वी.नाथन का प्रकरण अंतरिम अनुमति हेतु तैयार किये जाने का आदेश प्राप्त हुआ।

तत्पश्चात् हमने लज़ीज़ भोजन का आनन्द लिया जिसमें मालिक के पसंदीदा व्यंजन जैसे इडली, नारियल चटनी, गर्म चटनी तथा प्याज सांभर इत्यादि परोसे गये थे। भोजन में इसके अलावा भी अन्य लज़ीज़ व्यंजन परोसे गये थे किन्तु मालिक का ध्यान इन्हीं व्यंजनों की ओर था। मालिक ने मेरी ओर देखकर मुस्कुराते हुये मुझसे कहा "दक्षिण भारतीय व्यंजनों को देखकर मैं अपने आपको रोक नहीं पाता, तत्पश्चात् मालिक बोले आज भोजन इतना स्वादिष्ट बना है कि मैंने अपनी सामान्य खुराक से दुगना भोजन कर लिया है।" तथा गहरी सांस लेते हुए कहा "खैर दक्षिण भारतीय भोजन में यह विशेषता है कि यह आसानी से पच जाता है।"

अनेक नये सदस्यों द्वारा ध्यान प्रारम्भ किया गया है तथा के.वी.रेड्डी उन्हें प्रथम सिटिंग देने में व्यस्त थे। रात्रि 9.30 बजे हम बालगोपाल के निवास से पैतालिंग जाया, अपने निवास की ओर रवाना हुये। घर पहुँचकर मालिक ने आज के दिन का आखिरी हुक्का पिया तथा रात्रि 11.00 बजे हम विश्राम हेतु अपने शयन कक्ष में चले गये।

16 अप्रैल 1977– शनिवार

भोर के समय मालिक ने मुझे व्यक्तिगत सिटिंग दी जो पैंतीस मिनट तक चली। सिटिंग के पश्चात् मालिक बोले, ''मैंने तुम्हारी बुद्धिमत्ता को खोल दिया है।'' यह शायद कल की घटना का परिणाम है। कल जब मैं तुन्कु अब्दुल्ला की पत्नी चेस्टेरीना से मालिक की उपस्थिति में बात कर रहा था तब मालिक ने अचानक बीच में टोकते हुये मुझसे कहा, ''लालाजी तुम्हारी प्रशंसा कर रहे हैं तथा मुझसे कह रहे हैं कि अब इसकी बुद्धिमत्ता को खोल दो।'' इसी कारण आज सुबह मेरे प्रिय मालिक ने मुझ पर कृपा करके मुझे अपने आशीर्वाद से अनुगृहीत किया है।

मालिक रेड्डी के कार्य से अत्यंत प्रसन्न थे तथा प्रतिदिन उसके समर्पण की प्रशंसा करते थे। वे उसके ऊपर विगत एक सप्ताह से कार्य कर रहे थे ताकि उसे ब्रह्माण्ड मण्डल तक की पहुँच देने के लिये तैयार किया जा सके। मालिक बोले ''देखो इस देश में उसने कितनी सफलता अर्जित की है। इसके अलावा उसने नेपाल तथा अन्य देशों में भी, जिसकी मुझे ज्यादा जानकारी नहीं है कार्य प्रारम्भ किया है। तुम्हें उसके कार्य करने के तौर तरीके का अध्ययन करना चाहिये कि आखिर उसमें ऐसा क्या है जिससे उसे इतनी सफलता मिली है।''

आज सुबह मालिक ने उसका प्रकरण अपने हाथ में लिया तथा उसे ब्रह्माण्ड मण्डल तक की पहुँच दे दी गयी एवं सुबह 10.37 बजे उसे मिशन के प्रशिक्षक के रूप में कार्य करने हेतु पूर्ण अनुमति प्रदान कर दी गयी। तत्पश्चात् मालिक ने आराम पूर्वक अपने हुक्के का आनंद लिया। उन्होंने मुझे बताया ''यह कार्य मुझे सुबह 11.00 बजे तक पूर्ण करना था जबकि अभी 10.40 बजे हैं तथा कार्य पूर्ण हो चुका है। मैं तुम्हें जानकारी देना चाहता हूँ कि ऐसी सरल तथा प्रभावशाली पद्धति कहाँ मिलेगी जिसमें कार्य पूर्ण करने के लिये समय तक का निर्धारण किया जा सकता है, इसके लिये आवश्यकता है तो मात्र एक अचूक दृढ इच्छा–शक्ति की। एक विचार लो कि फलाँ–फलाँ कार्य फलाँ समय तक पूर्ण हो जाना चाहिये, और वह उस समय तक पूर्ण हो जायेगा। मुझे एक घटना याद है जब मुझे

कोई कार्य दिया गया था, कार्य क्या था यह मुझे अब याद नहीं है। मैंने एक समय सीमा निर्धारित कर ली कि यह कार्य 6.00 तक पूर्ण हो जाना चाहिये तथा देखा कि वह कार्य निर्धारित समय सीमा में पूर्ण हो गया। जैसा कि मैंने तुम्हें पहले बताया था कि जरूरत है मात्र एक अचूक दृढ इच्छा–शक्ति की, यहाँ तक कि सोते समय भी कार्य जारी रहता है तथा यह जारी रहना आवश्यक भी है अन्यथा कार्य करने के लिये समय ही कहाँ है। सोने के लिये जाने से पूर्व एक सुझाव दो कि फलां समय तक कार्य पूर्ण हो जाना चाहिये और वह पूर्ण हो जायेगा। इच्छा–शक्ति ऐसी होनी चाहिये कि हमारे सोते समय भी इसका कार्य जारी रहना चाहिये। यह अत्यन्त खेद का विषय है कि कोई इस तरह का प्रयास करके स्वयं इसे परखना ही नहीं चाहता जबकि मालिक कार्य के लिये हमें जरूरी शक्ति देते हैं लेकिन उसका उपयोग तो स्वयं हमें ही करना होता है। यह इतना सहज है कि मुझे इसकी सहजता पर भी आश्चर्य होता है, यह सब मेरे मालिक की कृपा है।''

सुबह 11.00 बजे के तुरन्त पश्चात् पुआन सिरी जुने वुड श्री डी. पी.श्रीवास्तव के साथ मालिक से भेंट करने के लिये पधारे। श्री श्रीवास्तव ने मालिक के साथ आधा घंटा व्यतीत किया तथा कुछ देर के लिये वे मालिक को अपने साथ अपने निवास पर ले गये। मालिक का उनके यहाँ जाना हमारे निर्धारित कार्यक्रम के अनुरूप नहीं था, अतः मैंने तथा रेड्डी ने इस पर अपनी नाराजगी प्रगट की। मालिक दोपहर 1.30 बजे वापस लौटे। यह हमारे सबके लिये उपवास का दिन था। दोपहर पश्चात् चार तमिलियिन मालिक से भेंट करने के लिये पधारे। उन्हें मालिक के आगमन की सूचना तथा सहज मार्ग के विषय में जानकारी, स्थानीय तमिल समाचार पत्र ''तमिल मालर'' से प्राप्त हुयी थी, जो मालिक के मलेशिया पहुँचने पर प्रकाशित हुयी थी। समाचार पत्र में दी गई अपर्याप्त जानकारी के आधार पर उन्होंने किसी तरह मालिक का पता लगा लिया तथा आज मालिक से भेंट करने आ पहुँचे। मालिक तक पहुँचाने के लिये उन्हें अनावश्यक ही मशक्कत करनी पड़ी क्योंकि समाचार पत्र में के.वी. रेड्डी

का पता गलत छप गया था। उन चारों व्यक्तियों द्वारा ध्यान प्रारम्भ कर दिया गया तथा मालिक के निर्देशानुसार मैंने उन्हें प्रथम सिटिंग दी। उनके नाम निम्नानुसार थे।

1) पी.मुन्नुस्वामी कुआलालम्पुर
2) कुमारी अन्ना लेचुमन (बहन श्री मुन्नुस्वामी)
3) श्रीमती सिन्ना पिल्लई (माताजी)
4) जी. शिवराजु (कुआलालम्पुर)

मालिक ने दोपहर में विश्राम किया तथा बेखटके एक घंटे तक सोते रहे । शाम 6.00 बजे हम सोमायाजुलू के निवास की ओर रवाना हुये जहाँ लगभग 20 अभ्यासी एकत्रित थे। कुआलालम्पुर में श्री सोमायाजुलु का निवास अति विशाल तथा आलीशान है जिसकी साज सज्जा हेतु आधुनिक फर्नीचर का उपयोग किया गया है। श्री सोमायाजुलु एयर इंडिया की कुआलालम्पुर ब्रांच के प्रबंधक हैं।

मालिक के निर्देश पर मैंने श्रीमती नाथन को एक व्यक्तिगत सिटिंग दी, जो उन्हें अग्रिम अनुमति देने के पूर्व की द्वितीय सिटिंग थी। उसी दौरान मालिक ने वहाँ उपस्थित अभ्यासियों को सत्संग कराया जिसकी अवधि पच्चीस मिनट की रही, तत्पश्चात् हमने लज़ीज़ भोजन का आनन्द लिया जिसमें मालिक के मुख्य पसन्दीदा व्यंजन दोसा, सांभर तथा चटनी भी परोसे गये थे। भोजन में चपाती तथा अन्य व्यंजन भी परोसे गये थे किन्तु सभी के पसन्दीदा व्यंजन दोसा के कारण अन्य व्यंजनों की तरफ किसी का ध्यान ही नहीं गया।

मलेशिया के अधिकतर अभ्यासी तमिल मूल के हैं अतएव यहाँ आने के पश्चात् मालिक निरन्तर दक्षिण भारतीय व्यंजनों का आनन्द ले रहे हैं, तथा कई स्थानों पर तो भोजन परोसने का अंदाज ठेठ तमिल पद्धति के अनुरूप था तथा भोजन केले के पत्तों पर परोसा गया था। पश्चिमी व्यंजनों में मालिक को मशरूम का सूप सर्वाधिक पसंद है जो रेड्डी के घर की व्यंजन सूची में अधिकांशतः पाया जाता है। मालिक ने प्रेम पूर्वक परोसे गये भोजन का आनन्द लिया। यहाँ आने के पश्चात् से मालिक निरन्तर

दोनों समय का भोजन कर रहे हैं तथा वास्तव में देखा जाय तो मालिक शाहजहाँपुर में अपने घर की अपेक्षा यहाँ पर चार–पाँच गुना अधिक खुराक ले रहे हैं। वैसे इसमें लेशमात्र भी संदेह नहीं है कि भोजन में परोसे गये व्यंजन अत्यंत लजीज थे तथा इसके अलावा दक्षिण भारतीय व्यंजन मालिक बड़े चाव से खाते हैं। वैसे अपने घर के बनिस्बत अधिक भोजन करने के पीछे कारण कुछ और ही है।

कुछ वर्ष पूर्व मालिक द्वारा ऐसा करने के पीछे क्या कारण है इसके बारे में इशारा किया गया था तथा मैंने भी इस पर ध्यान दिया है कि कुछ घरों में मालिक नाम मात्र के लिये खाते हैं तथा ऐसे कई स्थानों पर जहाँ मालिक को भोजन पर आमंत्रित किया जाता है वहाँ जाने के पश्चात् मालिक भोजन करने से स्पष्ट इन्कार कर देते हैं। इसी से जुड़ी एक घटना के अनुसार एक बार अलामेलूमंगापुरम् में आर.शेषाद्रि के निवास पर मालिक को भोजन पर आमंत्रित किया गया था। उस दौरान मालिक हमारे साथ "गायत्री" में ठहरे हुये थे तथा शाम 6.30 बजे उन्हें वहाँ के लिये रवाना होना था, लेकिन शाम चार बजे के पश्चात् से ही मालिक वहाँ जाने के विषय को लेकर विचलित होने लगे। इस दौरान कई मर्तबा उन्होंने मुझसे कहा, "मुझे वहाँ आमंत्रित अवश्य किया गया है लेकिन मैं जाना नहीं चाहता। वहाँ जाने से महज मेरे समय की बरबादी होगी।" लेकिन मैंने उन्हें समझाया कि जाना उचित रहेगा। अतः शाम 6.15 बजे वे कपड़े इत्यादि बदलकर जाने के लिये तैयार हो गये, उन्होंने अपना कोट पहना तथा घर से बाहर जाने के लिये उठ खड़े हुये। वे अपने कक्ष के द्वार तक ही पहुँचे होंगे कि अचानक वहाँ खड़े होकर उन्होंने अपने सिर को इधर–उधर हिलाया तथा दो–तीन बार हूँ–हूँ–हूँ की आवाज निकाली एवं वापस आकर अपने स्थान पर बैठ गये। उन्होंने अपनी टोपी उतार कर एक तरफ रख दी तथा मुस्कुराते हुये बोले, "लालाजी साहब कह रहे हैं कि शेषाद्रि के यहाँ जाना इतना आवश्यक नहीं है। अब मैं वहाँ नहीं जाऊँगा।" उनके इस निर्णय से मैं परेशानी में पड़ गया क्योंकि मालिक के वहाँ न जाने से सारा दोष हमारे मत्थे मढ़ दिया जायेगा। अतः कुछ देर

पश्चात मैंने पुनः प्रयास किया जिस पर वे वहाँ जाने के लिये राजी हो गये तथा शाम 7.00 बजे मैंने उन्हें अपनी कार से अलामेलूमंगापुरम के लिये रवाना किया। उनके जाने के पश्चात् हम कुछ अभ्यासियों के साथ भोजन करने के लिये बैठ गये।

अभी हम भोजन कर ही रहे थे कि मालिक घर वापस लौट आये तथा सीधे भोजन कक्ष में आकर मेरे बगल वाली खाली सीट पर बैठ गये एवं सुलोचना की ओर इशारा करते हुये बोले "बहू भूख लगी है, क्या मुझे भोजन नहीं कराओगी।" उनके बच्चों जैसे भोलेपन के अंदाज से भोजन माँगने की हरकत से हम गद्‌गद् हो गये। मैंने मालिक से पूछा कि क्या वे शेषाद्रि के यहाँ नहीं गये? यदि वे वहाँ गये थे तो उनके भूखे रहने का क्या कारण है? मालिक ने क्षणिक चिन्तन करने के पश्चात् कहा कि शेषाद्रि ने मुझे आमंत्रित अवश्य किया था तथा बहुत से व्यजंन भी बना कर रखे थे, लेकिन वहाँ भोजन करने की मेरी इच्छा नहीं थी। इस पर मैंने मालिक से पूछा कि उनके इस बर्ताव के पीछे क्या कारण था। वे बोले "यह व्यवहार की बात है, शेषाद्रि को यह जानकारी है कि मैं तुम्हारे घर पर ठहरा हुआ हूँ, अतः यह आवश्यक हो जाता है कि यदि वह मुझे आमंत्रित कर रहा है तो उसे आप सभी को भी आमंत्रित करना चाहिये अथवा उसे कम से कम तुम्हारे पिताजी को तो आमंत्रित करना ही चाहिये था। खैर तुम्हारे कहने पर मैं वहाँ चला तो गया लेकिन मैंने वहाँ भोजन नहीं किया तथा थोड़ी देर वहाँ रुकने के पश्चात् मैं वापस लौट आया।"

मैंने इस विषय पर चर्चा जारी रखते हुये मालिक से पूछा, आपके इस रवैये तथा व्यवहार का औचित्य क्या है?" इस पर मालिक हँसे और शान्त हो गये। मैंने उत्तर देने के लिये जोर डालकर कहा कि किसी का आमंत्रण स्वीकार कर, उसे सारी व्यवस्थाओं के झंझट में डालकर भोजन न करना कहाँ तक उचित है?

मालिक बोले, "निमंत्रण कई प्रकार के होते हैं। कुछ व्यक्ति मालिक को गुरु की दृष्टि से आमंत्रित करते हैं तथा भोजन इत्यादि कराते हैं। इसके अलावा उनका और कोई मकसद नहीं होता। दूसरे वे व्यक्ति

होते हैं कि जो यह सोचते हैं कि यदि वे गुरु को आमंत्रित नहीं करते तो लोग उनकी भर्त्सना करेंगे। मुझे आमंत्रित करने के पीछे व्यक्तियों का यह भी कारण होता है। कुछ व्यक्ति ऐसे भी होते हैं जो मालिक पर भी पैसा खर्च करने में संकोच करते हैं। उनके दिलो में मालिक के प्रति कोई प्रेम नहीं होता फिर भी महज औपचारिकतावश वे मालिक को आमंत्रित करते हैं। अतः ऐसे स्थानों पर मैं कैसे भोजन कर सकता हूँ? मान लो यदि मैं अपनी खुराक का दुगना भी खा लेता हूँ तो भी उनका कितना खर्च होगा? लेकिन फिर भी वे इस छोटे से खर्चे से बचते हैं। अतः इसी कारण से मैं ऐसे स्थानों पर भोजन करने से कतराता हूँ, यद्यपि ऐसे भी कुछ व्यक्ति होते हैं जो मालिक के प्रति प्रेम के कारण मुझे आमंत्रित करते हैं ऐसे स्थानों पर भोजन करने में मुझे प्रसन्नता होती है तथा ऐसे घरों में जो भी परोसा जाता है उसे मैं बड़े चाव से खाता हूँ। वहाँ मुझे इस बात से भी कोई फर्क नहीं पड़ता कि भोजन कैसा बना है? अतः जो भी परोसा जाये उसमें प्रेम होना आवश्यक है। ऐसे स्थानों पर तो मैं बिना निमंत्रण के ही चला जाता हूँ , ऐसे व्यक्ति से मुझे निमंत्रण की भी कोई अपेक्षा नहीं होती, मेरे हृदय मात्र से ही मुझे संकेत प्राप्त होने लगता है तथा मैं उसके पास जाने के लिये बेचैन हो जाता हूँ।''

भोजन के पश्चात् मालिक अभ्यासियों के साथ लगभग पन्द्रह मिनट तक बैठे रहे। सभी लोग शान्त बैठे हुये थे। कोई भी किसी से कोई बात नहीं कर रहा था, ऐसा महसूस हो रहा था, कि सभी मालिक की दिव्य उपस्थिति का आनन्द ले रहे थे। तत्पश्चात् हम वहाँ से रवाना होकर रात्रि 9.00 बजे अपने घर वापस लौट आये तथा रात्रि विश्राम के लिये शीघ्र ही अपने शयन कक्ष में चले गये।

17 अप्रैल 1977– रविवार

यद्यपि हम रात्रि में विश्राम के लिये शीघ्र अपने शयन कक्ष में चले गये थे तथापि मालिक ठीक से सो नहीं पा रहे थे। इस बीच रात्रि 1.00 बजे से पूर्व मालिक दो बार शौच के लिये उठे। प्रथम बार वे रात्रि 11.15 बजे तथा दूसरी मर्तबा वे ठीक 1.00 बजे से पूर्व उठे। दोनों ही मर्तबा उन्हें

शौच के लिये ले जाने के वास्ते मेरी नींद ठीक समय खुल गयी थी। रात्रि 3.15 बजे ऊँचे स्वर में मालिक की हाय राम – हाय राम की आवाज मेरे कानो में पड़ी। मैंने तुरन्त उठकर लाइट जलायी तथा देखा कि मालिक फर्श पर गिरे हुये हैं तथा उनके पैरों में चादर लिपटी हुयी है। सारा माजरा मुझे तुरन्त समझ में आ गया। वास्तव में मालिक शौच के लिये जाना चाहते थे तथा इसके लिये वे मुझे परेशान नहीं करना चाहते थे। अतः उन्होंने स्वयं बिस्तर से उठने का प्रयास किया, इसी प्रक्रिया के दौरान किसी प्रकार उनका पैर उस चादर में उलझ गया जो उन्होंने ओढ़ रखी थी, जैसे ही उन्होंने फर्श पर पैर रखा तो अपने वजन के कारण तथा फर्श के चिकने होने के कारण वे फिसल कर गिर पड़े। अपने आपको गिरने से बचाने के प्रयास में उनके बायें हाथ की कोहनी पलंग के कोने से टकरा गई तथा उनके बायें कंधे की नस खिंच गयी थी एवं वे तेज दर्द से कराह रहे थे। लगभग बीस मिनट तक मैंने स्वयं मालिक को उठाने के लिये सहायता करने का प्रयास किया, तत्पश्चात् के.वी. रेड्डी को आवाज लगायी तथा उनकी सहायता से मालिक को बिस्तर पर लिटाया। मालिक दर्द से कराह रहे थे, रेड्डी ने मालिक के दर्द वाले स्थान पर एक चायनीज मल्हम लगाकर सिंकाई की जिससे मालिक को थोड़ी राहत महसूस हुयी। अंततः सुबह 5.30 बजे मालिक को उठाया तथा सहारा देकर बिस्तर पर बिठाया।

सुबह लगभग 7.30 बजे रेड्डी मालिक की देखरेख के लिये कुआलालम्पुर जाकर बालगोपाल को अपने साथ ले आये। आज रविवार का दिन होने के कारण डॉक्टर को लाने के सारे प्रयास विफल हो गये। मुझे इस बात की जानकारी थी कि रविवार के दिन डॉक्टर मरीजों को देखने के लिये घर पर नहीं जाते। डॉक्टरी पेशे में यह निर्दयता की बीमारी सम्पूर्ण विश्व भर में फैल गयी प्रतीत होती है। चिकित्सकीय परीक्षण हेतु हम मालिक को अस्पताल ले जाना चाहते थे किन्तु मालिक ने इसके लिये स्पष्ट इन्कार कर दिया। डॉक्टरी पेशे के प्रति मालिक की वैमनस्यता से सारे विश्व के अभ्यासी भलीभाँति परिचित हैं। मालिक सारा दिन शान्त रहे यद्यपि उन्हें तीव्र पीड़ा हो रही थी। लेकिन मैंने गौर किया कि जब भी

उनकी कराह निकलती थी तब इसमें वे स्वयं लिप्त नहीं होते थे। ऐसा प्रतीत हो रहा था जैसे किसी गुड़िया को कराहने के लिये चाबी भर दी गयी हो। मेरे लिये यह सब अचंभित कर देने वाला था। मुझे ऐसा महसूस हो रहा था जैसे उनका दर्द स्वयं अपने आप से पुकार कर रहा है तथा मालिक का इससे कोई लेना देना नहीं है।

केलंग के अभ्यासियों का एक दल जिसमें विवेकानन्थन, उनकी पत्नी कमला तथा श्री के.वी. नाथन सुबह 11.00 बजे मालिक का हाल चाल पूछने के लिये के.वी. रेड्डी के निवास पर पहुँचे तथा दोपहर 3.00 बजे तक वहीं रहे। सुबह 11.45 बजे मैंने श्रीमती नाथन को अंतिम सिटिंग दी तथा मालिक के निर्देशानुसार उन्हे अंतरिम अनुमति प्रदान कर दी गयी। मालिक द्वारा हस्ताक्षरित प्रमाण पत्र स्वयं मालिक द्वारा उन्हें प्रदान किया गया। अभ्यासियों की उपस्थिति से मालिक प्रसन्नचित महसूस कर रहे थे तथा ऐसा प्रतीत हो रहा था कि दर्द की ओर से उनका ध्यान बँट गया है।

शाम 4.30 बजे बालगोपाल अपनी पत्नी सोमायाजुलु के साथ पधारे। उनके साथ उनका चचेरा भाई भी आया था जो पेशे से डॉक्टर था। उसने मालिक का एक्सरे के कराने का सुझाव दिया ताकि हड्डी टूटने अथवा मांसपेशियों के खिंचाव के बारे में स्पष्ट जानकारी मिल सके। अतः हम मालिक को समीप ही स्थित विश्वविद्यालय के चिकित्सालय में ले गये। हमें एक्सरे के लिये इन्तजार करना पड़ा। मालिक के बाँये हाथ में स्लाइंज लगी हुयी थी, मैं मालिक को व्हील चेयर पर रेडियालॉजी कक्ष तक ले गया तथा बड़ी मशक्कत करने के पश्चात् उनकी कमीज एवं बनियान उतारी। तत्पश्चात् स्लाइंज निकाली गयी। मैंने डॉक्टर को ध्यान पूर्वक बाँये कंधे का एक्सरे लेने हेतु आग्रह किया, डॉक्टर ने मुस्कुराते हुये कहा, "आप निश्चिंत रहिये यह मलेशिया का सर्वेश्रेष्ठ चिकित्सालय है तथा यहाँ पर सभी उच्च प्रशिक्षण प्राप्त विशेषज्ञ हैं। अतः हमें सब जानकारी है कि हमें क्या करना है।" एक्सरे के लिये जाते वक्त किसी को भी कक्ष के अन्दर रुकने की अनुमति नहीं थी। अतः मुझे डॉक्टर द्वारा बाहर जाने के लिये निर्देशित किया गया।

लगभग आधा घंटे पश्चात् मालिक को व्हील चेयर पर कक्ष के बाहर लाया गया। उन्हें व्यवस्थित कपड़ों में देखकर हमें प्रसन्नता हुयी। मालिक प्रसन्न नजर आ रहे थे। डॉक्टर ने हमें थोड़ी देर इन्तजार करने के लिये कहा तथा पन्द्रह मिनट पश्चात् गीली एक्सरे प्लेट के साथ बाहर आया और उसे (एक्सरे प्लेट को) मुझे दिखाते हुये मुस्कुरा कर बोला ''कोई फ्रेक्चर नहीं है।'' जैसे ही मेरी नजर एक्सरे पर पड़ी मैं यह देखकर दंग रह गया कि मेरे द्वारा उन्हें सचेत करने के बावजूद उनके द्वारा बाँये कंधे की अपेक्षा दाँये कंधे का एक्सरे ले लिया गया था। मैंने डॉक्टर को इसकी जानकरी दी। वह अपनी इस मूर्खतापूर्ण हरकत पर खिसियाकर रह गया तथा मुझसे क्षमा माँगी। मालिक को पुनः रेडियोलॉजी कक्ष ले जाने के अलावा हमारे पास कोई विकल्प नहीं था। अतः मालिक को कमीज उतारने से लेकर एक्सरे तक की दर्दनाक प्रक्रिया से पुनः गुजरना पड़ा।

आधा घंटे के पश्चात् मालिक कक्ष से बाहर आये तथा उसके पन्द्रह मिनट पश्चात् एक्सरे प्लेट तैयार हुयी। डॉक्टर ने बाहर आकर सूचना दी कि कोई हड्डी वगैरह नहीं टूटी है, मात्र मांसपेशियों में थोड़ा खिंचाव है। अतः हम निश्चिंत हो गये। कंधे के ऊपर लगाने के लिये कुछ मल्हम इत्यादि सुझाया गया। तत्पश्चात् हम बेफिक्र हो घर वापस लौट आये।

हमारे घर वापस पहुँचने के तुरन्त पश्चात् पाँच अभ्यासियों का दूसरा दल जिसमें कमला भी थी, मालिक का हाल चाल जानने के लिये के.वी. रेड्डी के घर पहुँचा। कमला अपने साथ मालिक के लिये पोंगल तथा गन्ने का रस लेकर आयी थी। पोंगल की मात्रा इतनी अधिक थी कि दस से भी ज्यादा व्यक्ति इसे पेटभर खा सकते थे। केलंग के अभ्यासियों के इस दल ने रात्रि 8.30 बजे वहाँ से रवाना होने से पूर्व मालिक से एक सिटिंग प्राप्त की। के.वी. रेड्डी तथा मैंने आपस में विचार विमर्श कर यह निर्णय लिया कि मालिक के सिंगापुर से प्रस्थान के कार्यक्रम को एक दिवस के लिये अर्थात् 20 अप्रैल बुधवार तक बढ़ा दिया जाये।

आज का हमारा सारा दिन केलंग के लिये निर्धारित किया गया था तथा सुबह 9.00 बजे के पश्चात् हमें वहाँ के लिये रवाना होना था तथा

वहाँ से पैतालिंग जाया (पी.जे.) वापस लौटते वक्त हमें पी.जे. हिन्दू युवा संगठन की एक बैठक में सम्मिलित होना था, जिसे हमने स्वाभाविक रूप से मालिक की अस्वस्थता को ध्यान में रखते हुए निरस्त कर दिया था। यद्यपि केलंग के अभ्यासियों के दो दल जिनके पास अपने स्वयं के साधन, कार इत्यादि उपलब्ध थे, आज यहाँ पहुँचे। हमें जानकारी मिली कि केलंग के लगभग चालीस अभ्यासी किसी न किसी कारणवश पी.जे. नहीं आ सके।

यह भी हमारा दुर्भाग्य ही था कि आज के कार्यक्रम में हमारी मलेशिया के उपप्रधानमंत्री डॉ. महाथिर मोहम्मद से निर्धारित बैठक में हम उपस्थित नहीं हो सके। इस बैठक के आयोजन के लिये तुन्कु अब्दुल्ला को अत्यंत प्रयास करना पड़ा था तथा उनकी पत्नी चे उग्कु चेस्टेरीना ने आज सुबह ही इसकी पुष्टि की थी तथा निर्धारित कार्यक्रम अनुसार सुबह 8.00 डॉ. महाथिर की कार भी मालिक को लेने के लिये यहाँ पहुँच गई थी लेकिन बैठक के निरस्त होने के कारण उसे वापस भेज दिया गया।

रात्रि 10.30 बजे मालिक ने एक दर्द निवारक गोली ली तथा सोने के लिये अपने शयन कक्ष में चले गये। गोली का असर समाप्त होते ही भयंकर दर्द के कारण मालिक की नींद खुल गई। डॉक्टर द्वारा उन्हें दो गोली लेने की सलाह दी गई थी, लेकिन मालिक ने इसे लेने के लिये इन्कार कर दिया। मैंने प्रयास करके उन्हें दूसरी गोली दी जिसके लेने के पश्चात् वे अगली सुबह तक निश्चिंत सोते रहे।

18 अप्रैल 1977 – सोमवार

मालिक सुबह देर से सोकर उठे तथा दैनिक नित्कर्म इत्यादि से निपटकर तैयार होने में उन्हें सुबह के 9.30 बज गये। आज सुबह से ही मालिक अपने विचारों में डूबे हुये थे। उनकी आँखों में देखने पर ऐसा प्रतीत हो रहा था जैसे वे रेड्डी के घर में न होकर किसी अन्य स्थान पर हैं। देरी से उठने के कारण उनके हुक्के का समय भी एक घंटा आगे खिसक गया था। अतः वे बड़े अनमने मन से हुक्का पी रहे थे। उन्होंने हुक्के की नली को बड़े बेतरतीब ढंग से पकड़ रखा था तथा हुक्के के मुँहाने से छोटे–छोटे कश खींच रहे थे। ऐसा महसूस हो रहा था कि उन्हें

हुक्का पीने में आनन्द नहीं आ रहा था जबकि दिन की शुरूआत का पहला हुक्का वे अत्यंत मौज के साथ पीते हैं। मैंने उन्हें अनेक मर्तबा यह कहते सुना है, ''जो मजा दिन के पहले हुक्के में आता है वह मजा बाद वाले हुक्के में नहीं रहता, इसमें हल्का नशा सा रहता है।'' मुझे लगा शायद आज के हुक्के में कुछ कमी रह गयी होगी, लेकिन मालिक से पूछने पर मालूम हुआ कि सब कुछ ठीक ठाक है। वे बोले यह ठीक से खिंच रहा है, कोयला भी ठीक तरह से रखा हुआ है तथा सुलग भी रहा है, चिलम से धुआँ भी ठीक तरह से निकल रहा है। अतः मैं मालिक को स्वयं पर छोड़कर बगीचे में घूमने निकल गया। इतनी सुबह भी वातावरण में अत्यंत उमस तथा गर्मी महसूस हो रही थी।

सुबह 11.00 बजे पुआन सिरी जुने वुड मालिक से भेंट करने के लिये रेड्डी के निवास पर पहुँचीं, उनके यहाँ आने से मालिक का अपने गिरने की घटना के चिन्तन से थोड़ा ध्यान बंट गया। वह दोपहर के बाद तक मालिक के साथ गुफ्तगू करती रहीं तथा उन्होंने अपने व्यक्तिगत जीवन के विभिन्न मुद्दों पर मालिक से मार्गदर्शन प्राप्त किया। दोपहर भोजन के पश्चात् मालिक ने देर तक विश्राम किया तथा जब बालगोपाल उनका हालचाल पूछने के लिये पधारे तभी उनकी नींद खुली। मेरे एक मित्र पी.जी.शेषाद्रि, श्री पी.ए.गोपालन का ज्येष्ठ पुत्र मलेशिया में आयोजित भारतीय व्यापार मेले में भाग लेने के लिये आये हैं। वे भी मालिक से भेंट करने के लिये रेड्डी के घर पधारे तथा उन्होंने लगभग दो घंटे का समय हमारे साथ व्यतीत किया।

शाम को मालिक ने सामूहिक सत्संग कराया, जिसमें लगभग तीस अभ्यासी उपस्थित थे। इन अभ्यासियों में केलंग के भी कुछ अभ्यासी सम्मिलित थे, तत्पश्चात् रात्रि 8.00 बजे से 9.00 बजे तक मलेशिया के प्रशिक्षकों की प्रथम बैठक आयोजित की गयी। मलेशिया के चारों प्रशिक्षक, के.वी. रेड्डी, के.विवेकानन्थन, श्रीमती बालगोपाल तथा श्रीमती के.वी. नाथन इस बैठक में उपस्थित थे। मेरे द्वारा आध्यात्मिक कार्य करने के तौर तरीके पर अपना सामान्य वक्तव्य प्रस्तुत किया गया तथा उन्हें यह जानकारी भी

दी कि इसे किस प्रकार से किया जाना चाहिये। तत्पश्चात् मिशन के साहित्य की उपलब्धता के विषय पर भी चर्चा की गयी तथा इसके सम्बन्ध में लिये गये कुछ निर्णयों पर मालिक की अनुमति प्राप्त की गयी।

रात में सादा भोजन करने के पश्चात् मालिक हुक्का गुड़गुड़ा रहे थे। वे सामान्य लग रहे थे। जैसे कि वे अक्सर रहते हैं वे उसी अनुरूप बर्ताव कर रहे थे, वही वाक्पटुता तथा चिरपरिचित अंदाज में गपशप करने में व्यस्त थे। उन्होने रेड्डी को बताया कि किस तरह सन् 1945 में उन्होंने मिशन की शुरूआत की थी, उस समय वे अकेले थे। मात्र कुछ सहायक जैसे ईश्वर सहाय, श्री हरिहर सहाय, श्री रामचंद्र सक्सेना इत्यादि उनके साथ थे। इन चन्द व्यक्तियों को साथ लेकर उन्होंने लालाजी महाराज के संदेश को समूचे भारत वर्ष में प्रचारित करने में कैसे जद्दोजहद् की, इसकी शुरूआत दक्षिण भारत से हुयी। मालिक ने कहा,'' लालाजी ने मुझे दक्षिण जाने का आदेश दिया जहाँ से मेरा कार्य प्रारम्भ हुआ।'' मालिक ने अपनी बात को जारी रखते हुये रेड्डी को जानकारी दी कि किस तरह मिशन की पुस्तकें लिखी गईं। मालिक बोले, ''साहब! उस वक्त मिशन के पास कोई साहित्य उपलब्ध नहीं था, लालाजी के मात्र कुछ दस्तावेज उपलब्ध थे, क्योंकि उनकी एक नौकरानी द्वारा उनका सम्पूर्ण साहित्य एवं लेख इत्यादि को व्यर्थ के कागजात समझकर एक रद्दी वाले को बेच दिया गया था। मैंने इस पर गम्भीरता पूर्वक मनन किया। मैं इसे लेकर अत्यंत चितिंत था, क्योंकि उन दिनों मिशन में कोई भी ऐसा व्यक्ति उपलब्ध नहीं था, जिसमें लिखने की क्षमता हो। उन दिनों मिशन में जो व्यक्ति थे उनमें एक लेख तक लिखने की क्षमता नहीं थी, तो उनसे पुस्तकें लिखने की अपेक्षा कैसे की जा सकती थी? और साहब जहाँ तक मेरा प्रश्न है, तो मैं तो पढ़ा लिखा हूँ नहीं तथा मैंने तो कभी कल्पना भी नहीं की थी कि मैं कभी कुछ लिख पाऊँगा। एक दिन मैं इसी पशोपेश में गम्भीरता पूर्वक चिन्तन में डूबा हुआ था तथा मास्टर साहब ईश्वर सहाय जी मेरे साथ बैठे हुये थे, तभी लालाजी साहब ने मुझसे कहा कि मेरी संतुष्टि के लिये मिशन में पर्याप्त साहित्य उपलब्ध रहेगा। तत्क्षण ही ऊपर से इबारत उतरना

आरम्भ हो गयी जो मुझे बोली जा रही थी तथा मुझे उसे पेपर पर लिखना था। जहाँ तक मुझे याद है दस उसूलों की पुस्तक की सम्पूर्ण इबारत की व्याख्या मुझे दो–तीन चरणों में प्राप्त हो गयी थी। भाई यह बात तो सच है कि मैं थक जाता था और एक बैठक में काम नहीं कर पाता था, यद्यपि उन दिनों मैं काफी स्वस्थ था, फिर भी सम्पूर्ण कार्य एक ही बैठक में कर पाना मेरे लिये सम्भव नहीं था। सम्पूर्ण पुस्तक की व्याख्या मुझे ऊपर से प्राप्त हुयी है, मेरे विचार से यह सबसे अच्छी पुस्तक है, मैं दस उसूलों की व्याख्या से सम्बन्धित पुस्तक के बारे में चर्चा कर रहा हूँ। लेकिन यह अत्यंत ही खेद का विषय है कि चंद व्यक्तियों द्वारा ही इसे सराहा गया है। सम्भवतः बहुत से व्यक्ति पुस्तक खरीदते हैं, लेकिन उनमें से कुछ ही हैं जो इसका अध्ययन करते हैं। यह भी मेरी जानकारी में है कि अपनी सहज मार्ग पत्रिका को पढ़ने वालों की संख्या भी बहुत कम है। इसी से हम अनुमान लगा सकते हैं कि हमारे अभ्यासियों की साहित्य के प्रति कितनी रुचि है। यह वास्तविकता है कि "सत्य का उदय" पुस्तक का आधा अंश मेरे द्वारा लिखा गया है तथा बाकी के लिये मैंने ऊपर से सहायता प्राप्त की। मैं चाहता हूँ कि मिशन का प्रत्येक अभ्यासी मिशन के साहित्य का बारम्बार अध्ययन करे। हमारी सैद्धांतिक जानकारी पुख्ता होनी चाहिये तथा यह भी अत्यंत आवश्यक है कि मिशन के प्रशिक्षक को सहज मार्ग की सैद्धांतिक जानकारी में परिपक्व होना चाहिये तभी हम इच्छुक व्यक्तियों से इसके सम्बन्ध में बात कर सकेंगे तथा उनके प्रश्नों का उत्तर दे सकेंगे।"

विश्राम के लिये अपने शयन कक्ष में जाने में हमें रात्रि के बारह बज गये। बिस्तर पर लेटने के पश्चात् भी मालिक चैन से नहीं सो सके तथा रात भर बेचैन रहे यद्यपि उनके बाँयें कंधे की सूजन अत्यंत कम हो गयी थी।

19 अप्रैल 1977 – मंगलवार

सुबह उठने के पश्चात् मालिक के कंधे में भयंकर दर्द हो रहा था। मैंने उनके कंधे की तेल मालिश की तथा डॉक्टर द्वारा सुझायी गई मलहम

लगाने के साथ–साथ गर्म सिंकाई भी की। सुबह 9.00 बजे तक मालिक सामान्य हो गये। मैंने उनका हुक्का तैयार किया तथा जब हमें तसल्ली हो गयी कि वे आराम में हैं, तब रेड्डी मुझे आधे घंटे के लिये अपने कार्यालय में ले गये। वहाँ से हम भारतीय व्यापार मेले में पहुँचे, जहाँ मैंने पी.जी. शेषाद्रि से भेंट की। शेषाद्रि ने हमें मेले का भ्रमण करवाया। तत्पश्चात् हम सुबह 11.00 बजे घर वापस लौट आये। दोपहर के भोजन के पश्चात् मैंने मालिक के कंधे की पुनः मालिश एवं सिंकाई की। आज का सारा दिन शान्ती से व्यतीत हुआ।

शाम 4.00 बजे के पश्चात् लगभग दो घंटे तक तेज बारिश होती रही। रेड्डी ने मालिक को जानकारी देते हुये बताया कि वर्ष में लगभग आठ महीने शाम के वक्त 4.00 बजे से 6.00 बजे के मध्य यहाँ रोजाना बारिश होती है, जिसके कारण मलेशिया में वर्ष भर सफाई के साथ–साथ चारों ओर हरियाली रहती है ।

हम शान्ति से बैठे हुये थे तथा लाइट वगैरह भी अभी नहीं जलायी गयी थी। शाम के ठीक 6.00 बजे बारिश बन्द हो गयी। तभी अचानक मालिक ने मुस्कुराते हुये अत्यन्त भोलेपन से मुझसे कहा "देखो जब भी मैं अकेला होता हूँ मेरा हुक्का मुझे एक व्यक्ति के रूप में दिखाई पड़ता है तथा इसी विचार मात्र से मुझे एक साथी का आभास होता है।" यह मेरे लिये संकेत था कि उन्हें हुक्के की याद सता रही है तथा उन्हें चिलम फूँकना है। मालिक के आकर्षक व्यक्तित्व का यह अनोखा अंदाज है कि वे किसी भी चीज के लिये शायद ही कभी सीधी माँग करते हों। मैंने उन्हें कभी भी किसी भी चीज की सीधी मांग करते हुए नहीं देखा तथा जब भी मुझे यह आभास होता है कि उन्हें किसी चीज की आवश्यकता है, जब मैं उनसे इसके लाने के बारे में पूछता, तब सामान्यतया उनका एक ही जबाव होता था। वे कहते "यह तुम्हारा विचार है! यदि तुम चाहते हो तो तुम ला सकते हो।" कई मर्तबा तो वे ऐसा बर्ताब करते जैसे उन्हें इसकी आवश्यकता ही नहीं है तथा कहते, "रहने दो अब मुझे इसकी क्या आवश्यकता हो सकती है ?"

भोजन को लेकर भी वे इसी तरह का व्यवहार करते थे। वे कभी भी नहीं कहते थे कि उन्हें भूख लगी है, वे निरन्तर, व्यक्तियों से बातचीत में व्यस्त रहते हैं तथा सबके खाना खा लेने तक इन्तजार करते हैं। घर में भोजन करने से पूर्व भी उनका यही नियम है कि वे सबके भोजन करने के पश्चात् ही स्वयं भोजन करते हैं। भ्रमण के दौरान भी वे शायद ही कभी पहले भोजन करते हों। या तो वे सबके भोजन करने के पश्चात् भोजन करते हैं अथवा सबके साथ। यदि मैं कभी उन्हें स्मरण कराता हूँ कि उन्हें भोजन में देरी हो रही है तथा उन्हें भोजन कर लेना चाहिये, वे तुरन्त एक प्यारी मुस्कान से जबाव देते, "उन्हें भूख नहीं है। अलबत्ता वे कहते तुम अभी जवान हो तथा तुम्हें बहुत सा कार्य भी करना है। अतः तुम्हें डटकर भोजन करना चाहिये एवं उल्टे मुझे ही कहते कि देरी हो रही है, तुम्हें विश्राम भी करना है तथा अगले दिन तुम्हें बहुत सा कार्य भी करना है। अतः तुम भोजन कर लो। मैं तुम्हारे साथ बैठूँगा लेकिन भोजन नहीं करूँगा।"

डायनिंग टेबल पर बैठने के पश्चात् जहाँ मैं सामान्यतया मालिक के बगल में ही बैठता हूँ (जब हम विदेश के दौरे पर साथ होते हैं) मैं मालिक को टेबल पर परोसे गये व्यंजनों को दिखाकर तथा उसके स्वाद के बारे में जानकारी देकर उन्हें प्रेरित करता हूँ कि वे इसे चख भर लें तथा जब वे इसके लिये राजी हो जाते हैं तो अक्सर मैं उनका चश्मा निकाल कर उन्हें देता हूँ। वे बड़े करीने से चश्मा चढ़ाते हैं तथा डायनिंग टेबल पर नजरें घुमा कर देखते हैं कि उनके सामने क्या परोसा गया है। तत्पश्चात् अत्यंत शालीनता पूर्वक उसे चखने वाले अंदाज में एक चम्मच में लेकर उसे खाते हैं। वे कभी भी एक कौर भी हड़बड़ी में नहीं खाते, उनके लिये प्रत्येक वस्तु का एक महत्व होता है। ऐसा कुछ भी नहीं है जो उनकी नजर में तुच्छ अथवा महत्वहीन हो। भोजन चख लेने के पश्चात् मालिक सकुचाते हुये मुस्कुराकर कहेंगे, "यह अत्यंत खेद पूर्ण है कि मेरे लिये इतना अधिक भोजन तैयार किया गया है। भई अब इतनी अधिक मात्रा में तो मैं खा नहीं सकता लेकिन भोजन व्यर्थ नहीं होना चाहिये। अतएव मैं एक चम्मच इसमें से तथा एक चम्मच उसमें से ले लेता हूँ। बस

मेरे लिये इतना ही पर्याप्त है क्योंकि साहब सम्भवत मैं इससे अधिक भोजन कर ही नहीं सकता, लेकिन पार्थसारथी यह भोजन व्यर्थ नहीं होना चाहिये। तुम सब जवान् हो अतः तुम सभी को दो गुना भोजन करना चाहियें। स्मरण रहे कि इस तरह का भोजन तुम्हें प्रतिदिन कोई नहीं कराने वाला। आज लालाजी की कृपा से यह उपलब्ध है, अतः इसे आनन्द पूर्वक ग्रहण करो।''

यदा–कदा ऐसा भी होता कि मालिक को प्यास लगती। तब मालिक स्पष्ट रूप से यह नहीं कहते थे कि उन्हें एक ग्लास पानी चाहिये। वे अत्यंत गोल–मोल अंदाज में इशारा करेंगे जैसे कि वे कहेंगे, ''अभी मेरा पानी पीना बेकार है। यदि अभी मैंने पानी पिया तो मुझे पुनः शौचालय जाना पड़ सकता है तथा तुम्हें पुनः परेशानी उठानी पड़ेगी।'' उनके इस इशारे से मुझे यह अनुमान लगाना होता था कि उन्हें प्यास लगी है तथा उन्हें एक गिलास पानी लाकर देना होता था और वे उसे पी लें इसके लिये प्रयास करने पड़ते थे। अनेक अवसर ऐसे भी आये जब मैं उनकी आवश्यकता को समझ नहीं पाया। मैं इतना मूर्ख था कि उनके द्वारा दिये गये संकेतों के बावजूद भी समझ नहीं सका कि उन्हें किस चीज की आवश्यकता है। इससे मुझे ज्ञात हुआ कि वे अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति हुये बगैर भी लम्बे अंतराल तक रह सकते हैं। किसी भी चीज की आवश्यकता होने का आभास होने पर वे इसके लिये संकेत देते हैं। ऐसा प्रतीत होता है कि किसी भी चीज की आवश्यकता का आभास उनके मनस की गहरायी से सतह पर आता है तथा वे तुरन्त ही गोल मोल शब्दों में इसके लिये संकेत करते हैं। यह संकेत उनके इर्द–गिर्द रहने वालों के लिये होता है, ताकि वे उनकी आवश्यकता को समझकर तुरत फुरत इसे पूरी कर दें। यदि वे इसे उपलब्ध करा देते हैं तो मालिक उन्हें उपलब्ध करायी गयी वस्तु को स्वीकार कर लेते हैं। यदि उनके इर्द–गिर्द वाले सचेत नहीं हैं तथा उनके द्वारा उनकी आवश्यकता के लिये दिये गये संकेत मात्र को समझने में उनसे चूक हो गयी, तब मालिक उसके बगैर ही रह जाते थे तथा कुछ देर पश्चात् वे स्वयं ही भूल जाते थे कि उन्हें

किस चीज की आवश्यकता थी जब तक कि उन्हें पुनः इसका आभास न हो। अतः उन सौभाग्यशाली व्यक्तियों को, जिन्हें मालिक' की व्यक्तिगत सेवा का अवसर प्राप्त था, हर समय सचेत रहना पड़ता था। हमेशा उन्हीं के विचारों में मग्न रहना, उनके द्वारा बोले जा रहे शब्दों को ध्यान पूर्वक सुनना, उनकी ओर टकटकी लगाये रखना अर्थात् यदि वह सेवा के अवसर को व्यर्थ नहीं जाने देना चाहता, तो उसे अपने स्वयं को भुलाकर, अपने आपको, अपने स्वयं के विचारों से पूर्णतया मुक्त रखना होता था।

मैंने मालिक का हुक्का तैयार किया तथा इसके कुछ गहरे कश खींचने के पश्चात् मालिक एकदम तरोताजा हो गये। मैंने अक्सर देखा है कि हुक्के का मालिक पर तेज असर होता है तथा इसके कश खींचने के पश्चात् मालिक ऐसे खिल उठते हैं जैसे गरमी में मुरझाया पेड़ शाम को इसमें पानी डालने के पश्चात् खिल उठता है। मालिक उन्हें घेर कर बैठे अभ्यासियों से चर्चा में व्यस्त थे। उनमें से एक व्यक्ति ने सुझाव दिया कि अब मालिक को विश्राम कर लेना चाहिये। इस पर मालिक ने हँसते हुये कहा कि मैं आप सबको एक कहानी सुनाता हूँ। एक दिन एक राक्षस अपने घर में विश्राम कर रहा था, उसी दौरान कोई आगंतुक उससे मिलने उसके घर पहुँचा। उसने देखा कि द्वार बन्द है। उसने द्वार पर दस्तक दी, द्वार खुल गया तथा उसे अन्दर प्रवेश करने की अनुमति मिल गयी। अन्दर पहुँचकर जब उसने राक्षस के कक्ष में प्रवेश किया तो देखा कि राक्षस बिस्तर पर आराम से लेटा है। इस पर आंगतुक को आश्चर्य हुआ कि दिन में राक्षस के इस प्रकार आराम से लेटे रहने के पीछे क्या कारण हो सकता है। उसने राक्षस से इसकी वजह पूछी, राक्षस ने अट्टहास करते हुये कहा, कि मेरा परिवार अब बहुत बड़ा हो गया है, मेरी असंख्य संतानें हैं जो मेरे लिये मेरा राक्षसी कार्य करना चाहती हैं, अतएव अब मैं थोड़ा विश्राम कर सकता हूँ। इस छोटी सी कहानी को समाप्त कर मालिक हँसते हुए विनोदपूर्वक बोले, "मैं भी तभी आराम कर सकता हूँ जब मेरे परिवार के सदस्य मालिक के कार्य को करने के योग्य हो जायें, यद्यपि कुछ तो इसके लिये तत्पर हैं।" उनके इस विनोद के पीछे दर्द तथा निराशा की झलक

स्पष्ट दृष्टिगोचर हो रही थी।

रेड्डी ने मालिक से अनुरोधपूर्वक आग्रह किया कि वे अपनी सुविधानुसार पुनः मलेशिया भ्रमण पर अवश्य पधारें। इस पर मालिक मुस्कुरा भर दिये लेकिन कुछ बोले नहीं। इसके थोड़ी देर पश्चात् उन्होंने मुझसे हिन्दी में कहा "मैं अब बहुत बूढा तथा कमजोर हो गया हूँ तथा विदेश यात्रा के उपयुक्त नहीं रह गया हूँ लेकिन मैं एक मर्तबा पुनः यूरोप अवश्य जाना चाहता हूँ ताकि स्वयं तसल्ली कर सकूँ कि कार्य व्यवस्थित रूप से चल रहा है। तत्पश्चात् आप सभी की यह जिम्मेदारी रहेगी कि सारा कार्य व्यवस्थित रूप से चलता रहे। लेकिन यह आवश्यक है कि एक मर्तबा पुनः यूरोप की यात्रा की जाये, यद्यपि यह कब होगी इसके सन्दर्भ में अभी कुछ भी कहना जल्दबाजी होगी। इस पर बाद में विचार किया जायेगा।"

चे उंग्कु चेस्टेरीना मालिक से भेंट करने के लिये रेड्डी के घर पहुँचीं, वह अत्यंत उदास थी क्योंकि कल मालिक को सिंगापुर के लिये प्रस्थान करना था। उन्होंने मालिक से व्यक्तिगत सिंटिग प्राप्त की तथा उनसे विदा लेकर शाम लगभग 6.30 बजे वहाँ से रवाना हो गयीं। उनके जाने के तुरन्त पश्चात् पच्चीस अभ्यासियों का एक बड़ा दल मालिक से भेंट करने के लिये रेड्डी के यहाँ पहुँचा। मालिक ने अभ्यासियों के दल को तीन छोटे दलों में विभाजित किया तथा मिशन के नवनियुक्त प्रशिक्षक विवेकानन्थन, श्रीमती बालगोपाल तथा श्रीमती नाथन से एक–एक दल को लेकर अभ्यासियों को सिटिंग देने हेतु निर्देशित किया। तत्पश्चात् प्रसाद का वितरण किया गया। रात्रि 9.00 बजे सभी अभ्यासी वहाँ से रवाना हो गये, उनके जाने के पश्चात् मालिक ने रात्रि भोजन किया।

रात्रि भोजन के पश्चात् मालिक ने अपने आज के दिन के अंतिम हुक्के को गुड़गुड़ाते हुये कुण्डलिनी के संदर्भ में जानकारी दी। उन्होंने रेड्डी से कहा, "मुझे समझ में नहीं आता कि लोग कुण्डलिनी के पीछे इतना क्यों पड़े हैं। यद्यपि इसमें कोई संदेह नहीं है कि इसमें शक्ति तो बहुत है, लेकिन इसका आध्यामिकता से कोई लेना देना नहीं है। पता नहीं लोग

शक्ति के पीछे इतना क्यों भागते हैं?'' शक्ति की आवश्यकता तो उसे होती है जिसे अकेले कार्य करना पड़ता है। और तो और, लोगों की मूर्खता देखो कि वे समझते हैं कुण्डलिनी की शक्ति ही सर्वाधिक शक्तिशाली है। लेकिन केवल मैं आपको यह जानकारी दे सकता हूँ कि प्रकृति में इससे भी उच्च क्षमता वाली शक्तियाँ मौजूद हैं। मैं चाहता हूँ कि लोगों को प्रारम्भ से ही यह जानकारी होना आवश्यक है कि उन्होंने किस चीज की खोज के लिये अपना मार्ग चुना है।''

''मैं यह पहले भी कह चुका हूँ कि संत केवल वही है जिसका प्राकृतिक शक्तियों पर पूर्व नियंत्रण है और साहब वे शक्तियाँ आखिर कौन सी हैं ? यह उसे पता लगाना चाहिये, तत्पश्चात् उसे समझने का प्रयास करना चाहिये। मुझसे एक व्यक्ति ने पूछा कि हमारी संस्था में कुण्डलिनी को किस स्थान पर रखा गया है, मैंने उसे बताया कि जब सारे चक्र जागृत हो जाते हैं तो एक मात्र कुण्डलिनी को छोड़ने का कोई औचित्य नहीं रह जाता। मैंने मात्र उसे यही जानकारी दी लेकिन शायद उसे मेरी बात समझ में नहीं आयी।''

मलेशिया में आज यह हमारी अंतिम शाम थी। मालिक रेड्डी से लम्बे समय तक गुफ्तगू करते रहे। उन्होंने उसके देश की तथा देश के नागरिकों की मुक्त कंठ से प्रशंसा की। मालिक भोले भाले कोमल हृदय वाले मलेशिया वासियों के मृदुल तथा आवभगत वाले व्यवहार के कारण अत्यन्त प्रभावित थे। विशेषकर उनके स्वच्छता का ध्यान रखने वाले व्यवहार ने मालिक को अत्यन्त प्रभावित किया था। रेड्डी पैतलिंग जाया अथवा किसी अन्य उचित स्थान पर मिशन के आश्रम भवन के लिये तर्क प्रस्तुत कर रहे थे। उन्होंने सुझाव दिया कि यदि मिशन अपनी स्वयं की भूमि क्रय कर ले तो आश्रम के भवन के निर्माण के लिये राशि एकत्रित की जा सकती है। उनका यह भी मत था कि आग्रह करने पर मलेशिया की सरकार भी इसमें वित्तीय सहयोग प्रदान कर सकती है। मालिक इस जानकारी से अत्यन्त प्रसन्न एवं प्रभावित हुये कि मलेशिया की सरकार संस्थाओं को चाहे वे किसी धर्म से ही सम्बन्धित क्यों न हों, वित्तीय

सहयोग प्रदान करती है। मालिक मलेशिया सरकार की धार्मिक तथा समाज सेवी संस्थाओं के प्रति वृहद् मानसिकता, जागरूकता तथा उदारता के लिये अत्यंत कृतज्ञ थे।

रात्रि लगभग बारह बजे मालिक अपने शयन कक्ष में चले गये तथा उन्होंने एक और बेचैनी पूर्ण रात व्यतीत की।

20 अप्रैल 1977– बुधवार

एयर इंडिया के कर्मचारी श्री सोमायाजुलु आज प्रातःकाल, मालिक से भेंट करने वालों में सर्वप्रथम व्यक्ति थे, जिन्होंने मालिक को अलविदा कहा। तत्पश्चात् पुआन सिरी जुने वुड, श्री डी.पी.श्रीवास्तव तथा साहनी इत्यादि ने मालिक से भेंट की। सुबह 9.00 बजे बालगोपाल अपनी कार लेकर रेड्डी के यहाँ पहुँचे तथा मालिक को अपने साथ लेकर हवाई अड्डे की ओर रवाना हो गये। रेड्डी भी मालिक के साथ सिंगापुर जा रहे हैं, अतः उनकी कार का उपयोग नहीं किया जा सकता था।

हुक्के का बंडल बाँधे जाने से पूर्व मालिक अपनी अंतिम चिलम पी रहे थे, उस दौरान उन्होंने मृत्यु के सन्दर्भ में कुछ जानकारी दी। उन्होंने दुर्घटना तथा असामयिक रूप से हुई मृत्यु के संदर्भ में जानकारी देते हुये बताया कि उनके मतानुसार इस प्रकार से हुयी मृत्यु से व्यक्ति के जीवन की वास्तविक अवधि कम हो जाती है। अतः इस तरह के असामयिक मृत्यु के प्रकरणों में उस व्यक्ति को प्राप्त वास्तविक जीवनकाल का बाकी अंश धरती पर भौतिक शरीर में पूर्ण होने के बनिस्बत सूक्ष्म शरीर में पूर्ण होता है। उन्होंने कहा यह मेरा मत है। शायद उनकी जानकारी गलत नहीं है। उन्होंने यह भी संकेत दिया कि एक–दो प्रकरणों पर अध्ययन करने के पश्चात् वे इस निश्कर्ष पर पहुँचे हैं, उन्होंने संकोचवश अपने चिर परिचित अंदाज में विनम्रतापूर्वक कहा, "मैंने इस प्रकार के प्रकरणों पर ज्यादा अध्ययन नहीं किया है। यह समय की बरबादी है। अपितु अपनी जानकारी के लिये मैंने एक–दो प्रकरण अवश्य लिये, लेकिन इस प्रकार अधिक प्रकरणों का मैंने अध्ययन नहीं किया है। अतः शायद मैं गलत भी हो सकता हूँ।" उन्होंने अपनी बात को जारी रखते हुये कहा कि समर्थ गुरु

के शिष्य के प्रकरण में यदि उसकी असामयिक मृत्यु होंती है, तो इसके पीछे उसके पूर्व के अमिट संस्कार का भोग ही मुख्य कारण होता है। ऐसे प्रकरणों में बंधन मुक्त आत्मा अपनी आध्यात्मिक यात्रा अपने गुरु के निर्देशन में जारी रखती है तथा उस पर सामान्य नियम लागू नहीं होते। असामयिक मृत्यु के पश्चात् का बाकी जीवन सूक्ष्म शरीर में पूर्ण होने के संदर्भ में जानकारी देने के थोड़ी देर पश्चात् मालिक ने कहा, "देखो! ईश्वर कितना चतुर है! मृत्यु का ऐसा कोई भी प्रकरण नहीं है जिसके लिये उसे दोषी ठहराया जा सके। प्रत्येक मृत्यु के पीछे अक्सर ही कोई न कोई वजह अवश्य होती है, जैसे बीमारी, दुर्घटना या अन्य कोई, लेकिन हमेशा ही कोई न कोई कारण अवश्य होता है। अतः किसी न किसी कारणवश मृत्यु होने पर हम ईश्वर को दोषी कैसे ठहरा सकते हैं। यही उसकी चतुराई है।"

रेड्डी के घर के काम की देखरेख करने वाली गोविन्दाम्मा का मालिक के प्रति अत्यधिक लगाव तथा समर्पण था। आज प्रातःकाल से ही उसकी आँखें नम थीं। वह निरन्तर मालिक के आसपास मंडरा रही थी तथा मालिक को अपनी सेवा समर्पित करना चाह रही थी। उसकी यह शिकायत रहती थी कि मालिक की खुराक दो माह के बच्चे की खुराक के बराबर है। जैसे–जैसे मालिक के रवाना होने का समय करीब आ रहा था उसकी मायूसी बढ़ती जा रही थी फिर भी वह अत्यन्त साहस पूर्वक मुस्कुराने का प्रयास कर रही थी। हम सभी गोविन्दाम्मा से विदा लेकर सुबह 9.15 बजे बालगोपाल की कार में बैठ गये। वह अंतिम बार नमस्ते कहने के वास्ते द्वार तक आयी, हमने देखा उसकी आँखों से अश्रुधारा बह रही थी तथा जैसे ही हम रवाना होने वाले थे कि एकाएक ही मालिक ने कार की अगली सीट से उसकी ओर देखकर कहा, "मैं पुनः आऊँगा", गोविन्दाम्मा मुस्कुरा दी, तथा हम सुबंग हवाई अड्डे की ओर रवाना हो गये।

विगत कुछ दिनों से बहुतेरे अभ्यासी मालिक से यह जानना चाह रहे थे कि वे मलेशिया पुनः कब आयेंगे। इस पर किसी से उन्होंने कहा, "इसके बारे में आप अच्छी तरह जानते हैं। उन्होंने कहा यह सब आप पर

निर्भर करता है।'' सामान्यतः उनके जवाब इसी प्रकार के होते हैं। लेकिन आज सुबह उन्होंने गोविन्दाम्मा को इसके लिये वचन दे दिया, जबकि उसने एक मर्तबा भी मालिक से यह नहीं पूछा कि वे मलेशिया कब आयेंगें फिर भी पुनर्मिलन की तड़प का उन्हें किसी तरह से भान हो गया तथा उन्होंने उसे इसका जबाव भी दे दिया। इससे पता चलता है कि वे हृदय को पढ़ने में कितने माहिर हैं। मेरी जानकारी में वे जीतने की कला में महानतम माहिर व्यक्ति हैं।

कुआलालम्पुर के सुबंग अन्तर्राष्ट्रीय हवाई अड्डे पर विवेकानन्थन, उनकी पत्नी कमला तथा सोमायाजुलु इत्यादि के साथ कई अन्य अभ्यासी मालिक को विदाई देने के लिये उपस्थित थे। मालिक उनके साथ कुछ क्षण व्यतीत करने के पश्चात् विशिष्ट यात्री कक्ष में चले गये। हम एम ए एस की उड़ान संख्या एम.एच. 605 के विमान बोइंग 737 बी द्वारा निर्धारित समय से 17 मिनट की देरी से सुबह 10.32 बजे कुआलालम्पुर से रवाना हुये। यह अल्पकालिक यात्रा सुखद एवं आरामदायक रही। सिंगापुर पहुँचने में हमें मात्र 38 मिनट का समय लगा।

सिंगापुर एक बड़ा द्वीप है जो पीनांग की अपेक्षा कुछ बड़ा है। ऊँचाई से देखने पर यहाँ विविध प्रकार का विकास दिखायी पड़ रहा था। ऊँची, आधुनिक इमारतें केवल कुछ ही स्थानों पर दृष्टिगोचर हो रही थीं, जबकि द्वीप के अधिकांश भाग में अंग्रेजों के जमाने की कोठियों के समान भवन दिखायी पड़ रहे थे। जब हमारा विमान वहाँ पहुँचा उस समय वातावरण में गर्मी तथा उमस थी। विमान पट्टी से कस्टम जाँच के क्षेत्र तक जाने के लिये लम्बी दूरी तय करनी थी जिसमें लगभग आधी दूरी तक तिरछी ढलावदार सीढ़ियाँ (Ramp) थीं। हवाई अड्डे में विस्तार का कार्य प्रगति पर था तथा भवन निर्माण इत्यादि के कार्य जारी थे, जिसके कारण वहाँ थोड़ी अव्यवस्था थी। लम्बी दूरी तक पैदल चलने के कारण मालिक को थकान हो गयी थी।

जैसा कि प्रचारित था उसके ठीक विपरीत यहाँ का कस्टम अधिकारी काफी तेज तर्रार था तथा लगभग सभी यात्रियों के सामान की

जाँच करने के लिये उनके बैग इत्यादि खुलवा कर देख रहा था। सामान इत्यादि की जाँच के पश्चात् हम प्रतीक्षालय में पहुँचे जहाँ लगभग 5–6 अभ्यासी मालिक की प्रथम सिंगापुर यात्रा पर उनके स्वागत के लिये उपस्थित थे। उपस्थित व्यक्तियों में श्री एवं श्रीमती अंक तोंक हो, गोह लू अन, तोंग लिम, तेन की लेंग तथा श्री बाला सुब्रामनियम मुख्य थे। मालिक के लिये एक पूर्ण वातानुकूलित कार की व्यवस्था की गयी थी जिसमें सवार होकर मालिक अपने मेजबान श्री नाथन के निवास पर पहुँचे। श्री नाथन का घर विमान तल से ज्यादा दूरी पर नहीं था। मालिक का हुक्का तैयार करने के पश्चात् मैंने अंक, गोह, तोंग तथा जॉनी (तेन की लेंग) के साथ मालिक के कार्यक्रम की रूपरेखा के सन्दर्भ में एक घंटे तक चर्चा की। उनके द्वारा जन समूह को वितरित किये जाने वाले सहज मार्ग साहित्य के प्रकाशन का तथा चायनीज समाचार पत्र में प्रकाशित होने वाले एक लघु लेख का ध्यान पूर्वक अध्ययन किया। इस लेख को प्रकाशन हेतु प्रेस को भेजा जाना था। इस सम्पूर्ण प्रक्रिया के दौरान हमने कई ग्लास नारंगी रस तथा चाय का सेवन किया। असहनीय गर्मी तथा उमस के कारण हम पसीने से तरबतर हो रहे थे तथा कार्य को समयानुसार पूर्ण करने के लिये हमें कमर कस कर बैठना भी आवश्यक था।

मालिक ने दोपहर से लेकर शाम पाँच बजे तक विश्राम किया, तत्पश्चात् अनेक व्यक्ति उनसे भेंट करने के लिये पधारे तथा लगभग 36 व्यक्तियों द्वारा आज शाम को पूजा प्रारम्भ कर दी गयी। यह सब अंक, गोह तथा जॉनी के के.वी. रेड्डी के मार्गदर्शन में प्रारम्भिक स्तर पर किये गये परिश्रम का परिणाम है, निश्चित रूप से उन्हें अपने प्रयास पर संतोष हो रहा होगा। मालिक के निर्देशानुसार मैंने तेन की लेंग को तीन विशेष सिटिंग दीं, ताकि उसे अग्रिम अनुमति के लिये तैयार किया जा सके। मेरा भाई कैप्टन एस.राजगोपाल जो यहाँ पैसेफिक इन्टरनेशनल लाइन में कार्यरत है, मुझसे भेंट करने के लिये पहुँचा तथा जब मैं सिटिंग देने में व्यस्त था उसने मालिक के साथ कुछ समय व्यतीत किया। रेड्डी द्वारा अन्तरिम अनुमति के लिये बाल सुब्रामनियम का नाम सुझाया गया था

किन्तु मालिक इस पर सहमत नहीं हुये।

मालिक ने आठ अभ्यासियों के एक समूह को सिटिंग दी। मालिक के यहाँ आने से पूर्व इस केन्द्र की क्षमता बारह अभ्यासियों की थी। सिटिंग के पश्चात् प्रश्नोत्तरी का एक लम्बा सत्र चला।

प्रः ध्यान हेतु हम स्वेच्छापूर्वक किसी वस्तु का चुनाव क्यों नहीं कर सकते। प्राचीन ग्रंथों में अनेक वस्तुओं के नाम सुझाये गये थे। जैसे आकाश, समुद्र इत्यादि। मैं समुद्र पर ध्यान करना चाहूँगा। यह वास्तव में मुझे अनन्त का अहसास कराता है। क्या मैं ऐसा कर सकता हूँ।

मालिक : देखिये इसका निर्णय आपको स्वयं करना है। हमारे मालिक द्वारा निर्धारित पद्धति में हमें हृदय में प्रकाश की उपस्थिति पर ध्यान करना है, यह केवल कल्पना मात्र है।

प्रः लेकिन क्या मैं समुद्र पर ध्यान कर सकता हूँ?

मालिक : देखिये मेरे विचार से जब आप किसी वस्तु पर ध्यान करते हैं तो परिणाम के रूप में हमें उस वस्तु का सार प्राप्त होता है। अतः यदि आप समुद्र पर ध्यान करेंगे तो इसके परिणाम स्वरूप आपको नमक हाथ लगेगा। मालिक द्वारा अपने मालिकाना अन्दाज में दिये गये इस उत्तर से सभी लोग ठहाका लगा कर हँस दिये ।

प्रः प्रेम के विषय पर आप क्या कहना चाहेंगे ? क्या यह आवश्यक है?

मालिक : देखिये मैं आपको जानकारी देना चाहता हूँ कि प्रेम अति आवश्यक है। मालिक के प्रति प्रेम अथवा ईश्वर के प्रति प्रेम होना ही चाहिये। लेकिन आध्यात्मिक विकास में ऐसी भी स्थिति आती है, जब प्रेम भी फीका पड़ने लगता है।

प्रश्न : मैं इसे नहीं समझ पाया कि यह कैसे सम्भव है?

पी.आर. (श्री पार्थसारथी राजगोपालाचारी) : मालिक के कथन का तात्पर्य यह है कि हम मालिक के प्रति प्रेम से अपनी साधना प्रारम्भ करते हैं तथा उन्नति दर उन्नति करते जाते हैं तथा इस आध्यात्मिक उन्नति के दौरान एक अवस्था ऐसी भी आती है जब मालिक तथा शिष्य एक ही हो जाते हैं। यही वह अवस्था है जो शिष्य महसूस अथवा अनुभव करता है

तथा ऐसी अवस्था में कौन प्रेमी कौन प्रेमास्पद ? और इस प्रकार से जब दोनों का विलय हो जाता है तथा दोनो एक में समाहित हो जाते हैं तब प्रेम भी स्वतः ही समाप्त हो जाता है। प्रेम फ़ीका पड़ जाने से मालिक का यही तात्पर्य है।

प्रः प्रकाश के सन्दर्भ में बताइये ? क्या हमें प्रकाश दिखायी पड़ता है? मालिक : देखिये, मैं आपको बताना चाह रहा हूँ कि यह एक कल्पना मात्र है कि हृदय में प्रकाश विद्यमान है। यह केवल सुझाव मात्र है।

प्रः लेकिन जब मैं ध्यान करूँगा तो क्या मुझे प्रकाश दिखायी देगा?

पी.आर. : कई व्यक्तियों द्वारा ध्यान के दौरान अंधकार का अनुभव किया गया है अथवा अंधकार के समान ही कुछ कहा जा सकता है। मैं स्वयं भी एक बार पशोपेश में पड़ गया था। जब एक शाम मैं मद्रास में अपने बगीचे में बैठा हुआ था तथा आकाश को निहार रहा था, मैंने देखा कि सूर्यास्त होते ही वहाँ अंधकार छा गया। अचानक ही मुझे विचार आया कि सूर्य तो आकाश में है, लेकिन मुझे फिर भी मात्र कालिमा अथवा अंधकार दिखायी पड़ रहा है। उसी क्षण मुझे एक और विचार आया कि चाँद की रोशनी में आकाश कितनी खूबसूरती से चमक रहा है। तब मैं इस निष्कर्ष पर पहुँचा कि प्रकाश भी अंधकार के समान दिखायी पड़ सकता है जब तक कि कोई ऐसी वस्तु न हो जो प्रकाश को प्रतिबिम्बित करे। मेरे लिये यह एक नयी खोज थी। तब मैं यह समझ पाया कि क्यों हमारे कुछ अभ्यासी ध्यान के दौरान अंधकार का अनुभव करते हैं। यह मात्र इस कारण से है, क्योंकि हमारी पद्धति में किसी ठोस अथवा भौतिक वस्तु पर ध्यान करने की अनुमति नहीं है। हृदय में प्रकाश विद्यमान है इस कल्पना मात्र पर ध्यान करते हैं। इसी कारण अंधकार का अनुभव होना वास्तविकता है। इसकी वास्तविकता का अनुभव आप किसी ऐसे कमरे में बैठकर कर सकते हैं जिसमें किसी छिद्र के माध्यम से प्रकाश की किरणें प्रवेश कर रही हों। तब आपका ध्यान प्रकाश की ओर न जाकर उस फर्श की ओर जाता है जहाँ पर प्रकाश की किरणें पड़ रही होती हैं तथा यदि हवा में कुछ धूल के कण मौजूद हों तो आप उन धूल के कणों को भी आसानी से देख सकते

हैं जिन पर प्रकाश की किरणें पड़ रही हैं, आप केवल प्रकाश मात्र को नहीं देख सकते।

मालिक : मैंने किसी जगह उल्लिखित किया है कि मूलतः न तो वहाँ प्रकाश है न ही अंधेरा। यह तो सूर्योदय की लालिमा के समान है नासदीय सूक्त ने भी यही वर्णित किया है।

21 अप्रैल 1977—गुरुवार

गत रात्रि, मालिक ठीक से नहीं सो सके। रात भर वे दर्द के कारण तकलीफ में रहे। दवायें भी असरदार साबित नहीं हो रही थीं। गर्मी भी भयंकर थी जिसके कारण बेचैनी महसूस हो रही थी।

सुबह उठने के पश्चात् मालिक ने अत्यन्त स्नेह पूर्वक मुझसे कहा कि यदि तुम व्यस्त न हो तो थोड़ी देर मेरे पास बैठो। मैं उस समय कोई कार्य नहीं कर रहा था अतः उनके पास आकर बैठ गया। उन्होंने मुझसे कहा "मैं रेड्डी साहब के विषय पर विचार कर रहा हूँ। वह बहुत अच्छे व्यक्ति हैं तथा समर्पित भी हैं। उन्हें यह भी जानकारी है कि मैं भी उन्हें पसन्द करता हूँ। अतः वे उनके दीक्षा संस्कार के संदर्भ में विचार कर रहे हैं। वे बोले, वैसे तो यह ऐसी चीज है जिसके लिये शिष्य को स्वयं प्रार्थना कर इसे प्राप्त करने का प्रयास करना चाहिये, लेकिन रेड्डी के प्रकरण में, मैं हृदय से चाहता हूँ कि इसे स्वयं करूँ इसके सम्बन्ध में तुम्हारे क्या विचार हैं?"

मैंने कहा, "साहब यदि आप स्वयं उन्हें दीक्षित करना चाहते हैं तो वह वाकई भाग्यशाली व्यक्ति हैं तथा जब स्वयं आपने इसके लिये इच्छा प्रकट की है तो मेरे विचार इससे भिन्न कैसे हो सकते हैं। अतः आप, कृपया अपनी इच्छा के अनुरूप ही कार्य करें।"

बाबूजी बोले, "तुम्हें तो यह जानकारी है कि यह कितनी मूल्यवान वस्तु है तथा यह कभी भी किसी अयोग्य व्यक्ति को नहीं दी जा सकती। मैंने इसके सम्बन्ध में बहुत विचार किया है, रेड्डी साहब हमारे देश के हैं तथा अभी तक उनके पास भारतीय पासपोर्ट भी है, अतः इसमें क्या आपत्ति हो सकती है? मैंने उन्हें विश्वास दिलाया यदि वे ऐसा करना चाहते हैं तो इसमें कोई अड़चन नहीं हो सकती। तत्पश्चात् उन्होंने मुस्कुराते हुये मुझसे

कहा, "बहुत समय से वे इस पर विचार कर रहे थे कि एक प्रकरण मेरे माध्यम से दीक्षित करवायें। लेकिन वे इसे अपने देश में नहीं कराना चाहते थे, क्योंकि वे नहीं चाहते थे कि मेरे उत्तराधिकारी बनने के विषय में किसी को जानकारी हो । लेकिन एक न एक दिन तो मुझे उनका उत्तराधिकारी बनना ही है तथा दीक्षा देने का बोझ भी मुझे ही उठाना है, अतः वे चाहते हैं कि अपनी उपस्थिति में दीक्षा का एक प्रकरण मुझसे करवा लें तथा तसल्ली कर लें कि मैं इसे किस प्रकार करता हूँ। देखो यह सब लालाजी की कृपा का परिणाम है कि ऐसा सुअवसर हमें प्राप्त हुआ है कि मुझे यह विचार आया कि तुम रेड्डी को दीक्षित करो। वस्तुतः गुरु की उपस्थिति में किसी शिष्य को इस कार्य की अनुमति नहीं दी जा सकती। तुम्हें तो यह जानकारी है कि यह कितना महत्वपूर्ण कार्य है तथा इसका क्या प्रभाव है, व्यक्ति का लालाजी के माध्यम से सीधे ईश्वर से सम्पर्क हो जाता है, यह जानकारी शायद मैं तुम्हें पहले दे चुका हूँ तथा यह भी सत्य है कि उस व्यक्ति की जिम्मेदारी भी लेनी पड़ती है। अब मैं यह चाहता हूँ कि तुम आज ही मेरे समक्ष इस कार्य को सम्पन्न करो। मैं तुम्हें इस कार्य को करने की अनुमति देता हूँ तथा मेरी यही इच्छा है तुम इस कार्य को करो ताकि भविष्य में इस तरह के कार्यों में तुम्हें आसानी हो। इसके पश्चात् रेड्डी से तुम्हारी घनिष्ठता में और इजाफा होगा, लेकिन उसे दीक्षित करने के पश्चात् उसकी सम्पूर्ण जिम्मेदारी तुम्हारी रहेगी। अब उसे बुलाओ।"

मैंने रेड्डी को अन्दर बुलाया तथा उसे जानकारी दी कि वह कितना सौभाग्यशाली है कि जिस वस्तु को पाने के लिये हजारों बल्कि शायद करोड़ों लोग तपस्या कर रहे हैं, वह उसे बिना उसके माँगे ही प्राप्त हो रही है। मैंने उसे यह जानकारी भी दी कि किस तरह गुरु अपने दीक्षित शिष्य की सम्पूर्ण जिम्मेदारी अपने ऊपर ले लेता है तथा किस प्रकार से उसकी भी (रेड्डी की), मालिक तथा मिशन के प्रति जिम्मेदारियाँ बढ़ गई हैं। उसे दोनों के प्रति पूर्ण रूपेण समर्पित होना पड़ेगा, वह भावुक हो गया तथा बोला कि वह इसके लिये वचनबद्ध रहेगा।

मालिक की उपस्थिति में मैंने उसकी पन्द्रह मिनट तक सफाई की

तथा उसके दाहिने हाथ की हथेली लेकर उसे अपनी दोनों हथेलियों के मध्य रखा तथा जैसे ही प्रक्रिया समाप्त होने का समय आया मालिक ने कहा, ''एक विचार लो कि तुम्हारी समृद्धि का एक अंश उसके अंदर प्रवेश कर रहा है।'' मैंने पूछा ''मात्र एक अंश?'' मालिक ने कहा, ''भाई यह एक अंश भी बहुत अधिक है।''

इस प्रकार मैंने मालिक की उपस्थिति में मालिक की अनुमति तथा उनके आशीर्वाद से सुबह 9.00 बजे के.वी. रेड्डी को दीक्षा प्रदान की। मालिक ने के.वी. रेड्डी को थोड़ी देर वहीं बैठे रहने का निर्देश दिया तथा बारीकी से उसका अध्ययन करते रहे। तत्पश्चात् उन्होंने मेरी ओर देखकर मुझसे कहा ''मैं तुम्हें बधाई दे सकता हूँ? तुमने कार्य को बखूवी अंजाम दिया है। देखो, इसे कहते हैं प्रशिक्षण। तत्पश्चात् वे बोले कि रेड्डी को तुम्हारे द्वारा दीक्षित किया गया है, इस विषय को गोपनीय रखा जाना आवश्यक है, मैं नहीं चाहता कि मेरे उत्तराधिकारी के विषय पर किसी को भी जानकारी हो। कुछ समय पूर्व मेरे मन में यह विचार आया था कि मैं कृष्णा को तुम्हारे माध्यम से दीक्षित करवाऊँगा, लेकिन मुझे आशंका थी इसके सम्बन्ध में लोगों को भी जानकारी हो सकती है। लेकिन यहाँ हमें यह अवसर प्राप्त हो गया, जिससे मेरा तथा तुम्हारा दोनों का मकसद पूर्ण हो गया एवं मि. रेड्डी भी इससे प्रसन्न होंगे।

इसके पश्चात् मैंने तेन की लेंग को सुबह 9.30 बजे उसकी द्वितीय सिटिंग दी ताकि उसे अंतरिम अनुमति के लिये तैयार किया जा सके। तत्पश्चात् मेरे द्वारा तीन नये प्रवेशकर्ताओं को सामूहिक रूप से सिटिंग दी गयी।

चूँकि मालिक को अभी भी कंधे में दर्द बना हुआ था, अतः गोह द्वारा एक प्रतिष्ठित चायनीज डॉक्टर जो कि मांसपेशियों से सम्बन्धित व्याधि के लिये प्रसिद्ध था, के यहाँ जाने का सुझाव दिया गया। मालिक उसके यहाँ जाने से घबरा रहे थे लेकिन मेरे तथा रेड्डी द्वारा दवाब डालने पर वे राजी हो गये। सुबह 10.30 बजे हम एक वातानुकूलित कार द्वारा लगभग 10 मील दूर स्थित डॉ.लिंग चेंग जेम के क्लीनिक पहुँचे। कंधे में

जिस स्थान पर दर्द हो रहा था उस स्थान पर डॉ. ने एक चायनीज मल्हम लगाकर कुछ देर मालिश की तथा बोला कि अब दर्द समाप्त हो जायेगा। हम घर से काफी दूर निकल आये थे, अतः वापस लौटते वक्त रेड्डी ने कुछ स्थानीय स्थलों के भ्रमण का सुझाव दिया। अतः सर्वप्रथम हम तेलोक बलंधा पहुँचे। इसके पश्चात् प्रसिद्ध टाइगर बाम गार्डन देखने के लिये पसीर पन्जांग पहुँचे जिसे चायनीज में "हाव पार विला" के नाम से जाना जाता है। मालिक ने पार्क में एक घंटा व्यतीत किया तथा प्रतिमाओं एवं रमणीय दृष्यों से भरपूर गार्डन को निहारते रहे। पुनः उसी मार्ग से वापस लौटकर हम केपल रोड से होते हुये बंदरगाह वाले क्षेत्र में पहुँचे तथा बंदरगाह के उस छोटे से हिस्से को ही देख पाये, जहाँ कार द्वारा पहुँच पाना सम्भव था। यह बंदरगाह द्वीप के पश्चिमी छोर पर स्थित है, जहाँ हमने एक सेतुबंध (Cliffordpier) भी देखा। तत्पश्चात् हम वहाँ के मुख्य डाकघर की इमारत को देखने पहुँचे जिसके बारे में यह चर्चित है कि समूचे द्वीप में यह सर्वाधिक प्राचीन शासकीय भवन है। इसके अलावा हमने अन्य स्थलों जैसे संसदीय भवन, सर्वोच्च न्यायालय, सिटी हॉल तथा एक अत्यन्त ही सुन्दर टावरनुमा स्मारक को भी देखा। यह स्मारक ऐसा दिखाई पड़ रहा था जैसे चार सुइयों को लम्बवत् खड़ा कर दिया गया हो। इसकी स्थापना द्वितीय विश्वयुद्ध के एक सैनिक की याद में की गयी थी। तत्पश्चात् हम चेम्सफोर्ड मार्ग से होते हुये राष्ट्रीय पुस्तकालय एवं संग्रहालय का भ्रमण करते हुये अंत में रमणीय किंग जार्ज वी मेमोरियल पार्क पहुँचे। यहाँ मालिक ने छोटे किन्तु अत्यन्त व्यवस्थित रूप से रखे गये अक्वेरियम को देखा, जिसे वान क्लीफ अक्वेरियम के नाम से जाना जाता है। यहाँ पर मालिक ने भरपूर लुत्फ उठाया।

यह अत्यन्त ही आश्चर्य की बात है कि प्रकृति की सुन्दरता का वर्णन करते वक्त मालिक किस प्रकार से बच्चों जैसा बर्ताव करते हैं। बगीचे में अथवा प्राकृतिक वस्तुओं को निहारते वक्त उनके चेहरे पर आश्चर्य तथा भोलेपन के भाव को किसी के द्वारा भी प्रत्यक्ष रूप से देखा जा सकता है। पिरान्हा मछलियों से भरा टैंक इस अक्वेरियम के आकर्षण

का मुख्य केन्द्र था। एक दूसरा मुख्य आकर्षण एक वास्तव में बड़ी शार्क मछली थी जो लगभग 12 फीट लम्बी और जो एक बड़े तालाब में यहाँ–वहाँ विचरण कर रही थी। यहाँ से हम सीधे नाथन के निवास की ओर रवाना हो गये तथा ठीक दोपहर भोजन के समय 1.30 बजे वहाँ पहुँच गये। तीन घंटे लगातार भ्रमण करने के पश्चात् मालिक को थकान महसूस हो रही थी, फिर भी उन्होंने हमारे साथ थोड़ा समय व्यतीत किया तथा थोड़ा बहुत आहार भी लिया।

शाम 5.00 बजे के पश्चात् मालिक से भेंट करने वालों की आवाजाही शुरू हो गयी। शाम 6.30 बजे मालिक ने अभ्यासियों के एक बड़े दल को सामूहिक सिटिंग दी। इसी के बगल वाले कक्ष में मैंने तेन की लेंग को उसकी अंतरिम अनुमति की तैयारी के लिये अंतिम सिटिंग दी। तत्पश्चात् बाला सुब्रामनियम का प्रकरण लिया गया क्योंकि मालिक रेड्डी द्वारा सिंगापुर में एक और प्रशिक्षक नियुक्त किये जाने की माँग दोहराये जाने पर सहमत हो गये थे।

शाम 7.15 बजे हम केजी ग्लाम सामुदायिक केन्द्र की ओर रवाना हो गये जहाँ हमें जन सामान्य द्वारा आयोजित एक बैठक में भाग लेना था। वहाँ उपस्थित जन समूह जिसमें 400 से भी अधिक व्यक्ति रहे होंगे, द्वारा आयोजित इस बैठक की अध्यक्षता मालिक द्वारा की गयी। मालिक को देखने तथा मेरे उद्‌बोधन को सुनने के आतुर व्यक्तियों में से अधिकांश चायनीज थे। लगभग चालीस मिनट से अधिक अवधि तक मैंने अपना उद्‌बोधन दिया तथा जैसाकि अधिकांशतः होता है, उसी प्रकार से आज का उद्‌बोधन भी बिना किसी पूर्व तैयारी के दिया गया था जिसका विषय था "छड़ी के दो सिरे"। मेरे उद्‌बोधन के पश्चात् मालिक द्वारा लगभग 20 मिनट तक एकत्रित जन समूह को ध्यान करवाया गया, तत्पश्चात् मैंने उनके द्वारा पूछे गये कुछ प्रश्नों के उत्तर दिये। रात्रि 10.00 बजे हम अपने घर वापस लौट आये।

मुझे यह जानकारी दी गयी थी कि सिंगापुर राष्ट्र के इस छोटे से द्वीप पर इस प्रकार के 174 सामुदायिक केन्द्र हैं तथा सभी केन्द्र सर्व

सुविधायुक्त हैं, इसमें खेल के मैदान, सभागृह, इन्डोर गेम्स की सुविधा एवं टी.वी.सेट्स इत्यादि उपलब्ध हैं। उस क्षेत्र के सभी निवासी जिनमें छोटे बच्चे से लेकर 80 वर्ष के बूढे तक सभी इन सामुदायिक केन्द्रों में जाकर शाम 6.00 बजे से लेकर रात्रि 11.00 बजे तक वहाँ रहकर अपने मनपसंद विभिन्न क्रियाकलापों में भाग लेते हैं जिससे उनमें आपस में मेल मिलाप बढ़ता है। युवाओं को खेलकूद की सुविधा उपलब्ध कराकर उन्हें अपने मार्ग से भटकने से रोकने में मदद मिलती है तथा समाज में बड़े–बूढ़ों की स्वस्थ भागीदारी से अनेक सामाजिक समस्याओं को सुलझाने में मदद मिलती है। सांस्कृतिक गतिविधियों का आयोजन यहाँ बहुत लोकप्रिय है तथा अधिकांश सामुदायिक केन्द्रों में योगाभ्यास की कक्षायें लगती हैं, जिसमें हठ योग की शिक्षा दी जाती है। आज शाम की बैठक में उपस्थित 400 व्यक्तियों के जनसमूह में अधिकांश योग के प्रति अति उत्साहित थे तथा उनमें से कई व्यक्ति तो पूर्व से ही किसी न किसी तकनीक से योगाभ्यास कर रहे थे।

देर रात्रि में भोजन लेने के पश्चात् मालिक रात्रि लगभग बारह बजे विश्राम के लिये अपने शयन कक्ष में चले गये। आश्चर्यजनक रूप से आज की रात शान्त एवं सुहावनी थी, लेकिन पैतालिंग जाया से इसकी तुलना किसी भी तरह नहीं की जा सकती थी, जहाँ रातें अपेक्षाकृत सर्द एवं अत्यधिक सुहावनी होती हैं। मैं आज दोपहर से ही तेज सिरदर्द के कारण परेशान था लेकिन इसके कारण मेरी नींद में खलल नहीं पड़ा तथा मुझे अच्छी नींद आयी।

22 अप्रैल 1977 – शुक्रवार

विगत रात्रि को मालिक गहरी नींद सोये तथा सुबह तरोताजा नजर आ रहे थे यद्यपि उनके कंधे का दर्द यथावत् था।

सुबह 9.15 बजे मैंने मालिक की अनुमति से तेन की लेंग को सिटिंग दी तथा उसे अंतरिम अनुमति प्रदान की और इस प्रकार से चायनीज मूल का प्रथम व्यक्ति मिशन का प्रशिक्षक नियुक्त हुआ।

सुबह 9.45 बजे मैंने मालिक की दाढ़ी की छँटाई की, उनके बाल

काटे तथा नाखूनों की सफाई की जिससे मालिक का चेहरा खिल उठा। वे अत्यन्त प्रसन्न नजर आ रहे थे।

सुबह 10.30 बजे मैंने अप्पीया बाला सुब्रामनियम को सिटिंग दी तथा अंतरिम अनुमति प्रदान की। इस प्रकार रेड्डी की मंशा के अनुरूप सिंगापुर में दो प्रशिक्षक हो गये हैं। वास्तव में रेड्डी द्वारा कुछ अन्य व्यक्तियों के नाम की भी सिफारिश की गयी थी, लेकिन यह निर्णय लिया गया कि सिंगापुर में आध्यात्मिक कार्य के लिये और अधिक व्यक्तियों के चयन से पूर्व थोड़ी प्रतीक्षा कर लेना उचित होगा।

सुबह 10.40 बजे तेन की लेंग मुझे तथा रेड्डी को पूर्वी तटीय मार्ग पर स्थित सेंट पेट्रिक उच्चतर विद्यालय ले गये, जहाँ मैंने लगभग तीस हिन्दू विद्यार्थियों के समक्ष योग पर व्याख्यान दिया तथा मेरा उद्‌बोधन लगभग चालीस मिनट तक चला। मेरे लिये अपने आप में यह एक अनूठा अनुभव था, इस दौरान मालिक घर पर ही थे। सेंट पेट्रिक स्कूल से हम कुछ खरीददारी इत्यादि के लिये बाजार गये तथा दोपहर 3.30 बजे घर वापस लौट आये, मालिक उस समय विश्राम कर रहे थे। शाम को मालिक ने मुझे सामूहिक सत्संग कराने के लिये निर्देशित किया। शाम 5.30 बजे मेरे द्वारा दी गयी इस सिटिंग में लगभग बाइस अभ्यासी उपस्थित थे। शाम 7.30 बजे हम टैंगलिन सामुदायिक केन्द्र की ओर रवाना हुये, जहाँ मालिक ने एक सार्वजनिक बैठक की अध्यक्षता की। मैंने बिना किसी पूर्व तैयारी के लगभग आधे घंटे तक "योग एक अनुभव का मार्ग" विषय पर अपना उद्‌बोधन दिया। तत्पश्चात् मालिक द्वारा अपेक्षाकृत बहुत कम समय के लिये ध्यान कराया गया तथा रात्रि 9.00 बजे हम घर वापस लौट आये।

23 अप्रैल 1977 – शनिवार

आज की रात विगत रात्रि की अपेक्षा अधिक गर्म तथा कष्टप्रद थी, मालिक रात भर बेचैन रहे तथा ठीक से सो नहीं सके। सुबह 8.00 बजे सोकर उठने के पश्चात् मालिक थके हुये तथा चिड़चिड़े से नजर आ रहे थे। कैसी भी परिस्थितियाँ रही हों मालिक कभी क्रोध नहीं करते थे, लेकिन यदा कदा तनाव में तथा खिंचे खिंचे से नजर आते थे एवं अपने आप में

गुमसुम किसी उधेड़बुन में लगे रहते थे। यद्यपि उन्हें इस उदासी भरे माहौल से बाहर लाने के लिये ज्यादा प्रयास करने की आवश्यकता नहीं पड़ती थी।

सुबह कुछ अभ्यासी उनका हाल चाल जानने के लिये आये थे। मालिक के कंधे का दर्द यथावत् था। अतः हमने मालिक को पुनः डॉ. लिम चेंग जेम के यहाँ ले जाने का निर्णय लिया। डॉक्टर ने परीक्षण करने के पश्चात् बताया कि मालिक के कंधे का दर्द वात् रोग जनित है, अतः उनकी दवायी ज्यादा समय तक कारगर साबित नहीं होगी। उसने सुझाव दिया कि हमें किसी ऐलोपैथ चिकित्सक का परामर्श ले लेना उचित होगा।

डॉक्टर के क्लीनिक से हम तेन की लेंग के निवास पर पहुँचे तथा वहाँ आधा घंटा व्यतीत करने के पश्चात् घर वापस लौट आये। जॉनी के घर पर मालिक ने सिगरेट पी, पिछले दो सप्ताह से वे लगभग 10 सिगरेट पी चुके हैं। वे बहुत कम धूम्रपान करते हैं तथा विमान में यात्रा करते वक्त भी वे सिगरेट पीने से परहेज करते हैं। उन्हें भय रहता है कि कहीं जलती हुयी सिगरेट गिरने से विमान में आग न लग जाये। उनमें यह भय की ग्रंथि तभी से बनी हुयी है, जब उन्होंने 1976 में दिल्ली से कोपेनहेगन की हवाई यात्रा के दौरान विमान संख्या डी.सी. 10 के भण्डारण क्षेत्र में सिगरेट गिरा दी थी, वास्तव में हुआ यह था कि हमें धूम्रपान वर्जित क्षेत्र में सीटें मुहैया करायी गयी थीं, अतः हमे धूम्रपान हेतु भण्डारण क्षेत्र में जाकर धूम्रपान करना पड़ता था।

सिंगापुर का भ्रमण एक सुखद अनुभूति रही। यह अत्यन्त खूबसूरत शहर है जहाँ चौड़ी चौड़ी पगडंडी युक्त सड़कें तथा चारों ओर आधुनिक इमारतें हैं। नया आवासीय निर्माण, बहुमंजिला इमारतों के रूप में हुआ है तथा अधिकांश निर्माण विभिन्न खंडों में किया गया है। प्रत्येक इमारत अत्यंत विशाल है तथा इनकी क्षमता लगभग 100 फ्लैट की रही होगी। सारा शहर बगीचे तथा हरे भरे मैदोनों से पटा पड़ा है। अतः यहाँ चारों ओर हरियाली ही हरियाली दिखाई पड़ती है जिसके कारण सिंगापुर शहर पूर्ण व्यवस्थित बाग बगीचों का शहर नजर आता है। मुझे यह जानकारी

दी गयी थी कि सिंगापुर के प्रधानमंत्री द्वारा हमारे बैंगलोर शहर का अध्ययन किया गया था, जिससे वे अत्यंत प्रभावित हुये थे तथा उन्होंने आधुनिक सिंगापुर शहर का निर्माण उसी के अनुरूप करने का निर्णय लिया था।

घर पहुँचने पर हमने देखा कि अनेक व्यक्ति मालिक का इंतजार कर रहे थे। मालिक ने उनके साथ कुछ समय व्यतीत करने के पश्चात् दोपहर 1.00 बजे से 3.00 बजे तक विश्राम किया ।

दोपहर 3.45 बजे हम नाथन के घर से हवाई अड्डे की ओर रवाना हो गये। रेड्डी हमसे पूर्व ही वहाँ पहुँच चुका था तथा हमारे लिये उड़ान से पूर्व की जाने वाली औपचारिकताओं को निपटाने में व्यस्त था। वह भी हमारे साथ कुआलालम्पुर जाना चाहता था किन्तु किसी भी विदेशी उड़ान को सिंगापुर से कुआलालम्पुर तक की यात्रा के अधिकार नहीं दिये गये हैं, अतः वह हमारे साथ एयर इंडिया के विमान से यात्रा नहीं कर सका तथा उसे इसके लिये दूसरी उड़ान लेनी पड़ी। विमानतल पर लगभग पन्द्रह अभ्यासी मालिक को विदा करने के लिये उपस्थित थे जिनमें मेरा भाई कैप्टन एस.राजगोपाल भी था।

सीटों की जाँच करने पर ज्ञात हुआ कि मेरी तथा मालिक की सीटें केबिन के अलग अलग हिस्सों में आवंटित की गई थीं, जबकि इसके लिये एयर इंडिया को विशेष रूप से निवेदन किया गया था कि वे हमारी सीटों को एक साथ रखें तथा इसकी जानकारी यहाँ पर एयर इंडिया के मैनेजर श्री सोमायाजुलु को भी दे दी गयी थी।

अभ्यासियों से विदा लेकर हम एयर इंडिया की उड़ान संख्या ए आई 425 के विमान बोइंग 707 "त्रिशूल" में शाम 5.00 बजे सवार हुये। यह उड़ान कुआलालम्पुर मार्ग से मद्रास की ओर जा रही थी। हमारे विमान ने निर्धारित समय से 18 मिनिट विलम्ब से शाम 5.48 बजे उड़ान भरी। कुआलालम्पुर तक की 220 मील की यात्रा 41 मिनट में तय हुयी तथा शाम 6.29 बजे हमारा विमान कुआलालम्पुर के सुबंग अंतर्राष्ट्रीय हवाई अड्डे पर उतरा। बाहर काफी अंधेरा था तथा बारिश भी हो रही थी।

यात्रियों से विमान में ही बैठे रहने हेतु निवेदन किया गया। कुआलालम्पुर पहुँचने पर मालिक समझे कि हम मद्रास पहुँच गये हैं। सिंगापुर में उन्होंने मुझसे यात्रा के मार्ग तथा यात्रा की अवधि के सम्बन्ध में कई प्रश्न किये थे। वास्तव में वे कल से ही मुझसे बारम्बार यह जानकारी प्राप्त कर रहे थे, इसके बावजूद भी वे इसी भ्रम में थे कि वे मद्रास पहुँच गये हैं तथा इसी भ्रम में वे अपनी सीट से उठकर ज़ाने लगे।

मुझे अक्सर ही यह देखकर आश्चर्य होता है कि क्या वे समय के प्रति सचेत भी रहते हैं ? यद्यपि आम लोगों की तरह उनके हाथ में भी घड़ी होती है तथा प्रत्येक सुबह स्नान करने के पश्चात् वे कलाई में घड़ी पहन कर अपना चश्मा खिसकाकर इसे बड़े ध्यानपूर्वक देखते हैं कि कही घड़ी बन्द तो नहीं है तत्पश्चात्, अपने आसपास उपलब्ध दूसरी घड़ी से अपनी घड़ी का समय मिलाते हैं; लेकिन क्या वे समय के गुजरने के प्रति वैसे ही सचेत रहते हैं, जैसे कि हम लोग? मुझे इसके बारे में जानकारी नहीं है, मैं सोचता हूँ कि वे शायद हमेशा अपनी आन्तरिक चेतना में खोये रहते हैं, अतः समय के अन्य दृष्टिकोण उनके लिये कोई मायने नहीं रखते। यह ऐसा ही है जैसे उनके लिये भूत और भविष्य का कोई महत्व नहीं है। उनके लिये तो केवल उनके कार्य ही मायने रखते हैं तथा जब वे दो कार्यों के बीच फँसे होते हैं, जैसे यात्रा इत्यादि के दौरान तभी शायद वे समय के गुजरने के प्रति सचेत रहते हैं। लेकिन समय के गुजरने के प्रति ध्यान देना उनकी आदत में नहीं है तथा भूलवश कहीं ठहराव आ जाता है अथवा कोई काल्पनिक व्यवधान उत्पन्न हो जाता है तब इस अन्तराल के समाप्त होने के पश्चात् उन्हें उसी अनुरूप गंतव्य पर पहुँचने का आभास होता है।

सिंगापुर से उड़ान प्रारम्भ होते वक्त विमान में इसकी क्षमता के लगभग एक तिहाई यात्री थे लेकिन कुआलालम्पुर में पूरा विमान यात्रियों से भर गया था। शाम 7.15 बजे हमारे विमान ने मद्रास के लिये उड़ान भरी। उस समय बाहर अंधेरा गहरा चुका था। विमान के उड़ने के थोड़ी देर पश्चात् ही परिचारिकायें रात्रि भोजन परोसने की तैयारी में जुट गयीं। हमारी सीटें सबसे आखिर में भण्डारण क्षेत्र के पास थीं, क्योंकि यही एक

मात्र जगह उपलब्ध थी जहां हमें साथ–साथ सीटे उपलब्ध हो सकती थीं। भोजन का वितरण अगली पंक्ति से प्रारम्भ हुआ। जैसे ही मालिक की नजर परिचारिकाओं द्वारा ले जा रही भोजन की ट्रे पर पड़ी उन्होंने स्नेह पूर्वक शरारत भरी निगाहों से मेरी ओर देखा तथा मुस्कुराते हुये बोले, "अब तुम्हें भी भोजन परोसा जायेगा। अच्छी तरह से भोजन करना। तत्पश्चात् उन्होंने मुझसे पूछा कि क्या वे ट्रे में जो कुछ है, वही उपलब्ध कराते हैं अथवा अनुरोध करने पर इसके अतिरिक्त भी भोजन देते हैं? तत्पश्चात् वे बोले कि मैं भोजन नहीं करूँगा। उमेश की पत्नी ने मेरे लिये भोजन पकाया होगा तथा नीतू मेरा इंतजार कर रहा होगा लेकिन तुम्हारे लिये खाना अति आवश्यक है, तुमने आज बहुत काम किया है तथा दिन में भोजन भी नहीं किया।" मैं सहर्ष ही इसके लिये राजी हो गया, लेकिन बावजूद इसके अतिमूल्यवान सामग्री से भरी ट्रे, एक के पश्चात् एक अग्रिम पंक्ति वालों को क्रमानुसार परोसी जा रही थी। हमारी ओर किसी का भी ध्यान नहीं था। मालिक अत्यंत उत्सुकता पूर्वक यह नजारा देख रहे थे। थोड़ी देर पश्चात् वे मुझसे बोले, "देखो हम बहुत जल्द ही मद्रास पहुँच जायेंगे, ये लोग तुम्हें भोजन कब देंगे? यदि यह इसी तरह विलम्ब करते रहे तो तुम्हें आज भोजन नसीब नहीं होगा।"

मैंने मालिक से निवेदन किया कि वे निश्चिंत रहें चूँकि भोजन का वितरण अगली सीटो से क्रमानुसार प्रारम्भ हुआ है अतः हमारा क्रम उसी के अनुसार आयेगा। मैंने उन्हें विश्वास दिलाया कि हमारी यात्रा में अभी दो घंटे शेष हैं, अतः मेरा क्रम अवश्य आयेगा। उन्होंने ठिठोली करते हुये कहा, "मुझे इस पर विश्वास नहीं है। यदि उपलब्ध भोजन समाप्त हो गया तो तुम क्या खाओगे? तुम्हारी भलाई इसी में हैं कि एक लड़की को बुलाओ तथा उसे अपने भोजन की ट्रे तुरन्त परोसने के लिये निवेदन करो।" मैंने मालिक को जानकारी दी कि भोजन तथा पेय पदार्थ इत्यादि विमान में सवार यात्रियों की संख्या के अनुसार रखे जाते हैं। अतः यह नामुमकिन है कि किसी यात्री को इस कारण से भोजन प्राप्त न हो कि भोजन की उपलब्धता नहीं है। मेरे समझाने पर भी मालिक की चिंता बरकरार रही।

थोड़ी देर पश्चात् ऐसा महसूस हुआ कि उनका अनुमान सही साबित हो रहा है, जब मैंने सुना कि कुछ परिचारिकायें आपस में चर्चा कर रहीं थीं तथा शाकाहारी भोजन की ट्रे की मात्रा को लेकर चितिंत थीं। मुझे लगा कि आज का दिन मुझे उपवास करना पड़ेगा। अंत में मुझे एक शाकाहारी भोजन की ट्रे नसीब हो गयी जो उनके पास उपलब्ध अंतिम ट्रे थी। मालिक निश्चिंत हो गये तथा भोजन करते वक्त वे मुझे इस प्रकार से निहारते रहे जैसे कि माँ अपने बच्चों को भोजन कराते समय निहारती है। वास्तव में मुझे तेज भूख लगी थी, भोजन कर लेने के पश्चात् मालिक ने उत्सुकतावश मुझसे पूछा कि भोजन मुझे पूरा पड़ा कि नहीं। यदि आवश्यकता हो तो और भोजन लाने के लिये कहा जाये। कृपया निःसंकोच मुझे बताओ क्योंकि मैंने भोजन नहीं किया है। अतः यह सम्भव है कि वे तुम्हें और भोजन उपलब्ध न करा पायें लेकिन मेरी ट्रे अभी उनके पास उपलब्ध होगी। क्या मैं उस लड़की को बुलाकर अपनी ट्रे मंगा लूँ ? मैंने मालिक को विश्वास दिलाया कि मैंने पेट भर भोजन कर लिया है तथा मैं इससे अधिक भोजन नहीं कर सकता। अतः वे निश्चिंत हो गये तथा सीट पर कमर टिकाकर आराम पूर्वक बैठने के पश्चात बोले, "अब जबकि तुमने भोजन कर लिया है, तो मुझे अपने हुक्के की तलब लग रही है।"

थोड़ी ही देर पश्चात् हमारा विमान मद्रास के मीनाम्बक्कम हवाई अड्डे पर उतरा। कुआलालम्पुर से मद्रास तक की 1610 मील की दूरी हमने 3 घंटे 10 मिनट में तय की। हमारा विमान भारतीय समयानुसार रात्रि 8.25 बजे मद्रास के हवाई अड्डे पर उतरा। मालिक के हाथ में स्लाइंज लगी हुयी थी तथा वे विश्राम कर रहे थे। एयर इंडिया द्वारा एक व्हील चेयर का बंदोबस्त कर दिया गया था, व्हील चेयर पर बैठते ही मालिक ने स्लाइंज निकाल दी तथा सबकी नजरें बचाकर मुझे इसे बैग में रखने के लिये कहा। वे बोले, "यदि ये लोग मुझे स्लाइंज लगी हुयी देखेंगे तो चिंतित हो जायेंगे कि कहीं मैं अस्वस्थ तो नही हूँ।" यद्यपि मुझे संदेह था कि शायद इस पर सुलोचना की नजर पड़ गयी थी तथा उसने स्वयं ही अपना अनुमान लगा लिया था, जैसा कि बाद में उसके द्वारा पूछे गये

प्रश्नों से कि मालिक के हाथ में स्लाइंज क्यों लगी हुई थी? वे विमान से बाहर कब आये? इत्यादि–इत्यादि से, मैंने अनुमान लगाया। बड़ी पैनी निगाहें हैं उसकी।

स्वदेश वापसी पर स्वास्थ्य तथा कस्टम सम्बन्धी औपचारिकताओं से निपटने में हमें लगभग पैंतालिस मिनट का समय लगा। विमान तल पर लगभग पैंतालिस अभ्यासी मालिक की स्वदेश वापसी पर उनके स्वागत के लिये उपस्थित थे। विमान तल से मालिक अपने पुत्र उमेश के साथ बसंत नगर रवाना हो गये तथा मैं अपने घर "गायत्री" की ओर रवाना हो गया।

इस प्रकार मालिक का पूर्वी देशों की यात्रा का प्रथम दौरा पूर्ण हुआ।

24 अप्रैल– रविवार (मद्रास)

हमारे घर पर आयोजित साप्ताहिक सत्संग में मालिक नहीं पहुँचे। सत्संग के पश्चात् मैं सुलोचना को साथ लेकर बसंत नगर पहुँचा तथा मालिक के साथ एक घंटे का समय व्यतीत किया। वे स्वस्थ नजर आ रहे थे यद्यपि उनके कंधे का दर्द यथावत था। शाम के समय हमारा पुनः बसंत नगर जाना हुआ।

25 अप्रैल – 1977 सोमवार

सुबह, शाम दोनों वक्त मालिक से भेंट करने के पश्चात् मालिक के समक्ष एक नया प्रश्न प्रस्तुत किया गया।

प्रः मैं कहाँ हूँ?

मालिकः तुम वहाँ हो जहाँ तुम्हें नहीं होना चाहिये?

ए.एच. कृष्णा द्वारा मालिक के लिये एक मालिश करने वाले की व्यवस्था की गयी जिसने मालिक की अच्छे से मालिश की। तत्पश्चात् मालिक की स्थिति में थोड़ा सुधार हुआ।

26 अप्रैल 1977 – मंगलवार

मालिक से भेंट करने के लिये प्रातःकाल बसंत नगर गया था तत्पश्चात् दोपहर 1.30 बजे पुनः बसंत नगर पहुँचा तथा मालिक द्वारा दिये गये निर्देशानुसार उन्हें अपने साथ गायत्री ले आया।

उस समय हमारी खुशी का ठिकाना नहीं रहा, जब स्वयं मालिक द्वारा मेरे पुत्र पी.आर.कृष्णा को दीक्षा प्रदान करने की पेशकश की गयी। मालिक ने मुझसे कहा, "शायद मैंने कृष्णा को दीक्षा प्रदान करने की मंशा तुम्हारे समक्ष प्रगट की थी। पहले मेरा विचार था कि उसे तुम्हारे माध्यम से दीक्षित करवाऊँ लेकिन उससे तुम्हारे उत्तराधिकारी बनने के सम्बन्ध में लोगों को जानकारी हो जाने का खतरा पैदा हो सकता था। यद्यपि एक न एक दिन तो सभी को इसकी जानकारी हो ही जायेगी, लेकिन मैं नहीं चाहता कि इस विषय में अभी किसी को भी कोई जानकारी हो। तत्पश्चात् वे बोले, क्या तुम्हे यह जानकारी है कि मैंने कृष्णा को दीक्षित क्यों किया? वैसे लड़का योग्य है, लेकिन उसे दीक्षित करने के पीछे मेरा कुछ और ही मकसद है। मेरे द्वारा तुम्हारे पिता जी को तथा अपनी बड़ी बहू (सुलोचना) को पूर्व में ही दीक्षा प्रदान की जा चुकी है, यह सब लालाजी की कृपा के कारण हुआ है। अब मात्र कृष्णा शेष रह गया था तथा मैं नहीं चाहता था कि उसकी जिम्मेदारी तुम्हें उठानी पड़े। मैं चाहता था कि तुम अपने स्वयं को पूर्ण रूपेण स्वतंत्र रख सको, ताकि तुम अपने आपको अधिक से अधिक मिशन के कार्यों में व्यस्त रख सको। भाई अब तुम एक युग पुरुष हो गये हो, तुम्हारा कार्य तो पूर्व में ही पूर्ण हो चुका है। अतः अब अपने आपको पूरी तरह से मिशन के कार्यों में झोंक दो, अपितु तुम पहले से ही मिशन का बहुत कार्य कर रहे हो लेकिन अभी भी बहुत कुछ करना बाकी है तथा एक न एक दिन मेरा भी सम्पूर्ण कार्य तुम्हीं को करना पड़ेगा। दक्ष बनो। लालाजी साहब तुमसे अति प्रसन्न हैं, चिंरजीवी रहो।" (उनके द्वारा दिये गये इस स्नेह पूर्ण आशीर्वाद के पश्चात् उनके चरण स्पर्श करते वक्त मेरी आँखों से अश्रुधारा बह रही थी।)

मैं मालिक की इस उदारता तथा असीम प्रेम का ऋण कैसे चुका पाऊँगा? सर्वप्रथम उन्होंने मेरे पिता जी को दीक्षा प्रदान की, तत्पश्चात् मेरी पत्नी को दीक्षित किया तथा आज उन्होंने मेरे पुत्र कृष्णा को दीक्षा प्रदान की। इससे पूर्व उनके द्वारा मेरी माँ जिनका स्वर्गवास सन् 1933 में हो गया था, की आत्मा को मुक्त कर मुझ पर असीम अनुकम्पा की। मेरी प्रार्थना

है कि मालिक का साथ सदा के लिये बना रहे। शाम 4.45 बजे मालिक बसंत नगर के लिये रवाना हो गये, हमने उन्हें रोकने का प्रयास किया लेकिन उन्होंने कहा "मैं जिस कार्य के लिये आया था वह अब पूर्ण हो चुका है। अतः अब मुझे लौटना होगा। कृपया मुझे अब रुकने के लिये न कहो। शाम को बसंत नगर आओ।"

अतः शाम को मैं बसंत नगर पहुँचा तथा शाम 6.00 बजे से 7.30 बजे तक का समय मालिक के साथ व्यतीत किया।

27 अप्रैल 1977 – बुधवार (मदुरई)

सुबह 7.00 बजे, मैं कार से सुलोचना, कृष्णा, आर. स्वामीनाथन तथा एस.के. मोहन के साथ मद्रास से मदुरई के लिये रवाना हुआ, तथा दोपहर 3.00 बजे मदुरई पहुँचा । मालिक के जन्मोत्सव समारोह कार्यक्रम का आयोजन इस वर्ष मदुरई में किया जा रहा है।

शाम 7.00 बजे मदुरई केन्द्र में सत्संग में उपस्थित हुआ। तत्पश्चात् उत्सव समिति की बैठक आयोजित की गयी थी जिसमें अंतिम क्षणों में मालिक के उन्यासिवें जन्म दिवस (अठ्हत्तरवीं वर्षगाँठ) समारोह के आयोजन का निर्णय लिया गया।

28 अप्रैल 1977–गुरुवार

प्रातः काल मालिक के जन्मोत्सव समारोह कार्यक्रम से सम्बन्धित कार्यो में व्यस्त रहा तथा दोपहर 1.00 बजे विरुदनगर के लिये रवाना हो गया तथा यहाँ पहुँचकर बारह व्यक्तियों को सत्संग कराया।

29 अप्रैल 1977–शुक्रवार

रात्रि विश्राम विरुदनगर में किया ताकि सुबह 6.40 बजे आने वाली त्रिवेन्द्रम एक्सप्रेस पर मालिक की अगवानी कर सकूँ। मालिक इस ट्रेन द्वारा मद्रास से मेरे पिताजी के साथ आ रहे हैं। स्टेशन पर लगभग तीस अभ्यासी मालिक के स्वागत के लिये उपस्थित थे। स्टेशन से मालिक को समीप ही आई.टी.पी.टी. के कर्मचारी आवास में ले जाया गया। सुबह कोई हलचल नहीं रही तथा मालिक का समय शान्त व्यतीत हुआ। दोपहर भोजन के पश्चात् मालिक ने आई.टी.पी.टी. कारखाने का भ्रमण किया।

शाम 5.00 बजे लगभग साठ अभ्यासियों के एक दल, जिसमें सात राजापलायम तथा छः मद्रास/मदुरई के अभ्यासी भी सम्मिलित थे, को सत्संग कराया। सिटिंग लगभग पच्चीस मिनट चली जिसमें अत्यंत गहरायी तथा शान्ति का अनुभव हुआ।

तत्पश्चात् चाय का दौर चला तथा शाम 5.50 बजे मालिक मेरे पिता जी तथा मेरे साथ टी.वी.एस. द्वारा उपलब्ध करायी गयी वातानुकूलित कार से मदुरई की ओर रवाना होकर शाम 6.40 बजे मदुरई के तालाकुलम में "पेरियार मल्लिगई" पहुँचे। कार अत्यंत तीव्र गति से चल रही थी। लेकिन हमें जरा भी असुविधा नहीं हुयी। यह कार विदेशी होने के साथ साथ वातानुकूलित भी थी। "पेरियार मल्लिगई" जो मालिक के जन्मोत्सव समारोह कार्यक्रम का आयोजन स्थल था यहाँ मालिक के 79वें जन्मोत्सव समारोह कार्यक्रम का आयोजन किया जा रहा है। मालिक के दर्शनों के लिये लगभग तीन सौ अभ्यासी यहाँ उपस्थित थे। मालिक थके हुए नजर आ रहे थे अतः उन्होंने कहा कि वे कुछ देर ही यहाँ रुकेंगे ताकि अभ्यासियों को निराशा न हो, तत्पश्चात् वे वालमजी मेंशन में अपने घर जाना चाहेंगे। लेकिन कुछ देर गद्दी पर बैठने के पश्चात् उन्होंने मुझे अपने पास बुलाया तथा बोले, "बेचारे अभ्यासी बहुत दूर–दूर के स्थानों से यहाँ पहुँचे हैं, अतः मैं उन्हें कुछ देर सिटिंग देना चाहता हूँ इसमें कोई आपत्ति तो नहीं है?" मैंने उन्हें विश्वास दिलाया कि किसी को भी इसमें कोई आपत्ति नहीं है।

मालिक द्वारा अभ्यासियों के इस बड़े समूह को लगभग अठारह मिनट सिटिंग दी गई जो बहुत अच्छी रही।

शाम 8.00 बजे हम आई.टी.पी.टी. के विश्राम गृह वालमजी मेंशन की ओर रवाना हो गये। यहाँ मालिक के ठहरने की व्यवस्था की गयी थी। मालिक इस जगह को बहुत पसंद करते हैं तथा कुछ माह पूर्व शाहजहाँपुर में जब मैं मालिक से मदुरई के कार्यक्रम के विषय में बात कर रहा था तब मालिक ने कई मर्तबा मुझसे पूछा "क्या वह जगह (आई.टी.पी.टी. विश्राम गृह) अभी भी उपलब्ध है? यदि मैं मदुरई जाता हूँ तो वहीं ठहरना पसन्द

करूँगा। किसी अन्य स्थान पर ठहरने में मैं लेशमात्र भी इच्छुक नहीं हूँ। अतः तुम मेरे कार्यक्रम को इसी प्रकार से अंतिम रूप देना।''

30 अप्रैल 1977 – शनिवार

सम्पूर्ण व्यवस्था इत्यादि का जायजा लेने के लिये मैं वालमजी मेंशन से ''पेरियार मल्लिगई'' रवाना हुआ जिसकी यहाँ से दूरी लगभग एक–डेढ़ कि.मी. है तथा यह तालाकुलम में स्थित है। आज मालिक का उन्यासीवाँ जन्मदिवस है तथा मदुरई केन्द्र को इसे इस वर्ष राष्ट्रीय स्तर पर आयोजित करने के अवसर का सौभाग्य प्राप्त हुआ है। यह शायद विडम्बना ही है कि उत्सव का आयोजन जिस सभागृह में रखा गया है उसका नाम 'पेरियार मल्लिगई' है। 'पेरियार' नाम स्वर्गीय ई.वी. रामास्वामी नाइकर जो कि ब्राह्मणों के प्रति घृणा की भावना रखते थे तथा अत्यंत नास्तिक प्रवृत्ति के माने जाते थे, के सम्मान में रखा गया है। उन्होंने ''रामायण'' को ''कीमायाम'' की संज्ञा दी तथा समूचे तमिलनाडु के जन सामान्य में ईश्वर के विरुद्ध प्रचारित किया।

सुबह 9.30 बजे – मालिक कुछ मिनट पूर्व ही यहाँ पहुँच गये थे। सभागृह में उपस्थित लगभग एक हजार अभ्यासियों के दल ने मालिक का स्नेहपूर्वक स्वागत किया। सभी अभ्यासी सुबह 8.00 बजे से ही मालिक का बेसब्री से इंतजार कर रहे थे। मालिक ने लगभग बीस मिनट तक सामूहिक सत्संग कराया। सुबह के वक्त भी वहाँ अत्याधिक गर्मी थी, मालिक के दोनों ओर टेबल फैन लगे हुये थे। मालिक जिस मंच पर बैठे हुये थे उसे थोड़ा उठाकर बनाया गया था, इस सबके बावजूद मालिक विचलित नजर आ रहे थे। प्राणाहुति सूक्ष्म एवं निश्चल थी।

सत्संग के पश्चात् मालिक ने थोड़ी देर विश्राम किया, तत्पश्चात् मालिक द्वारा पृथक स्थान पर प्रसाद अर्पण किया गया जिसके पश्चात् मालिक पुनः मंच पर लौट आये। मेरे पिताजी डॉ. सी.ए. राजगोपालाचारी ने खुशी के इस महत्वपूर्ण अवसर के उपलक्ष्य में एक विशेष स्मारिका जारी की, जिसमें अंग्रेजी तथा तमिल, दोनों परिच्छेद संकलित किये गये थे। इसके पश्चात् भाई राघवेन्द्र राव की ''पेनोरेमिक व्यू ऑफ सहज मार्ग'' के

कन्नड़ अनुवाद, जिसका शीर्षक "सहज मार्ग समीक्षा" रखा गया था का विमोचन किया गया। इसके पश्चात् कुछ उद्‌बोधन इत्यादि दिये गये। सुबह 11.30 बजे वालमजी मेंशन रवाना होने से पूर्व मालिक विश्राम करते रहे।

शाम 6.00 बजे मालिक पुनः सभागृह में पधारे तथा सायंकालीन सत्संग कराया। उन्होंने मुझे बताया, "सुबह उनका आधा कार्य पूर्ण हुआ था, बाकी कार्य उन्हें अभी पूर्ण करना है।" सत्संग के पश्चात् मद्रास के श्री एस. नारायणस्वामी ने मालिक के उद्‌बोधन का तमिल अनुवाद किया। तत्पश्चात् अहमदाबाद के श्री सी. राजगोपालन ने अपने प्रथम प्रयास के बावजूद अच्छा भाषण दिया तथा अंत में नैल्लोर केन्द्र के प्रशिक्षक के. रामचन्द्र रेड्डी ने तेलगू में अपना उद्‌बोधन दिया।

आज सुबह मैंने हैदराबाद के डॉ.एस.वी. राघवन (श्री आर.वीर राघवन के दामाद) को एक विशेष सिटिंग दी ताकि उन्हें अंतरिम अनुमति देने के लिये तैयार किया जा सके। उसी शाम मालिक की अनुमति से मैंने उन्हें द्वितीय सिटिंग दी तथा कार्य पूर्ण किया। शाम 5.00 बजे मालिक के साथ "पेरियार मल्लिगई" के लिये रवाना होने से पूर्व, वालमजी मेन्शन में उन्हें अंतरिम अनुमति प्रदान की गयी। आज कुल 3000/– रु. की पुस्तकों की बिक्री हुयी। रात्रि 9.00 बजे हम घर वापस लौट आये, जहाँ अनेक अभ्यासी उपस्थित थे जो मालिक के साथ कुछ क्षण व्यतीत करना चाहते थे। वे सभी कार्यक्रम की व्यवस्थाओं तथा मालिक की सिटिंग इत्यादि से अत्यन्त प्रभावित थे। मालिक ने इसके प्रति उत्तर में कहा "यह सब लालाजी की कृपा के कारण है कि यहाँ जो भी आता है वह खाली हाथ नहीं लौटता।"

1 मई 1977 – रविवार

सुबह 6.30 बजे मैं कार्यक्रम की व्यवस्था का जायजा लेने के लिये "पेरियार मल्लिगई" के लिये रवाना हो गया। सुबह 9.00 बजे मालिक "पेरियार मल्लिगई" पधारे। कल 1000 से भी अधिक संख्या में अभ्यासी उपस्थित थे, जिनमें से कुछ अभ्यासियों की अनुपस्थिति के बावजूद भी यहाँ बड़ी संख्या में अभ्यासी मौजूद थे।

सुबह 9.30 बजे मालिक द्वारा सामूहिक सत्संग कराया गया।

सुबह 10.00 बजे से 10.45 के बीच प्रशिक्षकों की एक बैठक आयोजित की गयी थी, जिसकी अध्यक्षता मालिक द्वारा की गयी। बैठक में बैंगलोर के एम.डी. जहाँगीरदार, बी.के. राजगोपाल तथा बी.जी. जनार्धन, रायचुर के श्री आर.डी. विट्ठल राव तथा श्रीमती राघवेन्द्र राव, कडप्पा के आर. बैंकटसुब्बा रेड्डी तथा आर.रामचन्द्र रेड्डी, नैल्लोर के के. रामचन्द्र रेड्डी, राजामुन्दरी से श्री पी.सुब्रामनियम, तिरुपति के डॉ. के.एस. स्वामी तथा सुकुमारी रंगनायकी, त्रिची के श्री एस.राजू तथा श्री के. सुब्रामनियम, तिरूनेलवली के श्री के.आर.सुब्रामनियम, मद्रास के प्रशिक्षकों में मेरे अलावा श्री आर. वीरराघवन, डॉ. सी.ए.राजगोपालाचारी, श्री जी.एस. मनी, श्रीमती सुलोचना पार्थसारथी (मेरी पत्नी) तथा के. महालिंगम उपस्थित थे। हैदराबाद की ओर से नवनियुक्त प्रशिक्षक डॉ. एस.वी. राघवन बैठक का प्रतिनिधित्व कर रहे थे। तिरूतानी के श्री के.वी.वैंकटपति, मुदरई के श्री थस्मा स्वामी, श्री जे.आर. दोरे स्वामीअय्यर, श्री डब्ल्यू.एच. श्रीनिवासन, श्री वी.के. चन्द्रशेखर तथा श्री टी.एम.बाला सुब्रामनियम, उत्तर भारत के एकमात्र प्रतिनिधि के रूप में अहमदाबाद के श्री सी. राजगोपालन बैठक में उपस्थित थे। इस प्रकार से बैठक में कुल मिलाकर 28 प्रशिक्षक उपस्थित थे।

मालिक द्वारा मुझे पूर्व में ही बैठक के सन्दर्भ में संक्षिप्त जानकारी दे दी गयी थी। उसी के मद्देनजर मैंने प्रशिक्षकों को निम्नानुसार सम्बोधित किया।

1) प्रशिक्षकों में अहम् बढ़ रहा है। मालिक ने इस सबसे बड़ी बुराई के प्रति सचेत रहने के लिये अनेकों बार आगाह किया है। किसी भी प्रशिक्षक को यह विचार तक नहीं आना चाहिए कि वह प्रशिक्षक है। मालिक का कहना है कि प्रशिक्षक वह है जो हमेशा अभ्यासियों की सेवा के लिये तत्पर रहता है तथा उनकी सेवा करना अपना कर्तव्य समझता है, इसके लिये उसमें लेशमात्र भी अहंकार नहीं होना चाहिये। मैं चाहता हूँ कि प्रत्येक प्रशिक्षक अपने सच्चे हृदय से इस कार्य को मालिक का कार्य समझकर करे। आखिर, अहंकार का क्या कारण हो सकता है? यह आश्चर्य की बात

है कि वे व्यक्ति अपने आप को महान समझते हैं जिन्होंने अभी साक्षात्कार का एक अंश मात्र तक प्राप्त नहीं किया है।

2) लेखा – मालिक चाहते हैं कि छोटे केन्द्रों को अनावश्यक कार्यों के बोझ से मुक्त रखा जाये तथा इस प्रकार से नियम बनाये जायें कि उन पर लेखे इत्यादि की जिम्मेदारी का बोझ न पड़े। यह व्यवस्था केवल बड़े केन्द्रों में ही रहनी चाहिये।

3) प्रशिक्षकों को उनके द्वारा मिशन में लाये गये अभ्यासियों के आध्यात्मिक हितों तथा विकास के लिये उत्तरदायी ठहराया जाना चाहिये तथा जो व्यक्ति मिशन का प्रशिक्षक होने के साथ–साथ केन्द्र का प्रभारी है, तब उसका दायित्व और भी बढ़ जाता है।

बहुत से प्रशिक्षक अपने केन्द्र के बाहर से भी अनेक व्यक्तियों को मिशन में लेकर आते हैं तथा उन्हें समुचित मार्गदर्शन एवं सहयोग दिये बिना मँझदार में छोड़े देते हैं। श्री जी.एस. मनी जो अपने संगीत के कार्यक्रमों के कारण भ्रमण इत्यादि में व्यस्त रहते हैं, इस तरह के व्यवहार के अभ्यस्त हैं। कोलेगल इत्यादि में उनके द्वारा की जा रही गतिविधियों के सम्बन्ध में उन्होंने भाई जहांगीरदार को सूचित करना तक उचित नहीं समझा, जिसके कारण कितनी उलझन खड़ी हो गयी थी। वे उन प्रशिक्षकों में से हैं, जिनका कार्य अत्यन्त अस्त व्यस्त है तथा बिना स्वयं के करे–धरे मात्र अपने अहम् की तुष्टि के लिये वे मालिक को चिट्ठी भेजते रहते हैं, "कि वे इतने नये अभ्यासियों को मिशन में लेकर आये हैं।" मालिक पूर्णतया इसके खिलाफ हैं तथा उन्होंने कहा, "मैंने अनेक मर्तबा दोहराया है कि उन्हें मात्र अभ्यासियों की संख्या बढ़ाने से मतलब नहीं है, अपितु उन्हें योग्य अभ्यासियों की आवश्यकता है। कुछ प्रशिक्षक ऐसे भी हैं जो गली कूचे में से अभ्यासियों को हाँक कर ले आते हैं, जिन्हें यह तक जानकारी नहीं होती कि अभ्यास क्या है? उन्हें क्या करना है? तथा कब और कैसे करना है? उन्हें इसके बारे में कोई जानकारी नहीं दी जाती। यह भी अत्यन्त खेद का विषय है कि सामान्यतया प्रशिक्षक को अभ्यासियों के हितों और विकास से कोई लेना देना नहीं होता। ऐसे मामलों में मैं अब

सख्ती से पेश आऊँगा। भविष्य में यदि कोई प्रशिक्षक किसी नये व्यक्ति को मिशन में प्रवेश कराता है तो उस व्यक्ति की सम्पूर्ण जिम्मेदारी उस प्रशिक्षक की रहेगी। मैं चाहता हूँ कि प्रत्येक प्रशिक्षक को यह स्पष्ट हो जाना चाहिये तथा इस बात को अपने जहन में रखकर ही उसे आगे कार्य करना चाहिये, इसका तात्पर्य यह नहीं है, कि प्रशिक्षक हाथ पर हाथ धर कर बैठ जायें। उन्हें अपने आपको इस संकल्प के साथ कार्य में झोंकना होगा कि जिस किसी का भी प्रकरण वे अपने हाथ में लेंगे उसे खाली हाथ नहीं लौटायेंगे। मात्र यही सब आवश्यक है।''

4) पूजा अथवा ध्यान प्रारम्भ करवाते समय ''दीक्षा'' शब्द का प्रयोग नहीं किया जाना चाहिये। मालिक ने इसके सम्बन्ध में जानकारी देते हुये बताया कि इसके कारण दक्षिण भारत में समस्या खड़ी हो गयी थी। सर्वप्रथम डॉ. के.सी. वरदाचारी द्वारा इस शब्द का प्रयोग करना प्रारम्भ किया गया था, तत्पश्चात् मद्रास के श्री आर.वीर. राघवन अत्यन्त सर्तकता पूर्वक उनका अनुसरण करने लगे। लेकिन श्री शेषाद्रि द्वारा इस शब्द का उपयोग तब भी नहीं किया गया क्योंकि वे दीक्षा प्राप्त कर चुके हैं तथा इस शब्द के महत्व को समझते हैं। शनैः शनैः इस शब्द का दुरुपयोग बढ़ता जा रहा है, जिसके कारण मालिक अत्यन्त व्यथित थे तथा चाहते थे कि इस पर तुरन्त रोक लगायी जानी चाहिये। लेकिन यह इतना आसान नहीं था। क्योंकि प्राचीन धार्मिक ग्रंथों के अनुसार यह मान्यता प्राप्त प्रमाणिक शब्द है। अड़चन यह होगी कि ''दीक्षा'' के वास्तविक तथ्य को कैसे गोपनीय रखा जाये तथा नये अभ्यासियों के पूजा प्रारम्भ करते समय इसके प्रयोग करने पर रोक लगा दी जाये।

5) वे प्रशिक्षक जो यात्रा करना आवश्यक समझते हों, केन्द्र के प्रभारी को इससे अवगत करायें तथा इस दौरान यदि वे किन्हीं नये अभ्यासियों को सिटिंग देते हैं, तो इसकी सूचना भी उपलब्ध करायें, जिससे केन्द्र द्वारा उन अभ्यासियों की देखरेख सुनिश्चित की जा सके।

प्रशिक्षकों की बैठक समाप्त होने के पश्चात् मालिक ने सामने वाले कक्ष में अपनी गद्दी पर विश्राम किया जबकि अभ्यासी हाथ पर हाथ

बाँधकर पंक्तिबद्ध वहाँ से जा रहे थे। ऐसा प्रतीत हो रहा था कि समारोह समाप्त हो चुका है। दोपहर तक नैल्लोर, कड़प्पा तथा येरागुन्टला की ओर की सभी बसें रवाना हो चुकी थीं।

शाम 6.00 बजे नार्थ वेली स्ट्रीट पर स्थित सेतुपति उच्चतर विद्यालय में एक सार्वजनिक बैठक आयोजित की गयी थी। मालिक द्वारा इस बैठक की अध्यक्षता की गयी जिसमें छः सौ से भी अधिक उत्साही श्रोतागण उपस्थित थे। स्थानीय उप न्यायाधीश मि. सोमसुन्दरम आज के कार्यक्रम की औपचारिक अध्यक्षता कर रहे थे। सर्वप्रथम श्री डब्ल्यू.एच. श्रीनिवासन ने अपना लिखित उद्‌बोधन प्रस्तुत किया, जिसके लिये उन्होंने अच्छी तैयारी की थी । तत्पश्चात् मेरे द्वारा पैंतीस मिनट तक अपना उद्‌बोधन प्रस्तुत किया, जिसे रिकार्ड में टेप कर लिया गया। मेरे उद्‌बोधन का सही मायने में शीर्षक "प्रेम के माध्यम से योग" दिया जा सकता है। मेरे उद्‌बोधन के पश्चात् श्री एस. राजू द्वारा लगभग चालीस मिनट से भी अधिक समय तक तमिल में अपना उद्‌बोधन प्रस्तुत किया गया तथा हमेशा की तरह, मुझे बड़ी सूझबूझ से उनके उद्‌बोधन को बीच में ही समाप्त करवाना पड़ा। अंत में उत्सव के एकमात्र यूरोपियन प्रतिनिधि एमस्टरडम के एनी मेरी वेन स्टीवन द्वारा उद्‌बोधन प्रस्तुत किया गया। शाम आठ बजे बैठक के समाप्त होने के पश्चात् हम घर वापस लौट आये।

मालिक द्वारा श्री जे.आर. दौरेस्वामी अय्यर को पूर्ण स्वीकृति प्रदान की गयी। मेरे पास एक प्रमाण पत्र उपलब्ध था जिसका उपयोग उसकी स्वीकृति में कर लिया गया। जे.आर.डी. ने कल मालिक से भेंट की थी। मैंने मालिक को उसके बारे में जानकारी दी तथा निवेदन किया था कि वे उस पर कुछ रहम करें। मैं जे.आर.डी. को मालिक से भेंट कराने के लिये ले गया था। मालिक ने उसकी ओर देखा और बोले, "लगभग एक वर्ष पूर्व जब तुम मुझसे मिले थे तब मैंने तुम्हें सिटिंग दी थी, तथा छः माह पश्चात् तुम्हें इसके बारे में मुझे पत्र द्वारा सूचित करने के लिये कहा था। तुमने मुझे स्मरण क्यों नही कराया?" जे.आर.डी. अपने आप पर काबू नहीं रख सके तथा रोने लगे। उसने मालिक के चरणों पर गिरकर अपनी इस भूल के

लिये क्षमा प्रार्थना की। मालिक ने मुझसे कहा "देखो, जैसे ही मेरी उस पर नजर पड़ी, मुझे याद आ गया कि वह शाहजहाँपुर आया था तथा मैंने उसकी तैयारी भी की थी, एवं छः माह पश्चात् मुझे इसके बारे में याद दिलाने के लिये कहा था, ताकि मैं उसकी पूर्ण तैयारी कर सकूँ। लेकिन भाई, लोग इतने निठल्ले हैं कि न तो मेरी बात सुनना चाहते है तथा न ही इस पर अमल करते हैं। अब तुम मुझसे क्या करवाना चाहते हो?" मैंने मालिक से प्रार्थना की कि वे जे.आर.डी. की भूल को क्षमा कर दें तथा उसके लिये जो भी करना चाहते थे, उसे करने की कृपा करें। मालिक मुस्कुराये और कहा, "अब तुम कह रहे हो तो मैं उसका प्रकरण ले लेता हूँ यद्यपि वह अत्यन्त सीधा सादा व्यक्ति है, लेकिन थोड़ा मूर्ख है। उसे मेरे समक्ष ध्यान में बैठने के लिये कहो।" जे.आर.डी. पन्द्रह मिनट के लिये सिटिंग में बैठे तथा अंत में मालिक द्वारा उसे पूर्ण स्वीकृति प्रदान की गयी। मालिक मेरी ओर देखकर बोले, "इसका प्रमाण पत्र मैं शाहजहाँपुर से भिजवा दूँगा, इसका नाम पता सावधानी पूर्वक नोट कर लो।" मैंने मालिक को जानकारी दी कि मेरे पास एक कोरा प्रमाण पत्र है, तथा मैंने तत्काल ही इसे भरकर मालिक के समक्ष प्रस्तुत कर दिया तथा इस पर उनके हस्ताक्षर प्राप्त कर लिये, मालिक मेरी ओर देखकर दंग रह गये। मालिक के हस्ताक्षर के उपरान्त मैंने प्रमाण पत्र जे.आर.डी. को सौंप दिया, जिसे उसने अश्रुपूरित नेत्रों से सहर्ष स्वीकार किया।

तत्पश्चात् मैं "पेरियार मल्लिगई" पहुँचा जहाँ से सभी अभ्यासी रवाना हो चुके थे, मात्र लगभग 200 अभ्यासी ही शेष रह गये थे। बैंगलोर, कोलेगल इत्यादि की लम्बी दूरी की अंतिम बसें रवाना हो रही थीं तथा मध्य रात्रि तक अधिकांश बसें रवाना हो चुकी होंगी। अभ्यासियों से विदा लेकर मैं रात्रि 10.00 बजे तक वालमजी मेन्शन वापस लौट आया। मालिक पहले ही विश्राम के लिये अपने कक्ष में जा चुके थे । मैंने उनसे थोड़ी देर गुफ्तगू की तथा विश्राम के लिये चला गया ।

2 मई 1977 – सोमवार

सुलोचना, कृष्णा, एस.के.सुन्दरम, उनकी पत्नी सरोजा, एस.के.

मोहन, आर.स्वामीनाथन, एस.पी. लोकनाथ, अहमदाबाद के सी. राजगोपालन, के.आर. सुब्रामनियम तथा मैं दो कारो में सवार होकर सुबह 6.30 बजे त्रिवेन्द्रम की ओर रवाना हुये। हमने इडली इत्यादि साथ रख ली थी, तथा सुबह 7.30 बजे हमने विरुदनगर में नाश्ता किया। विरुदनगर से हम सुबह 8.15 बजे रवाना होकर तिरुनेलवेली पहुँचे जहाँ हम श्री के. आर. सुब्रामनियम को उनके निवास पर छोड़कर त्रिवेन्द्रम की ओर रवाना हो गये। दोपहर 1.00 बजे हम सुन्दरा विलासम महल पहुँचे। यह महल त्रिवेन्द्रम के किला मैदान में स्थित है तथा यहाँ के प्रसिद्ध श्री पद्मनाभा स्वामी मंदिर के ठीक पिछवाड़े स्थित है। सुन्दरा विलासम महल प्राचीन काल के समय की विशाल क्षेत्र में फैली हुई खंडहरनुमा इमारत है। यहाँ ट्रेवनकोर के राजघराने का निवास हुआ करता था। यह एक महलनुमा इमारत है। यद्यपि हमारे यहाँ पहुँचने के सम्बन्ध में सूचना उन्हें पूर्व में ही महल से (महाराज श्री बालाराम वर्मा के मुख्य महल से) प्राप्त हो गयी थी, तथापि वे हमारे लिये प्रतीक्षारत नहीं थे तथा हमारे लिये भोजन इत्यादि की कोई व्यवस्था नहीं की गयी थी।

मेरे पिताजी की ट्रेवनकोर राजघराने से खासी मित्रता है, विशेषकर महाराजा की माताश्री महारानी सेतु पार्वती बाई से उनके घनिष्ठ सम्बन्ध हैं। उन्हीं के द्वारा मालिक को त्रिवेन्द्रम आने का निमंत्रण प्राप्त हुआ था, अतः हम महाराज के मेहमान की हैसियत से यहाँ पधारे हैं।

मालिक, मेरे पिताजी तथा श्री एम.डी.जहाँगीरदार के साथ, मदुरई से विमान द्वारा दोपहर 2.10 बजे यहाँ पहुँचे। हवाई अड्डे पर मैंने उनकी अगवानी की तथा उन्हें अपने साथ लेकर दोपहर 2.30 बजे सुन्दरा विलासम महल पहुँच गया। हमारे पहुँचने तक रसोई की गतिविधि प्रारम्भ हो चुकी थी तथा दोपहर 3.00 बजे हमें राजसी अंदाज में चाय परोसी गयी जिसमें अनेक व्यंजन जैसे गर्मागर्म वाष्पीकृत इडली, वड़ा, विशेष केरला केला तथा शहद युक्त नेन्दरम पाझाम इत्यादि भी परोसे गये थे।

केरल के एक मात्र प्रशिक्षक श्री सी.के. वर्मा जो कि कोचीन के पास चेम्ब्रोला कोटाराम के निवासी हैं, हमारे आगमन से पूर्व ही त्रिवेन्द्रम

पहुँच चुके थे। वे राजघराने के दूर के रिश्तेदारों में से हैं तथा उनका राजघराने से एक प्रकार से सम्बन्धी का रिश्ता बनता है। शाम कोई हलचल नहीं रही अपितु मालिक तथा मेरे पिताजी ने कॉडियार महल में महारानी सेतु पार्वती बाई, पूर्व महाराज, महाराज श्री बालाराम वर्मा तथा उनकी बहन से भेंट की। शाम 7.30 बजे वे वहाँ से वापस लौट आये। मुझे जानकारी मिली कि मुलाकात अच्छी रही तथा राजघराना परिवार के सदस्यों द्वारा मालिक से सिटिंग प्राप्त की गयी। दोपहर में चाय के साथ परोसे गये भारी नाश्ते के कारण हमने भोजन विलम्ब से लिया। रात्रि भोजन अत्यन्त स्वादिष्ट था जिसे वाकई में राजसी भोजन कहा जा सकता है। इसमें पूरी, मिश्रित सब्जियों की तरकारी जिसे बेहतरीन ढंग से पकाया गया था, चावल, पायाजाम इत्यादि व्यंजन परोसे गये थे। हमने डट कर भोजन किया। मालिक तथा जहाँगीरदार का शयन कक्ष निचले तल पर था तथा उसी के बगल में मेरे पिताजी तथा लोकनाथ का शयन कक्ष था तथा बाकी हम सभी के शयन कक्ष ऊपरी तल पर थे। रात्रि लगभग बारह बजे हम विश्राम हेतु अपने–अपने शयन कक्ष में चले गये।

3 मई 1977 – मंगलवार

सुबह कोई हलचल नहीं थी। मालिक तथा मेरे पिताजी को बादाम का दूध परोसा गया।

मालिक, मेरे पिताजी, मैं, मेरी पत्नी सुलोचना तथा कृष्णा सुबह 10.00 बजे कॉडियार महल पहुँचे तथा दोपहर तक महाराज, उनकी माताजी तथा उनकी बहन के साथ रहे। उन्होंने हमारे द्वारा लगाये गये मिशन के बैज के विषय में प्रश्न इत्यादि किये, तत्पश्चात् महाराज ने मेरे पिताजी से उन्हें एक बैज लगाने के लिये निवेदन किया। पिताजी ने उनके निवेदन को सहर्ष स्वीकार करते हुये उन्हें एक बैज लगाया।

तत्पश्चात् मालिक द्वारा बीस मिनट की एक सिटिंग दी गयी। सिटिंग के पश्चात् उनके द्वारा प्रश्न इत्यादि पूछे गये, जिनका मेरे तथा मेरे पिताजी द्वारा उत्तर दिया गया। इस दौरान मालिक बीच में कभी कभार कोई टिप्पणी कर देते थे। उनके अधिकांश प्रश्न कुण्डलिनी, हठ योग तथा

भावातीत ध्यान इत्यादि के विषय पर आधारित थे। यहाँ से रवाना होकर हम चिड़ियाघर पहुँचे, जिसका क्षेत्रफल कम था किन्तु इसे अत्यन्त व्यवस्थित रूप से रखा गया था। मालिक ने स्वयं इसे देखने की इच्छा प्रगट की थी तथा जैसा कि तय किया गया था हमारे बाकी साथी पहले ही यहाँ पहुँच चुके थे। चिड़ियाघर देखने के पश्चात् हम दोपहर के भोजन के लिये सीधे सुन्दरा विलासम महल पहुँचे।

शाम 7.15 बजे हम सभी बारह के बारह सदस्य कॉडियार महल की ओर रवाना हुये, जहाँ महाराज द्वारा हम सभी को रात्रि भोज पर आमंत्रित किया गया था। संयोगवश, कुछ दिन पूर्व मदुरई में मेरे द्वारा दिये गये उद्‌बोधन की कैसेट हमारे पास उपलब्ध थी तथा भोजन से पूर्व महाराज ने इसे सुनने की इच्छा प्रगट की। कैसेट सुनने के पश्चात् महाराज तथा उनकी माताजी द्वारा इसकी प्रशंसा की गयी।

भोजन के पश्चात् राजघराना परिवार के सभी सदस्य मालिक को घेर कर बैठ गये। मालिक भी उनके साथ अत्यन्त प्रसन्न लग रहे थे। लगभग 1 घंटे तक सभी ने मालिक का सानिध्य प्राप्त किया। अंत में रात्रि 10.30 बजे हमने राजपरिवार से विदा ली। हम कल सुबह यहाँ से वापसी के लिये रवाना हो रहे हैं। महाराज श्री बालाराम वर्मा मालिक को बाहर कार तक छोड़ने के लिये आये। आज रात भी विश्राम के लिये अपने शयन कक्ष में जाने में हमें रात के बारह बज गये।

4 मई 1977 – बुधवार (मदुरई)

महल के कर्मचारियों में से पाँच सदस्यों द्वारा पूजा प्रारम्भ की गयी। ये सभी मि.मनी अय्यर जो कि येरागुन्टला के एक अभ्यासी हैं, के मित्रों में से हैं। श्री मनी अय्यर पूर्व में राजघराने के रसोइये रह चुके हैं।

हम दो कारों में सवार होकर सुबह 10.30 बजे त्रिवेन्द्रम से रवाना हुये। कार क्रमांक एम.डी.आर. 5952 में मेरे अलावा सुलोचना, कृष्णा, एस. के. मोहन तथा सरोजा सुन्दरम् सवार थे। एक अन्य कार टी.एन.आर. 1569 में सी.राजगोपालन, एम.डी. जहाँगीरदार, आर. स्वामीनाथन् तथा एस. पी. लोकनाथ सवार थे। मालिक तथा मेरे पिताजी विमान द्वारा मद्रास की

ओर रवाना हुये जिन्हें एस.के.सुन्दरम द्वारा विदाई दी गयी जो इसी मकसद से वहाँ रुक गये थे। मालिक की उड़ान का निर्धारित समय दोपहर 12.45 बजे का था। इस उड़ान से मद्रास की 1 घंटे की यात्रा बोइंग 737 विमान द्वारा तय की जानी थी।

एस.पी. लोकनाथ को विरुदनगर में छोड़ने के पश्चात् हम दोनों कारों में सवार व्यक्ति शाम 4.00 बजे मदुरई पहुँचे जहाँ से आर. स्वामीनाथन् तथा एम.डी. जहाँगीरदार पंडयन एक्सप्रेस द्वारा रात 07.30 बजे मद्रास की ओर रवाना हो गये।

सुलोचना, कृष्णा तथा मैं मदुरई केन्द्र पहुँच कर बुधवार के सत्संग में सम्मिलित हुये। सत्संग शाम 7.00 बजे प्रारम्भ होकर शाम 7.35 बजे समाप्त हुआ। सिटिंग बहुत अच्छी रही। सिटिंग के समाप्त होने के पश्चात् मैं त्रिवेन्द्रम से रवाना होने से पूर्व मालिक द्वारा बीजारोपण के सम्बन्ध में दी गयी जानकारी पर चिंतन कर रहा था। मालिक सन् 1945 के दौरान किये गये अपने प्रथम दक्षिण भारत के भ्रमण के बारे में जानकारी दे रहे थे। उन्होंने बताया कि इस भ्रमण के दौरान उन्होंने अकेले ही भविष्य के आध्यात्मिक धरातल के लिये वातावरण में बीजारोपण का कार्य किया था। मालिक ने कहा, "उनके द्वारा इस प्रकार का बीजारोपण किया गया था कि ज्ञानवश अथवा अज्ञानवश जो भी घटित हो वह लालाजी की इच्छा के अनुरूप ही हो।"

5 मई 1977– गुरुवार (मदुरई)

सी. राजगोपालन को अरासारदी में उनके भाई के दामाद के निवास पर छोड़ा। वहाँ से उन्हें कल मन्नारगुड़ी के लिये रवाना होना है। एस.के. मोहन तथा सुन्दरम की पत्नी सरोजा, आज रात्रि 9.00 बजे की बस से मद्रास के लिये रवाना हो गये। उनके जाने के पश्चात् मात्र सुलोचना, कृष्णा तथा मैं घर में शेष रह गये थे।

26 मई 1977 – गुरुवार

मेरी नयी पुस्तक जिसका शीर्षक प्रायोगिक तौर पर "विद मास्टर इन मलेशिया" रखा गया था तथा जिसमें मालिक की प्रथम मलेशिया एवं

सिंगापुर की यात्रा का विवरण दिया गया था, का टाइपिंग कार्य पूर्ण हो चुका था तथा इसे अगले सप्ताह छपायी के लिये प्रेस में दे दिया जायेगा।

29 मई 1977–रविवार

मालिक की इच्छानुसार आज से हमने रविवार के सत्संग में साप्ताहिक संगोष्ठी के कार्यक्रम का शुभारम्भ किया, जिसकी शुरूआत श्री एस.नारायणस्वामी द्वारा दिये गये तमिल उद्‌बोधन से हुई, जिसके लिये उन्होंने सराहनीय प्रयास किया था ।

19 जुलाई 1977 – मंगलवार

मालिक की ओर से पत्र क्रमांक 1904 दि. 15 जुलाई आज प्राप्त हुआ जिसके कुछ अंश का उल्लेख मैं यहाँ पर कर रहा हूँ।

"मेरा विचार है कि हमें कुछ समय के लिये प्रशिक्षकों की अनुमति पर रोक लगा देना चाहिये। यदि किसी स्थान से माँग आती है तो उन्हें इस बात की जानकारी दी जानी चाहिये कि सामूहिक सत्संग के दौरान प्रशिक्षक की अनुपस्थिति के बावजूद भी मालिक की कृपा स्वतः ही अभ्यासियों में प्रवाहित होने लगती है । "

प्रशिक्षकों से यह अपेक्षा की जाती है कि वे अभ्यासियों की भली–भाँति सफाई करें, बाकी उन्हें क्या करना है इसकी उन्हें जानकारी ही नहीं होती। यद्यपि तुम्हारे प्रकरण में मुझे परिस्थितिवश तुम्हें उस स्तर तक पहुँचाना आवश्यक था, ताकि तुम्हारे माध्यम से प्रशिक्षक तैयार किये जा सकें।"

1 अगस्त 1977 – सोमवार

मेरे पिताजी सुबह 7.10 बजे तमिलनाडु एक्सप्रेस से दिल्ली की ओर रवाना हुये। विजयवाड़ा से कन्नन उनके साथ शामिल होंगे तथा इस दौरे के दौरान उनकी देखभाल की जिम्मेदारी उसी की रहेगी। पिताजी सम्भवतः सितम्बर के प्रथम सप्ताह तक वापस लौट आयेंगे।

12 अगस्त 1977 – शुक्रवार (मायावरम)

सुबह 9.10 बजे, वी.शेषन तथा टी.के.नरसिंहमन के साथ कार से रवाना होकर दोपहर 3.30 बजे मायावरम पहुँचा ।

रात्रि 8.15 बजे श्री के. नवनाथन् जो पूर्व में मिशन के प्रशिक्षक रह चुके हैं तथा उनकी पत्नी को सिटिंग दी। कई वर्ष पश्चात् उन्होंने किसी से सिटिंग प्राप्त की थी।

13 अगस्त 1977 – शनिवार तंजावुर

अपने कार्यालय का कार्य निपटाकर सुबह 10.00 बजे मैं मायावरम से रवाना हुआ तथा कुम्बाकोणम होते हुए दोपहर 2.30 बजे मन्नारगुड़ी पहुँचा। मन्नारगुड़ी में अपने कार्यालय का कार्य निपटाकर शाम 4.00 बजे वहाँ से रवाना होकर शाम 5.00 बजे तंजावुर के आई.टी.डी.सी. यात्री बंगले में पहुँचा। तंजावुर पहुँचकर मैं स्थानीय अभ्यासी श्री बी.एम.सुन्दरम के निवास पर पहुँचा, किन्तु उनकी पत्नी ने बताया कि वे मुन्डीकोनम गये हुये हैं तथा रात्रि में देर से वापस लौटेंगे।

शाम 7.30 बजे चार स्थानीय अभ्यासी जिनमें श्री अशोकन भी सम्मिलित थे, आई.टी.डी.सी. के यात्री बंगले में पधारे। मेरे द्वारा उन्हें सिटिंग दी गयी।

14 अगस्त 1977 – रविवार (तंजावुर)

सुबह 5.30 बजे श्री बी.एम.सुन्दरम् आई टी डी सी के यात्री बंगले में पधारे तथा मैंने उन्हें व्यक्तिगत सिटिंग दी ।

सबह 7.30 बजे से 8.15 बजे तक मैंने तंजावुर केन्द्र के अभ्यासियों को श्री सुन्दरम के निवास पर सिटिंग दी ।

नाश्ता करने के पश्चात् हम सुबह 10.30 बजे पुडुकोट्टई के समीप स्थित रायावरम की ओर रवाना हुये। रायावरम में अपने कार्यालय का कार्य निपटाकर नवानाथन के यहाँ पहुँचा तथा दोपहर का भोजन उनके निवास पर ही किया। दोपहर 3.30 बजे मैं वहाँ से त्रिची के लिये रवाना हो गया तथा त्रिची पहुँचकर मैं अश्बी होटल में रुका।

मेरे त्रिची पहुँचने के तुरन्त पश्चात् प्रशिक्षक के.सुब्रामनियम, एस.राजू तथा अभ्यासी भाई एस.दशरथन मुझसे भेंट करने के लिये होटल पहुँचे।

शाम 6.30 से 7.15 बजे तक सामूहिक सत्संग कराया, जिसमें बयालिस स्थानीय अभ्यासी उपस्थित थे। सिटिंग 45 मिनट चली। सिटिंग के दौरान मुझे सभी बयालिस अभ्यासी एक इकाई की भाँति दिखायी दिये।

सत्संग के पश्चात् मैंने उन सदस्यों को जिनके द्वारा "ब्लॉसम इन द ईस्ट" की माँग की गयी थी, एक–एक प्रति वितरित की, तत्पश्चात् मैंने 8.30 बजे तक अभ्यासियों से चर्चा की। इसके पश्चात् अभ्यासी वहाँ से रवाना हो गये ।

15 अगस्त 1977 – सोमवार (त्रिची)

सुबह 7.30 से 9.00 बजे तक अशोक भवन के कमरा नं. 66 में सामूहिक सत्संग कराया जिसमें पच्चीस अभ्यासी उपस्थित थे। कैप्टन टी. एन.रामास्वामी जो इस केन्द्र के प्रमुख हैं तथा यदा–कदा ही दिखाई पड़ते थे, ने आज दो–तीन वर्ष पश्चात् अपनी उपस्थिति से सभी को चौंका दिया था।

सुबह 10.30 बजे त्रिची से रवाना होकर हम शाम 4.15 बजे मद्रास पहुँच गये।

16 अगस्त 1977 – मंगलवार

सुबह का सत्र येरागुन्टला तथा दौरेसानीपल्ली के अभ्यासियों के साथ व्यतीत हुआ। मद्रास केन्द्र के प्रभारी प्रशिक्षक द्वारा आज अपनी 61वीं सालगिरह के उपलक्ष्य में "सहस्त्रब्दापूर्ति" के कार्यक्रम का आयोजन किया गया था। हम सभी सुबह 10.30 से सुबह 11.30 बजे तक उनके द्वारा आयोजित कार्यक्रम में सम्मिलित हुये। इस कार्यक्रम में मि. आर. शेषाद्रि भी उपस्थित हुये थे तथा मुझसे मित्रवत व्यवहार कर रहे थे। एस. नारायणस्वामी को छोड़कर अधिकांश अभ्यासी इस कार्यक्रम में उपस्थित थे। हैदराबाद के डॉ. एस. वी. राघवन जो कि श्री आर. वीर राघवन के दामाद हैं से, सहज मार्ग के विषय पर मेरी लम्बी चर्चा हुयी।

शाम 6.00 बजे मेरे द्वारा अपने घर पर डॉ. एस. वी. राघवन, एस. के. मोहन तथा आर.सुन्दरम को सिटिंग दी गयी।

21 अगस्त 1977 – रविवार

प्रातःकालीन सामूहिक सत्संग सुलोचना ने कराया। सुबह 10.00 बजे मैं तथा सुलोचना क्रोमेपेट में स्थित मद्रास तकनीकी संस्थान पहुँचे, जहाँ मैंने एम.आई.टी. के लगभग बीस छात्रों को सहज मार्ग के सन्दर्भ में एक घंटे तक उद्‌बोधन दिया जो सराहनीय रहा। इस कार्यक्रम की

व्यवस्था एस.पी.लोकनाथ के भाई श्री एस.पी.नरसिम्हा द्वारा की गयी थी। जिसमें तीन–चार अन्य व्याख्याता भी उपस्थित थे।

23 अगस्त 1977 – मंगलवार

सर्वप्रथम राजामुन्दरी के मि. सत्यनारायण राजू, तत्पश्चात् श्री एस. के. मोहन को व्यक्तिगत सिटिंग दी ।

24 अगस्त 1977 – बुधवार

तड़के सुबह का स्वप्न :– मालिक बिस्तर पर पीठ के बल लेटे हुये हैं तथा उन्हें घेरकर लगभग 11–12 अभ्यासी कुर्सियों पर बैठे हुये हैं। मैं स्वयं भी मालिक के सिरहाने लगभग दो फीट की दूरी पर उनके शरीर की सिधाई में बैठा हुआ हूँ। उनके बीच, किसी विषय पर चर्चा चल रही है जिससे मैं अनभिज्ञ हूँ। अचानक किसी कार्य के सन्दर्भ में कोई चर्चा होती है, तब मालिक कहते हैं, "यह कार्य मेरे उत्तराधिकारी द्वारा किया जायेगा, क्या आप जानना चाहते हैं कि वह कौन है ?" अचानक ही वहाँ सन्नाटा छा जाता है तथा सभी गम्भीरता पूर्वक मौन बैठे हुये हैं। मैं अपनी कुर्सी पर बैठकर प्रार्थना कर रहा हूँ कि कहीं मालिक अपने उत्तराधिकारी का नाम घोषित न कर दें? लेकिन मेरी मन ही मन की गयी इस प्रार्थना के बावजूद मालिक धीरे से अपनी चिर परिचित गम्भीर मुद्रा में अपना हाथ अपने माथे के ऊपर लाते है, उनकी हथेली ऊपर की ओर खुली हुयी है तथा उनकी उंगली का इशारा मेरी ओर है। तत्क्षण ही मेरी नींद खुल जाती है। इस समय घड़ी में 5.15 बजे का समय है।

सुबह 7.00 बजे – श्री सुब्बारायडु को व्यक्तिगत सिटिंग दी।

शाम 5.00 बजे–श्री एस.नारायणस्वामी को व्यक्तिगत सिटिंग दी।

शाम 6.30 बजे – सामूहिक सत्संग कराया। सिटिंग बहुत अच्छी रही। सिटिंग के अंतिम क्षणों में मैंने अनुभव किया कि मैं अत्यन्त गहरायी में चला गया हूँ तथा इस स्थिति से अपने आपको बाहर लाने में मुझे कठिनायी हो रही है।

25 अगस्त 1977 – गुरुवार

तड़के सुबह का स्वप्न – मैं कार द्वारा किसी लम्बी यात्रा पर जा

रहा हूँ। कार में मेरे साथ कुछ अन्य व्यक्ति भी हैं। मुझे यह जानकारी है कि हम अपने गंतव्य स्थल पर पहुँचने वाले हैं । तभी मेरी नजर अपने से थोड़ी दूरी पर स्थित सीमेंट कांक्रीट के एक निर्माण पर पड़ती है जो रोड ओवर ब्रिज जिसे ओवर पास भी कहते हैं के समान दिखायी पड़ रहा है। मैं ड्राइवर से कहता हूँ कि पुल पार करने के पश्चात् दाहिने हाथ की ओर मुड़ते ही हम अपने गंतव्य स्थल पर पहुँच जायेंगे।

लेकिन पुल के ऊपर चढ़ने पर हमें अचानक रुकना पड़ता है, क्योंकि सामने एक चौड़ी नदी बह रही है, जिसमें बाढ़ के पानी का बहाव काफी तेज है। इसमें समुद्र जैसी लहरें उठ रही हैं। मैं वहाँ मौजूद एक व्यक्ति से पूछता हूँ कि हम नदी के पार कैसे जा सकते हैं ? वह कहता है कि नदी के पार जाने का कोई अन्य मार्ग नहीं है ।

दृश्य बदल जाता है तथा मैं अपने आप को समुद्री क्षेत्र के एक बंगले में पाता हूँ जहाँ मैं अपने कुछ घनिष्ठ मित्रों के साथ आराम फरमा रहा हूँ यद्यपि मैं उन्हें पहचान नहीं पा रहा हूँ । तभी मुझे सुनाई पड़ता है अथवा मैं देखता हूँ कि मेरे स्वर्गीय चाचा मि.भद्रन चिंतातुर हैं तथा ऊँची–ऊँची आवाज में कुछ कह रहे हैं एवं अपने घर परिवार में सबके कुशल मंगल को लेकर चितिंत हैं। मैं उन्हें सुझाव देता हूँ कि वे घर पर फोन कर इसकी जानकारी प्राप्त कर सकते हैं। स्वप्न समाप्त होने से पूर्व मुझे चांदी के समान चमकते समुद्र के ऊपर पूर्ण चन्द्र उदय दिखाई देता है। मैं सभी को चन्द्रोदय के दृश्य को देखने के लिये बुलाता हूँ। स्वप्न समाप्त हो जाता है तथा मेरी नींद खुल जाती है। घड़ी में सुबह के 6.00 बज रहे होते हैं ।

गत रात्रि को मैं कनाडा की सेन्ड्रालिन जॉर्डन को अंतरिम अनुमति के लिये तैयार करता रहा। वैसे मैं बिल्कुल इतनी जल्दी न उठा होता किन्तु यदा कदा मेरी चेतना से यह सतह पर आ जाता है कि मैं फलां फलां कार्य कर रहा था अथवा मुझे करना है। अतः मैं उस कार्य को जारी रखता हूँ।

30 अगस्त 1977 – मंगलवार (मदुरई)

शाम 6.40 बजे वालमजी मेन्शन में सामूहिक सत्संग कराया

जिसमें मात्र 11 अभ्यासी उपस्थित थे। सिटिंग 35 मिनट की रही, तत्पश्चात् रात्रि 8.50 बजे तक अभ्यासियों से चर्चा की।

3 सितम्बर 1977– शनिवार

कनाडा की सेन्ड्रालिन जार्डन की अंतरिम अनुमति की तैयारी पूर्ण हुयी। यह कार्य विभिन्न पारियों में रात भर जारी रहा तथा आज सुबह समाप्त हुआ। मैंने उसे सुबह 7.50 बजे अपने पूज्य मालिक की ओर से (उनकी अनुपस्थिति में) अंतरिम अनुमति प्रदान की।

अपरान्ह में मैंने टॉम व्हिटलम पर कार्य प्रारम्भ किया।

4 सितम्बर 1977 – रविवार

श्री जे.आर.दोरेस्वामी अपर ग्रांड ट्रंक एक्सप्रेस से सुबह 8.35 बजे दिल्ली से मद्रास पहुँचे तथा उन्होंने सारा दिन हमारे साथ व्यतीत किया, यद्यपि हमारे रविवारीय सत्संग में उपस्थित होने के लिये उन्हें बहुत देर हो चुकी थी। उनके पश्चात् मेरे पिताजी दोपहर 12.35 बजे तमिलनाडु एक्सप्रेस से दिल्ली से मद्रास पहुँचे। सारा दिन हमारे साथ व्यतीत करने के पश्चात् जे.आर.डी. रात्रि 8.10 बजे पंड्यन एक्सप्रेस से मदुरई रवाना हो गये।

त्रिची के दशरथन बईगई एक्सप्रेस से आज दोपहर में मद्रास पहुँचे, मैंने उन्हें पुस्तकों के तीन बंडल दिये, जो मैंने उनके लिये शाहजहाँपुर साथ ले जाने के लिये बाँध कर रखे थे। वे कल दिल्ली के लिये रवाना हो रहे हैं।

5 सितम्बर 1977 – सोमवार

टॉम व्हिटलम पर किया जाने वाला कार्य पूर्ण हुआ। उसकी यात्रा आज सुबह 05.30 बजे आरम्भ हुयी तथा मालिक की ओर से मैंने उसे सुबह 06.55 बजे अंतरिम अनुमति प्रदान की।

26 सितम्बर 1977 – सोमवार (मदुरई)

शाम को मदुरई पहुँचा। मैं यहाँ मात्र सत्संग कराने के मकसद से ही आया था। अतः शाम 6.30 बजे से शाम 7.15 बजे तक मैंने वालमजी मेन्शन में सत्संग कराया जिसमें लगभग तीस अभ्यासी उपस्थित थे। रात्रि

9.00 बजे तक अभ्यासियों से चर्चा चलती रही, तत्पश्चात् मैं विरुदनगर की ओर रवाना हो गया ।

27 सितम्बर 1977 – मंगलवार (कोयम्बटूर)

विरुदनगर से कार से रवाना होकर शांम 7.30 बजे कोयम्बटूर पहुँचा।

शाम 8.00 बजे से 9.00 बजे तक कोयम्बटूर केन्द्र में मेरे द्वारा सत्संग कराया गया जिसमें लगभग तीस अभ्यासी उपस्थित थे जिनमें तिरुपुर के दस अभ्यासियों के अलावा, अम्बासुन्दरम (पूर्व में पलानी) के एस. बी. आई., के वी. एस. नरसिंहमन भी सम्मिलित थे।

28 सितम्बर 1977 – बुधवार (कोयम्बटूर)

सुबह 07.00 बजे – अम्बासुन्दरम के श्री वी.एस.नरसिंहमन को व्यक्तिगत सिटिंग दी। शाम 4.00 बजे से मैं तिरुपुर के दल के साथ होटल सिरी मुरूगन के कमरा नं. 206 में चर्चा में व्यस्त रहा। चर्चा लम्बे समय तक चलती रही। शाम 6.30 बजे मैंने कोयम्बटूर केन्द्र में सत्संग कराया, तत्पश्चात् हमने रात्रि भोज किया।

29 सितम्बर 1977 – गुरुवार (तिरुपुर)

सुबह 8.00 बजे कोयम्बटूर से कार से रवाना होकर सुबह 9.30 बजे तिरुपुर में श्री वी.एस. रत्नम के निवास पर पहुँचा।

मेरे द्वारा तिरुपुर में मिशन के केन्द्र का आज विधिवत् उद्घाटन किया गया।

सुबह 11.00 बजे मेरे द्वारा सामूहिक सत्संग कराया गया। सिटिंग चालीस मिनट की रही। तत्पश्चात् टी.के.रामास्वामी ने संक्षेप में अपना उद्बोधन दिया। दोपहर भोजन के पश्चात् मैं कोयम्बटूर के लिये रवाना हो गया। शाम 5.00 बजे से शाम 6.30 बजे तक मैंने एस.एस.रामकृष्णन के निवास पर दो–दो के ग्रुप में सीता लक्ष्मी, रामा अनुसुइया, शोभना, पेरीअम्मा तथा सामने के घर में रहने वाली एक महिला को सिटिंग दी।

नीलगिरी एक्सप्रेस से मद्रास की ओर रवाना हो गया ।

30 सितम्बर 1977– शुक्रवार

30 सितम्बर 1977 तक के मिशन के अर्द्धवार्षिक लेखे को अंतिम

रूप देकर टाइप कराकर आज हस्ताक्षरित किये गये।

एम.डी. जहाँगीरदार तथा टी.वी.कमलेशकुमार ने बैंगलोर से फोन पर मुझे सूचित किया कि उनके साथ के चार–पाँच सदस्य मालिक के 80वें जन्म दिवस, जिसका आयोजन 30 अप्रैल 1978 को बैंगलोर में किया जा रहा है, के सन्दर्भ में चर्चा करने के लिये कल मद्रास आना चाह रहे हैं। जहाँगीरदार ने मुझसे निवेदन किया कि उनके समस्त ग्रुप के आने की अपेक्षा यदि मैं बैंगलोर आ सकूँ तो उचित रहेगा। बैठक का आयोजन कमलेश के खेत पर किया जा सकता है, जो देवनहाली के समीप स्थित है। मैंने उन्हें रविवार 9 अक्टूबर को बैंगलोर पहुँचने के लिये अपनी सहमति दे दी।

7 अक्टूबर 1977– शुक्रवार (बैंगलोर)

मेरा भाई कोदण्डरमन जो मद्रास आया हुआ था, कृष्णा तथा मैं कार से मद्रास से दोपहर 1.00 बजे बैंगलोर के लिये रवाना हुये। रास्ते में चित्तूर के आगे तेज बारिश हो रही थी तथा मुलबागल से हसकोट तक आसमान में काले बादल छाये हुये थे तथा घनघोर बारिश हो रही थी। शाम 6.30 बजे हम बैंगलोर पहुँच गये।

8 अक्टूबर 1977 – शनिवार

मि. एम. मुरूगेसन सुबह 7.00 बजे कोदण्ड के निवास पर पहुँचे, जहाँ से हम दोनों कार से देवनहाली के लिये रवाना हुये तथा सुबह 9.00 बजे कुछ मिनट पूर्व ही कमलेश के खेत पर पहुँच गये। एम.डी. जहाँगीरदार, उनकी पत्नी तथा बी.के. राजगोपालन एक अभ्यासी की कार से दोपहर 12.30 बजे वहाँ पहुँचे। वैसे उन्हें भी सुबह 9.00 बजे ही यहाँ पहुँचना था। लेकिन देवनहाली पहुँचते ही उनकी कार दुर्घटनाग्रस्त हो गयी, जिसके कारण उन्हें यहाँ पहुँचने में देरी हो गयी ।

दोपहर 1.30 बजे हमने भोजन किया तत्पश्चात् दोपहर 2.00 से शाम 4.00 बजे तक हमारी बैठक चली। शाम 4.00 बजे हम देवनहाली से रवाना होकर शाम 5.30 बजे अपने बैंगलोर के आश्रम पहुँचे। शाम 7.00 बजे से 7.45 बजे तक मैंने आश्रम में सामूहिक सत्संग कराया। प्राणाहुति

अत्यन्त सूक्ष्म तथा गहरी थी। सत्संग के पश्चात् मैं समीप ही स्थित एस. के.सुन्दरम के निवास पर पहुँचा, लेकिन उनके निवास पर ताला लगा हुआ था। चौकीदार ने जाानकारी दी कि घर के सभी सदस्य विशाखापट्टनम गये हुये हैं। रात्रि 9.00 बजे मैं इंदिरानगर अपने निवास पर लौट आया।

9 अक्टूबर 1977 – रविवार

सुबह 7.15 बजे कोदण्ड, इन्दिरा तथा कृष्णा को साथ लेकर इन्दिरा नगर से अपने आश्रम की ओर रवाना हुआ।

सुबह 8.15 बजे मैंने सामूहिक सत्संग कराया। सिटिंग पैंतालिस मिनट चली तथा बहुत अच्छी रही। सिटिंग के दौरान मुझे अत्यन्त गहरायी का अनुभव हुआ। तत्पश्चात् मालिक के निर्देशानुसार मद्रास में तैयार की गयी रूपरेखा के अनुसार अभ्यासियों के वक्तव्य इत्यादि की प्रस्तुति के कार्यक्रम का शुभारम्भ किया गया, जिसकी विस्तृत मार्गदर्शिका को मैंने संक्षिप्त उद्‌बोधन में परिवर्तित कर उनके समक्ष प्रस्तुत किया। एल.एस. हेगड़े ने अपने प्रथम प्रयास में सराहनीय प्रस्तुति दी ।

नाश्ते के पश्चात् सुबह 9.30 से 11.30 बजे तक उत्सव समिति की बैठक आयोजित की गयी जिसमें 10 लाख रु. की राशि एकत्रित करने का लक्ष्य निर्धारित किया गया। दोपहर में हम सभी जहाँगीरदार के घर जाने के लिये केंगरी की ओर रवाना हुये। बी.के.राज गोपालन, कमलेश कुमार, तथा मुरूगेसन भी वहाँ पहुँच चुके थे। हम सभी ने दोपहर 01.30 बजे वहाँ भोजन किया तथा दोपहर 3.00 बजे केंगरी से रवाना होकर शाम 4.00 बजे इन्दिरा नगर पहुँच गये।

10 अक्टूबर 1977 – सोमवार

सुबह 09.00 बजे मुरूगेसन इन्दिरा नगर पहुँचे। उन्हें साथ लेकर मैं बी.के.राज गोपालन के घर आने के लिये मल्लेश्वरम् की ओर रवाना हुआ। मेरे द्वारा बी.के.आर.को व्यक्गित सिटिंग दी गयी। सिटिंग के पश्चात् वह भाव विह्वल होकर रोने लगे। तत्पश्चात् हम दोपहर भोजन के लिये मुरूगेसन के घर जाने के लिये होसली की ओर रवाना हुये जहाँ मैंने मुरूगेसन को एक व्यक्तिगत सिटिंग दी। तत्पश्चात् मैंने उनके तीसरे

नम्बर के पुत्र सच्चिदानन्दन से लगभग आधा घंटे तक चर्चा की तथा उसे पूजा प्रारम्भ करने हेतु प्रेरित करने का प्रयास किया ।

देरी से तथा डटकर भोजन करने के पश्चात् हम घर की ओर रवाना हुये एवं शाम 4.00 बजे इन्दिरा नगर पहुँच गये।

शाम को चार अभ्यासी इन्दिरा नगर पहुँचे तथा मुंझसे सिटिंग प्राप्त की तथा रात्रि 9.00 बजे तक वहीं रहे ।

11 अक्टूबर 1977 – मंगलवार

कृष्णा तथा मैं सुबह 7.45 बजे बैंगलोर से रवाना होकर दोपहर 12.45 बजे मद्रास पहुँचे। मेरे गुरुदेव के जर्मन अनुवाद "देर मिस्टेर" जिसका अनुवाद म्यूनिख के बार्थ वेरलाग द्वारा किया गया था, की एक प्रति आज मुझे प्राप्त हुयी।

एस.के.सुन्दरम, उनकी पत्नी सरोजा तथा एस.के.मोहन शाम 5.00 बजे से रात्रि 9.30 बजे तक हमारे घर पर ही थे। मेरे द्वारा सभी को एक सामूहिक सिटिंग दी गयी जिसमें सुलोचना भी उपस्थित थी ।

श्रीमती सरोजा सुन्दरम तथा मेरी पत्नी सुलोचना को लगभग एक जैसा अनुभव हुआ। उन्होंने अनुभव किया कि वे नीले आसमान में बिना किसी सहारे के हवा में तैर रही हैं तथा उनके आसपास कोई भी नहीं है। उन्होंने अत्यन्त आनन्द एवं शान्ति का अनुभव किया। सुन्दरम् भाव विह्वल होकर रोने लगे। उन्हें ऐसा महसूस हुआ कि बाबूजी ने उन्हें अपने अन्दर समाहित कर लिया है।

27 अक्टूबर 1977– गुरुवार (दिल्ली)

सुबह 6.00 बजे आई.ए.सी. की उड़ान से हैदराबाद के रास्ते दिल्ली की ओर रवाना हुआ। यात्रा के दौरान, कुछ दिन पूर्व मेरे द्वारा प्रारम्भ किये गये तैयारी के प्रकरण पर मैंने कार्य पूर्ण किया तथा यात्रा के दौरान ही मलेशिया के श्री बाल गोपाल को सुबह 7.50 बजे अंतरिम अनुमति प्रदान की।

दोपहर 1.00 बजे एस.सी.किशोर मेरे होटल पहुँचे तथा शाम 4.30 तक मेरे साथ रहे। उनके जाने के पश्चात् शाम 5.00 बजे 'श्री आर.

कृष्णास्वामी, वी.जी.जोशी तथा दो अन्य अभ्यासी होटल में पधारे। होटल से हम सभी साथ में नानकपुरा के लिये रवाना हो गये, जहाँ मैंने शाम 7.15 बजे से शाम 7.45 बजे तक सामूहिक सत्संग कराया जिसमें लगभग पच्चीस अभ्यासी उपस्थित थे। सिटिंग बहुत अच्छी रही। रात्रि 9.30 बजे हम होटल वापस लौट आये। मुझे जानकारी मिली कि रोम की एन्टोनीटा बेरनारडी आज दोपहर में ही शाहजहाँपुर के लिये रवाना हुयी हैं।

28 अक्टूबर 1977– शुक्रवार (दिल्ली)

दोपहर 2.30 बजे बसन्त विहार स्थित श्री सुन्दरा के निवास की ओर रवाना हुये तथा वहाँ से मैं (N-1/1) आर.के. पुरम स्थित श्री वी.जी. जोशी के निवास पर पहुँचा तथा उनके निवास पर शाम 7.00 बजे से 7.40 बजे तक सांयकालीन सामूहिक सत्संग कराया जिसमें लगभग चालीस अभ्यासी उपस्थित थे। रात्रि भोज हमने श्री जोशी के निवास पर ही किया। भोजन के पश्चात् मि.रामसरण चोपड़ा हमें पुरानी दिल्ली ले गये, जहाँ से हम रात्रि 10.15 बजे 12 डाउन दिल्ली–हावड़ा एक्सप्रेस से कानपुर की ओर रवाना हो गये।

29 अक्टूबर 1977– शनिवार (शाहजहाँपुर)

आज सुबह 6.00 बजे मैं कानपुर पहुँचा तथा कानपुर में मैंने दोपहर 2.00 बजे तक अपने कार्यालय का कार्य निपटाया। तत्पश्चात् दोपहर 2.30 बजे कार से लखनऊ की ओर रवाना हो गया। लखनऊ पहुँचकर मैं एक अन्य टैक्सी द्वारा हरदोई के रास्ते शाहजहाँपुर की ओर रवाना हुआ तथा शाम 7.45 बजे शाहजहाँपुर में अपने आश्रम पहुँच गया, जहाँ मेरी मुलाकात रोम के टोनी बरनारडी से हुयी।

30 अक्टूबर 1977– रविवार (शाहजहाँपुर)

सुबह 8.00 बजे मैं मालिक के निवास पर पहुँचा तथा दोपहर तक वहीं रहा। मालिक ने अध्यक्षीय परिषद् के गठन के सन्दर्भ में चर्चा छेड़ी। उनके मतानुसार अध्यक्षीय परिषद् को कार्यकारिणी समिति की अपेक्षा विशिष्ट दर्जा दिया जायेगा तथा जिसके सदस्यों के लिये राघवेन्द्र राव, एस. ए. सरनाड, डॉ. एस. पी. श्रीवास्तव, देवराम चावड़ा तथा मेरे नाम का

उनके द्वारा सुझाव दिया गया । मालिक ने सुबह 10.00 बजे हमे आधे घंटे की एक सिटिंग दी। सिटिंग अच्छी रही। इस दौरान मुझे अत्यन्त गहरायी का अनुभव हुआ तथा मेरे हृदय पर हल्के दबाव के साथ मुझे नशा जैसा महसूस हो रहा था।

31 अक्टूबर 1977– सोमवार

मैंने आश्रम में सुबह 6.30 बजे प्रातःकालीन सत्संग कराया। सत्संग में बड़ी संख्या में हॉलेण्ड, डेनमार्क तथा फ्राँस के अभ्यासी उपस्थित थे जिनमें बेरनाडेट, वेनस्टीवन, ब्रिगटी स्मिथ सोल्वेज, लिलीयन, एन्नारोज गाय फ्लेयूरी, मेगुय ओलिवर इत्यादि उपस्थित थे।

आज सारा दिन मैंने पूज्य मालिक के साथ उनके निवास पर व्यतीत किया।

1 नवम्बर 1977– मंगलवार

सुबह 6.30 बजे मैंने आश्रम में सामूहिक सत्संग कराया। मालिक सुबह 9.30 बजे आश्रम पधारे तथा तत्काल ही वहाँ उपस्थित सभी अभ्यासियों को एकत्रित कर उन्हें एक सिटिंग दी। सिटिंग अत्यन्त गहरी तथा संतोषप्रद रही। सुबह 10.45 बजे मैं मालिक के साथ उनके निवास की ओर रवाना हुआ। उनके निवास पर पहुँचने के शीघ्र पश्चात् बाबूजी महाराज ने मुझे लालाजी की गद्दी के सम्मुख बैठने का निर्देश दिया, तथा लालाजी साहब ने बीस मिनट तक सिटिंग देकर मुझे कृतार्थ किया। तत्पश्चात् दोपहर 2.10 बजे मालिक द्वारा मुझे बीस मिनट की एक व्यक्तिगत सिटिंग दी गयी। सिटिंग के दौरान मैंने अनुभव किया कि एक अजगर के समान सर्प ऊपर की ओर से मेरे मस्तक पर उतर रहा है तथा मालिक ने इसका काम तमाम कर दिया है। तत्पश्चात् 10 मिनट के विश्राम के पश्चात् मालिक ने मुझे पुनः ध्यान में बैठने का निर्देश दिया तथा पुनः बीस मिनट के लिये एक सिटिंग दी। सिटिंग में अत्यन्त गहरायी थी। मैंने अपने मस्तिष्क के दोनों ओर कानों के ऊपर कनपटी पर दबाव सा महसूस किया। मेरे हृदय पर भी मुझे हल्का–सा दबाव महसूस हो रहा था, तत्पश्चात् मुझे चक्कर से आने लगे। दोपहर 3.30 बजे मैं आश्रम के लिये

रवाना हो गया ।

मालिक शाम 5.00 बजे आश्रम पधारे तथा शाम 7.00 बजे तक वहीं रहे। इस दौरान उन्होंने आश्रम में उपस्थित अभ्यासियों को बीस मिनट की एक सिटिंग दी जो बहुत अच्छी रही। बाद में मालिक ने मुझे बताया कि उन्होंने वहाँ उपस्थित प्रत्येक अभ्यासी में ऊर्जा का संचारण कर दिया था।

काशी विश्वनाथ एक्सप्रेस से मैं रात्रि 11.15 बजे दिल्ली की ओर रवाना हो गया ।

2 नवम्बर 1977 – बुधवार

सुबह 6.00 बजे दिल्ली पहुँच कर मैं होटल ब्राडवे में रुका। दोपहर 1.00 बजे तक मैं कम्पनी के कार्य में व्यस्त रहा। अहमदाबाद के सी. राजगोपालन ने मुझसे भेंट की। एस. सी. किशोर दोपहर 1.30 बजे से शाम 5.00 बजे तक मेरे साथ ही थे। तत्पश्चात् वह बसन्त विहार स्थित एम.एस. सुन्दरा के निवास की ओर रवाना हो गये। शाम 7.00 बजे से 7.45 बजे तक वहाँ सामूहिक सत्संग कराया तथा रात्रिभोज सुन्दरा के साथ करने के पश्चात् मैं रात्रि 11.15 बजे होटल ब्राडवे वापस लौट आया।

3 नवम्बर 1977– गुरुवार

सारा दिन अपने कार्यालय के कार्य में व्यस्त रहा ।

शाम 7.00 बजे से 7.35 बजे तक नानकपुरा में आर.कृष्णास्वामी के निवास पर सामूहिक सत्संग कराया, तत्पश्चात् समीप ही स्थित आर.एस. चोपड़ा के निवास पर पहुँचा तथा रात्रि 8.30 बजे अपने होटल वापस लौट आया।

4 नवम्बर 1977 – शुक्रवार

तड़के सुबह का स्वप्न :– मैं मद्रास में अपने घर पर हूँ तथा घर के अंदर प्रवेश करने पर मैंने देखा कि सभी कमरों की छतें बीच में से धसक रही हैं। ऐसा प्रतीत हो रहा है, यह कभी भी ढह जायेंगी। छतें इस प्रकार दिखायी पड़ रही थीं, जिस प्रकार से शामियाने के ऊपरी भाग में पानी भरने के बाद इसका बीच का भाग नीचे की ओर धसक जाता है। कुछ क्षण पश्चात् दृश्य बदल गया है तथा अबकी बार मैं घर के बाहर खड़ा हूँ । सभी कुछ ध्वस्त हो चुका है तथा जहाँ पहले घर हुआ करता

था, उसका अब नामोनिशान नहीं है तथा न ही वहाँ ईंट, पत्थर, रेत इत्यादि का कोई मलबा दिखायी पड़ रहा है। मात्र मकान की नींव का अंश जमीन की सतह पर धुँधला सा दिखायी पड़ रहा है। मैं विस्मयपूर्वक इसे देख रहा हूँ तथा समझ नहीं पा रहा हूँ कि मुझे क्या करना चाहिये। तभी स्वप्न समाप्त हो जाता है तथा मेरी नींद खुल जाती है। घड़ी में इस समय 4. 00 बजे का समय हो रहा है।

होटल ब्राडवे से मालिक को पत्र लिखकर स्वप्न के विषय पर उनकी ओर से अपना स्पष्टीकरण भेजे जाने के लिये निवेदन करता हूँ।

श्री चोपड़ा सुबह 9.00 बजे होटल पधारे तथा दोपहर तक वहीं रहे। इस दौरान हमने मिशन के विषय में लम्बी गोपनीय चर्चा की। शाम 4.00 बजे एस.सी.किशोर होटल पहुँचे तथा शाम 6.00 बजे तक वहीं रहा। शाम 6.00 बजे श्री कृष्णास्वामी होटल पहुँचे जहाँ से हम करोलबाग स्थिति वी.रामभद्रन के निवास पर पहुँचे तथा पाँच मिनट वहाँ व्यतीत करने के पश्चात् मेजर दलवीर सिंह के निवास की ओर रवाना हो गये जहाँ मैंने शाम 7.10 से 7.45 बजे तक सामूहिक सत्संग कराया। सिटिंग के दौरान प्राणाहुति का प्रवाह अत्यन्त प्रबल था। ऐसा प्रतीत हो रहा था जैसे यह ब्रह्माण्ड मंडल से प्रवाहित की जा रही थी। सिटिंग में लगभग 30 अभ्यासी उपस्थित थे। श्री आर. एस. चोपड़ा मुझे देखकर मुस्कुराये और कहा, "मैंने अपना उत्तर पा लिया है।" निश्चित ही वह हमारी सुबह की चर्चा के सन्दर्भ में बात कर रहे थे। मेरे साथ सुबह होटल में चर्चा के दौरान उन्होंने मिशन की गतिविधियों के प्रति कुछ शंका तथा अविश्वास प्रगट किया था।

5 नवम्बर 1977– शनिवार (जबलपुर)

मैं सुबह 4.00 बजे उठ गया तथा सुबह 6.40 बजे आईएसी की उड़ान संख्या 439 के विमान बोइंग 737 से रवाना होकर सुबह 8.00 बजे नागपुर पहुँचा तथा नागपुर से कार से रवाना होकर अपनी कम्पनी के कार्य के सिलसिले में जबलपुर पहुँचा।

6 नवम्बर 1977 – रविवार

सुबह 7.30 बजे, जबलपुर के होटल के कमरे में सत्संग कराया

जिसमें बी.राज गोपाल, डब्ल्यू.एस.डेविड तथा कलकत्ता के एन.एस. रामकृष्णन उपस्थित थे। सारा दिन कार्यालय के कार्य में व्यस्त रहा।

7 नवम्बर 1977 – सोमवार (नागपुर)

सुबह 7.40 बजे जबलपुर से कार से रवाना होकर दोपहर 2.10 बजे नागपुर पहुँचा। नागपुर से कार्यालय के कार्य के सिलसिले में चन्द्रपुर की ओर रवाना हुआ तथा रात्रि विश्राम चन्द्रपुर में किया।

8 नवम्बर 1977– मंगलवार (नागपुर)

सारा दिन चन्द्रपुर में अपने कार्यालय के कार्य में व्यस्त रहा तथा शाम 4.00 बजे नागपुर वापस लौट आया।

शाम 7.00 बजे श्रीमती तारा कैली के निवास पर सामूहिक सत्संग कराया जिसमें लगभग बीस अभ्यासी उपस्थित थे। सिटिंग अच्छी रही।

9 नवम्बर 1977 – बुधवार (नागपुर)

दोपहर 2.30 बजे से श्री पी.राममूर्ति के निवास पर सात अभ्यासियों को क्रमवार निरंतर व्यक्तिगत सिटिंग दी, तत्पश्चात् शाम 7.15 बजे सामूहिक सत्संग कराया। सिटिंग 45 मिनट चली तथा अच्छी रही। रात्रि भोज राममूर्ति के निवास पर करने के पश्चात् रात्रि 10.00 बजे अपने होटल वापस लौट आया।

10 नवम्बर 1977 – गुरुवार

सुबह 7.00 बजे श्री राममूर्ति तथा नायडू मामा हमें विदा करने के लिये नागपुर हवाई अड्डे तक हमारे साथ आये। दिल्ली से आने वाला विमान अपने निर्धारित समय पर नागपुर में उतरा, लेकिन यह उड़ान भरने ही वाला था कि अचानक एक पक्षी विमान के इंन्जिन से टकरा गया, जिसके कारण नागपुर से विमान ने दो घंटे विलम्ब से उड़ान भरी। विमान के विलम्बित होने के कारण मि. पी. आर. मूर्ति तथा नायडू मामा का टोनी बरनारडी से मुलाकात करना सम्भव हो सका, जो इस विमान से यात्रा कर रहे थे तथा मेरे साथ मद्रास जा रहे थे।

सुबह 10.30 बजे हमारे विमान ने नागपुर से उड़ान भरी तथा सुबह 11.40 बजे मद्रास पहुँचे। विमान तल से, सीधे हम पश्चिमी माम्बलम स्थित

मेरी सासू जी के निवास पर पहुँचे। आज दीवाली है तथा टोनी बरनारडी हमारे मेहमान हैं।

14 नवम्बर 1977 – सोमवार

टोनी बरनारडी सुबह 9.15 बजे विमान द्वारा बैंगलोर के लिये रवाना हो गये। श्री एस.के.सुन्दरम बैंगलोर में उनकी अगवानी करेंगे तथा उनकी देखभाल की जिम्मेदारी उन्हीं की रहेगी।

मालिक का 8 नवम्बर का लिखा हुआ पत्र क्रमांक 363 जो उन्होंने मेरे 4 नवम्बर के पत्र के जवाब में भेजा था तथा जिसके माध्यम से मैंने उनसे अपने स्वप्न के संदर्भ में स्पष्टीकरण चाहा था प्राप्त हुआ। मालिक ने लिखा "तुम्हारा स्वप्न अच्छा है। दीवारें क्षत–विक्षत होकर ध्वस्त हो चुकी हैं तथा ढाँचा भी जमींदोज हो चुका है, अर्थात् प्राचीन मान्यतायें पीछे छूट गई हैं। तुम्हें स्मरण होगा कि मैंने "सत्य का उदय" में कहीं यह उल्लेख किया है कि सम्पूर्ण विश्व की मानवता का निर्माण कंकालों तथा राख के ढेर पर होगा। महत्वहीन पूजा तथा पूजा की प्राचीन पद्धतियों की नीवें डगमगा रही हैं, तुम्हारा स्वप्न इसी ओर संकेत करता है तथा इससे आने वाले भविष्य की झलक दिखाई पड़ती है। मेरे विचार से तुम्हें याद होगा कि मैंने तुम्हारे बारे में क्या कहा था। मेरे मालिक ने बंधन मुक्त करने के संदर्भ में कहा था तथा मैं इस संदर्भ में कुछ बिन्दुओं पर अगले निर्देशों का इन्तजार कर रहा हूँ।"

22 नवम्बर 1977– मंगलवार

मुझे तिनसुकिया की अपनी प्रस्तावित यात्रा को निरस्त करना पड़ा। मैं वहाँ मालिक से भेंट करने के लिये जाने वाला था, उसके स्थान पर मैंने श्री दयाभाई पटेल को, मालिक से क्षमा याचना करते हुये तथा कार्यक्रम की सफलता की शुभकामना के संदेश के साथ तिनसुकिया रवाना किया।

शाम को, एस.नारायणस्वामी हमसे भेंट करने के लिये हमारे घर पर पधारे। वे कल सुबह कोरामन्डल एक्सप्रेस से कलकत्ता की ओर रवाना हो रहे हैं तथा वहाँ से वे विमान द्वारा तिनसुकिया जायेंगे।

24 नवम्बर 1977 – गुरुवार

सुबह 5.15 बजे से 5.40 तक ध्यान किया, तत्पश्चात् पुनः मेरी नींद लग गयी। इस दौरान मैंने एक स्वप्न देखा। स्वप्न :– मैंने देखा कि मैं एक टेबल पर मालिक के सम्मुख बैठा हूँ तथा उनसे प्रकाशन के सम्बन्ध में चर्चा कर रहा हूँ। मैं उन्हें जानकारी देता हूँ कि उनकी पुस्तक "वॉयस रियल" भाग दो लगभग तैयार हो चुकी है। मैं बताता हूँ, इसके प्रारूप का दो–तीन मर्तबा अध्ययन भी कर चुका हूँ। मेरी जानकारी में ऐसा कुछ नहीं आया जिसकी छँटनी की जा सके। वे मेरी बात का कोई जवाब नहीं देते हैं, अपितु पैनी निगाहों से मेरी ओर देखते हैं, जिससे मुझे प्रबल प्राणाहुति का अहसास होता है तथा मैं सिहर उठता हूँ। मेरी नींद खुल जाती है। जगने के पश्चात् भी मैं देखता हूँ कि मेरे शरीर में कम्पन जारी है। घड़ी में सुबह 6.00 बज रहे हैं। थोडी देर पश्चात् मैंने अपने आपको शान्त तथा तरोताजाा महसूस किया।

26 नवम्बर 1977 – शनिवार

सुबह 3.15 बजे छाती में उरस्थि के समीप दर्द महसूस हुआ। चाइना – 200 लेने पर दर्द में थोड़ी कमी महसूस हुयी।

27 नवम्बर 1977 – रविवार

रात्रि 9.15 बजे उरस्थि के बिन्दु तथा उसके आसपास के क्षेत्र में तेज दर्द उठा, गैस इत्यादि की कोई समस्या नहीं थी। चाइना –200 की एक खुराक ली तथा सोने चला गया लेकिन दर्द से राहत नहीं मिली तथा देर रात तक स्थिति यथावत् बनी रही।

28 नवम्बर 1977 – सोमवार

डॉक्टर से परामर्श लिया तथा एक्सरे, ई.सी.जी. इत्यादि परीक्षण कराये, किन्तु सारी रिपोर्ट सामान्य थी। डॉक्टर ने मुझे एक सप्ताह तक घर आराम करने की हिदायत दी।

1 दिसम्बर 1977 – गुरुवार

एक अमेरिकन लड़की लिओनोरा ग्रीनबर्ग जिसकी उम्र लगभग 24 वर्ष की होगी तथा जो पिछले दो–तीन वर्षों से डेनमार्क में रह रही है, बिना

किसी पूर्व सूचना के अचानक अपने सारे सामान इत्यादि के साथ मेरे घर पर सिटिंग लेने पहुँची तथा रात्रि भोजन करने के पश्चात् रवाना हो गयी। ऐसा प्रतीत हो रहा था कि उसके कहीं ठहरने इत्यादि की कोई व्यवस्था नहीं है।

एस. नारायणस्वामी मेरे घर पर पधारे जो कल ही तिनसुकिया से लौट कर आये हैं। उन्होंने उत्सव के सम्बन्ध में उत्साहवर्धक जानकारी दी यद्यपि उन्होंने बताया कि मालिक का स्वास्थ्य ठीक नहीं था।

ऐसी जानकारी मिली कि राघवेन्द्र राव, सरनाड, डॉ. श्यामराव, हेबल, विठ्ठल राव, जहाँगीरदार तथा आर.रामचन्द्र रेड्डी दो कारों में सवार होकर सीधे गुलबर्गा से हैदराबाद तथा कलकत्ता के रास्ते 24 घंटे विलम्ब से तिनसुकिया पहुँचे थे। राघवेन्द्र राव तथा डॉ.विठ्ठल राव जैसे समझदार व्यक्तियों द्वारा इस तरह की बचकाना हरकत करना मेरी समझ से परे की बात थी तथा मुझे उनकी इस साहसिक यात्रा पर अत्यंत आश्चर्य हो रहा था।

एस.के.सुन्दरम ने भी आज मेरे घर पर मुझसे भेंट की।

2 दिसम्बर 1977 – शुक्रवार

लियोनोरा ग्रीनबर्ग को लॉज से हम अपने साथ अपने घर "गायत्री" ले आये, क्योंकि लॉज में इस तरह एक अकेली लड़की का ठहरना सुरक्षित नहीं था।

29 दिसम्बर 1977 – गुरुवार

डेव बोलेवाइस तथा उनकी पत्नी शेरी आज सुबह की उड़ान से दिल्ली से मद्रास पहुँचे तथा हमारे घर गायत्री में रुके। एमस्टरडम के वेन स्टीवन तथा केरेल बोमहोफ पहले से ही हमारे घर पर ठहरे हुये थे। इस प्रकार कुल मिलाकर विदेश के चार अभ्यासी इस समय हमारे घर पर ठहरे हुये हैं।

1978

1 जनवरी 1978 – रविवार

हमने अपने नव वर्ष का शुभारम्भ प्रातःकालीन सामूहिक सत्संग के साथ किया। सत्संग सुबह 7.30 बजे से 8.05 बजे तक चला जिसमें लगभग साठ अभ्यासी उपस्थित थे। उपस्थित अभ्यासियों में हमारे घर में ठहरे हुये विदेश के अभ्यासी, जिनमें अमेरिका के डेव बोलेवाइस तथा शेरी, डेनमार्क के सोलवेज जेन्सन, हॉलैण्ड के बेरनाडेट तथा केरेल भी सम्मिलित थे। अन्य केन्द्रों के प्रशिक्षको में कडप्पा के श्री आर.रामचन्द्र रेड्डी तथा कोयम्बटूर के एस. एस. रामकृष्णा के अलावा बहन शोभना भी सत्संग में उपस्थित थीं। सिटिंग अच्छी रही।

सत्संग के पश्चात् एस. नारायण स्वामी द्वारा मालिक पर उनके स्वयं द्वारा रचित कविता का गायन किया गया। तत्पश्चात् डेव बोलेवाइस ने दस मिनट तक अपने विचार सबके समक्ष रखे। बेरनाडेट तथा केरेल जो आज सुबह ही मदुरई से लौटे थे, द्वारा कोई उद्‌बोधन नहीं दिया गया। तत्पश्चात् मैंने हमेशा की तरह तात्कालिक रूप से तैयार किया हुआ अपना संक्षिप्त उद्‌बोधन दिया, जिसका विषय था "समर्पण"। विदेश के चारों अभ्यासियों से उनके देश में, मिशन के क्रियाकलापों के सम्बन्ध में सुबह 11.30 बजे तक लम्बी चर्चा चली।

शाम 4.00 बजे– डेव, शेरी, बेरनाडेट, केरेल, डॉ. एस.एस.रामकृष्णा, शोभना तथा कृष्णा को आधे घंटे की एक सामूहिक सिटिंग दी।

एस.एस.आर. तथा शोभना शाम की ट्रेन से कोयम्बटूर की ओर रवाना हो गये।

टी.टी. कृष्णामाचारी कम्पनी में आज मेरी नौकरी का 24वाँ वर्ष प्रारम्भ हो रहा है, यद्यपि आज रविवार का दिन है। 1977 का वर्ष विशेष तौर पर वर्ष 77 का अंतिम चर्तुथांश मेरे लिये तनावों से भरा रहा तथा मेरे लिये हर प्रकार की समस्या खड़ी की गयी, जिसके सूत्रधार महाप्रबंधक वी.

राजगोपालन थे। मैं समझ नहीं पा रहा हूँ कि इन विपरीत परिस्थितियों से अपने आपको कब तक सुरक्षित रख पाऊँगा? इसका जवाब तो केवल मालिक ही दे सकते हैं।

2 जनवरी 1978 – सोमवार

सुबह 7.10 बजे से 7.40 बजे तक – डेव बोलेवाइस, शेरी, बेरनाडेट तथा केरेल बोमहोफ को एक सिटिंग दी। सिटिंग अच्छी रही। सिटिंग के दौरान स्थिरता का अनुभव हुआ। ऐसा प्रतीत हो रहा था जैसाकि किसी बाल्टी में उसके सिरे तक पानी भर चुका है तथा गिरते हुये पानी का शोर पूर्णतया थम चुका है।

रात्रि 9.15 से 9.50 बजे तक रोजलिंड पिअरमें का प्रकरण उसकी अनुपस्थिति में लेकर उस पर कार्य पूर्ण किया तथा मालिक की ओर से उसे अंतरिम अनुमति प्रदान की। वह आयरलैण्ड में है तथा वहाँ की द्वितीय प्रशिक्षक है। रात्रि 2.30 से 3.00 बजे के मध्य कार्य को अंतिम स्वरूप दिया।

3 जनवरी 1978 – मंगलवार

डेव बोलेवाइस तथा शेरी जनता एक्सप्रेस से बॉम्बे की ओर रवाना हो गये।

4 जनवरी 1978 – बुधवार

प्रशिक्षक बहन डी. रंगानायकी प्रातः 6.00 बजे तिरुपति से मद्रास पहुँची। मैंने उसे बेरनाडेट केरेल तथा कृष्णा के साथ एक सिटिंग दी।

केरेल तथा बेरनाडेट बहन रंगानायकी के साथ बस द्वारा तिरुपति की ओर रवाना हो गये। उनके जाने के पश्चात् घर सूना–सूना लग रहा था।

5 जनवरी 1978 – गुरुवार

एक अभ्यासी जिसका नाम आनंद स्वरूप है तथा जिसे मैंने अंतिम बार जुलाई 1972 में अमेरिका में देखा था, शाम 6.30 बजे मेरे घर पहुँचा। अप्पा ने उसे सिटिंग दी।

''कांस्टेन्ट रिमेम्बरेन्स'' के तृतीय संस्करण, जिसका प्रकाशन श्री राम चन्द्र मिशन के बोस्टन (मस्कट) केन्द्र द्वारा किया जा रहा था, के लिये

एक लेख भेजा जिसका शीर्षक था "वर्क एण्ड प्ले"।

7 जनवरी 1978– शनिवार

दशरथन त्रिची से आज मद्रास पहुँचे, वह दिल्ली जा रहे हैं। मैंने शाहजहाँपुर के लिये 300 बैज का एक बंडल तैयार किया तथा दशरथन एवं बंडल को लेकर पश्चिम माम्बलम पहुँचा। नाजुक बैज के बंडल के साथ मैंने दशरथन को राघवेन्द्रन के निवास पर छोड़ा। दशरथन इस बैज के बंडल को जिसमें बंसत पंचमी के उत्सव में भाग लेने वाले प्रतिनिधियों के बैज भी सम्मिलित हैं, अपने साथ शाहजहाँपुर लेकर जा रहे हैं। मैं उनके साथ मालिक के लिये एक पत्र भी भेज रहा हूँ।

मुथैया तथा राघवेन्द्रन के निवास पर आज से पूर्व मैं कभी नहीं गया था।

13 जनवरी 1978 – शुक्रवार

अहमदाबाद के सी. राजगोपालन अपने साले एस.रघुनाथन जो बैंगलोर में अभ्यासी हैं, के साथ मेरे घर पर पधारे। मैंने उन्हें एक सिटिंग दी।

14 जनवरी 1978 – शनिवार

सुबह 7.00 बजे सी. राजगोपालन को एक सिटिंग दी।

शाम 5.00 बजे विलियम वेकॉट, उनकी पत्नी डायना वेकॉट तथा उनकी एक मित्र कु. विक्टोरिया वेक (जो अभ्यासी नहीं है) कडप्पा से ट्रेन द्वारा मद्रास पहुँचे। उन्हें बारह जनवरी को मद्रास पहुँचना था, किन्तु दोनों लड़कियों के अस्वस्थ होने के कारण उन्हें अपना कार्यक्रम स्थगित करना पड़ा। वे केवल एक रात के लिए ही गायत्री में रुक सके, उन्हें अगली सुबह कोलम्बो के लिये रवाना होना था।

विलियम वेकॉट से यह मेरी पहली मुलाकात थी। मैंने उनके काफी चर्चे सुने थे। वह "शान्ति दल" के कार्यकर्ता के रूप में भारत आये थे तथा उनका कार्यक्षेत्र रायचुर के समीप ही कहीं था तथा वहीं से वे मिशन से जुड़े थे। उनकी राघवेन्द्र राव से घनिष्टता आम चर्चा का विषय थी तथा वह थोड़ी बहुत कन्नड़ भाषा की भी जानकारी रखते थे। वह मिशन के प्रशिक्षक हैं।

मेरा एक लेख "ऑयडल वर्शिप" (मूर्ति पूजा) आज पूर्ण हुआ, जो

30 अप्रैल 1978 को बैंगलोर में जारी होने वाली स्मारिका में प्रकाशित होना है।

15 जनवरी 1978 – रविवार

सुबह 7.30 बजे से 8.00 बजे तक विलियम वेकॉट ने प्रातः कालीन सत्संग कराया, तत्पश्चात् उन्होंने अपना उद्‌बोधन दिया जिसमें उन्होंने अभ्यासियों तथा प्रशिक्षकों को अभी भी पुराने रीति रिवाजों तथा प्राचीन पूजा पद्धतियों से चिपके रहने के लिये उनकी आलोचना की।

सुबह 9.45 बजे विलियम, डायना तथा कु.वेक कोलम्बो के लिये रवाना हो गये।

17 जनवरी 1978 – मंगलवार

येरागुन्टला के प्रशिक्षक श्री एम. वैंकटसुबैया, श्री सुब्बारायुडु के साथ मेरे घर पर पधारे।

शाम 7.00 बजे सामूहिक सत्संग कराया, जिसमें जी. एस. मनी, एस. नारायणस्वामी, एस. के. मोहन, एम. वैंकटसुबैया, सुब्बारायुडु तथा सुलोचना उपस्थित थे।

मालिक को पत्र लिखा जिसके साथ उनके द्वारा गठित की जाने वाली अध्यक्षीय परिषद् जो विशेषकर उनके आध्यात्मिक कार्यो में उनका सहयोग करेगी तथा कार्यकारिणी समिति की गतिविधियों पर कार्यकर्ता की हैसियत से नजर रखेगी, के संदर्भ में अपना प्रारूप भी संलग्न करके भेजा।

19 जनवरी 1978 – गुरुवार (मदुरई)

शाम 7.00 बजे – वालमजी मेंशन में सामूहिक सत्संग कराया। सिटिंग चालीस मिनट चली तथा अच्छी रही, तत्पश्चात् रात्रि 8.40 बजे तक अभ्यासियों से चर्चा में व्यस्त रहा।

20 जनवरी 1978– शुक्रवार

शाम 7.00 बजे – तालाकुलम में पलानीचामी के निवास पर सामूहिक सत्संग कराया जिसमें पच्चीस अभ्यासी उपस्थित थे। प्राणाहुति अत्यन्त प्रबल थी तथा बहुत से अभ्यासियों ने शक्तिशाली कम्पन का अनुभव किया एवं कुछ अभ्यासियों ने अपने हृदय क्षेत्र में दबाव का भी

अनुभव किया।

प्रार्थना के सम्बन्ध में मेरे मन में चल रहे विचारों के सन्दर्भ में मैंने उनसे चर्चा की तथा उन्हें निम्नानुसार जानकारी से अवगत कराया।

(1) याचक को अपने दानकर्ता अथवा देवनहार से भिन्न तथा पृथक नहीं समझना चाहिये अर्थात् हमें अपने को अपने मालिक से भिन्न तथा पृथक नहीं समझना चाहिये।

(2) हमारी प्रार्थना का जो भी स्वरूप हो, उसके लिये हमें मात्र एक सुझाव देना चाहिये।

(3) प्रार्थना में हमारी स्वयं की इच्छा का भाव प्रगट नहीं होना चाहिये ताकि हमारी प्रार्थना के जवाब में उनकी इच्छा हमारे सूक्ष्म से सुझाव पर प्रभावी हो सके।

24 जनवरी 1978 – मंगलवार

डेनमार्क के पाँच अभ्यासियों का दल, जिसमें पाले कॉस गार्ड, माइकल जेरनो, जेल्ड विन्सट्रप, हन्न राइक तथा एक अन्य अभ्यासी थे, दोपहर को हमारे घर आया। मैंने उन्हें शाम 5.10 से 5.35 तक सामूहिक सिटिंग दी। प्राणाहुति अत्यन्त गहरी तथा प्रबल थी।

25 जनवरी 1978– बुधवार

सुबह 7.00 बजे – डेनमार्क के पाँच अभ्यासियों को सिटिंग दी।

शाम पाँच बजे मैंने डेनमार्क के पाँच अभ्यासियों को व्यक्तिगत सिटिंग दी इनमे एस. नारायणस्वामी भी आये थे। वे सभी रात्रिभोज के लिये रुके। उसके बाद हमने देर रात तक चर्चा की। वे सभी 10:30 बजे रवाना हो गये।

26 जनवरी 1978– गुरुवार

पाँच डेनिस अभ्यासी दोपहर 2.30 बजे मेरे घर पर पहुँचे तथा दोपहर 3.30 बजे मुझसे सिटिंग प्राप्त की, तत्पश्चात् शाम 5.00 बजे वे वहाँ से रवाना हो गये। उन्हें शाम 6.30 बजे आई.ए.सी. की उड़ान से दिल्ली के लिये रवाना होना था, जहाँ से वे कोपेनहेगन के लिये वापसी की उड़ान पकड़ेंगे

28 जनवरी 1978 – शनिवार (बैंगलोर)

सुबह 7.35 बजे वृन्दावन एक्सप्रेस से बैंगलोर की ओर रवाना हुआ तथा दोपहर 1.20 बजे बैंगलोर के सिटी स्टेशन पहुँचा। एस.के.सुन्दरम, एम.मुरूगेसन तथा वी.वेणुगोपाल गुप्ता ने स्टेशन पर मेरी अगवानी की। वेणु की कार में सवार होकर हम एस. के. सुन्दरम के 22 क्रॉस स्ट्रीट, बानशंकरी खंड–दो स्थित निवास पर पहुँचे जहाँ मेरे ठहरने की व्यवस्था की गयी थी तथा यहाँ से हमारा आश्रम कुछ गज की दूरी पर स्थित था।

दोपहर 3.00 बजे– एम.मुरूगेसन तथा श्रीमती सरोजा सुन्दरम को सिटिंग दी।

शाम 7.15 बजे–समीप ही स्थित आश्रम जहाँ पैदल चलकर 10 मिनट में पहुँचा जा सकता था, में मैंने सायंकालीन सामूहिक सत्संग कराया जिसमें लगभग तीस अभ्यासी उपस्थित थे। इन अभ्यासियों में एम. डी.जहाँगीरदार तथा एस.पी.नैनार भी सम्मिलित थे। पैंतालिस मिनट चली इस सिटिंग में प्राणाहुति अत्यन्त गहरी थी। सत्संग के पश्चात् एम. डी. जहाँगीरदार तथा दो अन्य व्यक्ति रात्रिभोज पर सुन्दरम के घर पधारे तथा रात्रि 11.15 बजे वहाँ से रवाना हुये। उनके जाने के पश्चात् मैं, सुन्दरम, उनकी पत्नी तथा मुरूगेसन (जो मेरे यहाँ रहने तक हमारे साथ ही ठहरे हुये थे) रात्रि 1.30 बजे तक चर्चा में व्यस्त रहे, तत्पश्चात् विश्राम के लिये अपने शयन कक्ष में चले गये।

29 जनवरी 1978 – रविवार

सुबह 8.15 बजे मैंने आश्रम में प्रातःकालीन सत्संग कराया। सिटिंग पैंतालिस मिनट चली तथा बहुत अच्छी रही। सत्संग के उपरान्त टी.वी.श्रीपति ने अपना संक्षिप्त उद्‌बोधन दिया, तत्पश्चात् मैंने आधे घंटे तक उन्हें उद्‌बोधित किया, तथा उन्हें सचेत करते हुये चेतावनी दी कि सहज मार्ग को गम्भीरता से न लेना न सिर्फ अभ्यासियों के लिये अपितु आने वाली पीढ़ी के लिये भी हानिकारक है। यह चेतावनी दिया जाना अत्यन्त आवश्यक था, क्योंकि कुछ प्रशिक्षक महज संख्या बढ़ाने के मकसद से सहज मार्ग की व्याख्या अपने अनुरूप करते हैं।

(1) उनके द्वारा नये अभ्यासियों से यह कहा जाता है कि मात्र पन्द्रह मिनट का ध्यान करना ही पर्याप्त है ।

(2) पुराने रीति रिवाजों तथा प्राचीन पूजा पद्धतियों के सम्बन्ध में विपरीत तर्क प्रस्तुत करते हुये उनसे यह कहा जाता है कि सहज मार्ग का ध्यान करते वक्त वे इन पद्धतियों का अनुसरण कर सकते हैं तथा नयी पद्धति के स्थापित होने पर प्राचीन पद्धतियाँ अपने आप छूट जायेंगी।

(3) उन्हें झूठे प्रलोभन दिये जाते हैं तथा उनके समक्ष बेकार की डींगें हाँकी जाती हैं।

कार्यक्रम समाप्त होने के पश्चात् मैंने मालिक के जन्मोत्सव कार्यक्रम के आयोजन के लिये तीन कल्याण मंडपों का निरीक्षण किया। तत्पश्चात् हम दोपहर भोजन पर केंगेरी में जहाँगीरदार के निवास पर पहुँचे तथा भोजन के उपरान्त दोपहर तीन बजे सुन्दरम के निवास पर वापस लौट आये। जहाँगीरदार, के.आर.कुमार, वेनुगोपाल गुप्ता तथा बी.के. राजगोपाल भी हमारे साथ ही थे एवं शाम 5.30 बजे सुन्दरम के घर से रवाना हुये।

शाम 6.30 बजे मैंने तीन अभ्यासियों विरूपक्षा देवर, सी. आर. नरसिम्हामूर्ति तथा उनकी पत्नी को सिटिंग दी। तत्पश्चात् एस.के.सुन्दरम, उनकी पत्नी सरोजा सुन्दरम तथा एम.मुरूगेसन को सिटिंग दी ।

मैं तेज जुकाम तथा लगातार नाक बहने को लेकर परेशान था, अतः रात 11.00 बजे ही विश्राम के लिये अपने शयन कक्ष में चला गया।

30 जनवरी 1978 – सोमवार (चन्नपटना)

सुबह 8.10 बजे कार से चन्नपटना के लिये रवाना हुआ तथा अपने व्यवस्थापक श्री चिकपुट्ट गावड़े तथा उनके पुत्र (गोद लिये) कृष्णा से अपने आश्रम में भेंट की । उनसे आज शाम के कार्यक्रम के सम्बंध में चर्चा करने के पश्चात् मैं कम्पनी के कार्य से नानजांगुद की ओर रवाना हो गया। इस भ्रमण के दौरान मुरूगेसन प्रारम्भ से लेकर दौरा समाप्त होने तक मेरे साथ रहे।

दोपहर 3.00 बजे मैं चन्नपटना वापस लौट आया। मैं बुखार

खाँसी, सर्दी तथा शरीर की जकड़न के कारण परेशान था। अतः शाम 4. 30 बजे तक आश्रम में ही विश्राम किया।

शाम 5.00 बजे – चन्नपटना आश्रम में सामूहिक सत्संग कराया जिसमें कोलेगल के बारह तथा चन्नपटना के छः अभ्यासियों के अलावा बैंगलोर के मुरूगेसन तथा विरुदनगर के बी.रामचन्द्रन एवं आर.रंगप्पा भी उपस्थित थे।

चन्नपटना से शाम 6.00 बजे रवाना होकर शाम 7.15 बजे बैंगलोर में एस.सुन्दरम के निवास पर पहुँचा तथा सीधे विश्राम के लिये अपने शयन कक्ष में चला गया जिसके कारण वहाँ उपस्थित अभ्यासी निराश हो गये तथा सुन्दरम भी मायूस हो गये।

31 जनवरी 1978 – मंगलवार

सुबह 9.00 बजे, सी.आर. नरसिम्हामूर्ति, विरूपक्षा देवर, कमलेश कुमार तथा टी.श्रीकान्तन को सिटिंग दी। मुरूगेसन तथा श्री एवं श्रीमती सुन्दरम भी सिटिंग में उपस्थित थे।

दोपहर 1.55 बजे बैंगलोर से वृन्दावन एक्सप्रेस से मद्रास के लिये चला। मुझे स्टेशन पर छोड़ने श्री एवं श्रीमती सुन्दरम् , मुरूगेसन, के. आर. कुमार, टी.वी. कमलेश कुमार, बी. के. राजगोपाल, वी. वेणुगोपाल गुप्ता आये। मैं तेज जुकाम से पीड़ित था तथा मेरी छाती में बलगम जमा हुआ था, जिसके कारण मेरी आवाज निकलनी लगभग बन्द हो गयी थी तथा मुझे मामूली बुखार भी था।

शाम 6.50 बजे मैं मद्रास पहुँच गया।

1 फरवरी 1978 – बुधवार

शाम 5.00 बजे डेनमार्क की सॉलवेज जोन्सन मेरे घर पर पधारीं, मैंने उन्हें एक व्यक्तिगत सिटिंग दी। वह हृदय के प्रथम बिन्दु पर थीं, मैंने उस बिन्दु पर उनकी यात्रा पूर्ण करायी तथा उन्हें हृदय क्षेत्र के द्वितीय बिन्दु आत्मा चक्र की ओर बढ़ाया।

वॉयस टियल – भाग दो छपायी के लिये दी जा चुकी है । मैंने उसकी हस्तलिपि दिसम्बर 1977 के प्रारम्भ में छपायी के लिये भेजी थी।

लेकिन अभी तक मात्र दो अध्याय की छपायी ही पूर्ण हुयी है। जी.एस. प्रेस के एस.रामास्वामी के साथ एक दुर्घटना हो गयी थी जिसके कारण उस बेचारे के घुटने की कटोरी टूट गई थी तथा वह बिस्तर पर पड़े हुये हैं। आगे का कार्य मेरे बसन्त पंचमी के कार्यक्रम के उपरान्त शाहजहाँपुर से लौटने के पश्चात् ही पुनः प्रारम्भ होगा।

6 फरवरी 1978 – सोमवार

मैं सुबह 7.10 बजे तमिलनाडु एक्सप्रेस से अपनी पत्नी सुलोचना, आर.स्वामीनाथन, एम. मुरूगेसन, वाई. वी. एस. लक्ष्मी, आर. बालासुब्रामनियम, श्रीमती प्रमिला राघवेन्द्रन, आर. सदाशिवम्, के. महालिंगम, विलियम बेकॉट तथा उनकी पत्नी डायना के साथ मद्रास से दिल्ली की ओर रवाना हुआ। हम सभी द्वितीय श्रेणी शयनयान में यात्रा कर रहे थे। दोपहर में विजयवाड़ा से एस.पी.लोकनाथ तथा उनकी पत्नी मैथिली भी ट्रेन में सवार हुये। शाम 6.30 बजे मैंने ट्रेन में सामूहिक सत्संग कराया।

7 फरवरी 1978 – मंगलवार (दिल्ली)

लगभग दोपहर के वक्त हमारी ट्रेन दिल्ली पहुँची। श्री आर. कृष्णास्वामी तथा कुछ अन्य अभ्यासियों ने स्टेशन पर हमारी अगवानी की तथा हमें सदर्न एक्सटेंशन के सार्वजनिक सभा सदन में ले गये जहाँ हमारे ठहरने की व्यवस्था की गयी थी।

रात्रि 8.00 बजे मैंने हाल में सामूहिक सत्संग कराया जिसमें लगभग अस्सी अभ्यासी उपस्थित थे ।

8 फरवरी 1978– बुधवार (शाहजहाँपुर)

सुबह 7.00 बजे सार्वजनिक सभा सदन में सामूहिक सत्संग कराया जिसमें लगभग एक सौ बीस अभ्यासी उपस्थित थे ।

सत्संग के पश्चात् वी.आर.एम.मूर्ति का दशरथन की पुत्री के साथ विवाह समारोह सम्पन्न हुआ। वर ने वधू के गले में मंगलसूत्र डाला तथा दोनों ने एक दूसरे के गले में फूल माला पहनायी। इसके साथ ही विवाह की रस्म पूर्ण हुयी। यह मांगलिक कार्य मेरे द्वारा सम्पन्न कराया गया था। इस विवाह का अनुमोदन मालिक के द्वारा किया गया था तथा निश्चित ही

इस युगल को मालिक का आशीर्वाद प्राप्त था, क्योंकि ध्यान के दौरान मैंने देखा कि मालिक उनके माथे पर तिलक लगा रहे हैं तथा उनका हाथ एक–दूसरे के हाथो में दे रहे हैं।

हमारे सभी साथी दोपहर 2.10 बजे काशी विश्वनाथ एक्सप्रेस से शाहजहाँपुर की ओर रवाना हुये। अभ्यासियों के इस दल के साथ एस.के. सुन्दरम् तथा उनकी पत्नी सरोजा, बेरनाडेट, केरेल, आंद्रे पोरे तथा उनके साथ फ्रांस के पाँच अभ्यासी भी सम्मिलित थे। इस प्रकार से कुल मिलाकर चौवालिस अभ्यासी इस ट्रेन से यात्रा कर रहे थे। इसमें हमारे दल के बत्तीस सदस्य थे जिनके पास कुल सत्तासी बैग तथा ग्यारह बंडल पुस्तकों के थे। हम शाम 7.55 बजे शाहजहाँपुर पहुँचे।

9 फरवरी 1978 – गुरुवार

सुबह 7.00 बजे आश्रम में प्रातः कालीन सामूहिक सत्संग कराया जिसमें लगभग सौ की संख्या में अभ्यासी उपस्थित थे ।

सारा दिन बसंत उत्सव कार्यक्रम के आयोजन की व्यवस्था में व्यस्त रहा। इस बीच थोड़ी देर के लिये मालिक से उनके निवास पर संक्षिप्त भेंट हुयी।

10 फरवरी 1978 – शुक्रवार

सुबह 7.00 बजे आश्रम में प्रातःकालीन सामूहिक सत्संग कराया इसमें लगभग तीन सौ अभ्यासी उपस्थित थे। कार्यक्रम के पूर्व आये स्वयं सेवकों के कारण संख्या इतनी अधिक हो गयी थी।

पूज्य मालिक शाम 4.00 बजे अपने सामान इत्यादि के साथ आश्रम पधारे तथा अपने नवनिर्मित आवास में प्रवेश किया। यह आवास कलकत्ता केन्द्र के अभ्यासियों की ओर से मालिक के लिये सप्रेम भेंट थी। इसके निर्माण पर लगभग डेढ़ लाख रुपये का खर्च आया था। इस छोटे से आवास में मालिक के लिये एक शयन कक्ष है जिसमें शौचालय भी है तथा इस कक्ष के साथ पूर्व दिशा की ओर एक बरामदा भी है। इसमें एक छोटी रसोई तथा एक अन्य शयनकक्ष भी है। इस शयन कक्ष के साथ शौचालय भी है। इसके अलावा एक सुन्दर बगीचा भी है जिसमें चारों ओर

गुलाब के फूल खिले हुये हैं तथा इसमें एक लॉन भी है। इस बगीचे की देखभाल का जिम्मा राजेश माथुर का है जो मालिक के आवास के अलावा सम्पूर्ण आश्रम परिक्षेत्र की देखभाल भी करते हैं।

मैं लम्बे समय तक मालिक तथा आंद्रे पोरे के साथ चर्चा में व्यस्त रहा। यद्यपि आंद्रे का मालिक के प्रति प्रेम तथा पूर्ण समर्पण है तथा उनके पास यूरोप में सहज मार्ग को प्रचारित करने के कई ठोस सुझाव भी हैं, तथापि उनके सुझाव मालिक के विचारों से मेल नहीं खाते। लम्बे समय तक उनसे इस मुद्दे पर चर्चा करके मुझे उनसे उकताहट होने लगी थी। ऐसा लग रहा था जैसे वह सहज मार्ग की नीतियों का सीधा विरोध करने वाला निष्ठावान शत्रु है। फ्रांस में दो प्रतिष्ठित समूह हैं तथा जीन माइकल पिक्वेमल के आंद्रे से गहरे मतभेद हैं। मालिक आंद्रे की हरकतों को नजर अंदाज करते हैं। उनका कहना है, "आंद्रे का उनके प्रति अत्यन्त प्रेम है"– निस्संदेह यह सत्य है, लेकिन इससे उनकी कारगुजारियों को नजरअंदाज नहीं किया जा सकता, वह अत्यन्त ही अड़ियल व्यक्ति हैं। मालिक उनके इस अड़ियलपन पर अपना मत कुछ इस प्रकार से देते हैं। उनके अनुसार आंद्रे स्वयं को सही साबित करने के लिये तर्क वितर्क करता रहता है।

पंजीकृत अभ्यासियों की संख्या का आँकड़ा रात्रि 10.00 बजे तक आठ सौ पहुँच गया था। सोने में रात्रि के बारह बज गये।

11 फरवरी 1978– शनिवार

सुबह 7.00 बजे तक लगभग एक हजार अभ्यासी समारोह में सम्मिलित होने के लिये आयोजन स्थल पर पहुँच चुके थे।

सुबह 6.30 बजे मालिक ने बसंत का प्रथम सत्संग कराया। सिटिंग पैंतालिस मिनट चली तथा शान्त रही।

अक्सर जैसा होता है उसी प्रकार से आज का दिन भी व्यस्तताओं से भरा रहा। रात्रि 8.00 बजे ठहरने की व्यवस्था गड़बड़ा गयी तथा हमें शीघ्र ही दो शामियानों की व्यवस्था करनी पड़ी। इसके अलावा दो अन्य शामियाने की भी व्यवस्था की जो अगले दिन लगा दिये जायेंगे। रात्रि 10.00 बजे तक अभ्यासियों की संख्या 1500 तक पहुँच गयी थी। अन्त में

आने वाले अभ्यासियों में से अधिकांश कानपुर के थे जो देर रात में यहाँ पहुँचे थे। सुरक्षा व्यवस्था का निरीक्षण करने के पश्चात् मैं रात्रि 1.00 बजे सोने के लिये चला गया ।

12 फरवरी 1978 – रविवार (बसंत पंचमी)

सुबह 5.30 बजे मालिक के शयन कक्ष में जाकर उन्हें तैयार करने में उनकी मदद की। तत्पश्चात् मैं उन्हें आश्रम के उस कक्ष तक लेकर गया जहाँ अत्यन्त सलीके से प्रसाद के थाल सजाकर रखे गये थे। सुबह 6.10 बजे मालिक ने प्रसाद अर्पण किया। गत रात्रि में मैंने एस. के. सुन्दरम तथा उनकी पत्नी सरोजा को दीक्षित करने के प्रकरण पर विचार करने के लिये मालिक से अनुरोध किया था। आज सुबह जब हम उनके आश्रम निवास की ओर वापस जा रहे थे तब उन्होंने मुझसे पूछा क्या वे लोग यहाँ मौजूद हैं। वे लोग उस समय रसोई में कार्य कर रहे थे। मैंने शीघ्र ही उन्हें बुलवाया, जबकि मालिक ने सर्दी में पाँच मिनट तक वहीं इन्तजार किया। उनके वहाँ पहुँचने पर मैंने मालिक से उनका परिचय करवाया। वे इस बात से पूर्णतया अनभिज्ञ थे कि मैंने उन्हें वहाँ किस कारण से बुलवाया है। लेकिन मालिक के दर्शन पाकर वे अत्यन्त प्रसन्न थे। तत्पश्चात् मैं मालिक को दस मिनट के विश्राम के लिये उनके आश्रम के निवास तक ले गया। विश्राम के उपरान्त उन्हें लेकर ध्यान कक्ष में पहुँचा।

सुबह 6.30 बजे मालिक ने बसंत उत्सव की सिटिंग दी जो पचपन मिनट तक चली। तत्पश्चात् हवन का कार्यक्रम किया गया। इस दौरान वक्तव्य इत्यादि देने का कार्यक्रम जारी हो चुका था। श्री प्रकाश चन्द्र सक्सेना (वकील साहब) के एक मुस्लिम मित्र जिनका नाम सदाकत अली खान था, द्वारा स्वागत सम्बोधन दिया गया। वह प्रकाश तथा भाभी द्वारा दिये गये सेवा के अवसर के लिये उनका स्तुतिगान कर रहे थे तथा उनकी तारीफों के पुल बाँधकर उन्हें आसमान पर चढ़ा रहे थे। स्वागत उद्‌बोधन की प्रतियाँ मिशन के प्रतीक चिन्ह के साथ छप चुकी थीं तथा वितरित की जा रही थीं। इसका हिन्दी अनुवाद उदयपुर की सुधा गुप्ता द्वारा अत्यन्त निपुणता से तथा शीघ्रतापूर्वक किया गया। कोई भी इस बात पर

आश्चर्यचकित हुये बिना नहीं रह सकता कि यही सदाकत अली अनेक अपराधिक मामलों में आरोपी रह चुके थे। यहाँ तक कि उसे व्यभिचार के प्रकरण में दोषी ठहराया गया था, लेकिन वर्तमान में वह प्रकाश के परिवार के करीबी व्यक्तियों में से एक है । मुझसे चर्चा करते समय उसने मुझे बताया कि उसके परिवार के तथा मालिक के परिवार के आपस में अच्छे सम्बन्ध हैं तथा उनके सम्बन्ध सौ वर्षो से भी अधिक पुराने हैं।

सुबह 8.10 बजे मालिक ने मुझे काठमांडू के अखिलेश्वर प्रसाद को तैयार करने के लिये निर्देशित किया। मैंने कल उसे दो सिटिंग दी थीं। आज सुबह मैंने उस पर अपना कार्य पूर्ण किया तथा उसे मालिक की ओर से अंतरिम अनुमति प्रदान की। वह नेपाल में मिशन का प्रथम प्रशिक्षक है तथा उसे मिशन के बारे में जानकारी के.वी.रेड्डी के माध्यम से प्राप्त हुयी थी।

सुबह 9.00 बजे बहन कस्तूरी की हिन्दी पुस्तक "दिव्य देश का दर्शन सहज मार्ग के दर्पण में" का विमोचन किया गया। इसका प्रकाशन इलाहाबाद केन्द्र द्वारा किया गया था। किन्तु इसकी केवल 500 प्रतियाँ ही बिक्री हेतु साथ लायी गई थीं, जो विमोचन के उपरान्त हाथों–हाथ बिक गयीं तथा दस मिनट के अन्दर इस पुस्तक की सम्पूर्ण प्रतियाँ बिक चुकी थीं। कस्तूरी की यह प्रथम पुस्तक है।

सुबह 11.30 बजे से 1.00 बजे तक कार्यकारिणी की समिति की बैठक आयोजित की गयी जिसकी अध्यक्षता स्वयं मालिक के द्वारा की गयी।

दोपहर 2.00 बजे से 2.30 बजे तक मैंने मिशन की वैधानिक उपसमिति की बैठक में भाग लिया जिसका गठन मिशन की वैधानिक व्यवस्था तथा नियमावली इत्यादि के लिये किया गया है जो आवश्यकता पड़ने पर नियमावली में फेरबदल हेतु मालिक को अपनी अनुशंसा भेज सकती है ।

दोपहर 3.00 बजे से 5.00 बजे तक ध्यान कक्ष में प्रशिक्षकों की एक बैठक आयोजित की गयी थी जिसमें कोई महत्वपूर्ण मुद्दा नहीं था। इसका

एक निश्चित प्रारूप निर्धारित है जिसमें कभी भी कुछ भी विशेष नहीं होता।

प्रशिक्षकों की बैठक के तुरन्त पश्चात् मालिक ने एस.के.सुन्दरम तथा सरोजा सुन्दरम को दीक्षा प्रदान की। दोनों की खुशी का ठिकाना नहीं था, वे अत्यन्त भावुक हो गये थे तथा उनकी आँखो से झर–झर आँसू बह रहे थे।

शाम 6.30 बजे– मैंने मालिक की अनुमति से शाम का सत्संग कराया। सिटिंग एक घंटे चली। प्राणाहुति अत्यंत सूक्ष्म तथा गहरी थी एवं सिटिंग के दौरान शान्ति महसूस हो रही थी।

दिन के दौरान क्रिस्टिन लैंगस्टाफ, क्यूबेक की मार्शेली गैडोरी रॉय जो उत्सव में आयी हुई थीं तथा आंद्रे पोरे के बीच समस्या खड़ी हो गयी थी। आंद्रे पोरे का मत था कि फ्रेंच भाषा बोलने वाले क्यूबेक के अभ्यासियों को फ्रांस के अधिकार क्षेत्र में रखा जाना चाहिये। यहाँ तक कि क्यूबेक में गतिविधियाँ, जिन्हें आंद्रे पोरे ने नगण्य स्थिति से उठाकर संगठित किया था, उन्हें पोरे द्वारा ही संचालित होना चाहिये। इस विषय को लेकर आंद्रे अत्यंत अभ्रदता पूर्वक व्यवहार कर रहे थे। मैंने कैन्टीन में सभी तीनों व्यक्तियों क्रिसटीन, आंद्रे तथा मार्शल से लम्बी चर्चा की तथा पोरे को यह समझाने का प्रयास किया कि हमारे मिशन में किसी भाषा विशेष को विशेष महत्व देने अथवा पक्षपात पूर्ण व्यवहार करने जैसी कोई गुंजाइश नहीं है तथा मालिक भी मिशन के संचालन हेतु राष्ट्रीय इकाई (भौगोलिक दृष्टि से) के ही पक्ष में हैं। आंद्रे खिसियाते हुये बोले "विवे ले क्यूबेक लिब्रे" अर्थात् आजाद क्यूबेक जुग जुग जियो, तो इस तरह से मेरे प्रिय चारी, क्यूबेक फ्रांस का ही हिस्सा कहलाया। इस तरह के बर्ताव के बावजूद भी वह कितने ईमानदार तथा स्नेही हैं। उनके जीवन में कितना विरोधाभास है। खैर मैंने उन तीनों में सुलह करवायी तथा उन तीनों के एक दूसरे से हाथ मिलवाये यद्यपि मैंने देखा कि आंद्रे को इसका लेश मात्र भी पछतावा नहीं था।

शाम को मैं पोरे को मालिक के निवास पर ले गया, जहाँ हमने मालिक के साथ कनाडा में मिशन के कार्य पर लम्बी चर्चा की। आंद्रे ने

मार्शली की अंतरिम अनुमति के लिये किसी तरह मालिक को मना ही लिया तथा मालिक ने उसका प्रकरण स्वयं तैयार करने का निर्णय लिया। कई मर्तबा मालिक किसी की बातों में आकर इस तरह का निर्णय ले लेते हैं जिस पर बाद में उन्हें स्वयं ही ग्लानि होती है। इसके एवज में आंद्रे इस बात के लिये राजी हो गये कि मार्शेली अपनी गतिविधियों की नियमित जानकारी कनाडा के प्रभारी प्रशिक्षक डॉन सेबोरियन को उपलब्ध करायेंगी।

रात्रि बारह बजे मैं विश्राम के लिये चला गया।

13 फरवरी 1978– सोमवार

मालिक ने सुबह 6.30 बजे बसंत उत्सव समारोह की समाप्ति पर अंतिम सिटिंग दी। सुबह 9.00 बजे तक लगभग एक हजार अभ्यासी अपने गंतव्य की ओर रवाना हो चुके थे। रवाना होने वाले अभ्यासियों में कोदण्ड, इन्दिरा, सुदर्शन, के. वी. रेड्डी तथा अखिलेश्वर सिंह भी सम्मिलित थे। शाम तक बमुश्किल एक सौ पचास अभ्यासी आयोजन स्थल पर शेष रह गये थे। मालिक ने क्यूबेक की मार्शेली गेडोरी रॉय को अंतरिम अनुमति प्रदान की।

बसन्त में अभ्यासियों की उपस्थिति का कुल आंकड़ा सोलह सौ एक अभ्यासियों का रहा। इसके अलावा एक सौ पचास गैर अभ्यासी तथा सौ कर्मचारियों इत्यादि को मिलाकर कुल उन्नीस सौ व्यक्ति समारोह में उपस्थित हुये थे। अभी तक की सर्वाधिक संख्या बसन्त समारोह की कुल प्राप्ति लगभग अस्सी हजार रुपये की रही। शाम 5.00 बजे मालिक अपने घर की ओर रवाना हो गये।

14 फरवरी 1978 - मंगलवार

मैंने मेजर सौदागर सिंह को एक व्यक्तिगत सिटिंग दी वह अपनी धीमी प्रगति के कारण अत्यन्त चितिंत थे। उनका अनुमान था कि उनकी प्रगति नहीं हो रही है ।

सुबह 9.30 बजे हम मालिक के घर की ओर रवाना हुये। हमारे बहुत कम साथी शेष रह गये थे क्योंकि एस.के.सुन्दरम, उनकी पत्नी तथा मद्रास के बहुत से अभ्यासी कल रात में ही रवाना हो चुके थे। मालिक ने

हम सभी को सुबह 10.30 बजे एक सिटिंग दी जो बहुत अच्छी रही। दोपहर 12.00 बजे हम आश्रम वापस लौट आये ।

शाम 4.00 बजे मालिक आश्रम पधारे तथा तुरन्त ही वहाँ उपस्थित सभी अभ्यासियों को एकत्रित होने का आदेश दिया तथा उन्हें एक सिटिंग दी। यह अत्यन्त उम्दा सिटिंग रही। इसमें मुझे अत्यन्त गहरायी का अनुभव हुआ तथा मैं पूर्णरूपेण समाधि की अवस्था में चला गया था। बावजूद इसके मुझे मक्खियों के काटने का आभास हो रहा था । मालिक के सिटिंग समाप्त करने के उपरान्त भी आधा घंटे तक इसका प्रभाव बना रहा।

स्विट्जरलेंड की स्टेला जेक्वेरोड डेविस, रूथ के साथ अचानक रात्रि 9.00 बजे आश्रम पहुँची। स्टेला को देखकर हमें अत्यन्त प्रसन्नता हुयी लेकिन मैंने स्टेला से पूछा कि वह कुछ दिन पूर्व क्यों नहीं आयी? ताकि बसंत के उत्सव में उपस्थित हो सके। वह बोलीं, "चारी मैं जानबूझकर बसंत कार्यक्रम में नहीं आयी, क्योंकि कार्यक्रम के दौरान यहाँ अत्यधिक भीड़ भाड़ रहती है तथा तुम्हें तो मालूम है कि मुझसे भीड़ बरदाश्त नहीं होती।" वह आश्रम काम्पलेक्स की ओर देखते हुये बोलीं, "यह अत्यन्त खेदपूर्ण है कि हम मालिक के आवास के वातावरण की पवित्रता तथा सहजता को बरकरार नहीं रख सके"। वह अपने कक्ष में गयीं तथा मेरे लिये एक पेकेट लेकर आयीं एवं मुझे देते हुए बोलीं, "चारी मेरी ओर से तुम्हारे लिये यह सप्रेम भेंट है" उम्मीद है कि तुम्हें पसंद आयेगी। मैंने देखा यह माई मास्टर के फ्रेंच अनुवाद की एक प्रति थी, जिसका शीर्षक "मौन मैतरे" रखा गया था तथा इसका अनुवाद उनके स्वयं के द्वारा किया गया था। यह स्विट्जरलैण्ड में प्रकाशित की गयी थी। इस प्रकार से माई मास्टर अब जर्मन तथा फ्रेंच दो विदेशी भाषाओं में उपलब्ध थी।

15 फरवरी 1978 – बुधवार

सुबह 9.10 बजे हम मालिक के निवास की ओर रवाना हुये। वहाँ पहुँचने के पश्चात् मैंने मिशन के लेखा परीक्षक पर इस बात के लिये दबाव डाला कि वह मद्रास केन्द्र के लेखे पूर्ण कर मुझे एक प्रमाण पत्र जारी

करें। वह गप्पें हाँकने में अत्यंत माहिर हैं किन्तु काम के मामले में कमजोर हैं। यद्यपि वह इतने शातिर हैं कि लोगों को यह सोचने के लिये मजबूर कर देते हैं कि उन पर काम का भारी बोझ है, जबकि मैंने उन्हें कभी भी एक जगह पर एक घंटे से अधिक बैठे हुये नहीं देखा, लेकिन उनमें यह खासियत है कि वह अपने स्टॉफ को यदि आवश्यक हो तो सारी रात बैठने पर मजबूर कर सकते हैं।

सुबह 10.30 बजे मालिक ने हम सभी को एक सिटिंग दी। सिटिंग बहुत अच्छी रही तथा पच्चीस मिनट चली। सिटिंग के पश्चात् सभी आश्रम की ओर रवाना हो गये। लेकिन मालिक ने मुझे तथा सुलोचना को वहीं रोक लिया तथा एक दिन उनके साथ उनके निवास पर ही व्यतीत करने का निर्देश दिया। विलक्षण तरह से उन्होंने कहा, "आप सब लोग कल जा रहे हैं न ?" मैंने उन्हें बताया कि हमें आज रात को दिल्ली के लिये रवाना होना था।

मेरे पिता जी के बारे में बात करते हुये, मालिक ने कहा, "वह स्थिति ऐसी है कि मैं नहीं चाहता कि राजगोपालाचारी किसी को भी प्राणाहुति दें। उन्होंने अपने आपको बरबाद कर लिया है, लेकिन यह सब मैं उन्हें कैसे कह सकता हूँ? मैं अब उन्हें मिशन के कार्य से भ्रमण करने की अनुमति नहीं दूँगा। लेकिन यदि वह सौ–दौ सौ मील के दायरे में स्थित केन्द्रों पर जाते भी हैं, तो मैं उन्हें कैस रोक सकता हूँ? यह अत्यंत खेद का विषय है। मुझे हैंस गैंगलोफ से भी कहना पड़ेगा कि उनकी (राजगोपालाचारी) शल्य क्रिया यहीं भारत वर्ष में ही की जा सकती है। मुझे समझ नहीं आ रहा है कि राजगोपालाचारी जर्मनी जाने के लिये इतने उतावले क्यों हैं ? मैं उन्हें वहाँ जाने की अनुमति कदापि नहीं दूँगा, लेकिन तुम्हें उनसे कुछ भी कहने की आवश्यकता नहीं है। वह तुम्हारे ऊपर भड़क जायेंगे।"

दोपहर 2.00 बजे मालिक ने मुझे आधे घंटे की एक व्यक्तिगत सिटिंग दी। सिटिंग बहुत अच्छी रही तथा मैं पूर्ण समाधि की अवस्था में चला गया था। मालिक ने कहा, "बस कीजिये," लेकिन मेरी स्थिति

यथावत बनी रही यद्यपि मुझे मालिक का आदेश सुनायी पड़ा था, तथापि मैं अपनी स्थिति से वापस आने में अपने आपको असमर्थ पा रहा था। उन्होंने मुझे पुनः आदेश दिया, फिर भी मेरी स्थिति यथावत बनी रही लगभग आधे घंटे पश्चात् मालिक ने थोड़ी ऊँची आवाज में कहा, "यह काफी है। बस कीजिये। " मैं शायद सामान्य स्थिति में वापस आ सका।

शाम 4.00 बजे हम मालिक के साथ आश्रम की ओर रवाना हुये। शाम 5.00 बजे मालिक ने आश्रम में उपस्थित सभी अभ्यासियों को सामूहिक सिटिंग दी। शाम 6.00 बजे मालिक घर की ओर रवाना हो गये। मालिक के जाने के पश्चात् स्टेला तथा मैंने पोरे के सम्बन्ध में लम्बी चर्चा की। वह उनके अभद्र व्यवहार तथा निरंतर तिरस्कार किये जाने के कारण अत्यंत व्यथित थीं। इसके पीछे एक मात्र यह कारण था कि वह फ्रेंच नहीं हैं। उन्होंने स्टेला के फ्रेंच अनुवाद की भी बेहद आलोचना की थी। पोरे की ज्यादतियों के बारे में जानकारी देते–देते वह रोने लगीं।

एम. मुरूगेसन, वाई. वी. एस. लक्ष्मी, आर. स्वामीनाथन तथा मैं रात्रि 11.30 बजे काशी विश्वनाथ एक्सप्रेस से शाहजहाँपुर से नई दिल्ली की ओर रवाना हुये।

16 फरवरी 1978 – गुरुवार (दिल्ली)

सुबह 6.35 बजे हमारी ट्रेन दिल्ली पहुँची । श्री आर.कृष्णास्वामी तथा वी.जी.जोशी ने स्टेशन पर हमारी अगवानी की । स्वामीनाथन, लक्ष्मी, मुरूगेसन तथा सुलोचना स्टेशन से टैक्सी में सवार होकर सफदरजंग एन्क्लेव में श्री स्वामीनाथन के भतीजे के यहाँ चले गये, (श्री बालचन्द्रा, बी–2 सफदरजंग एनक्लेव) तथा मैं, कृष्णास्वामी एवं जोशी के साथ जोशी के निवास पर चला गया। घर पहुँचने के पश्चात् मैंने हाथ मुँह धोया तथा एक कप कॉफी पीने के पश्चात् मैंने, कृष्णा स्वामी, जोशी, जोशी के पुत्र एवं पुत्री, विलियम वेकॉट तथा डायना वेकॉट को एक सामूहिक सिटिंग दी। जोशी के एन. 1/1 आर. के. पुरम स्थित निवास से हम सफदरजंग की ओर रवाना हुये जहाँ हमारे बाकी साथी ठहरे हुये थे।

हम चारों व्यक्ति शाम 7.30 बजे ग्रांड ट्रंक एक्सप्रेस से मद्रास की

ओर रवाना हुये।

17 फरवरी 1978 – शुक्रवार

यात्रा के दौरान मैं स्वस्थ महसूस नहीं कर रहा था। मुझे उल्टी तथा सरदर्द की शिकायत थी । सारा दिन मैंने भोजन भी नहीं किया ।

18 फरवरी 1978 – शनिवार

सुबह 8.15 बजे हम मद्रास पहुँच गये। वाई. वी. एस. लक्ष्मी के माता पिता उनकी अगवानी के लिये स्टेशन पर उपस्थित थे। वह उनके साथ अपने घर की ओर रवाना हो गयीं। कृष्णा भी हमारी अगवानी के लिये मौजूद था और इस प्रकार हम बसंत उत्सव के उपरान्त अपने घर वापस पहुँच गये।

मैं आज अपने कार्य पर उपस्थित हो गया ।

21 फरवरी 1978 – मंगलवार

सुबह 7.00 बजे एस.राघवेन्द्रन, जे.विश्वनाथन, टी.श्रीनिवासन तथा एक अन्य अभ्यासी को सिटिंग दी ।

कोदण्ड, इन्दिरा तथा सुदर्शन आज सुबह 9.30 बजे ग्रांड ट्रंक एक्सप्रेस से दिल्ली से मद्रास पहुँचे। बसंत के उत्सव के पश्चात् 13 फरवरी को शाहजहाँपुर से रवाना होकर वे लखनऊ गये थे। स्नानादि करने के पश्चात् उन्होंने भोजन किया तथा सुबह 11.50 बजे बैंगलोर एक्सप्रेस से वापस बैंगलोर की ओर रवाना हो गये। ग्रांड ट्रंक एक्सप्रेस में बैंगलोर के यात्रियों के लिये एक कोच रहता है जो इस ट्रेन से जुड़ता है।

26 फरवरी 1978 – रविवार

तड़के सुबह का स्वप्न :– मैंने देखा कि मैं किसी उपनगरीय ट्रेन में यात्रा कर रहा हूँ। ऐसा प्रतीत हो रहा है कि यात्रा लम्बी है। अंत में मैं एक स्टेशन पर उतर जाता हूँ तथा अगली ट्रेन का इन्तजार करता हूँ जिसमें मालिक यात्रा कर रहे हैं। एक ट्रेन आकर रुकती है तथा मेरी नजर जी. रामकृष्णन पर पड़ती है जो पूर्व में अभ्यासी रह चुके थे तथा जब मैं विरुदनगर में था, वे वहाँ आई. टी. पी. सी. कम्पनी में मेरे सहकर्मी थे तथा मुख्य प्रशासकीय प्रबंधक के पद पर कार्यरत थे। उनके गले में बड़ा सा

फूलों का हार लटक रहा है। इसी के साथ स्वप्न समाप्त हो जाता है।

जीन माइकल पिक्वेमल जो फ्रांस में मिशन के सचिव के पद पर हैं, अपनी मंगेतर तथा क्यूबेक की मार्शली गेडोरी रॉय के साथ सुबह 9. 30 बजे मेरे घर पर पहुँचे। उस समय हम अपने स्वर्गीय चाचा मि. भद्रन के श्राद्ध संस्कार की शुरूआत करने जा रहे थे। शाम 4.00 बजे मैंने उन्हें सिटिंग दी, तत्पश्चात् शाम 5.00 बजे वह वहाँ से रवाना हो गये। रात्रि 9. 00 बजे मैंने कोदण्ड तथा इन्दिरा को एक सिटिंग दी, जो चित्या के श्राद्ध संस्कार में सम्मिलित होने के लिये यहाँ आये हुए हैं।

"वॉयस रीयल" भाग दो के अध्याय 7 एवं 9 में सुधार कर इसकी छपायी का आदेश दिया।

27 फरवरी 1978 – सोमवार

जीन माइकल पिक्वेमल उनकी मंगेतर तथा मार्शेली दोपहर 2.00 बजे हमारे घर पर पधारे तथा कुछ खरीददारी इत्यादि के लिये कृष्णा को अपने साथ बाजार ले गये। शाम 4.00 बजे मैंने उन्हें सिटिंग दी। जीन माइकल की मंगेतर आज शाम की उड़ान से दिल्ली के लिये रवाना हो गयीं, जहाँ से वह पेरिस के लिये रवाना हो जायेंगी। जीन माइकल तथा मार्शेली कल मदुरई के लिये रवाना होंगे।

28 फरवरी 1978 – मंगलवार

तड़के सुबह का स्वप्न :– सुलोचना तथा मैं किसी स्थान पर एक इमारत के प्रथम तल पर मालिक के साथ हैं। मालिक फर्श पर, गद्दी पर बैठे हुये हैं तथा उन्होंने अपनी कमर तकिये पर टिका रखी है। हम दोनों वहाँ से रवाना होने के लिये उठते हैं। हमारे साथ–साथ मालिक भी उठने का प्रयास करते हैं लेकिन मैं उनसे बैठे रहने के लिये आग्रह करता हूँ। हम उनसे अनुमति लेकर वहाँ से रवाना हो जाते हैं तथा हॉल से बाहर आकर प्रथम तल की सीढ़ियों के पास पहुँचते हैं। वहाँ मेरी नजर सत्यपाल पर पड़ती है। सीढ़ियाँ उतरने के पश्चात् हम किसी स्थान की ओर रवाना हो जाते हैं तथा यहाँ पहुँचने के पश्चात् हम घर जाने के लिये अपनी अटैची इत्यादि पैक कर कार से घर जाने की तैयारी करते है। स्वप्न

समाप्त हो जाता है।

सुबह 7.00 बजे– आर.स्वामीनाथन, एस.रघुवेन्द्रन तथा तंजावुर के मुथ्थुस्वामी को सामूहिक सिटिंग दी ।

सुबह 7.30 बजे मेरे भाई की पत्नी इन्दिरा राजगोपाल को एक व्यक्तिगत सिटिंग दी तथा उसकी यात्रा आरम्भ करवायी ।

1 मार्च 1978– बुधवार

तड़के सुबह का स्वप्न :– मैं एक विशाल मैदान के सम्मुख खड़ा हूँ जिसका क्षेत्रफल लगभग 20–30 एकड़ अथवा इससे अधिक का भी हो सकता है। इस मैदान पर तीव्र गति से विकास का कार्य प्रगति पर है। चारों ओर मिट्टी के बड़े–बड़े ढेर लगे हुये हैं तथा समतलीकरण का कार्य प्रगति पर है एवं सड़क निर्माण का कार्य चल रहा है। मेरे ठीक सामने की ओर एक गहरी घाटी है जो मेरे बाँयी ओर से घूमकर मेरे सामने की ओर जा रही है। इसके ऊपर बने पैदल पुल के माध्यम से मैं घाटी को पार करता हूँ।

अगले दृश्य में मैं देखता हूँ कि निर्माण कार्य तीव्र गति से प्रगति पर है। ऐसा प्रतीत हो रहा है कि निश्चित समय सीमा में कार्य पूर्ण कराने के मंतव्य से कार्य का प्रतिपादन किया जा रहा है। मैं घाटी के ऊपर बने पुल को पार करता हूँ। मेरे सामने की ओर से सूर्य उदय हो रहा है, मैं पूर्व की ओर मुँह करके खड़ा हूँ । घाटी के घुमाव की बाहरी दीवार जो मेरे बाँयी ओर है, सूर्य की रोशनी में तेजी से चमक रही है तथा सूर्य की रोशनी में घाटी की चट्टानों पर विभिन्न रंगों की आकृतियाँ उभर रही हैं। तभी मैं देखता हूँ कि कोई अपना हाथ ऊपर नीचे लहरा रहा है, उसी के साथ–साथ घाटी में बहने वाले जल का स्तर ऊपर नीचे हो रहा है। घाटी पार करने के पश्चात् मैं निर्माणाधीन सड़क के किनारे किनारे पैदल चलता हुआ आगे बढ़ता हूँ तथा एक नाके पर पहुँचता हूँ। यहाँ पर मिशन का एक स्वयंसेवक मुझे रोक लेता है तथा मुझसे कहता है कि इस मार्ग से कोई नहीं जा सकता। मैं उसे जानकारी देता हूँ कि मैं मिशन का महासचिव हूँ, उसके समीप खड़ा हुआ एक अन्य स्वयं सेवक मेरी इस बात की पुष्टि

करता है तथा वह स्वयं सेवक जिसने मुझे रोक लिया था, जाने की अनुमति दे देता है। तत्पश्चात् मैं स्वयं को एक विशाल इमारत में पाता हूँ। इसके पश्चात् सब गड्ड–मड्ड हो जाता है तथा इसके आगे क्या घटित होता है मुझे कुछ भी याद नहीं रहता।

2 मार्च 1978– गुरुवार

सुबह 7.00 बजे – दो अभ्यासियों को सिटिंग दी ।

कलकत्ता केन्द्र के प्रशिक्षक रमनलाल भट्टर, दो अन्य अभ्यासियों के साथ शाम 4.30 बजे मेरे घर पधारे। मैंने उन्हें शाम 5.15 बजे से शाम 5.45 बजे तक सिटिंग दी।

3 मार्च 1978– शुक्रवार

तड़के सुबह का स्वप्न :– मैं कहीं से पैदल चलते हुये, शायद अपने घर की ओर जा रहा हूँ तथा मैं अपना रास्ता भटक गया हूँ। चलते–चलते मैं एक चौड़े खुले मैदान में एक टीले पर पहुँचता हूँ जिसकी ऊँचाई अधिक नहीं है। मेरे दाँयी तरफ नीचे की ओर एक विशाल बंजर भूमि का मैदान है जिसमें आड़ी तिरछी खन्दकें नजर आ रही हैं। जहाँ मैं खड़ा हुआ हूँ, वह क्षेत्र जंगल के समान दिखायी पड़ रहा है, आसपास कोई सड़क इत्यादि दिखायी नहीं पड़ रही है । सूरज क्षितिज में काफी नीचे की ओर चला गया है तथा मुझे भय है कि शीघ्र ही अंधेरा हो जायेगा। तत्क्षण ही मेरी नजर एक कार पर पड़ती है जो बंजर भूमि के दाँयी ओर से दूसरी ओर जा रही है । मैं जोखिम उठाने का निर्णय लेता हूँ तथा बंजर भूमि की ओर नीचे की तरफ उतरता हूँ तथा उस मैदान के बीच से होते हुये उस स्थान तक पहुँचने का प्रयास करता हूँ जहाँ मैंने कार को जाते हुये देखा था। इस मार्ग पर मुझे तिरछा उतरते हुये नीचे की ओर जाना है जिसके लिये अपने आप को तैयार करता हूँ। तभी वहाँ कुछ लोगों को कार्य करते देख मैं आश्चर्य में पड़ जाता हूँ। वे एक चट्टान की कटाई कर इसे बक्से के आकार का बना रहे हैं।

अगले दृश्य में अंधेरा छा चुका है तथा मैं एक घर के बरामदे में खड़ा हुआ हूँ जिसकी छत की ऊँचाई काफी कम है। कोई व्यक्ति यह

जानकारी देता है कि देर रात्रि में एक ट्रेन उपलब्ध रहेगी। तभी मेरी नजर एक असहाय व्यक्ति पर पड़ती है, जो ट्रेन पकड़ने के लिये उत्सुक है। मैं एक पतली गली से पैदल चलते हुये रेलवे स्टेशन का पता लगाने का प्रयास करता हूँ। स्वप्न समाप्त हो जाता है।

4 मार्च 1978 – शनिवार

सुबह 4.20 बजे से 5.50 बजे तक राजापलायम, विरुदनगर, कोयम्बटूर, तिरुपुर तथा मदुरई के अभ्यासियों को प्राणाहुति दी।

5 मार्च 1978 – रविवार

हॉलैण्ड के एक अभ्यासी आन्द्रे रोमबॉउट गुलबर्गा से बॉम्बे मद्रास मेल द्वारा सुबह 6.00 बजे मद्रास पहुँचे। उनका हमारे यहाँ सात दिन का प्रवास रहेगा।

6 मार्च 1978 – सोमवार

अपराह्न 2.00 बजे से 4.00 बजे तक सलेम केन्द्र के अभ्यासियों को प्राणाहुति दी।

सायं 7 बजे आन्द्रे रोमबॉउट को व्यक्तिगत सिटिंग दी। उसने बताया कि सिटिंग के दौरान आधे घण्टे तक पूरे समय बहुत पसीना निकलता रहा, साथ ही यह भी बताया कि उसे कुछ भी अनुभव नहीं हुआ। किन्तु सिटिंग के बाद उसे अनुभव हुआ कि भीतर कुछ बदल रहा है। किन्तु वह क्या था यह बताने में वह असमर्थ था।

7 मार्च 1978 – मंगलवार

सुबह 7.00 बजे– एस.राघवेन्द्रन, आन्द्रे रोमबॉउट तथा आर. स्वामीनाथन को आधे घंटे की सिटिंग दी ।

दोपहर 2.00 बजे से 3.45 बजे तक सेलम केन्द्र के अभ्यासियों को सेलम में प्राणाहुति दी ।

शाम 6.00 बजे से 6.35 बजे तक एक सामूहिक सत्संग कराया, जिसमें रमनलाल भट्टर तथा उनकी पत्नी, श्री बद्री प्रसाद मिमानी, श्री. रामबाबू की पत्नी एवं पुत्री, ललिता कुमारी, एस. सदाशिवम, एस. के. मोहन, के. महालिंगम तथा आंद्रे रोमबॉउट उपस्थित थे ।

भट्टर ने रात्रि भोज हमारे साथ ही किया ।

8 मार्च 1978 – बुधवार

"वॉयस रीयल" भाग – दो के अध्याय 11 व 12 की प्रथम संशोधित प्रति में सुधार किया। रात्रि 8.00 बजे पंड्यन एक्सप्रेस से आन्द्रे रोमबॉउट के साथ मदुरई की ओर रवाना हुआ।

9 मार्च 1978 – गुरुवार (मदुरई)

सारा दिन आई. टी. पी. टी. विरुदनगर में व्यतीत किया। शाम 7.00 बजे मदुरई में वालमजी मेन्शन में सत्संग कराया। उपस्थिति अच्छी रही। "वॉयस रीयल" – भाग दो के अध्याय 11 व 12 की अंतिम तथा अध्याय 13 की प्रथम संशोधित प्रति में संशोधन किया तथा इसे वी. के. सुन्दरम के साथ मद्रास भेज दिया ।

10 मार्च 1978 - शुक्रवार

सुबह 7.00 बजे– वालमजी में आन्द्रे रोमबॉउट को एक व्यक्तिगत सिटिंग दी। सारा दिन विरुदनगर में आई. टी. पी. टी. के कार्य में व्यस्त रहा।

शाम 7.00 बजे– तालाकुलम में पलानीचामी के निवास पर सामूहिक सत्संग कराया जिसमें तीस से अधिक संख्या में अभ्यासी उपस्थित थे। सिटिंग अच्छी रही।

11 मार्च 1978– शनिवार

सुबह 6.30 बजे टी.वी.एस. के एस. सुन्दरराजन को व्यक्तिगत सिटिंग दी। दोपहर 3.30 बजे श्री वी. एस. नरसिंहमन जो स्टेट बैंक ऑफ इंडिया अम्बासुन्दरम में कार्यरत हैं, वालमजी मेन्शन पधारे। मैंने उनसे लम्बी चर्चा की। वह ऐसा प्रदर्शित कर रहे थे कि वह अत्यन्त प्रसन्न हैं लेकिन मुझे यह आभास हो गया था कि वह सहज मार्ग के प्रति अपनी पत्नी के रवैये को लेकर अत्यन्त व्यथित थे तथा उन्हें भय था कि अपनी पत्नी के इस रवैये के कारण कहीं वह अपना मानसिक संतुलन न खो बैठे। शाम 6.00 बजे वह वालमजी से रवाना हो गये।

शाम 5.00 बजे – सामूहिक सत्संग कराया। सिटिंग चालीस मिनट चली तथा अच्छी रही। प्राणाहुति अत्यन्त गहरी थी। सिटिंग के

दौरान अधिकांश समय मैं बेसुध रहा।

आंद्रे रोमबॉउट तथा मैं शाम 7.30 बजे पंड्यन एक्सप्रेस से मदुरई से मद्रास की ओर रवाना हुये।

12 मार्च 1978 – रविवार

निर्धारित समय से चालीस मिनट देरी से सुबह 6.25 बजे हम मद्रास में माम्बलम पहुँचे।

सुबह 7.30 बजे सामूहिक सत्संग कराया।

तत्पश्चात् हम सभी वी. रामबाबू की पुत्री सौ. ललिता कुमारी के विवाह समारोह में सम्मिलित होने के लिये बालाजी कल्याण मण्डप पहुँचे। लड़की के दोनों सगे चाचा, विजयवाड़ा के डॉ. वी. पार्थसारथी तथा तिरुपति के डॉ. वी. पांडुरंगाराव जो मिशन के प्रशिक्षक हैं, भी विवाह समारोह में उपस्थित थे।

13 मार्च 1978 – सोमवार

सुबह 7.10 बजे आन्द्रे रोमबॉउट तमिलनाडु एक्सप्रेस से दिल्ली की ओर रवाना हो गये जहाँ से वह शाहजहाँपुर जायेंगे।

14 मार्च 1978 – मंगलवार

शाम 7.00 बजे सुलोचना तथा एस.के.मोहन को सिटिंग दी ।

"वॉयस रीयल"– भाग दो के बारह अध्याय की छपायी का कार्य पूर्ण हो चुका है। अध्याय तेरह में संशोधन किया तथा अध्याय चौदह का कार्य पूर्ण किया। ज्ञानोदय प्रेस से मुख पृष्ठ प्राप्त कर जी.एस. प्रेस के सुपर्द किया।

15 मार्च 1978 – बुधवार

दोपहर 2.30 से 3.30 बजे – हॉलैण्ड की एनी मेरी वेन स्टीवन का प्रकरण (उसकी अनुपस्थिति में) लिया ताकि उसे अंतरिम अनुमति के लिये तैयार किया जा सके।

अप्पा को हैंस गैंगलोफ का दिल्ली से लिखा हुआ पत्र प्राप्त हुआ। दिल्ली आने से पूर्व वह दस दिनों के लिये शाहजहाँपुर में मालिक के साथ था। पत्र में उसने लिखा था कि मालिक ने मोतियाबिंद के ऑपरेशन के

लिये अप्पा को पश्चिमी जर्मनी जाने के लिये अनुमति देने से इंकार कर दिया है। हैंस ने लिखा, "मालिक का कहना है कि यह ऑपरेशन भारत में भी आसानी से हो सकता है। यदि वह जर्मनी जाते हैं तो उन्हें तथा तुम्हें दोनों को परेशानी उठानी पड़ सकती है। मुझमें क्षमता है तथा मैं यहाँ उसकी अच्छी तरह से देखभाल कर सकता हूँ।"

निश्चित ही अप्पा इस बात को लेकर अत्यन्त दुःखी थे। उन्हें यह बात अत्यन्त कचोट रही थी तथा मुझे ऐसा प्रतीत हो रहा था कि वे अकेले में अपने कमरे में बहुत देर तक रोते रहे थे । बेचारे इतनी तकलीफ झेलते हैं। वास्तव में उन्होंने जर्मनी जाने के लिये पहले से अपना मन बना लिया था तथा यह लगभग तय था कि अपने ऑपरेशन के लिये वे जर्मनी जा रहे हैं। लेकिन अब उनकी सारी उम्मीदों पर पानी फिर गया था जिसके लिये वे हैंस को भी दोषी ठहरा रहे थे। उनका कहना था कि आखिर हैंस को इस विषय में अनुमति के लिये मालिक के पास जाने की क्या आवश्यकता थी। मुझे अप्पा से सहनुभूति थी ।

16 मार्च 1978 – गुरुवार

सुबह 3.00 बजे से 3.30 बजे तक एमस्टरडम की एनी मेरी वेन स्टीवन का प्रकरण (उसकी अनुपस्थिति) में लिया, उसकी अच्छी तरह से सफाई की तथा उसकी यात्रा प्रारम्भ करवायी। यह सारी तैयारी उसे अंतरिम अनुमति प्रदान करने के मद्देनजर की गयी।

सुबह 4.00 बजे से 5.00 बजे तक जुडिथ एन पोलस्टन मेकिनी जो कनाडा में हैं, को प्राणाहुति दी। उन्होंने लिखा था कि उनकी उनके पति नील को लेकर कुछ समस्या है जिसके कारण उन्हें ध्यान करने में दिक्कतें पेश आ रही हैं तथा इस कारण से वह विचलित महसूस करती हैं।

स्वप्न :– आर. स्वामीनाथन तथा मैं एक स्टेशन पर पठानकोट के लिये ट्रेन का इन्तजार कर रहे हैं। बहुत सारी ट्रेनें आयीं और चली गयीं। इसके पश्चात् एक ट्रेन और आयी जिसके बारे में हमें जानकारी दी गयी कि हमें यही ट्रेन पकड़नी है। हमारे ट्रेन में चढ़ने से पूर्व ही ट्रेन रफ्तार पकड़ लेती है। मैं दौड़ कर ट्रेन में चढ़ जाता हूँ तथा प्रथम श्रेणी के

शयनयान में प्रवेश करता हूँ, लेकिन देखता हूँ कि इस यान में मेरे लिये कोई सीट उपलब्ध नहीं है । मैं चलती ट्रेन से कूद जाता हूँ, ट्रेन गति पकड़ चुकी होती है। तभी मेरी नजर ट्रेन के आखीर में लगे प्रथम श्रेणी के शयनयान पर पड़ती है। मैं बेतहाशा भागते हुये किसी तरह कूद कर ट्रेन में चढ़ जाता हूँ। तब तक ट्रेन गति पकड़ चुकी होती है। डिब्बे में किसी व्यक्ति की ओर देखकर मैं उससे पूछता हूँ कि क्या हमारे लिये जगह उपलब्ध है? वह कहता है, "हाँ मेरे पास जगह उपलब्ध है," और मैं हम सबको एक होटल में पाता हूँ न कि ट्रेन में। स्वप्न समाप्त हो जाता है।

17 मार्च 1978 – शुक्रवार

सुबह 5.00 बजे से 5.30 बजे तक ऐनी मेरी वेन स्टीवन पर कार्य प्रारम्भ कर उसकी अच्छी तरह से सफाई की तथा उसकी यात्रा को क्रियाशीलता प्रदान की। रात्रि 9.15 से 9.30 बजे तक पुनः उसके प्रकरण को लेकर उस पर कार्य किया ।

18 मार्च 1978– शनिवार

सुबह 6.15 से 6.30 बजे वेन स्टीवन को (उसकी अनुपस्थिति में) अंतिम सिटिंग दी तथा उस पर कार्य पूर्ण कर मालिक की ओर से उसे अनुमति प्रदान की।

19 मार्च 1978 – रविवार

तड़के सुबह का स्वप्न :– ऐसा प्रतीत हो रहा है कि मैं किसी पर्वत पर चढ़ रहा हूँ। सड़क निर्माण का कार्य प्रगति पर है, लेकिन अभी कच्ची सड़कें बनी हैं। आई. टी. पी. टी. के टी. जकारिया भी मेरे साथ हैं तथा वह सड़क के किनारे–किनारे चल रहे हैं। मैं उन्हें किनारे पर न चलने के लिये सचेत करता हूँ, क्योंकि वहाँ लम्बी दरारें हैं तथा सड़क का किनारा कभी भी ध्वस्त हो सकता है जबकि मैं भी जिस स्थान पर पैदल चल रहा हूँ, सड़क का वह हिस्सा भी अत्यन्त मुलायम है तथा मेरे पैर उसमें अन्दर तक धँस रहे हैं। मेरे विचार से अब मैं वापस लौट रहा हूँ, तभी मैं अपने आप को एक सुरंग के मुहाने पर पाता हूँ जिसमें मेरे सामने की ओर तिरछा चढ़ाव है। मैं सुरंग में प्रवेश करता हूँ तथा चढ़ावदार सड़क पर चलते हुये

निरन्तर आगे बढ़ता रहता हूँ। सुरंग तेज रोशनी में जगमगा रही है। काफी दूर जाने के पश्चात् मुझे ऐसा महसूस होता है कि मैं सुरंग के आखिरी छोर के समीप ही हूँ। तभी मैं देखता हूँ कि सुरंग या तो किसी चट्टान से अथवा किसी ठोस लोहे के चद्दर के द्वारा बंद है तथा धुँधला सा दिखाई पड़ रहा है कि यहाँ एक तरफ से सड़क जा रही है। इसी क्षण मुझे यह आभास होता है कि मैं सुरंग में न होकर किसी रेलवे पुल के अन्दर हूँ जो चारों ओर से बन्द है अथवा इसी प्रकार से ही कुछ है। समाप्त।

सुबह 5.10 से 5.45 तक – मेरी पत्नी सुलोचना तथा आर. रामचन्द्र रेड्डी को प्राणाहुति दी। तत्पश्चात् मैंने बैंगलोर में एस. के. सुन्दरम के घर की सफाई की ताकि मालिक की 27 अप्रैल 1978 की यात्रा के मद्देनजर इसे तैयार किया जा सके ।

20 मार्च 1978 – सोमवार

तड़के सुबह का स्वप्न :– मैं किसी के निवास पर हूँ तथा मालिक भी वहीं हैं। हमेशा की तरह भीड़ भाड़ का वातावरण है । ऐसा प्रतीत हो रहा है कि यह सूर्यास्त के पूर्व का अथवा देर शाम का समय है, क्योंकि लाइट इत्यादि जल चुकी हैं। एक अन्य कमरे से मैं मालिक की ओर देखता हूँ। मुझे ऐसा प्रतीत होता है कि मालिक शौचालय जाना चाहते हैं, मैं तोलिया उठाता हूँ तथा गुसलखाने में जाकर लाइट जला देता हूँ। लेकिन मालिक नहीं आते हैं। तभी मुझे मालूम पड़ता है कि कोई अन्य व्यक्ति मालिक को घर के किसी अन्य गुसलखाने की ओर ले गया है। मुझे ऐसा महसूस होता है जैसे कि वे मुझे मालिक से दूर करने का प्रयास कर रहे हैं। समाप्त।

मालिक तथा मेरे अप्रैल 77 में मलेशिया भ्रमण से लौटने के पश्चात् से चि. उमेश ने मुझसे एक मर्तबा भी बात नहीं की है जबकि मलेशिया से लौटने के पश्चात् लगभग एक वर्ष का समय व्यतीत हो चुका है। कार्यालय में भी वह मुझसे दूरी बनाये रखते हैं तथा मुझे सामने पाकर कन्नी काट लेते हैं । एक मर्तबा हम दोनों का आमना सामना होने पर उन्होंने मुझसे मुँह फेर लिया। उस समय मेरे साथ अन्य अधिकारी भी थे, जो उनसे तथा

हम दोनों के बीच क्या रिश्ता है, इससे भली भाँति परिचित थे। इसके बावजूद भी उन्होंने शिष्टाचारवश मेरा अभिवादन करना भी उचित नहीं समझा। फरवरी में बसंत उत्सव पर जब मैं शाहजहाँपुर गया था तब मैंने मालिक को अपनी इच्छा के विपरीत, उमेश के इस बर्ताव के सम्बन्ध में अवगत कराया था। मालिक बोले, "मुझे समझ में नहीं आता मेरे पुत्रों को क्या हो गया है। प्रकाश भी बहुत अहंकारी हो गया है।" मेरे साथ यह समस्या थी तथा मैं सोच रहा था कि उस वक्त मैं क्या करूँगा, जब मालिक अपने बैंगलोर भ्रमण के पश्चात् 2 मई 1979 को मद्रास पहुँचेंगे तथा यहाँ पर पाँच दिवस के लिये प्रवास करेंगे। इस दौरान वे निश्चित रूप से उमेश के यहाँ रुकेंगे तथा उमेश का बर्ताव यदि इसी प्रकार का रहा तो मैं मालिक से मिलने उमेश के घर किस प्रकार जा सकूँगा? सबसे विचित्र बात यह है कि जहाँ तक मुझे याद पड़ता है, मैंने ऐसा कुछ भी नहीं किया है जो हमारे बीच दूरी का कारण बने, वास्तव में हमारी कभी कभार ही मुलाकात होती थी। यह सारा घटनाक्रम मेरे लिये उलझन का कारण है तथा साथ ही साथ मेरे दुःख का भी। रात में मैंने मालिक से स्थिति को सामान्य करने के लिये प्रार्थना की, तत्पश्चात् उमेश पर कार्य किया तथा उसके हृदय की सफाई की। अब देखना यह है कि इन प्रयासों का क्या परिणाम निकलता है।

21 मार्च 1978 – मंगलवार

पिछले सम्पूर्ण सप्ताह मैं मियादी बुखार से पीड़ित रहा। सुलोचना तथा कृष्णा भी अस्वस्थ थे। कल से मैं कुछ सुधार महसूस कर रहा हूँ। कल मैं कार्यालय भी गया था लेकिन आज पुनः अस्वस्थ महसूस कर रहा हूँ। छाती बन्द है, खाँसी है, साँस में रुकावट तथा गले में खराश आ रही है। ऐसा प्रतीत हो रहा है जैसे गले में गर्म धुँआ भर गया है। डॉ.सुन्दरम ने मुझे आराम करने की सलाह दी।

आर.स्वामीनाथन ने मुझे जानकारी दी कि उमेश के एक मित्र के पास 7 प्लॉट हैं तथा प्रत्येक प्लॉट का क्षेत्रफल 2400 वर्गफीट है। उनमें से पाँच प्लाट बिकाऊ हैं। उमेश, स्वामीनाथन के माध्यम से यह पता

लगाना चाह रहे थे कि क्या हम उन प्लाटों को खरीदने के इच्छुक हैं। मैंने स्वामीनाथन से कहा यदि सातों प्लाट बिकाऊ हों तो विचार किया जा सकता है। स्वामीनाथन ने कहा वह उमेश से इसके बारे में बात करेंगे।

शाम 6.30 बजे–एस.के.मोहन तथा तीन अन्य व्यक्तियों को सिटिंग दी।

22 मार्च 1978 – बुधवार

आज थोड़ा स्वस्थ महसूस कर रहा था। अतः कार्यालय चला गया। मेरे निवेदन करने पर उमेश मुझसे बात करने को राजी हो गये तथा हमारे साथ चलकर प्लॉट दिखाने के लिये मान गये। दोहपर 3.30 बजे वह मेरे घर पर पहुँचे तथा मैं, अप्पा, स्वामीनाथन तथा उमेश साथ में प्लॉट देखने के लिये रवाना हुये। यह अडियार नदी के दक्षिणी छोर पर उसी प्रकार से ठीक दक्षिण दिशा में जिस प्रकार से सीध में कौए उड़ान भरते हैं, डेढ़ मील की दूरी पर स्थित हैं। यह अलग–थलग एक अच्छा प्लॉट है। नन्दानाम से कोट्टुरपुरम तक एक पुल का निर्माण होना है, जिसके पश्चात् हमारे घर से यहाँ पैदल पहुँचने में मात्र बीस मिनट का समय लगेगा। यह प्लॉट सभी को पसन्द आया। प्लॉट देखने के पश्चात् हम सीधे उमेश के घर बसंत नगर पहुँचे। घर पहुँचकर उमेश ने भू–मालकिन श्रीमती कुट्टी रमनीय से फोन पर बात की तथा उनसे 7.12 ग्राइए प्लॉट की भूमि का सौदा 95000/– रु. में तय कर लिया। तत्पश्चात् हम घर लौट आये। घर पहुँचकर मैंने श्रीमती कुट्टी रमनीय को हमारे सौदे के सम्बन्ध से तयशुदा कीमत का उल्लेख करते हुये एक औपचारिक पत्र राजीनामे के रूप में भेजा। शर्त यह थी कि उन्हें तमिलनाडु सरकार के शहरी भूमि टैक्स वसूली विभाग से इस क्रय से सम्बन्धित समस्त औपचारिकतायें पूर्ण करके देनी होंगी।

23 मार्च 1978– गुरुवार (बैंगलोर)

सुबह 7.35 बजे, एस.के.मोहन के साथ वृंदावन एक्सप्रेस से बैंगलोर की ओर रवाना हुआ। दोपहर 1.10 बजे हम बैंगलोर के सिटी स्टेशन पहुँचे। एस.के.सुन्दरम तथा एम. मुरूगेसन ने स्टेशन पर हमारी अगवानी की। स्टेशन से हम बानशंकरी खंड–दो स्थित एस.के.सुन्दरम के निवास

पर पहुँचे जहाँ हमारे ठहरने की व्यवस्था की गयी थी।

शाम 7.00 बजे– आश्रम में सामूहिक सत्संग कराया जिसमें लगभग तीस अभ्यासी उपस्थित थे। सत्संग के पश्चात् रात्रि 9.30 बजे तक मालिक के आगामी जन्मोत्सव कार्यक्रम की व्यवस्थाओं के सम्बन्ध में चर्चा करते रहे। रात्रि 10.00 बजे हम रात्रि भोज के लिये घर वापस लौट आये। रात्रि 2.00 बजे हम विश्राम के लिये अपने शयन कक्ष में गये। मैं गले में खराश, छाती चोक, साँस में रुकावट, अस्थमा की शिकायत इत्यादि–इत्यादि की समस्या को लेकर परेशान था। मेरे पिछले भ्रमण के दौरान मुझे सुन्दरम के घर पर इन्हीं समस्याओं का सामना करना पड़ा था।

रात में अनेकों मर्तबा मैंने घर की सफाई की। मैं यह सफाई का कार्य तभी से कर रहा हूँ जबसे यह तय हुआ है कि अपने जन्मोत्सव कार्यक्रम के दौरान मालिक इसी घर में ठहरेंगे।

इससे पूर्व आज शाम के समय कोलेगल के अभ्यासियों के एक दल ने मुझसे भेंट की तथा मुझसे निवेदन किया कि कोलेगल के अभ्यासियों के लिये एक प्रशिक्षक की नियुक्ति की जाये जो माह में कम से कम एक मर्तबा कोलेगल में उपलब्ध रहे। जहाँगीरदार पूर्णतया इसके विरुद्ध थे, उनका मत था कि यदि कोलेगल के अभ्यासी अपनी प्रगति के प्रति गम्भीर हैं तथा इसमें रुचि रखते है तो उन्हें रविवारीय सत्संग के लिये बैंगलोर आना होगा। उनके लिये किसी भी प्रशिक्षक को कोलेगल भेजने की आवश्यकता नहीं है। वास्तव में जहाँगीरदार कोलेगल के अभ्यासियों के प्रति पूर्वाग्रह से ग्रस्त हैं। जब से एन.आर.नारायणा तथा चन्नपटना के नन्दजुन्दिया द्वारा उन्हें आरोपित किया गया था तभी से कोलेगल अभ्यासियों के प्रति उनके व्यवहार में इतना रूखापन आ गया है। उससे भी अधिक दुःख की बात यह है कि उनके इस बर्ताव में राघवेन्द्र राव तथा सरनाड भी उनका साथ देते हैं।

24 मार्च 1978 – शुक्रवार

सुबह 8.30 बजे जहाँगीरदार सुन्दरम के निवास पर पहुँचे तथा हमने कोलेगल केन्द्र के विषय पर चर्चा की। वह बैंगलोर केन्द्र से किसी

भी प्रशिक्षक को कोलेगल भेजे जाने के पक्ष में कतई नहीं थे। यदि मैं इस समस्या का समाधान नहीं कर पाया तो मुझे इस प्रकरण को मालिक की आगामी माह में होने वाली बैंगलोर यात्रा के दौरान उनके समक्ष प्रस्तुत करना पड़ेगा।

सुबह 9.30 बजे से 11.30 बजे तक आश्रम में जहाँगीरदार, के.आर. कुमार, बी.के.राजगोपाल, एल.के.हेगड़े, बी.डी.पई इत्यादि के साथ उत्सव की व्यवस्था इत्यादि को लेकर चर्चा में व्यस्त रहे। तत्पश्चात् घर की ओर रवाना हो गये। कोदण्ड अपने परिवार के साथ सुबह 11.40 बजे सुन्दरम के यहाँ पहुँचे। सुन्दरम के घर पर दोपहर का भोजन करने के पश्चात् सुर्दशन तथा उनका परिवार, कोदण्ड तथा उनका परिवार, मोहन तथा मैं हम सभी इन्दिरा नगर की ओर रवाना हो गये।

एक लड़की जिसका नाम ज्योति है जो अमेरिका में वर्जीनिया तट पर रह रही है, शाम 6.30 बजे कोदण्ड के यहाँ पहुँची। शाम 7.00 बजे से 7.45 बजे तक सामूहिक सिटिंग रखी गयी। सिटिंग बहुत अच्छी रही। कोदण्ड तथा ज्योति को मदहोशी का अनुभव हुआ।

रात्रि 8.00 बजे मैंने कोदण्ड के पुत्र आर. सुदर्शन को प्रथम सिटिंग दी। हम सभी ने जिसमें मुरुगेसन भी सम्मिलित थे, आज रात्रि में कोदण्ड के निवास पर विश्राम किया तथा विश्राम के लिये रात्रि 12.30 बजे अपने शयन कक्ष में गये।

25 मार्च 1978 – शनिवार

सुबह 6.15 बजे इंदिरा नगर से रवाना होकर बानशंकरी में सुन्दरम के निवास पर पहुँचे। सारा दिन घर पर ही व्यतीत किया।

शाम 4.00 बजे – मेरे भतीजे आर.सुर्दशन को द्वितीय सिटिंग दी।

कोदण्ड, इंदिरा तथा डॉ. ज्योति राव सुर्दशन के घर पहुँचे। मैंने ज्योति को एक व्यक्तिगत सिटिंग दी। वह कल अमेरिका के लिये रवाना हो रही है।

शाम 5.30 बजे जहाँगीरदार सुन्दरम के घर पर पहुँचे जहाँ से हम सभी आश्रम की ओर रवाना हो गये।

शाम 7.00 बजे–आश्रम में सामूहिक सत्संग कराया जिसमें पैंतालिस अभ्यासी उपस्थित थे। सिटिंग पैंतालिस मिनट की रही। इस दौरान प्राणाहुति अत्यंत प्रबल तथा गहरी थी। रात्रि 8.30 बजे हम घर वापस लौट आये। आज रात्रि में अन्य दिनों की अपेक्षा रात्रि 10.30 बजे जल्दी सोने के लिये चले गये।

26 मार्च 1978 – रविवार

सुबह 8.15 बजे से 9.00 बजे तक आश्रम में सामूहिक सत्संग कराया। सत्संग में गुलबर्गा से पधारे श्री बी.एम.हेबल तथा कोपेनहेगन के के.आर.श्रीनिवासन एवं उनकी पत्नी लीला भी उपस्थित थे।

सुबह 9.00 बजे से 10.30 बजे – उत्सव समिति द्वारा जन्मोत्सव समारोह की व्यवस्था को लेकर आयोजित की गयी बैठक में भाग लिया।

सुबह 11.30 बजे मैं, सुन्दरम तथा उनका परिवार, मोहन, श्री एवं श्रीमती जहाँगीरदार तथा उनके पुत्र एवं पुत्री मुरुगेसन के साथ कोदण्ड के घर की ओर रवाना हुआ। हम सभी आज कोदण्ड के यहाँ दोपहर भोज पर आमंत्रित थे।

शाम 5.00 बजे जहाँगीरदार ने हम सभी को एक सिटिंग दी।

शाम 6.00 बजे वेणुगोपाल गुप्ता के पुत्र के विवाह समारोह में सम्मिलित होने के लिये कोदण्ड के घर से वैश्वी धर्मशाला की ओर रवाना हुआ। रात्रि 8.00 बजे सुन्दरम के यहाँ वापस लौट आया। रात्रि 8.00 बजे हेबल तथा जहाँगीरदार सुदर्शन के घर पर पहुँचे तथा हमने रात्रि 10.00 बजे तक लेखे, रख–रखाव इत्यादि की व्यवस्था एवं प्रक्रिया के बदलाव के विषय पर चर्चा की।

27 मार्च 1978 – सोमवार

कोदण्ड तथा इन्दिरा सुबह 10.00 बजे सुन्दरम के निवास पर पहुँचे, डेनमार्क के श्री के.आर.श्रीनिवासन भी उनके साथ थे। तत्पश्चात् सुबह 11.00 बजे जहाँगीरदार के आने के पश्चात् हम सभी सुबह 11.30 बजे वेनुगोपाल गुप्ता के पुत्र के विवाह समारोह में सम्मिलित होने के लिये वैश्वी धर्मशाला की ओर रवाना हुये। प्रीतिभोज के पश्चात् मोहन तथा मैं

दोपहर 1.55 बजे मद्रास की ओर रवाना हो गये। जहाँगीरदार, सुन्दरम, मुरूगेसन, डॉ. रत्ना देवनाथन्, कोदण्ड तथा इन्दिरा हमें विदा करने के लिये स्टेशन पर उपस्थित थे।

15 मिनट विलम्ब से शाम 7.15 बजे हम मद्रास पहुँच गये। कृष्णा ने स्टेशन पर हमारी अगवानी की। मेरा स्वास्थ्य ठीक नहीं था तथा गला चोक था।

28 मार्च 1978 – मंगलवार

शाम को एस.के.मोहन घर पर पहुँचे, लेकिन मेरा स्वास्थ्य ठीक न होने के कारण मैं उन्हें सिटिंग नहीं दे सका। मैं बिस्तर पर पड़ा हुआ था तथा सुलोचना घर पर नहीं थी। अप्पा 24 मार्च को ही येरागुन्टला की ओर रवाना हो चुके थे तथा उनके प्रोदातुर दोरेसानिपल्ली, टाडापतरी, कुरनुल, कडप्पा इत्यादि केन्द्रों की यात्रा करने के पश्चात् 5 अप्रैल तक लौटने की सम्भावना थी। इस दौरान उन्हें 31 मार्च को अडोनी में पी.डी.गायकवाड़ के विवाह समारोह में भी सम्मिलित होना है।

29 मार्च 1978– बुधवार

सुबह 7.00 बजे राजासुन्दरी के पी. सुब्रामनियम को सिटिंग दी।

शाम 6.30 बजे सामूहिक सत्संग कराया जिसमें एस. मुथैया, पी. एस.दोरेइवेलू, आर.स्वामीनाथन, ए.नटराजन, टी.टी.जगन्नाथन, सुलोचना तथा कोयम्बटूर की एक हीरे जवाहरात की व्यापारी महिला उपस्थित थे।

''वॉयस रीयल''– भाग दो की छपाई का कार्य पूर्ण हो चुका है तथा इस पर जिल्द चढ़ाई का कार्य शेष रह गया है।

30 मार्च 1978– गुरुवार

31 मार्च 1978 की समाप्ति पर मिशन के अर्द्धवार्षिक लेखे तैयार करने का कार्य प्रारम्भ किया तथा अधिकांश कार्य आज ही पूर्ण कर लिया।

शाम 6.30 बजे सायं कालीन सत्संग कराया जिसमें विरुदनगर के टी.एस.राजाराम, एस.पी.लोकनाथ तथा राजासुन्दरी के पी.सुब्रामनियम उपस्थित थे। सिटिंग बहुत अच्छी रही।

31 मार्च 1978– शुक्रवार

पालवानचा के एक वकील श्री थन्डरा कृष्णाराव, खम्मम डी.टी.(ए. पी.) से अपने तीन दिवसीय भ्रमण पर मद्रास पहुँचे। अपने इस प्रवास के दौरान वे हमारे घर पर ही ठहरेंगे। मैं उनका प्रकरण अंतरिम अनुमति के लिये ले रहा हूँ।

सुबह 8.20 बजे वीर राघवन की सुपुत्री सौ. कमला ने फोन पर सूचित किया कि श्री आर.वीर राघवन का पाँच मिनट पूर्व दिल का दौरा पड़ने के कारण देहावसान हो गया है। मालिक को तार संदेश द्वारा इसकी सूचना भेजी।

इस केन्द्र के अधिकांश अभ्यासियों को जिन्हें फोन के माध्यम से सूचित किया जा सकता था, उन्हें इस दुःखद घटना के सम्बन्ध में जानकारी दी। श्री एस. के. राजगोपालन सुबह 9.00 बजे मेरे घर पर पहुँचे तथा सुलोचना, एस.नारायणस्वामी को अपने साथ घर पर ले आयीं। हम सभी साथ में घर से रवाना होकर, 39, प्रथम मुख्य मार्ग, राजा अन्नामलाईपुरम पहुँचे तथा सुबह 10.30 बजे तक वहीं रहे। जानकारी मिली कि श्री वीर राघवन का ज्येष्ठ पुत्र सुन्दर राजन सलेम में है तथा वहाँ से टैक्सी द्वारा यहाँ पहुँचेगा। अतः दोपहर 3.00 बजे से पूर्व उसकी यहाँ पहुँचने की सम्भावना नहीं है। श्री आर. शेषाद्रि मद्रास में ही थे, अतः हम तुरन्त उनके यहाँ पहुँचे। थिरूकोविलूर के श्री आर.हरिदास स्वामी संवेदना व्यक्त करने के लिये श्री राघवन के यहाँ पहुँचे तथा पहुँचते ही उन्होंने पूछा 'दे मारूतिस निल निशी बोनम' अर्थात् निधन कब हुआ? उन्हें जानकारी दी गयी कि इस घटना को अभी एक घंटा भी नहीं हुआ है अर्थात् वे यहाँ अतिशीघ्र पहुँच गये थे। मेरे विचार से वे सर्वप्रथम नहीं, अपितु उन व्यक्तियों में से अवश्य थे जिन्हें निधन के तुरंत बाद सूचित कर दिया गया था। वे फीएट कार से यहाँ पहुँचे थे। कार से उतरने के पश्चात् उन्होंने कार का द्वार बन्द किया तथा एक अजीब सी मुद्रा में खड़े हो गये। उन्होंने अपनी हथेली को जोड़कर अपनी उंगलियों को गुत्थम गुत्था किया तथा दोनों अंगूठे नीचे की ओर इंगित किये। उनकी दाहिनी हथेली दाँयी ओर तथा बाँयी हथेली बाँयी ओर खुली हुई थी एवं तर्जनी उंगली का इशारा

कमर से ऊपर सामने की ओर था। बाद में मुझे जानकारी मिली कि यह मृत्यु के उपरान्त की मुद्रा है तथा स्वामी जब तक इस घर में हैं, वह इसी मुद्रा में ही रहेंगे। यह उनकी स्वयं की सुरक्षा के लिये है। यह अत्यंत विचित्र बात है कि एक स्वामी को इस तरह की सुरक्षा का सहारा लेना पड़ता है। सभी इसके प्रत्यक्षदर्शी थे कि राघवन के परिवार के सभी सदस्य उनकी इस हरकत के कारण शर्मिन्दगी महसूस कर रहे थे क्योंकि यह सब मेरे समक्ष घटित हो रहा था। हम सुबह 10.30 बजे तक वहाँ रहे, तत्पश्चात् अपने घर वापस लौट आये। मैं स्नान करके अपने कार्यालय की ओर रवाना हो गया।

31 मार्च 1978 की समाप्ति पर मद्रास केन्द्र के समस्त लेखे पूर्ण किये। शाम 4.00 बजे मैं स्वर्गीय श्री वीर राघवन के निवास पर पहुँचा, जहाँ लगभग सौ व्यक्तियों की भीड़ एकत्रित थी जिनमें अधिकांश अभ्यासी थे। प्रशिक्षक एस. के. राजगोपालन, डॉ. ए. लक्ष्मीनरसिंहमन, जी. एस. मनी, सी. ई. गुप्ता तथा आर. शेषाद्रि भी वहाँ उपस्थित थे। शव यात्रा शाम 5. 30 बजे प्रारम्भ हुयी तथा अधिकतर समय अभ्यासियों ने ही अर्थी को कंधा दिया। दाह संस्कार का कार्यक्रम आई.जी.पुलिस कार्यालय के पिछवाड़े स्थित श्मशानघाट में शाम 6.30 बजे सम्पन्न हुआ।

लगभग चौदह वर्ष पूर्व श्री आर. वीर राघवन के सम्पर्क में आया था। आज से ठीक चौदह वर्ष पूर्व जब मैं मिशन से जुड़ा था उसी दौरान मैं श्री राघवन के सम्पर्क में आया था। मैं उनकी आत्मा की शान्ति के लिये प्रार्थना करता हूँ।

रात्रि 9.00 बजे – श्री टी. कृष्णाराव को द्वितीय प्रारम्भिक सिटिंग दी।

1 अप्रैल 1978 – शनिवार

मैंने श्री टी. कृष्णाराव को सुबह 7.00 बजे तथा शाम 7.30 बजे दो सिटिंग दी। श्री एस.के.सुन्दरम एक्सप्रेस ट्रेन द्वारा आज बैंगलोर से मद्रास पहुँचे तथा दोपहर 3.00 बजे हमारे घर पर पधारे।

शाम 4.00 बजे "वॉयस रीयल" भाग दो की प्रथम दो सजिल्द प्रतियाँ जी.एस.प्रेस से प्राप्त हुयीं। पुस्तक बहुत अच्छी छपकर तैयार हुयी

है। विशेषकर बाहरी कवर (धूल से बचाव के लिये) पर की गयी चित्रकारी अत्यंत आकर्षक लग रही है। यद्यपि इसका खाका मेरे स्वयं के द्वारा ही तैयार किया गया था तथापि मुझे इसकी प्रशंसा करने में लेशमात्र भी संकोच नहीं हो रहा है।

डॉ. (कु.) सुधा गुप्ता ने मुझे 'माई मास्टर' के प्रथम अध्याय की हिन्दी अनुवाद का प्रारूप भेजा है जो मुझे आज ही प्राप्त हुआ है। अनुवाद उत्तम है।

मेरे दोनो पैरों में एक्जिमा हो गया है, इसका घाव भरना प्रारम्भ हो गया था तथा नयी चमड़ी आना आरम्भ हो गयी थी किन्तु आज से इसमें पुनः रिसाव प्रारम्भ हो गया है। डॉ. जी.एस.सुन्दरराजन का अनुमान था कि मुझे कल श्मशानघाट में किसी चीज से संक्रमण हो गया होगा।

2 अप्रैल 1978 – रविवार

सुबह 7.30 बजे मैंने रविवारीय सत्संग कराया। सिटिंग चालीस मिनट की रही जिसमें अस्सी से भी अधिक संख्या में अभ्यासियों की रिकार्ड उपस्थिति रही। एस. के. राजगोपालन मद्रास में ही थे लेकिन उनके यहाँ पहुँचने तक शायद ध्यान समाप्त हो चुका था।

ध्यान के पश्चात् पन्द्रह मिनट तक मैंने तमिल में अपने विचार उनके सम्मुख रखे, तत्पश्चात् सभी ने पाँच मिनट के लिये हमारे भाई तथा इस केन्द्र के प्रभारी प्रशिक्षक की दिवंगत आत्मा की आध्यात्मिक उन्नति के लिये प्रार्थना की। तत्पश्चात् एस.नारायण स्वामी ने पन्द्रह मिनट के लिये अपने विचार व्यक्त किये।

टी. कृष्णाराव को आज मैंने तीन व्यक्तिगत सिटिंग दीं। प्रथम सिटिंग 6.15 बजे, द्वितीय सिटिंग दोपहर 2.20 बजे तथा तृतीय सिटिंग शाम 7.20 पर दी गयी। प्रत्येक सिटिंग की अवधि लगभग बीस मिनट की रही।

"वॉयस रीयल" भाग दो की एक सौ पचास प्रतियाँ आज जी.एस. प्रेस से प्राप्त हुईं।

3 अप्रैल 1978 – सोमवार

सुबह 3.50 बजे से 4.45 बजे तक ध्यान किया। इसमें अत्यंत गहराई का अनुभव हुआ। मैंने महसूस किया कि मैं गहराई दर गहराई में उतरता जा रहूँ। मुझे हल्के नशे का भी अहसास हो रहा था तथा ध्यान के पश्चात् मैं अपनी आँखें नहीं खोल पा रहा था। अतः मैं लेट गया। निश्चित ही मेरी नींद लग गयी होगी, क्योंकि इसी दौरान मैंने एक स्वप्न देखा।

स्वप्न :– मैं एक इमारत में हूँ जो छात्रावास जैसी प्रतीत हो रही है। इसके बहुत से कमरों के साथ बरामदा भी है। जिस कमरे में मैं ठहरा हुआ हूँ उससे बाहर निकलकर मैं किसी स्थान पर जाता हूँ लेकिन जब मैं वापस लौटता हूँ तो मुझे अपने कमरे का पता लगाने में कठिनाई होती है। अगला दृश्य :– मैं एक कमरे में मालिक की बगल वाली चारपायी पर हूँ जिसकी छतें काफी ऊँची हैं तथा इमारत पुराने ढंग की दिखाई पड़ रही है। किसी कारणवश मुझे कमरे के बाहर जाना पड़ता है तथा कमरे की ओर वापस लौटते वक्त मैं देखता हूँ कि मुझे एक बड़े से मैदान को पार करना पड़ेगा जो पत्थरों तथा चट्टानों से पटा पड़ा है। ऐसा प्रतीत हो रहा है कि यह सुबह के लगभग 4.00 बजे का समय होगा, चन्द्रमा आसमान में अपनी छटा बिखेर रहा है। मैं कमरे में वापस पहुँचता हूँ तथा देखता हूँ कि डॉन सेबोरियन कमरे में मौजूद हैं। मैं उनका अभिवादन करते हुए कहता हूँ, "हैलो डोनाटेलो", मेरे विचार से तुम्हारा अक्टूबर में आने का कार्यक्रम था, डॉन कहते हैं चारी तुम्हें तो जानकारी है कि मेरे यहाँ आने का क्या कारण है, मुझे बस उनका हाल चाल जानना था, इसीलिये आया हूँ। "मैंने पूछा जैकी कैसी है ?" वह कुछ चितिंत तथा उदास हो जाते हैं तथा मुझसे कुछ कहते हैं मुझे ऐसा प्रतीत होता है जैसे वह "मधुमेह" के बारे में कुछ कह रहे हैं। मैं व्याकुल हो जाता हूँ कि घर कब लौट पाऊँगा तभी में देखता हूँ कि स्वामीनाथन मेरे बगल में खड़े हैं। मैं उनसे पूछता हूँ कि वह कब लौटने के बारे में विचार कर रहे हैं लेकिन वह मेरे प्रश्न को टाल जाते हैं। मुझे ऐसा प्रतीत होता है कि वह मेरा साथ टाल रहे हैं। तभी मैं जग जाता हूँ। समाप्त।

सुबह 6.50 बजे से 7.15 बजे तक पालवानचा के श्री टी.कृष्णाराव को अंतिम सिटिंग दी तथा लगभग 7.05 बजे मैंने मालिक की ओर से उसे अंतरिम अनुमति प्रदान की। पालवानचा के प्रभार की जिम्मेदारी अब उसकी रहेगी। रात्रि में वह हावड़ा मेल से विजयवाड़ा की ओर रवाना हो गये जो पालवानचा के मार्ग पर पड़ता है।

4 अप्रैल 1978 – मंगलवार

सुबह 7.00 बजे सामूहिक सत्संग कराया जिसमें सात अभ्यासी उपस्थित थे।

कार्यालय से दोपहर के भोजन के लिये अपने घर पहुँचने पर अप्पा को घर पर पाकर मुझे प्रसन्नता हुयी। अप्पा बॉम्बे–मद्रास जनता एक्सप्रेस से येरागुन्टला से वापस लौट चुके थे। अपने इस भ्रमण में उन्होंने कडप्पा का दौरा नहीं किया था क्योंकि वे लोग नहीं चाहते थे कि अप्पा उनके केन्द्र का भ्रमण करें। दोनों रेड्डी बंधुओं का मिशन में प्रवेश मेरे माध्यम से हुआ था। सर्वप्रथम वैंकट सुब्बारेड्डी मिशन से जुड़े थे तथा उसके छः माह पश्चात् रामचन्द्र रेड्डी भी मिशन में शामिल हो गया था। दोनों की मेरे परिवार के सदस्यों से अच्छी घनिष्ठता थी क्योंकि एस. आर. सी. एम. में आने से लगभग तीन वर्ष पूर्व से ही हमारे व्यवसायिक सम्बन्ध थे। लेकिन पिछले लगभग एक वर्ष से हमारे सम्बन्धों में कुछ खटास आ गयी थी। इस दौरान अप्पा से शायद ही कभी उन्होंने बातचीत की हो, जबकि उनका मद्रास आना जाना लगा रहता है तथा वर्ष में अनेकों मर्तबा वे मद्रास आते हैं। वह अत्यंत विचित्र प्रकार के व्यक्ति हैं। मुझे तो ऐसा प्रतीत होता है कि वैंकट सुब्बारेड्डी मेरे प्रति वैमनस्यता रखते हैं। पिछले एक दो वर्षो से उनकी उमेश से घनिष्ठता काफी बढ़ गयी है तथा मुझे इसमें लेशमात्र भी संदेह नहीं है कि दोनों के बीच कुछ न कुछ खिचड़ी जरूर पक रही है। पूनीमंगाडू/ तिरूतानी के वी.वैंकटपति जो येरागुन्टला तथा अन्य केन्द्रों के भ्रमण पर अप्पा के साथ थे, उन्होंने मुझे जानकारी दी कि रेड्डी बंधु मेरे प्रति यह कह कर गलत प्रचारित कर रहे हैं कि मैंने शाहजहाँपुर में बसंत उत्सव–78 के दौरान रामचन्द्र रेड्डी को अपने कमरे से बाहर

निकल जाने को कह दिया था। उन्होंने इस झूठ को समूचे रायालसीमा में प्रचारित कर दिया है। अब उस सारी घटना का यहाँ बखान करने का कोई औचित्य प्रतीत नहीं होता तथा मैंने इसे लेखबद्ध भी नहीं किया था क्योंकि यह अत्यंत तुच्छ सी घटना थी तथा न ही मेरे लिये अब इसके कोई मायने हैं।

शाम के समय एस.के.राजगोपालन की दो भतीजियाँ जो उसके भाई एस.के.कस्तूरीरंगन की सुपुत्रियाँ हैं, डॉ (श्रीमती) मालती जगबंधु तथा कुमारी जयंती रंगन, हमसे चर्चा करने के लिये हमारे घर पहुँचीं। बाद में मैंने उन दोनो को उनकी प्रथम सिटिंग दी। बड़ी बहन विधवा हैं तथा रेडियोलॉजिस्ट हैं। उनके दो बच्चे भी हैं, मूलतः वह अमेरिका की हैं, किन्तु अब भारत वापस आ गयी हैं।

5 अप्रैल 1978 – बुधवार

श्रीमती मालती जगबन्धु तथा कुमारी जयंती रंगन को शाम 6.30 बजे उनकी द्वितीय सिटिंग दी।

एस.के.सुन्दरम तथा एस.के.मोहन ने रात्रि में हमारे निवास पर ही विश्राम किया।

7 अप्रैल 1978 – शुक्रवार

आज मेरे पिता जी का 74वाँ जन्मदिवस है।

मेरे एक्जिमा का घाव भर रहा है तथा नयी कोशिकायें विकसित हो रही हैं।

9 अप्रैल 1978 – रविवार

मलेशिया में केलंग के प्रशिक्षक के.विवेकानन्थन तथा उनकी पत्नी कमला गत रात्रि में कुआलालम्पुर से मद्रास पहुँचे थे तथा आज सुबह लगभग 8.30 बजे हमारे घर पर पधारे। दोपहर का भोजन उन्होंने हमारे घर पर किया। भोजन के पश्चात् दोपहर 3.00 बजे मैं उनके साथ होटल जाकर उनका सामान इत्यादि लेकर उन्हें अपने साथ अपने घर पर ले आया।

11 अप्रैल 1978 – मंगलवार

विवेकानन्थन ने सुबह 7.00 बजे प्रातःकालीन सामूहिक सत्संग कराया जिसमें नौ अभ्यासी उपस्थित थे।

विवेक तथा कमला दोपहर 2.15 बजे आईएससी की उड़ान से बॉम्बे की ओर रवाना हो गये। मैंने डॉ. ए. बी. जाजौदिया को उनकी अगवानी तथा बॉम्बे में उनके प्रवास के दौरान उनकी देखरेख करने के लिये कल ही फोन पर सूचित कर दिया था। निवेदन करने पर विवेक "वॉयस रीयल" भाग दो की पचास प्रतियाँ अपने साथ बॉम्बे ले गये हैं।

14 अप्रैल 1978 – शुक्रवार

एस. सदाशिवम तथा एस. के. मोहन के साथ वृंदावन एक्सप्रेस से बैंगलोर की ओर रवाना हुआ। कोदण्ड भी इसी ट्रेन के प्रथम श्रेणी शयनयान में यात्रा कर रहे थे। निर्धारित समय से चालीस मिनट विलम्ब से हमारी ट्रेन बैंगलोर पहुँची। बैंगलोर के लिये "वॉयस रीयल"–भाग दो की 180 प्रतियाँ हम अपने साथ लेकर आये हैं।

शाम 5.00 बजे से 8.00 बजे – मालिक के जन्मोत्सव समारोह कार्यक्रम की व्यवस्था के सम्बन्ध में एक बैठक आयोजित की गयी थी जिसमें गुलबर्गा के एस.ए.सरनाड के अलावा जहाँगीरदार, बी.के.राजगोपाल, बी.डी.पई तथा के.आर.कुमार बैठक में उपस्थित थे। समूचे भारतवर्ष से पंजीकरण प्राप्त होना प्रारम्भ हो चुका है तथा इच्छुक अभ्यासियों की संख्या ग्यारह सौ से भी अधिक पहुँच गयी है। विज्ञापन इत्यादि से होने वाली आय का आंकड़ा 1.2 लाख को पार कर चुका है। समस्त इन्तजामात पुख्ता किये गये हैं तथा सभी कुछ व्यवस्थित रूप से चल रहा है।

सुन्दरम तथा उनकी पत्नी, सदाशिवम, मोहन एवं मैं रात्रि 8.00 बजे कोदण्ड के घर की ओर रवाना हुये। आज हमारा पड़ाव उन्हीं के निवास पर रहेगा।

दिन में मैंने भाई सरनाड से एकांत में गोपनीय चर्चा की। मालिक का उनके प्रति अगाध प्रेम है तथा वे उन पर अत्यधिक विश्वास करते हैं। हमने मिशन के पदाधिकारियों में बढ़ती अनुशासनहीनता, प्रशिक्षकों के दुर्व्यवहार, आपसी खींचतान तथा ईर्श्या एवं वर्चस्व की लड़ायी इत्यादि के

विषय पर चर्चा की। मैं सरनाड से इस विषय पर विचार करने के लिये कह रहा था कि यदि सम्भव हो सके तो इस माह के अंत में मालिक के बैंगलोर भ्रमण के दौरान सभी दीक्षित शिष्यों की मालिक के साथ एक गोपनीय बैठक रखी जा सकती है। हमारी मुख्य समस्या यह थी कि इस बैठक को गुप्त कैसे रखा जाये? दीक्षा के विषय पर किसी से भी चर्चा करना उचित नहीं है, बल्कि इस विषय के सम्बन्ध में किसी को भी जानकारी नहीं होना चाहिये। सरनाड, भाई राघवेन्द्र राव से इस विषय पर परामर्श लेने के लिये उन्हें पत्र लिखने के लिये सहमत हो गये।

15 अप्रैल 1978 – शनिवार

सुबह लगभग 4.00 बजे मैंने एक दुःस्वप्न देखा। मैंने देखा कि मैं और कोदण्ड समीप ही किसी स्थान पर हैं। ऐसा प्रतीत हो रहा है कि यह टी टी के एण्ड कंपनी का मुख्य कार्यालय है। तभी अचानक कोदण्ड मुझे जानकारी देते हैं, "जग्गू ने बताया है कि टी टी के एण्ड कंपनी के औद्योगिक उत्पादन प्रभाग का प्रभार अब उनके पास रहेगा।" इस जानकारी से मैं अत्यन्त विचलित हो जाता हूँ क्योंकि यह सीधे मेरे अधिकारों का हनन होगा। मैं शीघ्र ही कंपनी से इस्तीफा देने का निर्णय लेता हूँ। अगला दृश्य :– सीना के दो बच्चे जिनमें आश्चर्यजनक रूप से एक लड़का तथा एक लड़की (जबकि वास्तविक जीवन में उनके दोनों लड़के हैं) कुछ केक इत्यादि बनाने के लिये मैदा फेंट रहे हैं। तभी मुझे एक टेलेक्स संदेश प्राप्त होता है जिसमें उल्लिखित है कि सीना तथा उनकी पत्नी कोम्बली की एक विस्फोट में मृत्यु हो गयी है। मैं फूट–फूट कर रोने लगता हूँ क्योंकि न केवल मैंने अपना छोटा भाई खोया था, बल्कि अब मैं अपनी नौकरी से इस्तीफा भी नहीं दे सकूँगा क्योंकि सीना के बच्चों की जिम्मेदारी अब मुझ पर रहेगी। स्वप्न समाप्त।

इस स्वप्न से मै अत्यंत विचलित महसूस कर रहा था। मैंने अपने भाइयों को कभी भी स्वप्न में नहीं देखा तथा उनकी पत्नियाँ भी कभी कभार ही स्वप्न में आती हैं। स्वप्न के प्रथम भाग से यह निष्कर्श निकाला जा सकता है कि जहाँ तक कोदण्ड का प्रश्न है, मुझमें अभी भी ईर्श्या की

भावना शेष है। मुझे उस वक्त अत्यंत ईर्श्या हुई थी जब कोदण्ड को टी. टी. के. प्राइवेट लिमिटेड कंपनी में मुझसे लगभग दो गुने वेतन पर नियुक्त किया गया था जबकि मेरी शैक्षणिक योग्यता उससे बेहतर थी। उसे यह नौकरी तथा जो भी उसके द्वारा माँग की गयी थी, वह मेरे कहने पर ही प्राप्त हुयी थी। उसके द्वारा अब मेरे अधिकारों के हनन का प्रश्न ही उत्पन्न नहीं होता। वह तो उसी दिन मुझसे बहुत आगे तरक्की कर चुका था जिस दिन मेरे उच्चाधिकारी श्री टी.टी.नरसिंहमन द्वारा उसकी समस्त शर्तें मान्य कर ली गईं थीं। अतः इस स्वप्न से यह निष्कर्श निकाला जा सकता है कि मेरे अवचेतन मन में कहीं ईर्ष्या की भावना दबी रह गयी होगी, ईश्वर न करे कि यह सत्य हो। यदि फिर भी ऐसा कहीं कुछ है तो मैं मालिक से सच्चे मन से प्रार्थना करता हूँ कि मेरे इस विकार को दूर करने की कृपा करें।

अपरान्ह में बानशंकरी में सुन्दरम् के घर पर वापस लौट गया।

शाम 7.00 बजे – आश्रम में सामूहिक सत्संग कराया। सिटिंग चालीस मिनट चली। सत्संग में पचास से अधिक संख्या में अभ्यासी उपस्थित थे। सामान्य रूप से सभी का मत यह था कि सिटिंग के प्रथम दस मिनट तथा अंतिम पंद्रह मिनट बहुत अच्छे रहे।

कोदण्ड, इंदिरा तथा सुदर्शन ने आज हमारे साथ सुन्दरम के निवास पर पड़ाव किया। बी. एम. हेबल, डॉ. एस. बी. श्यामराव तथा गुण्डेराव, बैंगलोर में ही हैं तथा हमारे साथ सुन्दरम के निवास पर ही ठहरे हुये हैं। हम सभी देर रात तक चर्चा में व्यस्त रहे तथा रात्रि 1.00 बजे विश्राम के लिये अपने शयन कक्ष में गये।

16 अप्रैल 1978 – रविवार

सुबह 8.15 बजे आश्रम में प्रातःकालीन सत्संग कराया जिसमें पचास से अधिक संख्या में अभ्यासी उपस्थित थे। सिटिंग पैंतीस मिनट तक चली तथा अच्छी रही। इस दौरान शान्ति एवं गहराई का अनुभव हुआ।

सत्संग के पश्चात् एक घंटे तक उत्सव समिति की बैठक चली

जिसमें सरनाड, जहाँगीरदार, डॉ. श्यामराव, हेबल, एल. एस. हेगड़े तथा गुण्डेराव उपस्थित थे। बैठक के समाप्त होने के पश्चात् सभी नाश्ते के लिये सुन्दरम के निवास पर पहुँचे। कोदण्ड, इंदिरा तथा सुर्दशन जहाँगीरदार एवं सरनाड को साथ लेकर इंदिरा नगर की ओर रवाना हो गये। सरनाड को लालबाग जाना था। गुण्डेराव, हेबल तथा डॉ. श्यामराव दोपहर भोज के लिये सुन्दरम के घर पर ही रुक गये। भोजन के पश्चात्, बी.एम.हेबल ने दोपहर 1.00 बजे हमें बैंगलोर के सिटी स्टेशन पर छोड़ा।

सदाशिवम, मोहन तथा मैं निर्धारित समय से लगभग 30 मिनट विलम्ब से दोपहर 2.25 बजे वृन्दावन एक्सप्रेस से मद्रास की ओर रवाना हुये तथा निर्धारित समय से लगभग पैंतालिस मिनट विलम्ब से शाम 7.45 बजे हम मद्रास पहुँचे। यात्रा के दौरान गर्मी तथा धूल के कारण अत्यधिक थकान महसूस हो रही थी। सदाशिवम मद्रास सेन्ट्रल से ट्रेन द्वारा वृधाचलम की ओर रवाना हो गये।

17 अप्रैल 1978 – सोमवार

मेरे पैरों में एक्जिमा की स्थिति अत्यंत दयनीय हो गयी थी। विगत लगभग एक वर्ष से मैं इस समस्या को लेकर अत्यंत परेशान हूँ तथा इसमें लेशमात्र भी सुधार नजर नहीं आ रहा है।

19 अप्रैल 1978 – बुधवार

मेरे पैरों में एक्जिमा की स्थिति बदतर हो गयी थी। इसमें निरंतर रिसाव जारी था तथा इसमें से रिसने वाले तरल पदार्थ में से बदबू आ रही थी। मेरे दोनों पैरों के ऊपरी ओर एक्जिमा के घेरे का आकार बढ़ गया था तथा चमड़ी सुर्ख लाल हो गयी थी। डॉ. जी.एस. सुन्दराजन ने मुझे सचेत करते हुए वक्त पर दवाईयाँ लेने की हिदायत दी तथा मुझे एक सप्ताह के लिये घर पर आराम करने की सलाह दी।

25 अप्रैल 1978 – मंगलवार

अप्पा मालिक के जन्मोत्सव समारोह में सम्मिलित होने के लिये वृदांवन एक्सप्रेस से बैंगलोर की ओर रवाना हुये।

26 अप्रैल 1978 – बुधवार

शाम 6.30 बजे सामूहिक सत्संग कराया जिसमें 10 अभ्यासी उपस्थित थे। दो अभ्यासियों ने कहा कि वे अत्यंत विचिलित महसूस कर रहे हैं तथा उन्हें उबकाई सी आ रही थी। वास्तव में मैंने उनकी गहराई तक सफाई करने का प्रयास किया था।

27 अप्रैल 1978 – गुरुवार (बैंगलोर)

सुबह लगभग 7.00 बजे एस. सदाशिवम वृधाचलम से मद्रास पहुँचे। सुलोचना, जगन (मेरा साला), सदाशिवम्, सुन्दरम के दोनों बच्चे सतीश और सविता तथा मैं सुबह 8.20 बजे कार से बैंगलोर की ओर रवाना हुये। चित्तूर के आगे घाट पार करते वक्त हमारी कार के रेडियेटर में कुछ खराबी आ गयी थी। बाद में हमें मालूम हुआ कि रेडियेटर के हौज पाइप की रबर गल गयी थी। शाम 3.30 बजे हम बैंगलोर में इन्दिरा नगर पहुँच गये। चायपान के पश्चात् हमने थोड़ी देर विश्राम किया, तत्पश्चात् शाम 6.00 बजे हम विमान तल की ओर रवाना हो गये।

पूज्य मालिक का ए. एच. कृष्णा तथा मलेशिया में, केलंग के श्री विवेकानन्थन एवं कमला के साथ शाम 7.10 बजे दिल्ली से आगमन हुआ। उड़ान निर्धारित समय से मात्र 10 मिनट विलम्ब से यहाँ पहुँची थी। मालिक स्वस्थ थे, लेकिन कुछ कमजोर तथा थके हुए नजर आ रहे थे। विमान तल से मालिक को सीधे सुन्दरम के निवास बानशंकरी खण्ड–दो में ले जाया गया जहाँ मालिक के ठहरने की व्यवस्था की गयी थी। रात्रि 10.30 बजे तक मैं सुन्दरम के घर पर ही रहा, तत्पश्चात् रात्रि विश्राम के लिये इन्दिरा नगर कोदण्ड के यहाँ लौट आया। सुलोचना, मालिक की देखभाल के लिये श्रीमती सुन्दरम का हाथ बंटाने के वास्ते सुन्दरम के घर पर ही रुक गयी थी।

28 अप्रैल 1978 – शुक्रवार

सुबह 7.00 बजे बानशंकरी पहुँचा, कार्य प्रगति पर था तथा सभी कुछ व्यवस्थित रूप से चल रहा था। आश्रम की लगभग सारी जमीन को घेरते हुये एक विशाल पंडाल खड़ा हो चुका था। मैंने अपना पड़ाव स्थल नागलक्ष्मी कल्याण मण्डप में परिवर्तित कर लिया था, जो सुन्दरम के

निवास तथा आश्रम से कुछ गज की दूरी पर ही स्थित था। बॉम्बे, दिल्ली, तिनसुकिया इत्यादि शहरों के अभ्यासी निरंतर पहुँच रहे थे। रात्रि 10.30 बजे से 1.30 बजे तक तेज बारिश होती रही। रात्रि 1.00 बजे सर्वेश तथा उनके परिवार की अगवानी करने के पश्चात् मैं विश्राम के लिये चला गया।

29 अप्रैल 1978 – शनिवार

सारा दिन व्यस्तता में व्यतीत हुआ। सुन्दरम के घर जाकर मालिक से मिलने का समय ही नहीं मिल पाया। यद्यपि सुबह 8.00 बजे मैं सुन्दरम के निवास पर गया था, किन्तु उस समय मालिक गुसलखाने में थे, इसलिये उनसे भेंट नहीं हो सकी। रात्रि भोजन के पश्चात् लभग 10.00 बजे मालिक से मेरी भेंट हुयी लेकिन वे उसके पूर्व ही विश्राम के लिये अपने शयन कक्ष में जा चुके थे, यद्यपि वे जगे हुये थे। अतः मैं उनसे प्रणाम कर वापस लौट आया।

सारा दिन भागदौड़ के कारण मुझे थकान महसूस हो रही थी, वैसे यहाँ गर्मी भी अधिक है।

30 अप्रैल 1978 – रविवार

आज हमारे प्रिय बाबूजी महाराज का अस्सीवाँ जन्मदिवस है। लेकिन मेरे ऊपर सारे कार्य का प्रभार होने के कारण मैं कार्यक्रम में भाग नहीं ले सकूँगा, मात्र सामान्य देख रेख इत्यादि के समय के अलावा।

कार्यक्रम हेतु विशाल पंडाल की व्यवस्था की गयी थी जो 2000 व्यक्तियों के बैठने के लिये पर्याप्त था। पंडाल के पिछले भाग में हमारे छोटे से आश्रम की दीवार से सटकर एक मंच बनाया गया था जिसकी दिशा पूर्व की ओर रखी गयी थी। इसकी साज सज्जा अत्यंत सुन्दर ढंग से की गयी थी तथा मालिक की कुर्सी मंच पर रखी गयी थी। वह 8.00 बजे वहाँ पधारे।

8.15 बजे मालिक द्वारा सामूहिक सत्संग कराया गया। मिशन की जमीन पर लगाये गये मुख्य पंडाल में 1180 व्यक्ति बैठे हुये थे। आश्रम के पूर्व में स्थित सड़क पर भी बैठने की व्यवस्था की गयी थी, इसके अलावा दो सौ कुर्सियों की भी व्यवस्था की गयी थी। बैठने के सारे स्थान

भर चुके थे। मेरे अनुमान से बच्चों तथा आमंत्रितों को मिलाकर कुल 2500 व्यक्ति यहाँ उपस्थित थे।

सुबह 9.00 बजे मालिक ने प्रसाद अर्पण किया, तत्पश्चात् मेरे पिता जी द्वारा इस महत्वपूर्ण एवं खुशी के अवसर पर एक विशेष स्मारिका जारी की गयी।

इसके पश्चात् एस.ए.सरनाड ने हमारे नये संस्करण ''वॉयस रीयल'' भाग दो का विमोचन किया, तत्पश्चात् केलंग के के. विवेकानन्थन ने अपना उद्‌बोधन दिया। अन्य व्यक्तियों द्वारा भी अपने अपने विचार उपस्थित जनसमूह के समक्ष व्यक्त किये गये। सुबह 11.30 बजे कार्यक्रम समाप्त हो गया। मालिक एक–दो उद्‌बोधन के पश्चात् ही आराम करने के लिये मंच से उठकर घर की ओर रवाना हो गये थे।

शाम 6.30 बजे मालिक के निर्देशानुसार सांयकालीन सत्संग एस. ए. सरनाड द्वारा कराया गया। आश्रम में चारों ओर हर प्रकार से एक पर्व का माहौल नजर आ रहा था।

1 मई 1978 – सोमवार

सुबह 8.15 बजे बाबूजी ने पंडाल में सत्संग कराया। सिटिंग बहुत अच्छी रही तथा जैसा कि अक्सर होता है उसी प्रकार से सत्संग के उपरान्त कार्यक्रम की समाप्ति पर मैंने अपना उद्‌बोधन दिया, जो पच्चीस मिनट चला। इसके साथ ही जन्मोत्सव समारोह कार्यक्रम विधिवत् रूप से समाप्त घोषित कर दिया गया।

कार्यक्रम सामाप्ति के पश्चात् मैं मालिक को लेकर नागलक्ष्मी कल्याण मंडप पहुँचा जहाँ सभी अभ्यासियों के लिये भोजन की व्यवस्था (उत्सव के दौरान) की गयी थी। हमारे रसोई के स्वयंसेवकों द्वारा जी तोड़ मेहनत की गयी थी। वे सुबह 4.00 बजे से लेकर रात्रि 1.00 बजे तक निरंतर कार्य में लगे रहते थे। मालिक यहाँ बीस मिनट तक रहे तथा सभी उपस्थित स्वयं सेवकों को सिटिंग दी। तत्पश्चात् मैं मालिक के साथ सुन्दरम के घर की ओर रवाना हो गया तथा मालिक को सुन्दरम के घर छोड़कर आयोजन स्थल का अंतिम बार निरीक्षण करने हेतु आश्रम पहुँचा।

निरीक्षण के उपरान्त मैं सुन्दरम के घर वापस लौट आया तथा मालिक से विदा लेकर मैंने अपने समस्त साथियों को एकत्र किया तथा दोपहर भोजन के लिये उन्हें कोदण्ड के यहाँ ले गया। दोपहर भोजन के पश्चात् हम अपनी वही पुरानी विश्वसनीय कार एम.डी.आर. 5952 से मद्रास की ओर रवाना हो गये तथा शाम 5.30 बजे मद्रास पहुँचे।

अप्पा, डॉ. एवं श्रीमती जाजौदिया तथा मद्रास के अन्य अभ्यासियों का दल शाम 7.35 बजे वृंदावन एक्सप्रेस से मद्रास पहुँचा। ट्रेन निर्धारित समय से आधा घंटे विलम्ब से मद्रास पहुँची थी। डॉ. तथा श्रीमती जाजोदिया का 8 मई 1978 तक हमारे घर पर ही पड़ाव रहेगा, तत्पश्चात् वे बॉम्बे वापस रवाना हो जायेंगे।

2 मई 1978 – मंगलवार

फ्रांस के जीन फ्रैंकोइस मिन्सेट तथा उनकी पत्नी आज मद्रास पहुँचे।

पूज्य मालिक, एम. डीं. जहाँगीरदार तथा बॉम्बे के श्री रामभाई देसाई एवं श्रीमती देसाई बैंगलोर से विमान द्वारा शाम 4.35 बजे मद्रास पहुँचे। हमने विमानतल पर उनकी अगवानी की। मालिक घर की ओर लौटते वक्त कोट्टूरुपुरम में आश्रम के प्रस्तावित स्थल का भ्रमण करने के लिये राजी हो गये। मालिक को जगह बहुत पसन्द आयी तथा उन्होंने इसके चयन पर अपनी सहमति दे दी। कोदण्ड द्वारा अंतिम क्षणों में विमान द्वारा यात्रा करने का निर्णय किया गया था। अतः वह भी मालिक के साथ विमान में था। कोट्टूरपुरम से मालिक बसन्त नगर रवाना हो गये तथा थोड़ी देर विश्राम करने के पश्चात् गायत्री पहुँचे तथा एक घंटा गायत्री में व्यतीत करने के पश्चात् वापस घर की ओर रवाना हो गये।

मेरे दोनों पैरों में एक्जिमा की स्थिति बद से बदतर हो गयी थी तथा मुझे रात के समय बुखार रहने लगा था।

3 मई 1978 – बुधवार

होम्योपेथिक दवाई लेते ही मेरी स्थिति अचानक और बिगड़ गयी जिसके कारण मुझे मजबूरन बिस्तर पकड़ना पड़ा।

डॉ. जाजोदिया जो अपनी पत्नी के साथ हमारे यहाँ ठहरे हुये हैं तथा श्री एवं श्रीमती राजभाई देसाई भी यहाँ उनके साथ ही हैं, उनकी तबियत आज सुबह 8.00 बजे अचानक बिगड़ गयी। उन्हें उरस्थि के बगल में दर्द की शिकायत थी तथा वे पसीने से तरबतर हो रहे थे। परामर्श के लिये डॉ. सुंदरराजन को बुलाया गया जिन्होंने हल्का दिल का दौरा पड़ने की सम्भावना व्यक्त की। उनके द्वारा दिये गये सुझाव के अनुसार डॉ. जाजोदिया को एच.एम.चिकित्सालय की गहन चिकित्सा इकाई (आई.सी. यू.) में भर्ती करा दिया गया। सारे परीक्षण इत्यादि करने के पश्चात् उन्हें दोपहर पश्चात् अस्पताल से छुट्टी दे दी गयी जिससे हमने राहत की साँस ली। बिस्तर पर पड़े होने के कारण मैं मालिक से भेंट करने नहीं जा सका।

4 मई 1978– गुरुवार

डॉ. जाजोदिया के चिकित्सीय परीक्षणों की रिपोर्ट से यह जानकारी प्राप्त हुयी कि उन्हें हृदय रोग से सम्बन्धित कोई समस्या नहीं है तथा वे पूर्णतया सामान्य हैं। इसके लिये मैं मालिक का कोटि–कोटि धन्यवाद करता हूँ।

5 मई 1978 – शुक्रवार

दोनों पैरों की स्थिति पूर्ववत बनी हुयी थी जिसके कारण मैं अभी भी बिस्तर पर पड़ा हुआ हूँ। कोट्टूरपुरम की 7.12 प्लॉट की जमीन के बिक्री इकरारनामे (एग्रीमेन्ट) की कार्यवाही पूर्ण की। अधिवक्ता श्री ए. सी. मुथाना जो श्री गोविन्द स्वामीनाथन के मुख्य कनिष्ठ सहायक हैं तथा भू स्वामिनी श्रीमती कुट्टी रमनीया की ओर से इकरारनामे पर हस्ताक्षर करने हेतु कानूनी तौर पर अधिकृत हैं, द्वारा श्रीमती कुट्टी रमनीया की ओर से दस्तावेजों पर हस्ताक्षर किये गये तथा मिशन की ओर से हस्ताक्षर मेरे द्वारा किये गये।

6 मई 1978 – शनिवार

मैं अभी भी बिस्तर पर पड़ा हुआ हूँ तथा मालिक से भेंट करने के लिये बसंत नगर जाने की स्थिति में नहीं हूँ। पिछले तीन दिनों से मैं मालिक से भेंट करने के लिये एक मर्तबा भी बसन्त नगर नहीं गया था

तथा आज मैं अत्यंत बोझिल महसूस कर रहा था। मुझे ऐसा महसूस हो रहा था कि किसी भी समय मेरी रुलाई फूट पड़ेगी, तभी सुबह 9.30 पर मालिक उमेश की कार से मेरे घर पर पधारे तथा शाम 4.30 बजे तक घर पर ही रहे। इस दौरान हमने मिशन से सम्बन्धित सभी मसलों पर विस्तार से चर्चा की तथा मैंने ढेर सारे पत्र इत्यादि टाइप किये ताकि उनके हस्ताक्षर इत्यादि प्राप्त किये जा सकें। मालिक शाहजहाँपुर जाने से पूर्व सारी कार्यवाही पूर्ण कर लेना चाहते थे।

1) मालिक द्वारा ''सहज मार्ग शोध संस्थान'' के पुनर्गठन का निर्णय लिया गया। इसका गठन डॉ. के.सी.वरदाचारी के जीवन काल के दौरान हुआ था तथा उनके निधन से पूर्व तक यह पूर्णरूपेण क्रियाशील नहीं हो सका था एवं यह संस्थान निर्जीव हो गया था, इसका केवल नाम रह गया था। मालिक इसका पुनर्गठन करना चाहते थे तथा आज उनके आदेशानुसार डॉ. वी. आर. एस. मूर्ति को संस्थान का संचालक नियुक्त किया गया। संस्थान के संचालक मण्डल में कुल आठ सदस्य रहेंगे।

2) अध्यक्षीय परिषद् के सम्बन्ध में विस्तार से चर्चा हुयी। मैंने सारे कागजात तैयार कर रखे थे लेकिन बाबूजी उन पर हस्ताक्षर करने के लिये संकोच कर रहे थे। अन्त में उन्होंने इस अवसर पर उन कागजातों पर हस्ताक्षर न करने का निर्णय लिया उन्होंने कहा कि वह अभी इस पर और विचार करना चाहेंगे। उनका कहना था कि लोग आशान्वित रहेंगे कि अध्यक्षीय परिषद् का गठन किया जा रहा है, जो उनके लिये अच्छा रहेगा। मैं आज इन कागजातों पर हस्ताक्षर करने में इच्छुक नहीं हूँ, लेकिन इन्हें फाड़कर मत फेंकना। अभी तुम इन्हें अपने पास ही रखो, मुझे जब भी इनकी आवश्यकता होगी में इन्हें तुमसे माँग लूँगा।

3) कुरनुल जिले तथा आंध्र प्रदेश के टाडापतरी तालुका के लिये व्यवस्थापक नियुक्त कर दिये गये थे। मैंने मालिक के निर्देशानुसार कुरनूल के जी.कृष्णामूर्ति तथा टाडापतरी के रेड्डी कृष्णा मूर्ति को औपचारिक नियुक्ति पत्र जारी किये।

मालिक द्वारा इस भ्रमण के दौरान प्रो. के. कमलानाथन तथा वी.

जी जोशी को अंतरिम अनुमति प्रदान की गयी (आज नहीं)।

गत रात्रि में मुझे किसी से ज्ञात हुआ जो लोग मालिक से भेंट करने के पश्चात् मुझसे मुलाकात करने मेरे घर पर आये थे उनका कहना था कि आर. शेषाद्रि मिशन में वापस लौट आये हैं। उन्होंने मुझे बताया कि शेषाद्रि कल मालिक से भेंट करने के लिये गये थे तथा उनके और मालिक के बीच बन्द कमरे में बैठक हुयी। बैठक के पश्चात् मालिक ने जहाँगीरदार की ओर मुखातिब होते हुये उनसे कहा, "शेषाद्रि मेरे पास लौट आये हैं"। आज जब मैंने मालिक से इस सम्बन्ध में चर्चा की तो मालिक ने भी इसकी पुष्टि की अर्थात् शेषाद्रि चार वर्ष मिशन से बाहर भटकने के पश्चात् पुनः वापस लौट आये थे। इन चार वर्षो के दौरान वह कामकोटि पीठम के शंकराचार्य के सम्पर्क में आये तथा विभिन्न स्वामियों के साथ उन्होंने संगत की लेकिन सम्भवतया पुट्टपर्ती के सत्य साईंबाबा के साथ उन्होंने सबसे लम्बा समय व्यतीत किया। जानकारी के अनुसार दोनों के बीच अत्यंत घनिष्ठ सम्बन्ध थे। यह भी जानकारी मिली कि विगत दो वर्षों से उनका सत्य साईंबाबा के यहाँ व्हाइट फील्ड (बैंगलोर के पास) में निरंतर आना जाना लगा रहता था। अंततः घर का भटका हुआ बेटा पुनः घर लौट आया था। यह ऐसा प्रकरण है जिसके बारे में मालिक तक ने उम्मीद छोड़ दी थी, यद्यपि इन वर्षो के दौरान वे आशान्वित अवश्य थे। शेषाद्रि वाकई भाग्यशाली हैं। मुझे आज भी स्मरण है जब मालिक ने शेषाद्रि के विषय में चर्चा करते हुये एक दिन मुझे बताया था, "मैंने शेषाद्रि के ऊपर बहुत कार्य किया है, जिसे मैं व्यर्थ नहीं जाने देना चाहता।अतः मैं उन्हें एक अंतिम अवसर अवश्य देना चाहता हूँ तथा यह तीसरा अवसर उनके लिये अंतिम होगा। यदि अब भी वह नहीं सुधरते हैं तो हम उन्हें बाहर का रास्ता दिखा देंगे"।

शाम 4.30 बजे मालिक बसंत नगर की ओर रवाना हो गये। सारा दिन आराम न मिल पाने के कारण मेरे दोनों पैरों में सूजन आ गयी थी।

7 मई 1978 – रविवार

पूर्वानुसार ही आज का रविवारीय सत्संग हमारे घर पर हुआ तथा

अपेक्षाकृत अधिक संख्या में अभ्यासी सत्संग में उपस्थित थे क्योंकि उनका अनुमान था कि आज का सत्संग मालिक के द्वारा कराया जायेगा, लेकिन मालिक नहीं आये। मैं बुखार में बिस्तर पर पड़ा हुआ था तथा मेरे दोनों हाथों और पैरों की स्थिति बदतर थी। अनापेक्षित रूप से सुबह 9.30 बजे मालिक घर पर पधारे तथा एकांत में चर्चा करने के लिये मुझे एक कमरे में ले गये तथा आधा घंटे तक मेरे व्यवहार को लेकर मुझे समझाते रहे और कहा, "तुम आजकल बेरूखा बर्ताव करने लगे हो। कठोरता से कार्य नहीं कराया जा सकता। तुम अपने विरोधियों को प्रेमपूर्वक अपने करीब लाने का प्रयास करो यही मैं चाहता हूँ। तत्पश्चात् उन्होंने कहा, "यद्यपि यदा कदा कार्यवाही करने की आवश्यकता पड़ सकती है, लेकिन कार्यवाही ऐसी होनी चाहिये कि साँप भी मर जाये और लाठी भी न टूटे"। मैंने अत्यंत गम्भीरता पूर्वक उन्हें जवाब दिया तथा उनसे कहा "साहब, लाठी तो कब की टूट चुकी है, लेकिन साँप अभी भी जीवित है।" मैं, मालिक द्वारा की गयी अपनी इस आलोचना के कारण व्यथित हो गया था। जहाँ तक मुझे याद पड़ता है कि मालिक ने पहली बार इस प्रकार से मेरी आलोचना की। मैं यह मानता हूँ कि मुझे इस बात से दुःखी नहीं होना चाहिये लेकिन फिर भी मैं अपनी भावनाओं पर काबू नहीं रख पा रहा था। उन्होंने मुझसे पूछा, "क्या तुम्हारे और रामचन्द्र रेड्डी के बीच कुछ झगड़ा हुआ है ? उन्होंने मुझसे तुम्हारे विरुद्ध शिकायत की है। उनका कहना है कि तुमने उनका अपमान किया है तथा सबके समक्ष उनकी बेइज्जती की है"। अतः मैंने उन्हें बसंत के दौरान के घटनाक्रम की सिलसिलेवार जानकारी दी जो निम्नानुसार है।

बसंत की सुबह, कडप्पा के रामचन्द्र रेड्डी ने मुझसे सम्पर्क किया वह अपने साथ 50000/– अथवा इतनी ही कुछ राशि का ड्राफ्ट लेकर आये थे तथा मिशन में दान करना चाहते थे। दानकर्ता का निवेदन था कि परम्परा के अनुरूप एक कमरे का आधिपत्य उनके जिम्मे कर दिया जाय। एक कमरे का चयन कर लिया गया था जिसमें संगमरमर की शिला पर दानकर्ता का नाम अंकित था। मैंने उन्हें जानकारी दी कि सारे कमरे पूर्व

में ही आवंटित किये जा चुके हैं तथा अब कोई कमरा उपलब्ध नहीं है। उन्होंने कहा कि उनके बड़े भ्राता श्री वैंकटसुब्बा रेड्डी से उन्हें जानकारी मिली है कि कमरे उपलब्ध हैं। अतः मैंने उनसे कहा कि ऐसी परिस्थिति में उनका अपने बड़े भाई से ही इस संदर्भ में बात करना उचित होगा। वह मुस्कुराये तथा यह कहते हुये वहाँ से चले गये कि वह अपने भाई से इस संदर्भ में बात कर लेंगे। उस रात मैं अपने कमरे में बसंत के लेखे तथा अभ्यासियों के अपने गंतव्य पर वापसी के टिकट इत्यादि के कार्य में व्यस्त था, मेरे समक्ष कागजात इत्यादि बिखरे पड़े थे। लगभग रात्रि के 10.00 बजे थे, कड़कड़ाती ठंड पड़ रही थी और मैं थकान से चूर था।

तभी उस व्यस्त समय में दोनो रेड्डी बंधुओं ने मेरे कक्ष में प्रवेश किया और मुझसे कुछ चर्चा करना चाहते थे। मैंने उन्हें अपनी व्यस्तता बतायी तथा उनसे निवेदन किया कि वे बाद में आयें, मैंने उनसे कहा यदि वे कल सुबह आयें तो अत्यंत उचित होगा। लेकिन उन्होंने कहा कि वे अभी चर्चा करना चाहते हैं क्या मैं अभी उन्हें कुछ मिनट नहीं दे सकता? मैंने उनसे ऐसा न कर पाने के लिये खेद प्रकट किया। तब रामचन्द्र रेड्डी ने मुझसे कहा कि वह ड्राफ्ट लाया था तथा दानकर्ता इस बात को लेकर परेशान है, अतः इस पर क्या निर्णय लेना है? मैंने उनसे कहा कि मैं इस प्रश्न का उत्तर कैसे दे सकता हूँ ? उन्हें राशि लेने से पूर्व मुझसे जानकारी प्राप्त कर लेना चाहिये थी। मेरी इस बात पर रामचन्द्र रेड्डी उत्तेजित हो गये तथा बोले "आप मुझसे हमेशा इसी तरह का व्यवहार करते हैं, हम आपसे सहयोग की अपेक्षा रखते हैं। मुझसे क्या कराना चाहते हो ?" मैंने कहा, यदि उसके भाई ने उसे गलत जानकारी दी है तो मैं इसमें क्या कर सकता हूँ ? मेरे इस तर्क पर रामचन्द्र रेड्डी आपे से बाहर हो गये तथा उन्होंने शोर मचाना शुरू कर दिया। तब मैंने वैंकटसुब्बारेड्डी से कहा, "कृपया अपने भाई को बाहर ले जायें। वह अनावश्यक ही उत्तेजित हो रहे हैं और मैं अपना आपा नहीं खोना चाहता। अतः उचित होगा कि वह उन्हें मेरे कक्ष से बाहर ले जायें"। अतः वे दोनो वहाँ से चले गये।

मैंने मालिक को जानकारी दी कि मैंने रेड्डी को कमरे से बाहर

नहीं भगाया था तथा न ही इस तरह का कोई कृत्य किया था। अभी भी मैंने जो कुछ भी बयान आपके (मालिक के) समक्ष किया है वही सत्य है। मैंने मालिक से कहा, रामचन्द्र रेड्डी फिलहाल मद्रास में ही हैं। अतः यदि वे चाहें तो उन्हें बुलाकर इसकी जाँच करा सकते हैं। मालिक ने कहा, "इसकी कोई आवश्यकता नहीं है। मैं सारा प्रकरण समझ गया हूँ। लेकिन तुम प्रेमपूर्वक कार्य कराओ।" इसके पश्चात् उन्होंने इसी तरह के एक और प्रकरण का जिक्र किया जिसमें उन्होंने नैल्लोर के डॉ. जी. पट्टाभिरामी रेड्डी की शिकायत के संदर्भ में जानकारी दी। वह अनावश्यक ही एक गलतफहमी का शिकार हो गये थे। उन्हें किसी तीसरे व्यक्ति से यह जानकारी मिली थी कि मैंने उनके (पट्टाभिरायी रेड्डी) बारे में गलत प्रचार किया है। इस प्रकरण के संदर्भ में मैंने मालिक को संक्षिप्त में सारा ब्यौरा दिया तथा घटना से सम्बन्धित मुख्य जानकारी से उन्हें अवगत कराया। ऐसा प्रतीत हो रहा था कि हमेशा की ही तरह इन प्रकरणों में भी मालिक को बहुत बढ़ा–चढ़ा कर तथा मिर्च मसाला लगाकर जानकारी दी गयी थी तथा उन्हें मेरे विरुद्ध भड़काने का प्रयास किया गया था।

इसके पश्चात् मालिक ने कहा, "मैंने कुछ व्यक्तियों को ध्यान में न बैठने की हिदायत दी थी, जिसका मकसद यह था कि बचे हुये समय को वे मिशन के कार्यों में लगा सकें। मेरे द्वारा लिये गये इस निर्णय के पीछे कारण यह था कि उन व्यक्तियों की प्रगति तेजी से हो रही थी तथा उनका ध्यान में बैठने का कोई औचित्य नहीं था। लेकिन अब मुझे उनकी स्थिति में गिरावट दिखायी पड़ रही है। अतः मैं चाहता हूँ कि प्रत्येक अभ्यासी उसी प्रकार से प्रतिदिन ध्यान करे जिस प्रकार से नवागंतुक अभ्यासियों को ध्यान में बैठने हेतु निर्देश दिये जाते हैं। यह निर्देश सभी पर लागू होगा भले ही वह मिशन का सचिव अथवा कोई और ही क्यों न हों"। यह मुझ पर सीधा प्रहार था क्योंकि वर्तमान में मिशन के सचिव के पद पर मैं नियुक्त था। यह उनके उन मौखिक आदेशों का खण्डन था जो उन्होंने 1972 में क्लीवलैण्ड (लेकवुड) अमेरिका में मुझे दिये थे जब उन्होंने मुझसे यह कहा था कि मुझे अब ध्यान में बैठने की आवश्यकता नहीं है।

मालिक द्वारा इस प्रकार से व्यक्तिगत रूप से मुझे सीधा उक्षेपित किये जाने से मैं स्तब्ध रह गया था। मैंने कभी भी किसी को जानबूझकर ठेस नहीं पहुँचायी और न ही कभी किसी का अपमान किया है। रेड्डी बंधुओं से मैंने हमेशा स्नेहपूर्वक व्यवहार किया है तथा उन्हें अपने बड़े भाई के समान सम्मान दिया है। अतः जो मानसिक वेदना मैंने आज झेली है उसके लिये मात्र व्यक्ति के संस्कारों को ही दोषी ठहराया जा सकता है।

मेरे साथ हुये इस घटनाक्रम के पश्चात् मालिक आधे घंटे तक एकांत में मेरे पिताजी से चर्चा करते रहे। तत्पश्चात् वे सुबह 11.00 बजे बसंत नगर रवाना हो गये।

आज सुबह लगभग 7.30 बजे मालिक द्वारा कोदण्ड तथा इंदिरा को बसन्त नगर में उमेश के घर पर दीक्षा प्रदान की गयी। इसकी सिफारिश जहाँगीरदार द्वारा मालिक के बैंगलोर भ्रमण के दौरान की गयी थी। मालिक ने इस पर मेरा दृष्टिकोण जानना चाहा। मैंने जवाब दिया कि मेरे विचार से यह जल्दबाजी है तथा दोनों में से इंदिरा की आध्यात्मिक उन्नति अच्छी है तथा उसमें समर्पण भी है। मालिक ने इस पर अपनी कोई प्रतिक्रिया नहीं दी।

मालिक ने आज सुबह 8.00 बजे बॉम्बे के रमनलाल देसाई को अंतरिम अनुमति प्रदान की।

मालिक शाम 6.55 बजे आई. ए. सी. की उड़ान से दिल्ली की ओर रवाना हो गये तथा यदि मेरी सूचना सही है तो ए. एच. कृष्णा भी मालिक के साथ गये हैं। मेरी शारीरिक अस्वस्थता तथा अब मानसिक अस्वस्थता के भी कारण मैं मालिक को विदा करने के लिये हवाई अड्डे नहीं जा सका।

8 मई 1978 – सोमवार

अप्पा की स्थिति अत्यंत दयनीय थी। वे सारी रात रोते रहे थे तथा सुलोचना ने मुझे जानकारी दी कि अप्पा सारी रात ध्यान कक्ष (पुस्तकालय) में आँखें बंद करके बैठे थे तथा उनकी आँखों से निरंतर अश्रुधारा बह रही थी। अप्पा से ज्ञात हुआ कि मालिक ने उनसे यह कहा था कि उनकी

आध्यात्मिक स्थिति बहुत बिगड़ चुकी है तथा उन्हें निर्देशित किया कि वे व्यक्तिगत रूप से मालिक से लिखित अनुमति प्राप्त किये बगैर मिशन के कार्य हेतु कहीं भी न जायें। अप्पा ने मुझे यह भी बताया कि मालिक ने उनके आचरण के सम्बन्ध में भी टीका टिप्पणी की तथा अप्पा को उनके चरित्र में सुधार लाने तथा ईमानदारी बरतने की हिदायत दी। मालिक ने अप्पा की यह कह कर भी आलोचना की कि उनमें व्यवहार कुशलता की कमी है। बेचारे अप्पा सारा दिन इस घटना के कारण दुःखी रहे तथा उन्होंने किसी से कोई बात नहीं की।

जीन फ्रैंकोइस मिन्सेट तथा उनकी पत्नी आज सुबह 7.10 बजे तमिलनाडु एक्सप्रेस से दिल्ली की ओर रवाना हो गये। डॉ. जाजोदिया तथा श्रीमती जाजोदिया सुबह 9.15 बजे दादर एक्सप्रेस से बॉम्बे की ओर रवाना हो गये। तत्पश्चात् रामभाई देसाई तथा उनकी पत्नी दोपहर 2.35 बजे आईएसी की उड़ान संख्या 172 से बॉम्बे की ओर रवाना हो गये। के. राधाकृष्णा शाम 4.00 बजे चित्तूर की ओर रवाना हो गये तथा कोदण्ड तथा उनका परिवार सुबह 10.30 बजे ही कार से बैंगलोर की ओर रवाना हो चुका था। ये सभी व्यक्ति पिछले एक सप्ताह से हमारे साथ गायत्री में ही रुके हुये थे, सभी के चले जाने से घर एकदम सूना–सूना लग रहा था तथा अकेलापन महसूस हो रहा था। मेरे तथा अप्पा के साथ हुये कल के घटनाक्रम को लेकर हमारी आत्मा पर आये बोझ के कारण हमारे दुःख का अहसास और बढ़ गया था तथा सुलोचना हमें दुःखी देखकर व्यथित महसूस कर रही थी। खैर मालिक ने जो भी कहा वह हमारी भलाई के लिये कहा है तथा मुझे उनके द्वारा दिये गये आदेशों एवं हिदायतों के अनुसार ही कार्य करना होगा।

10 मई 1978 – बुधवार

अप्पा 7 मई को उनके तथा मालिक के बीच हुये घटनाक्रम को लेकर अत्यंत दुःखी थे। ऐसा प्रतीत हो रहा था कि उन्हें मालिक द्वारा कही गयी बातों से गहरी ठेस पहुँची थी। आज उन्होंने मालिक को पत्र लिख कर अपने निम्नलिखित पदभार से विधिवत् रूप से त्यागपत्र देने का निर्णय

लिया।

1) संपादक सहज मार्ग अंग्रेजी प्रभाग से।

2) मिशन के तमिलनाडु राज्य के व्यवस्थापक के पद से।

3) आंध्र के कवली तथा नैल्लोर केन्द्र के व्यवस्थापक के पद से।

4) मिशन के प्रशिक्षक के पद से।

5) विदेश के केन्द्रो के प्रभारी प्रशिक्षक के पद से।

मैंने पुरजोर प्रयास किया कि वे ऐसा कदम न उठायें क्योंकि उनका ऐसा करना उचित नहीं था। इससे उनकी विद्रोही प्रवृत्ति उजागर हो रही थी। ऐसी परिस्थिति में जबकि वे मालिक और उनके बीच हुये वार्तालाप के कारण उन्हें पहुँचे सदमे से अभी उबरे भी नहीं हैं, कोई भी निर्णय लेना उचित नहीं था। कोशिशों के बावजूद भी मैं अपने पिताजी को इस बात के लिये मनाने में नाकामयाब रहा कि वे मालिक को लिखे पत्र को फाड़कर फेंक दें, और यह जानकर मेरे दुःख की सीमा नहीं रही कि उन्होंने मालिक को लिखा पत्र डाक से भेज दिया था।

14 मई 1978 – रविवार

केलंग के के.विवेकानन्थन तथा उनकी पत्नी कमला देर रात्रि में रात 11.00 बजे श्रीलंका से त्रिची के रास्ते मद्रास पहुँचे, तब तक हम लोग विश्राम के लिये अपने शयन कक्ष में जा चुके थे। हमने उठकर द्वार खोला तथा उनकी अगवानी करने के पश्चात् उनके साथ एक घंटा व्यतीत किया। तत्पश्चात् रात्रि बारह बजे विश्राम के लिये अपने शयन कक्ष में चले गये।

15 मई 1978 – सोमवार

मेरे पैरों की स्थिति बेहतर थी, लेकिन कपड़े का स्पर्श मात्र भी बरदाश्त नहीं हो रहा था। मैं अभी भी छुट्टी पर था।

17 मई 1978 – बुधवार

विवेकानन्थन तथा कमला एयर इंडिया के विमान द्वारा सुबह 10.00 बजे कुआलालम्पुर की ओर रवाना हो गये। सुलोचना तथा मैंने हवाई अड्डे पर उन्हें विदाई दी।

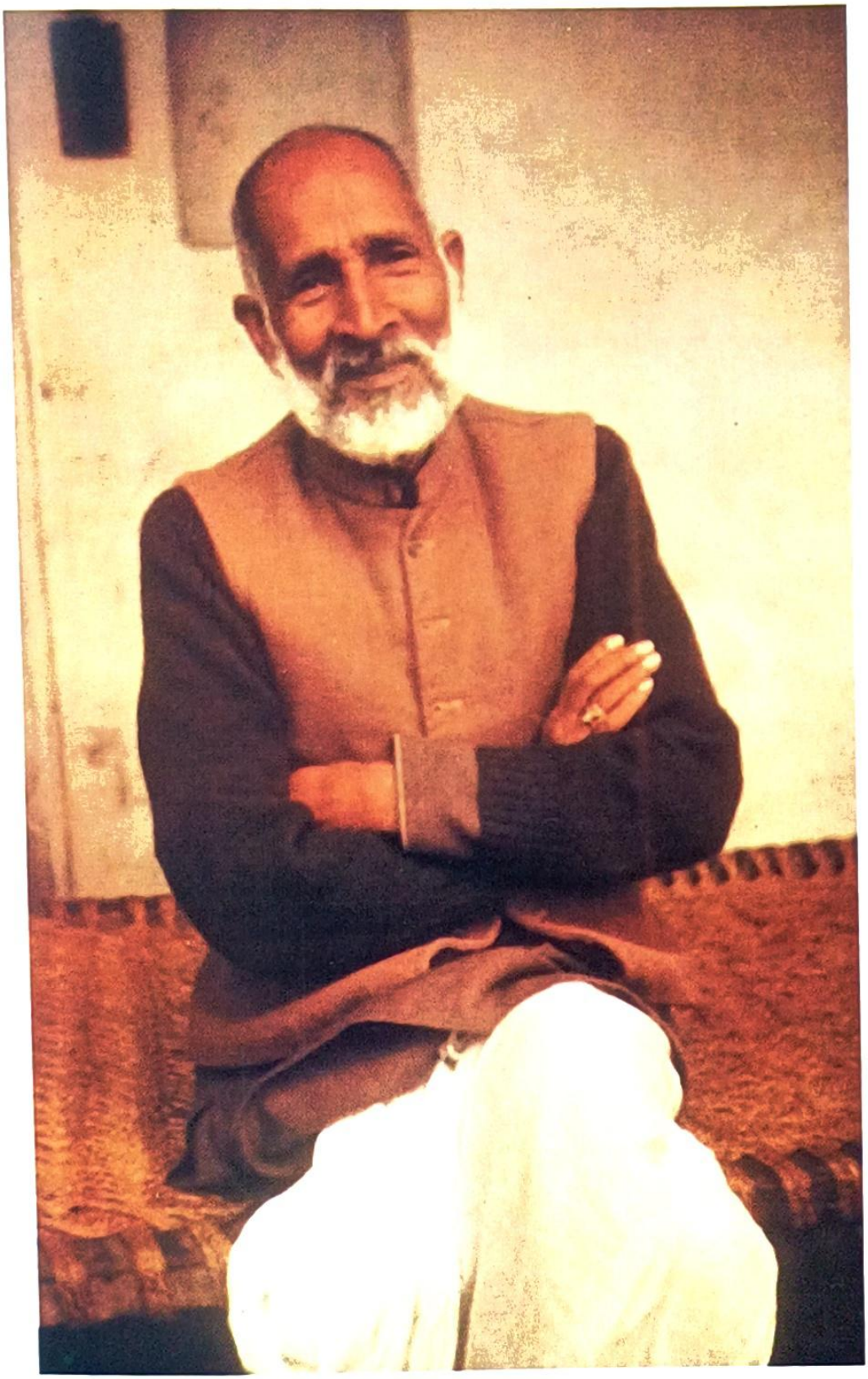

मालिक अपने घर 'गायत्री' के बरामदे में जनवरी 1978

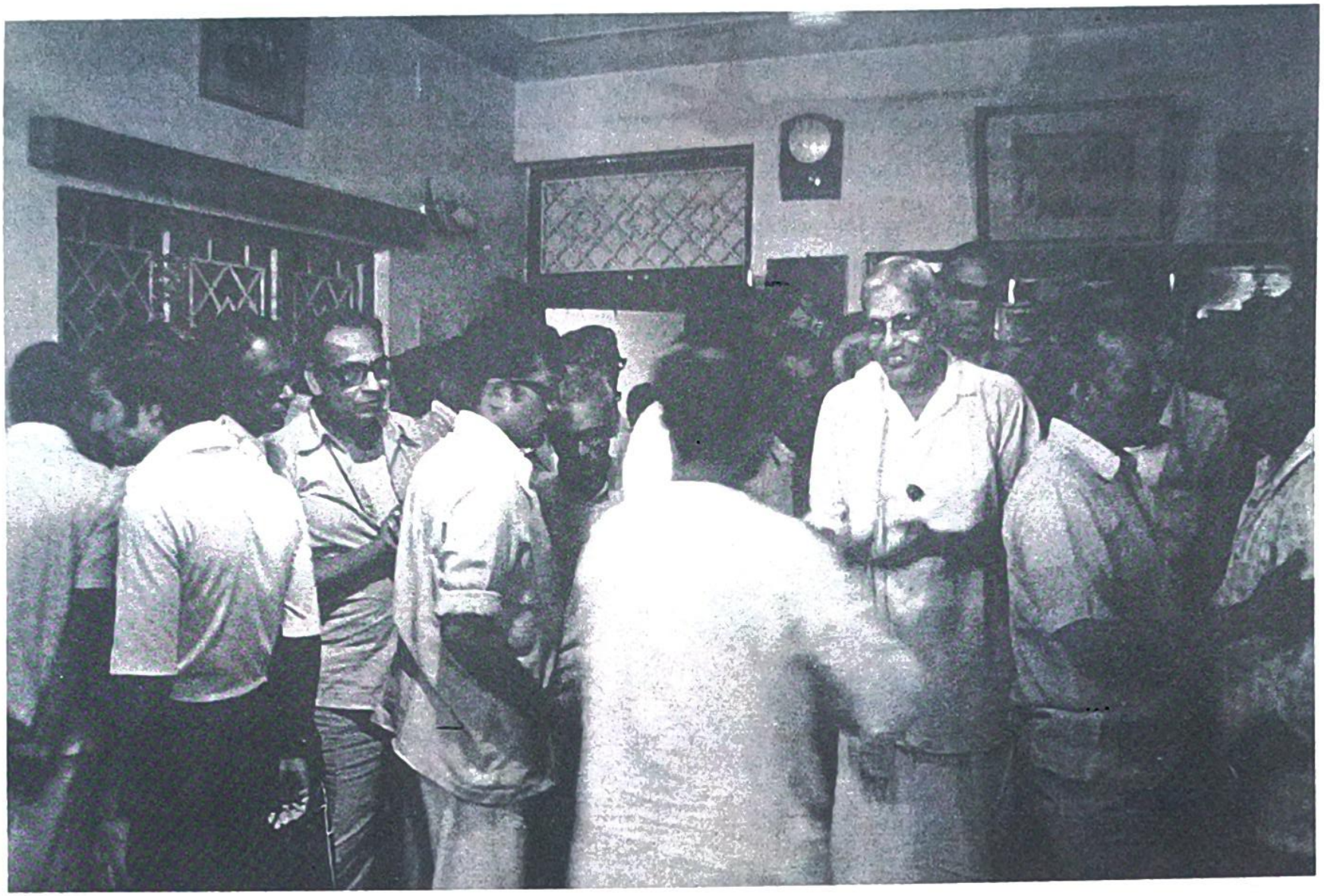

मालिक 'गायत्री' में अभ्यासियों को शुभकामनायें देते हुए

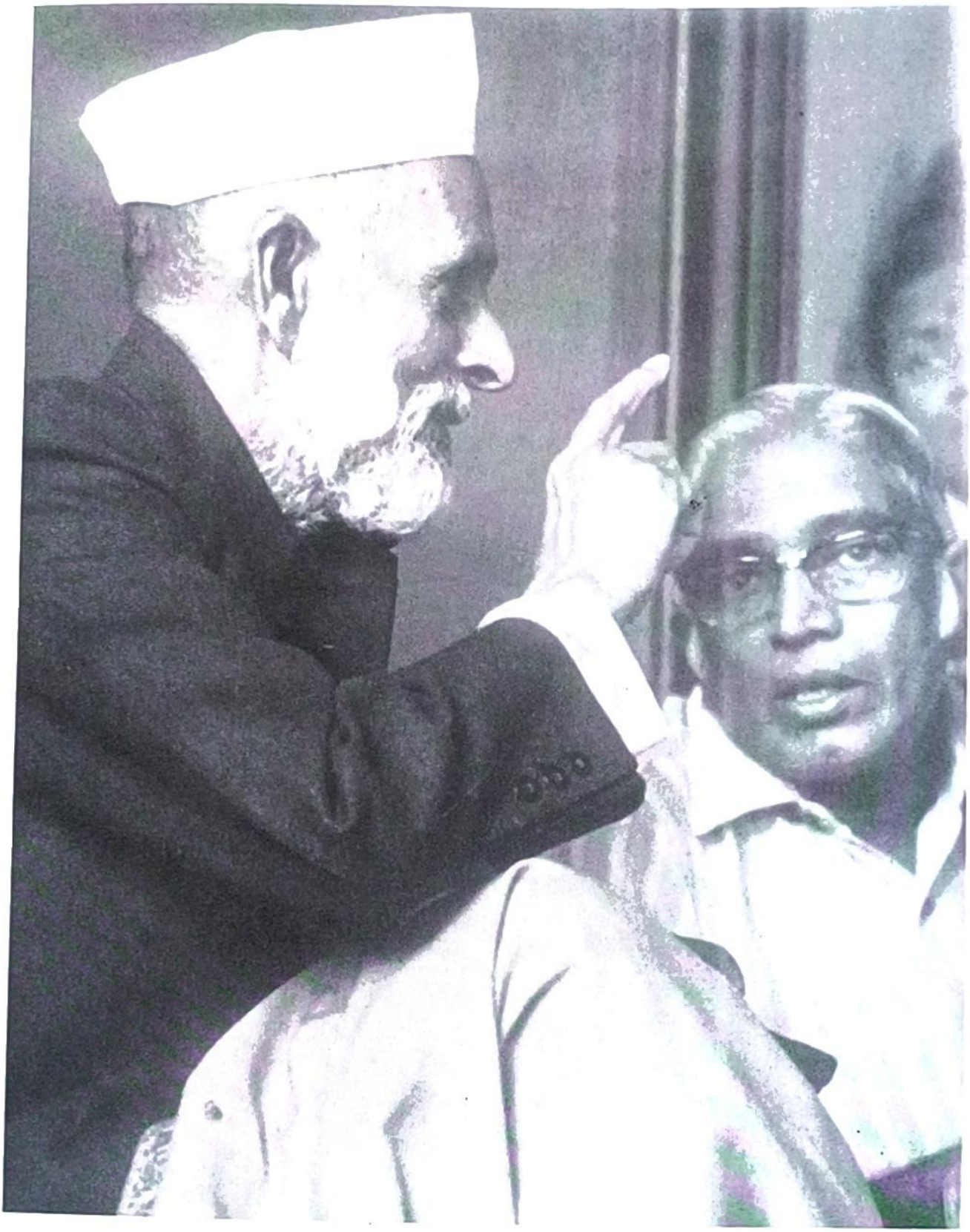

म्यूनिख़, मई 1980

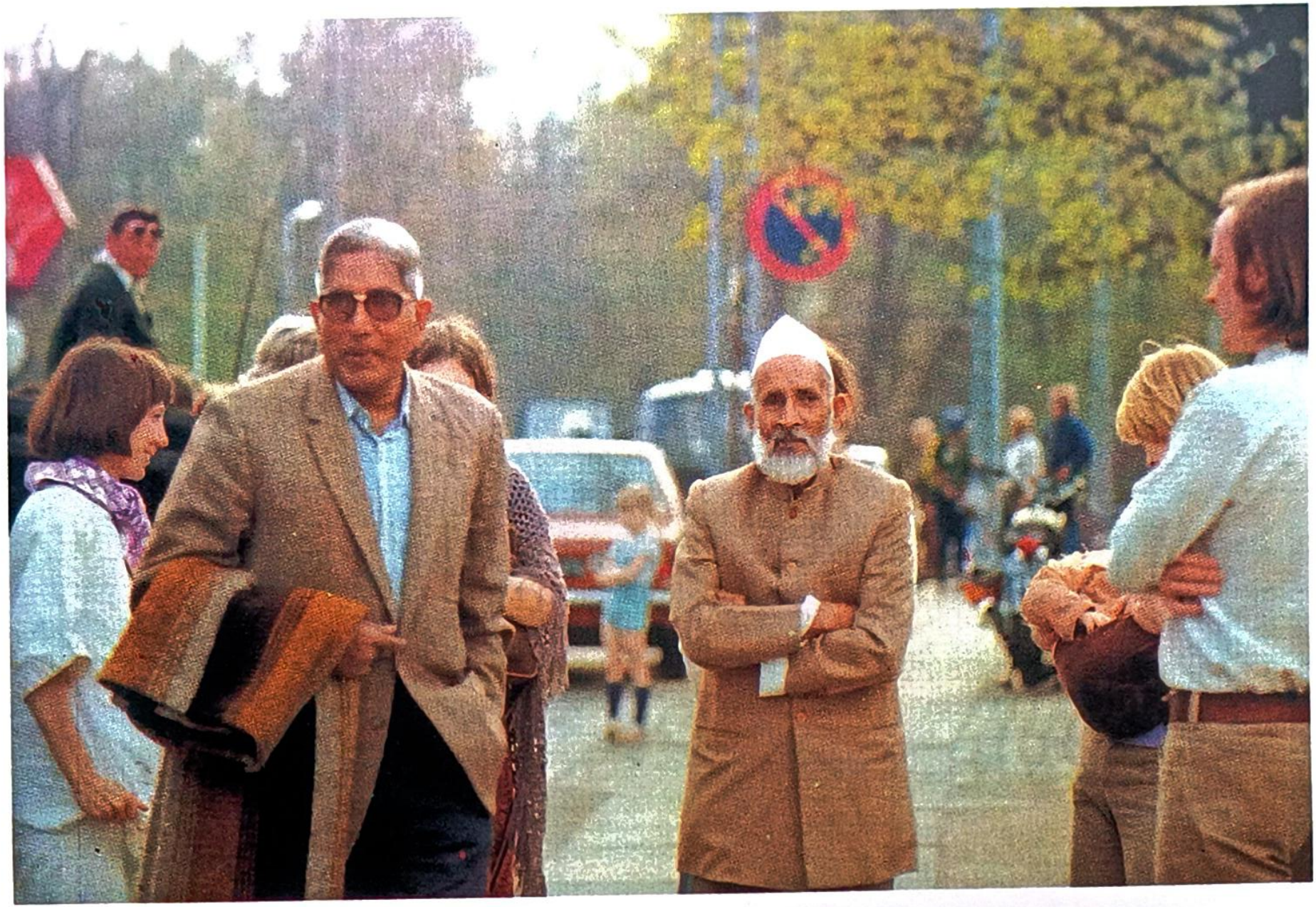

बसंत पंचमी शाहजहाँपुर, फरवरी 1978

के. वेथिलिंगम, बाबू जी, मालिक, और के० वी० रेड्डी, मलेशिया, अप्रैल 1977

कोपेहेगन, 1980

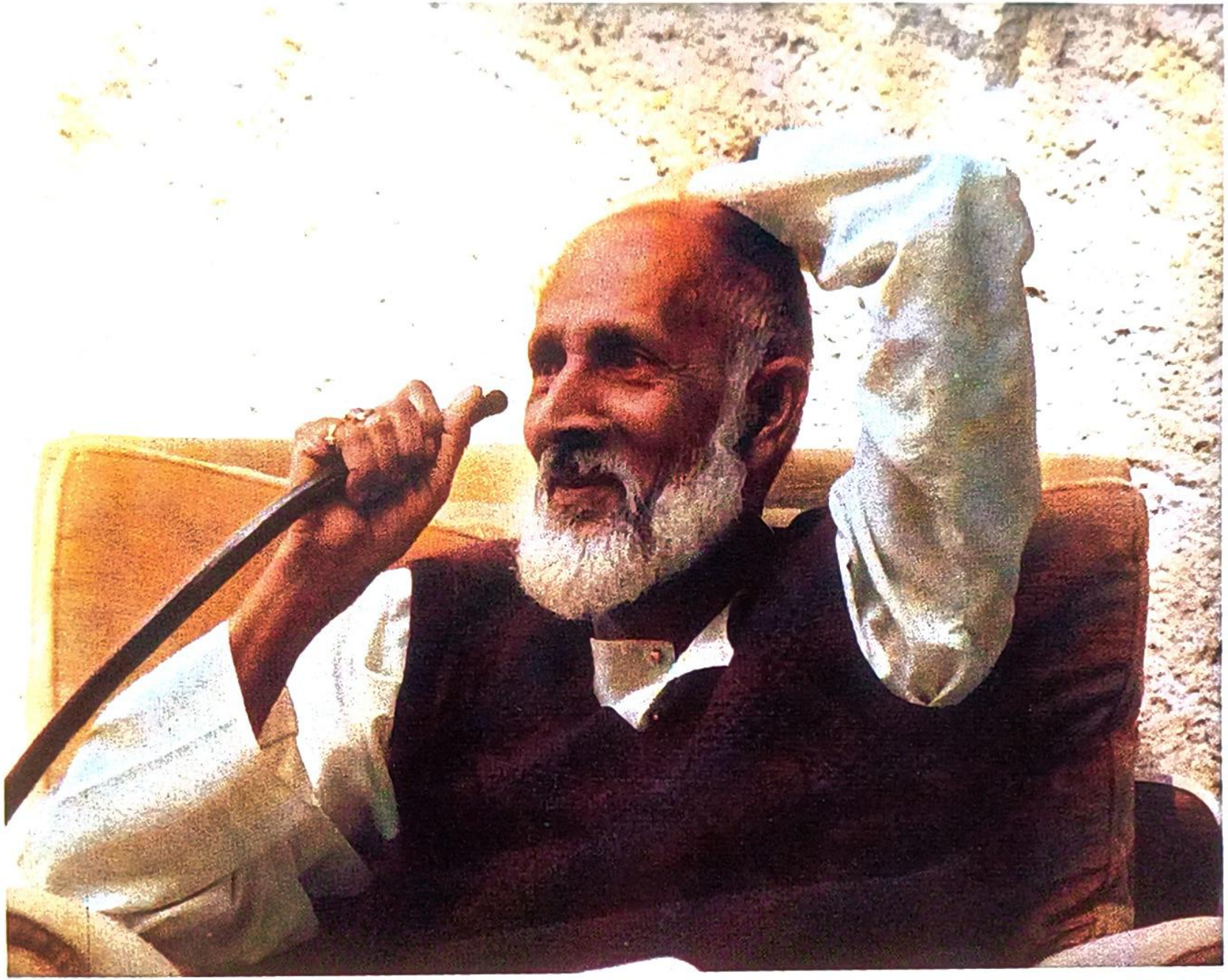

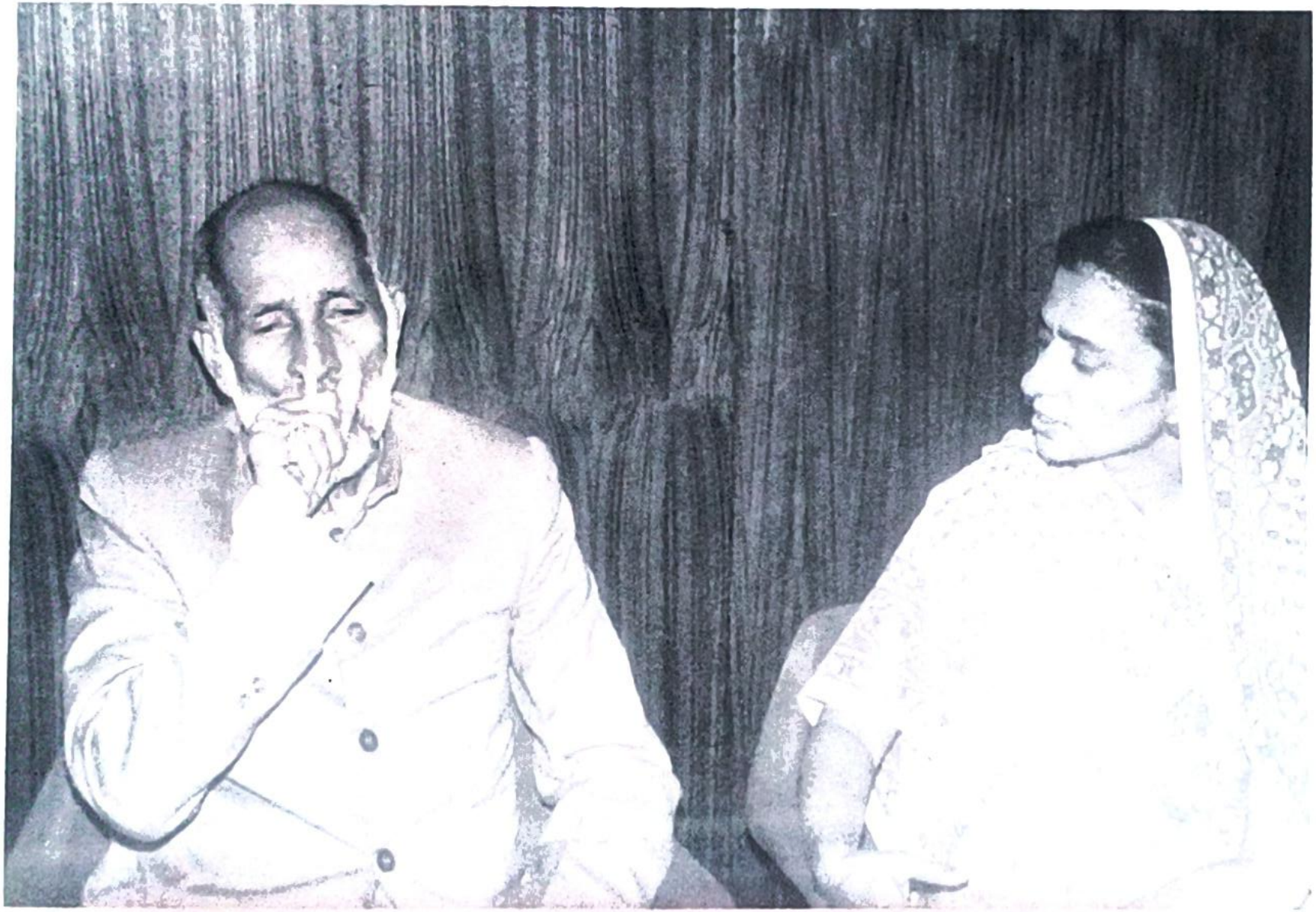

बाबूजी और बहन कस्तूरी

अहमदाबाद, अप्रैल 30, 1979

म्यूनिख़, मई 1980

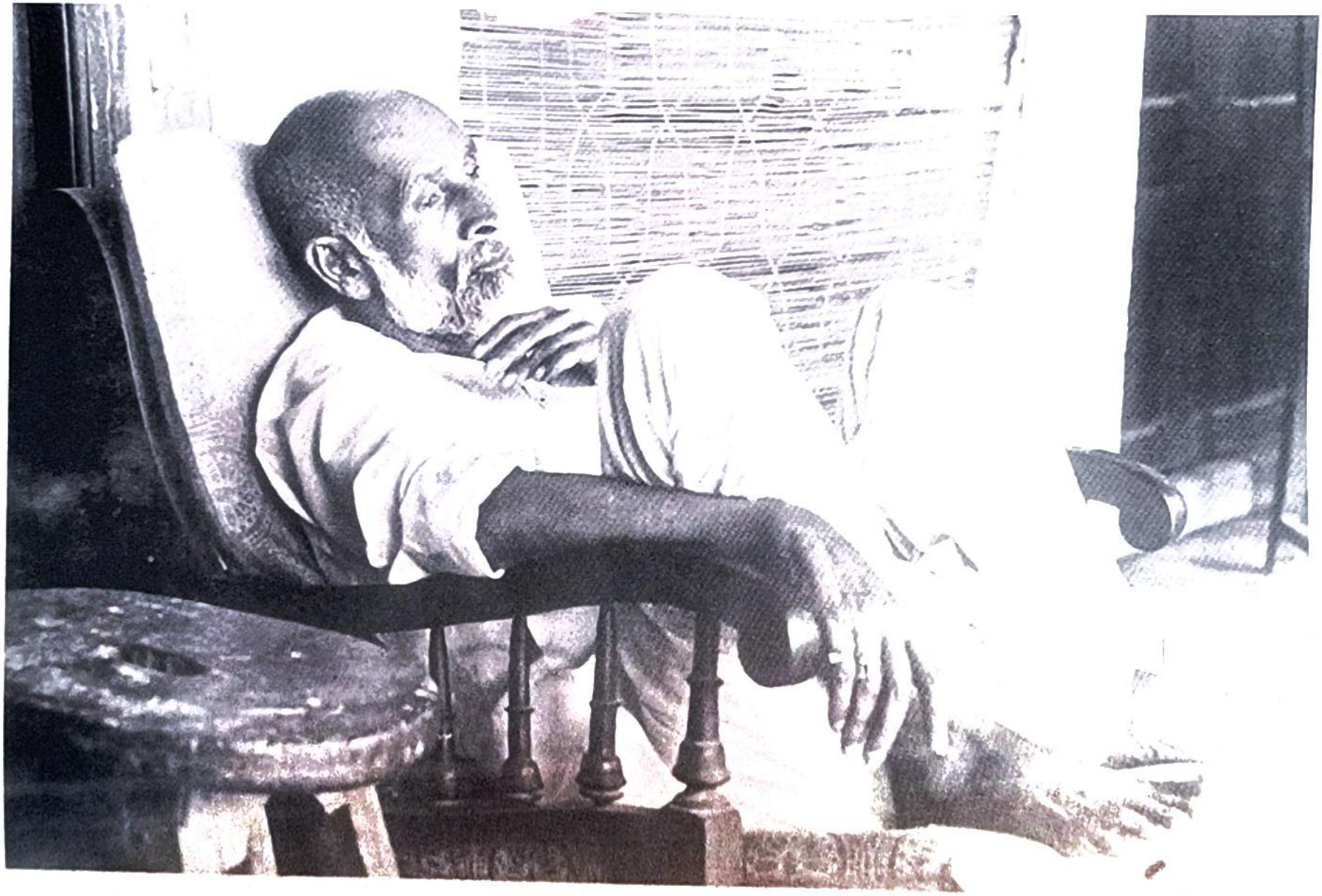

शाहजहाँपुर 1977

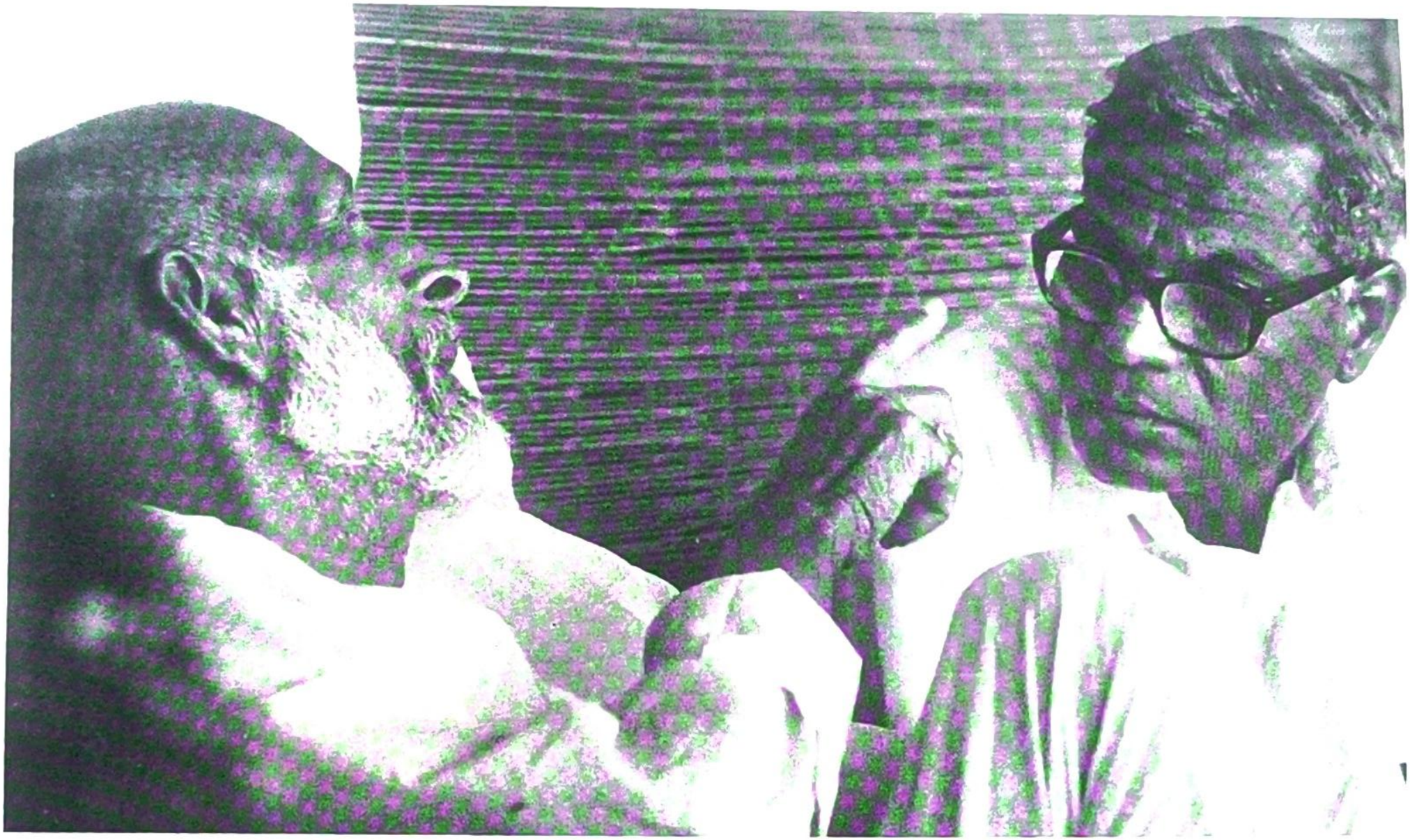

बाबूजी और गुन्डे राव

म्यूनिख़, मई 1980

19 मई 1978 – शुक्रवार

एस. के. सुन्दरम तथा उनकी पत्नी शाम को लगभग 6.00 बजे घर पर पधारे एवं रात्रि का भोजन हमारे साथ करने के पश्चात् रात्रि 9.30 बजे अपने घर की ओर रवाना हो गये। इस बीच मैंने उन्हें एक सिटिंग दी।

21 मई 1978 – रविवार

सुबह 7.30 बजे – मेरे पिताजी द्वारा सत्संग कराया गया जिसमें बहुत कम संख्या में अभ्यासी उपस्थित थे। ऐसी अफवाह उड़ी हुयी है कि बहुत से अभ्यासी स्वर्गीय वीर राघवन के निवास पर जाते हैं तथा उनकी खाली कुर्सी के समक्ष ध्यान में बैठते हैं। उनका कहना है कि उन्हें दिवंगत आत्मा से प्राणाहुति प्राप्त होती है।

मेरे पैर की स्थिति में निरंतर सुधार हो रहा है लेकिन जलन निरंतर बनी हुयी है तथा कुछ स्थानों पर भयंकर दर्द की शिकायत है। ऐसा प्रतीत हो रहा है कि इन दर्द वाले स्थानों पर चमड़ी के नीचे मवाद जमा हुआ है। कुल मिलाकर मेरी स्थिति बेहतर है तथा मालिक के जाने के बाद से मुझे बुखार भी नहीं आया है। इसके अलावा मेरे हाथ पूर्णतया ठीक हो चुके हैं।

22 मई 1978 – सोमवार

आज मैंने अपना कार्यभार ग्रहण कर लिया।

मालिक द्वारा मेरे पिताजी को भेजे गये पत्र की एक प्रति मुझे आज प्राप्त हुयी, मेरे पिताजी द्वारा दिये गये इस्तीफे के कारण निम्नपदों हेतु अपनी स्वीकारोक्ति भेजी :–

1) तमिलनाडु में मिशन के व्यवस्थापक के पद से।

2) कावली तथा नेल्लोर के व्यवस्थापक के पद से।

3) विदेश के केन्द्रों में मिशन के प्रभारी प्रशिक्षक के पद से।

मालिक द्वारा मेरे पिता जी को अगली व्यवस्था होने तक अंग्रेजी प्रभाग के संपादक के पद पर बने रहने के निर्देश दिये।

मालिक ने उन्हें घर पर ही प्रशिक्षक का कार्य करने की हिदायत भी दी, उनके पास जो व्यक्ति आये उनको सिटिंग दें।

मालिक ने मुझे उन व्यक्तियों के नाम सुझाये जाने हेतु निर्देश दिया था जिन्हें मैं संपादक के तथा विदेश के केन्द्रों के प्रभारी प्रशिक्षक के पद के लिये योग्य समझता हूँ।

23 मई 1978 – मंगलवार

मालिक को पत्र लिखकर मिशन के अंग्रेजी प्रभाग के संपादक के लिये कुछ नामों का सुझाव दिया। सरनाड, डॉ. जाजोदिया, डॉ. चंद्रिका प्रसाद और श्री सुरेश चन्द्र।

मैंने यह भी सुझाव दिया कि विदेश के प्रभारी प्रशिक्षक के पद को समाप्त कर दिया जाये तथा कावली एवं नेल्लोर के व्यवस्थापक के पद को फिलहाल खाली रहने दिया जाये। इसी प्रकार का प्रस्ताव मैंने तमिलनाडु राज्य के व्यवस्थापक के पद के लिये भी दिया।

24 मई 1978 – बुधवार

एम. डी. जहाँगीरदार, बी. जी. जनार्दन, बी. के. राजगोपाल, के. आर. कुमार तथा वी. वेनुगोपाल गुप्ता सुबह 5.30 बजे बैंगलोर से मेल द्वारा मद्रास पहुँचकर गायत्री पधारे। वे यहाँ बैंगलोर आश्रम के निर्माण हेतु अगले चरण की कार्यवाही के संदर्भ में चर्चा करने के लिये आये हैं ताकि आश्रम का कार्य पूर्ण किया जा सके। सुबह 10.00 बजे से लेकर दोपहर तक हमने इस मुद्दे पर विस्तार से चर्चा की। बैंगलोर आश्रम के पास मालिक के जन्मोत्सव कार्यक्रम के 2.90 लाख रुपये शेष हैं तथा उन्हें आश्रम का कार्य पूर्ण करने के लिये 3.50 लाख रुपये की आवश्यकता है। मैंने उन्हें इस शर्त के साथ कार्य करने की स्वीकृति दी कि वे अपने पास उपलब्ध राशि 2.90 लाख को निर्माण हेतु खर्च कर सकते हैं तथा बकाया 60000 रुपये की राशि की व्यवस्था उन्हें स्वयं करनी होगी। उन्हें मुख्यालय से इस राशि की अपेक्षा नहीं करनी चाहिये। वे खुशी–खुशी मेरे इस प्रस्ताव पर सहमत हो गये तथा रात्रि मेल से बैंगलोर की ओर वापस रवाना हो गये।

एस. बी. नारायणस्वामी, एस. पी. लोकनाथ तथा जमशेदपुर के आनंद स्वरूप हमारे घर पर पधारे तथा बैंगलोर के ग्रुप तथा हमारे साथ

रात्रि का भोजन किया।

26 मई 1978 – शुक्रवार (मदुरई)

आई. टी. पी. टी. के एस. के. मोहन तथा एस. पी. लोकनाथ के साथ सुबह 7.00 बजे मद्रास से कार द्वारा रवाना हुआ तथा 10.30 बजे वृधाचलम पहुँचा। एस. सदाशिवम के घर (47, डबल एस.टी.) में बीस मिनट व्यतीत करने के पश्चात् वहां से छः मील की दूरी पर करूवेप्पीलांकुरिची में स्थित बैंक में सदाशिवम् से भेंट करने के लिये पहुँचा। सदाशिवम् के साथ आधा घंटा व्यतीत करने के पश्चात् मैं त्रिची की ओर रवाना हो गया तथा दोपहर 1.30 बजे त्रिची पहुँच गया। त्रिची पहुँचकर होटल संगम में दोपहर का भोजन किया तथा 3.00 बजे त्रिची से रवाना होकर शाम 5.30 बजे मदुरई में वालमजी मेंशन पहुँचा।

शाम 7.00 बजे– तालाकुलम में पलानीचामी के निवास पर सत्संग कराया जिसमें प्रशिक्षक जे. आर. दोरेस्वामी अय्यर तथा डब्ल्यू.एच. श्रीनिवासन को मिलाकर कुल बीस अभ्यासी उपस्थित थे। सिटिंग आधा घंटा चली।

27 मई 1978– शनिवार (विरुदनगर)

सारा दिन विरुदनगर में कंपनी के कार्य में व्यस्त रहा।

28 मई 1978 – रविवार (मदुरई)

सुबह 7.30 बजे – मदुरई केन्द्र में सामूहिक सत्संग कराया जिसमें लगभग सत्तर अभ्यासी उपस्थित थे। सिटिंग पैंतालिस मिनट चली तथा अच्छी रही।

शाम 6.30 बजे – आठ अभ्यासियों का एक दल वालमजी मेंशन पहुँचा तथा मुझसे सामूहिक सिटिंग प्राप्त की।

30 मई 1978– मंगलवार

शाम 4.00 बजे तक विरुदनगर में कंपनी के कार्य में व्यस्त रहा तथा शाम 4.00 बजे विरुदनगर से रवाना होकर शाम 5.15 बजे राजापलायम पहुंचा।

शाम 5.30 बजे से 6.15 बजे तक राजापलायम केन्द्र में सामूहिक

सत्संग कराया जिसमें मात्र दस अभ्यासी उपस्थित थे। आई. टी. पी. टी. विरुदनगर के बी. रामचन्द्रन, आर. वर्धन तथा एस. पी. लोकनाथ के साथ साथ एस.के. मोहन भी सत्संग में उपस्थित थे। सत्संग के पश्चात् हम विरुदनगर के लिये रवाना हो गये तथा रात्रि का भोजन विरुदनगर में बी. रामचन्द्रन के निवास पर किया। रात्रि 9.00 बजे विरुदनगर से रवाना होकर रात्रि 10.00 बजे मदुरई पहुँचे।

1 जून 1978 – गुरुवार

सुबह 8.00 बजे कम्पनी के कार्य हेतु विरुदनगर पहुँचा तथा शाम 4.00 बजे मदुरई वापस लौट आया।

शाम 6.30 बजे – वालमजी मेंशन में सामूहिक सत्संग कराया जिसमें लगभग बीस अभ्यासी उपस्थित थे।श्री थस्मास्वामी तथा जे. आर. दौरेस्वामी अय्यर भी सम्मिलित थे।

मैंने तथा मोहन ने रात्रि का भोजन जे. आर. डी. के निवास पर किया जिसमें श्री पी. पलानीअप्पन भी आमंत्रित थे।

जे. आर. डी. थोड़ा गुमसुम नजर आ रहे थे और जब मैंने उनसे इसका कारण जानना चाहा तो वह अपने पर काबू नहीं रख सके तथा उन्होंने अपनी व्यथा सुनाई कि एम. डी. जहाँगीरदार बैंगलोर में मालिक के जन्मोत्सव कार्यक्रम के दौरान सभी से बेरुखी से पेश आ रहे थे। "वह व्यवहार में सभी से अभद्र तथा उद्दण्ड थे। वह भद्दी पुलिसिया भाषा का उपयोग कर रहे थे। कुछ आगन्तुक भी उनके इस व्यवहार के प्रत्यक्षदर्शी थे। बहुत से व्यक्ति जहाँगीरदार के व्यवहार से नाखुश हैं।"

2 जून 1978 – शुक्रवार (तंजावुर)

मेरे कंपनी के वाहन क्रमांक एम.डी.आर. 5952 को किसी कार्य के सिलसिले में टी वी एस के सुपुर्द कर दिया गया है तथा मोहन और मुझे एक अन्य वाहन टी.एन.आर. 1569 उपलब्ध कराया गया है। इसी वाहन से हम सुबह 8.30 बजे रवाना होकर 11.30 बजे तंजावुर पहुँचे तथा दोपहर तक कंपनी के कार्य में व्यस्त रहे।

दोपहर 3.00 बजे श्री बी. एम. सुन्दरम हमसे भेंट करने के लिये

टी. टी. डी. सी. यात्री बंगले में पहुँचे तथा मुझसे एक व्यक्तिगत सिटिंग प्राप्त की। तत्पश्चात् हम सभी उनके घर की ओर रवाना हो गये।

शाम 7.00 बजे – सामूहिक सत्संग कराया जिसमें सात अभ्यासी उपस्थित थे। सिटिंग आधा घंटे चली। तत्पश्चात् मैंने बी. एम. सुन्दरम की ज्येष्ठ पुत्री सौ. एस. बालाचन्द्रा को प्रथम सिटिंग दी। रात्रि 10.00 बजे यात्री बंगले पर वापस लौट आया। सारी रात बेचैनी रही तथा थोड़ी देर के लिये ही सो पाया। मैं समझ नहीं पा रहा था कि ऐसा किस कारण हुआ है।

3 जून 1978 – शनिवार

सुबह 6.30 बजे से निम्नलिखित व्यक्तियों को टी. टी. डी. सी. यात्री बंगले पर व्यक्तिगत सिटिंग दी। 1) श्री एवं. श्रीमती अशोकन 2) दक्षिण रेलवे के पार्सल क्लर्क श्री गणेश अय्यर 3) गणेश अय्यर के पुत्र मनी तथा बाला जी 4) बी. एम. सुन्दरम 5) एस. बी. आई. के शिवराम कृष्णन।

सिटिंग के पश्चात् नाश्ते के लिये बी. एम. सुन्दरम के घर की ओर रवाना हुआ तथा नाश्ता करने के पश्चात सुन्दरम की पुत्री बाला को द्वितीय सिटिंग दी, तत्पश्चात् सुन्दरम की पत्नी लीला सुन्दरम को व्यक्तिगत सिटिंग दी। श्री एवं श्रीमती मुत्तुस्वामी को सिटिंग दी तथा अंत में मन्नारगुड़ी को एक अभ्यासी जो आधा घंटे पूर्व ही यहाँ पहुँचा था, को सिटिंग दी।

मोहन के साथ सुबह 11.30 बजे तंजावुर से कार द्वारा रवाना होकर दोपहर 1.00 बजे त्रिची पहुँचा। (अशोक भवन, कमरा नं. 63)

दोपहर 1.00 बजे स्थानीय प्रशिक्षक के. सुब्रामनियम अशोक भवन पहुँचे तथा हमारे साथ एक घंटा व्यतीत किया।

शाम 5.30 बजे – त्रिची केन्द्र के एस. राजू तथा नौ अन्य अभ्यासी मुझसे भेंट करने के लिये अशोक भवन पहुँचे। शाम 7.00 बजे तक मैं उनसे चर्चा में व्यस्त रहा। शाम 5.00 बजे एस. सदाशिवम भी बस द्वारा वृधाचलम से यहाँ पहुँच गये थे।

शाम 7.00 बजे – एकत्रित अभ्यासियों (बारह) को सामूहिक सत्संग कराया। सिटिंग चालिस मिनट चली।

4 जून 1978 – रविवार (त्रिची)

सुबह 7.00 बजे, त्रिची केन्द्र के प्रभारी प्रशिक्षक कैप्टन टी.एन. रामास्वामी के यहाँ उनके पिता के निधन पर संवेदना व्यक्त करने के लिये तिल्लई नगर पहुँचा।

सुबह 7.30 बजे से 8.10 बजे तक त्रिची केन्द्र में सामूहिक सत्संग कराया। सिटिंग बहुत अच्छी रही। सत्संग में चौबीस अभ्यासी उपस्थित थे। सत्संग के पश्चात् आधा घंटे तक अभ्यासियों से तमिल में चर्चा की। सुबह 9.30 बजे मोहन तथा सदाशिवम् के साथ कार से त्रिची से रवाना होकर सुबह 11.30 बजे वृधाचलम पहुँचा। दोपहर का भोजन सदाशिवम् के निवास पर किया। सदाशिवम् को उसके घर पर छोड़कर हम मद्रास की ओर रवाना हो गये तथा शाम 5.00 बजे अपने घर पहुँच गये।

11 जून 1978 – रविवार

श्री ए. एच. कृष्णा सिटिंग के लिये मेरे घर पर पधारे तथा मेरे साथ तीन घंटे व्यतीत किये। इस दौरान हमने मिशन को आयकर में धारा 10(23) सी(5) अथवा सी(4) के अंतर्गत सीधी छूट दिये जाने के प्रावधान के विषय पर विचार विमर्श किया। उन्होंने मुझे उनके दूर के रिश्ते के भाई (मौसी के पुत्र) श्री एस. सुब्रामनियम जो विजया बैंक त्रिची में शाखा प्रबंधक के पद पर कार्यरत हैं, से इस विषय पर विचार विमर्श करने के लिये आगामी रविवार त्रिची जाने का सुझाव दिया। उनका ऐसा विचार था कि वह इस मामले में हमारी मदद कर सकते हैं।

15 जून 1978 – गुरुवार (कोडइकेनाल)

बुधवार 14 जून की सुबह से मैं कोडइकेनाल में हूँ। आज सुबह 2.00 बजे से 6.00 बजे के मध्य मैंने एक स्वप्न देखा। मैंने देखा कि मैं मालिक के दाढ़ी के बालों की छंटनी कर रहा हूँ तथा कार्य पूर्ण होने को है तथा जबड़े की सीध में ठुड्डी के नीचे गर्दन के बालों की छँटाई चल रही है कि अचानक झटके से मालिक अपना सिर नीचे की ओर झुकाते हैं, उनकी ठुडडी मेरे हाथ से टकराती है तथा मुझसे उनकी चमड़ी पर खरोंच लग जाती है। इसके लिये वे मुझे दोषी ठहराते हैं। मैं उनसे कहता

हूँ कि यदि वे स्थिर रहते तो मेरे हाथ को झटका नहीं लगता तथा उनकी चमड़ी में खरोंच नहीं लगी होती। इसमें उन्हीं की गलती है। मालिक मुस्कुराते हुये अपनी गलती स्वीकार कर लेते हैं तथा कहते हैं, "हाँ यह मेरी गलती थी।" तत्पश्चात् वे मुझे गले से लगाकर चूमने लगते हैं। स्वप्न समाप्त हो जाता है। क्या यह मेरे उस पत्र का जवाब है जो मैंने कुछ दिन पूर्व उन्हें लिखा था? हो सकता है।

17 जून 1978 – शनिवार (त्रिची)

दोपहर 2.30 बजे कोडइकेनाल से रवाना होकर सेमपत्ती तथा डिडीगुल मार्ग से होते हुये शाम 6.15 बजे त्रिची पहुँचा। वृधाचलम के एस. सदाशिवम मेरे पहुँचने के पच्चीस मिनट पूर्व ही त्रिची पहुँचे थे। श्री एवं श्रीमती दशरथन, प्रशिक्षक के.सुब्रामनियम तथा श्री ए.कृष्णामूर्ति मुझसे भेंट करने के लिये पहुँचे एवं शाम 7.00 बजे हमने सत्संग किया।

रात्रि 10.00 बजे विजया बैंक के एस. सुब्रामनियम तथा ए. एच. कृष्णा के मौसेरे भाई अशोक भवन पधारे। हमने मिशन को आयकर छूट का लाभ दिलाने के विषय को लेकर लगभग एक घंटे तक चर्चा की।

18 जून 1978 – रविवार (त्रिची)

सुबह 7.30 बजे से 8.15 बजे तक भिल्लई नगर स्थित त्रिची केन्द्र में सामूहिक सत्संग कराया।

सुबह 8.45 बजे मैं समीप ही स्थित एस. सुब्रामनियम के निवास पर पहुँचा। लेखा परीक्षक (ऑडिटर) जी. सन्थानम वहाँ पहले से ही उपस्थित थे। सुबह 10.30 बजे तक हम चर्चा में व्यस्त रहे। चर्चा के दौरान श्री सन्थानम ने मुझे जानकारी दी कि किस प्रकार से उन्होंने अन्य संस्थाओं को आयकर की सीधी छूट का लाभ दिलवाने के लिये कार्यवाही की थी। उन्होंने कहा कि हमारे मिशन के लिये प्रस्ताव प्रस्तुत करने हेतु उन्हें कोई फीस इत्यादि नहीं चाहिये, हमें मात्र उनकी यात्रा पर होने वाले वास्तविक खर्च को वहन करना होगा। मुझे इस विषय पर आगे की कार्यवाही के लिये मालिक से लिखित अनुमति प्राप्त करनी होगी।

शाम 3.30 बजे शिक्षक के. महालिंगम, दशरथन, एस. सदाशिवम

तथा बी. रामचन्द्रन (आई.टी.पी.टी.) को सिटिंग दी। शाम 4.00 बजे त्रिची से रवाना होकर शाम 6.10 बजे मदुरई पहुँचा तथा सदाशिवम को साथ लेकर जे.आर.दोरेस्वामी अय्यर के यहाँ पहुँचा, ज्ञात हुआ कि वह दौरे पर गया हुआ है। अतः उसके घर से सीधे श्री थस्मास्वामी के यहाँ पहुँचा तथा उनसे चर्चा करने के पश्चात् रात्रि 9.00 बजे वालमजी मेंशन वापस लौट आया।

19 जून 1978 – सोमवार (मदुरई)

सारा दिन विरुदनगर में कंपनी के कार्य में व्यस्त रहा तथा शाम 4.00 बजे मदुरई लौट आया।

शाम 6.30 बजे – सदाशिवम को व्यक्तिगत सिटिंग दी, सिटिंग के दौरान मैंने मालिक को उनके हृदय में देखा, दृष्य एकदम स्पष्ट तथा साफ नजर आ रहा था। मुझे ऐसा महसूस हो रहा था कि उनमें समर्पण बढ़ता जा रहा है। सदाशिवम रात्रि 9.00 बजे वृधाचलम की ओर रवाना हो गये।

20 जून 1978 – मंगलवार

शाम 7.00 बजे वालमजी में सामूहिक सत्संग कराया जिसमें 26 अभ्यासी उपस्थित थे। सत्संग के उपरान्त "निषेध अवस्था" के संदर्भ में सामूहिक चर्चा का लम्बा दौर चला।

21 जून 1978 – बुधवार

सुबह 7.00 बजे – गोपाल को सिटिंग दी।

सारा दिन विरुदनगर में कंपनी के कार्य में व्यस्त रहा।

शाम 4.00 बजे – पी. पलानीअप्पन को सिटिंग दी।

शाम 7.15 बजे बी. रामचन्द्रन के साथ पंड्यन एक्सप्रेस से मद्रास की ओर रवाना हो गया।

28 जून 1978 – बुधवार

शाम 5.40 बजे – येरागुन्टला के श्री एम. वैंकटसुबैया को तथा तत्पश्चात् मि. पुल्ला रेड्डी को व्यक्तिगत सिटिंग दी।

29 जून 1978 – गुरुवार

शाम 5.30 बजे येरागुन्टला के एस. वैंकटसुबैया को तथा तत्पश्चात् अल्लादुपल्ली (येरागुन्टला से 6 मील की दूरी पर स्थित) के के. पुल्लारेड्डी

को सिटिंग दी।

शाम 7.30 बजे – एम. रविकुमार, राजकुमार, सुलोचना, कृष्णा, एस. के. मोहन तथा मेरे चचेरे भाई के. रंगामणि को सिटिंग दी।

30 जून 1978 – शुक्रवार

सुबह 7.00 बजे – येरागुन्टला के एम. वैंकटसुबैया, श्री पुल्लारेड्डी श्री एम. रविकुमार, एस. के. मोहन तथा के. रंगामणि को सिटिंग दी।

अप्पा सुबह 9.50 बजे चोलन एक्सप्रेस से तंजावुर के रास्ते तिरुचिरापल्ली की ओर रवाना हो गये।

1 जुलाई 1978 – शनिवार

नैल्लोर के प्रशिक्षक के. रामचन्द्र रेड्डी मेरे निवेदन करने पर आज सुबह 7.30 बजे मुझसे भेंट करने के लिये पहुँचे तथा सुबह 9.30 बजे वापस लौट गये। इस दौरान हमने नैल्लोर के कार्यक्रम के सम्बन्ध में चर्चा की।

2 जुलाई 1978 – रविवार

सुबह 7.30 बजे मैंने सामूहिक सत्संग कराया।

अप्पा ने मुझे मदुरई से फोन पर जानकारी दी कि जिस दिन वे मद्रास से रवाना हुये थे उसी दिन चिंगलपुट में जो मद्रास से बत्तीस मील की दूरी पर है, उनका कंधा चोटग्रस्त हो गया था। ऐसी परिस्थिति में उन्हें घर लौट आना चाहिये था। चिंगलपुट से मद्रास का मात्र एक घंटे का सफर है लेकिन उन्होंने वापस लौटने की अपेक्षा मदुरई जाने का निर्णय लिया।

3 जुलाई 1978 – सोमवार

अभ्यासी भाई एस. शंकर (आई.टी.पी.टी.) का विवाह आज सम्पन्न हुआ। उसके विवाह समारोह में सम्मिलित हुआ।

4 जुलाई 1978 – मंगलवार

मदुरई से जानकारी मिली कि अप्पा अस्वस्थ हैं तथा बिस्तर पर पड़े हुये हैं। एस. पी. लोकनाथ ने उनके एक्सरे इत्यादि की व्यवस्था करवाई जिससे ज्ञात हुआ कि उनके कंधे में फ्रेक्चर नहीं है। अभ्यासी डॉ. सत्पथी उनकी देखरेख कर रहे हैं।

6 जुलाई 1978 – गुरुवार

सुबह 7.00 बजे एस. मुथैया को व्यक्तिगत सिटिंग दी। भारी स्थूलता जमा होने के कारण उन्हें गहन सफाई की आवश्यकता है।

8 जुलाई 1978 – शनिवार (नैल्लोर)

दोपहर 1.40 बजे कार से नैल्लोर की ओर रवाना हुआ जो मद्रास से 105 मील दूर उत्तर में स्थित है। भाई एस.के.मोहन तथा एस.पी. नरसिम्हा भी इस दौरे पर मेरे साथ थे। गर्मी, धूल तथा सड़क की दुर्दशा के कारण यात्रा में अत्यंत थकान हो गयी थी। मेरे विगत दौरे की अपेक्षा वर्तमान में सड़क की स्थिति अत्यन्त दयनीय हो गयी थी। मेरा विगत दौरा कब हुआ था यह मुझे याद नहीं है। विशेष रूप से सुलुरपेट तथा गुडूर के बीच सड़क की स्थिति अत्यंत ही दयनीय थी। शाम 5.20 बजे हम नैल्लोर पहुँचे। सौ मील की इस सड़क यात्रा में हमें तीन घंटे चालीस मिनट का समय लगा।

नैल्लोर केन्द्र का यह मेरा प्रथम भ्रमण है। प्रभारी प्रशिक्षक के. रामचन्द्र रेड्डी ने होटल अनुराग पहुँचने पर हमारा स्वागत किया। इसी होटल में हमारे ठहरने की व्यवस्था की गयी थी। होटल में स्नानादि करने के पश्चात् हम शाम 6.15 बजे प्रशिक्षक के निवास की ओर रवाना हुये। कावेली केन्द्र के प्रभारी प्रशिक्षक अपनी पत्नी के साथ हमारे पहुँचने के कुछ देर पूर्व ही यहाँ पहुँच चुके थे।

शाम 7.00 बजे – सामूहिक सत्संग कराया। सिटिंग पचपन मिनट चली तथा बहुत अच्छी रही। वातावरण में सम्पूर्ण शान्ति तथा स्थिरता व्याप्त थी। सत्संग में लगभग बावन अभ्यासी उपस्थित थे।

रात्रि भोज वहाँ पर करने के पश्चात् रात्रि 10.00 बजे होटल अनुराग वापस लौट आये।

9 जुलाई 1978 – रविवार

श्री के. रामचन्द्र रेड्डी, प्रशिक्षक, केप्टन के. के. मूर्ति तथा चार अन्य अभ्यासी होटल अनुराग पधारे तथा साथ में नाश्ता किया। हम सभी सुबह 8.00 बजे प्रशिक्षक के निवास की ओर रवाना हो गये।

सुबह 9.00 बजे मैंने सामूहिक सत्संग कराया। सिटिंग पैंतीस मिनट चली। सत्संग में कुल मिलाकर इक्यानवे अभ्यासी उपस्थित थे जिसमें नैल्लोर के अभ्यासियों की संख्या चौरासी की थी जबकि नैल्लोर के पंजीकृत अभ्यासियों की कुल संख्या तेरानवे है। यह वाकई प्रशंसनीय प्रयास है जिससे के. रामचन्द्र रेड्डी की योग्यता का पता चलता है। सिटिंग बहुत अच्छी रही।

सत्संग के पश्चात् कावेली के डी.एस.के. सुब्रामन्या शास्त्री ने पच्चीस मिनट तक तेलगू में अपना उद्बोधन दिया, तत्पश्चात् मैंने एक घंटे तक अंग्रेजी भाषा में अपना उद्बोधन दिया। मेरे उपरान्त एस.पी.नरसिम्हा ने पाँच मिनट में अपने विचार सबके समक्ष रखे। अन्त में के.रामचन्द्र रेड्डी ने अपना उद्बोधन दिया। सुबह 11.30 बजे इस सत्र की समाप्ति के पश्चात् हमने दोपहर का भोजन किया तथा होटल अनुराग वापस लौट आये। मेरे सिर में तेज दर्द था। दो बार उल्टी होने के पश्चात् इसमें थोड़ी राहत महसूस हुयी। दोपहर 2.00 बजे हम मद्रास की ओर रवाना हो गये तथा गर्मी, धूल एवं अत्यंत थकान भरी यात्रा के पश्चात् हम शाम 5.30 बजे घर पर पहुँच गये।

10 जुलाई 1978 – सोमवार

एस. पी. लोकनाथ ने विरुदनगर से फोन पर सूचित किया कि अप्पा की स्थिति बेहतर है तथा वे मदुरई से विरुदनगर आ गये हैं एवं सम्भवतः वे आज शाम को मद्रास के लिये रवाना होंगे।

19 जुलाई 1978 – बुधवार

मद्रास से क्यूलोन मेल द्वारा विरुदनगर पहुँचा। सारा दिन आई. टी.पी.टी. के कार्य में व्यस्त रहा।

शाम 7.00 बजे – मदुरई केन्द्र में सामूहिक सत्संग कराया जिसमें चालीस अभ्यासी उपस्थित थे। सिटिंग पचास मिनिट चली तथा अच्छी रही। मुझे मदहोशी का अहसास हो रहा था।

20 जुलाई 1978 – गुरुवार

सुबह 7.00 बजे – टी.वी.एस. के एस. सुन्दरराजन को व्यक्तिगत

सिटिंग दी। सारा दिन विरुदनगर में व्यतीत करने के पश्चात् शाम 5.30 बजे मदुरई वापस लौट आया।

शाम 7.00 बजे वालमजी में सामूहिक सत्संग कराया, सिटिंग पचास मिनट चली तथा अच्छी रही। सत्संग में लगभग पैंतीस अभ्यासी उपस्थित थे। रात्रि 9.00 बजे तक अभ्यासियों के दल से चर्चा में व्यस्त रहा।

21 जुलाई 1978 – शुक्रवार

सारा दिन विरुनगर में आई.टी.पी.टी. की विनिमय संगोष्ठी में व्यस्त रहा।

शाम 7.00 बजे तालाकुलम में पलानीचामी के निवास पर सामूहिक सत्संग कराया। इस छोटे से कक्ष में चालीस से भी अधिक संख्या में अभ्यासी उपस्थित थे। कमरे से लगा छोटा सा बरामदा भी अभ्यासियों से पूरी तरह से भरा हुआ था। सिटिंग बहुत अच्छी रही। सत्संग के उपरान्त रात्रि 8.30 बजे तक अभ्यासियों से चर्चा की।

22 जुलाई 1978 – शनिवार

दोपहर तक आई.टी.पी.टी. विरुदनगर में रहा तथा दोपहर 2.30 बजे मदुरई लौट आया।

शाम 7.00 बजे वालमजी मेन्शन में सामूहिक सत्संग कराया। सिटिंग चालीस मिनट चली तथा बहुत अच्छी रही, शान्त निश्चल। सत्संग में लगभग चालीस अभ्यासी उपस्थित थे। तत्पश्चात् रात्रि 9.00 बजे तक अभ्यासियों से चर्चा में व्यस्त रहा।

23 जुलाई 1978 – रविवार (मदुरई)

सुबह 7.30 बजे मदुरई केन्द्र में सामूहिक सत्संग कराया। सिटिंग पैंतालिस मिनट चली। सत्संग में लगभग पचहत्तर अभ्यासी उपस्थित थे। सिटिंग के पश्चात् लगभग आधा घंटे तक मैंने तमिल में उद्‌बोधन दिया, तत्पश्चात् केन्द्र के लेखा की ज़ाँच की।

शाम 4.00 बजे प्रशिक्षक वी. जे. चन्द्रशेखर को वालमजी में व्यक्तिगत सिटिंग दी।

श्री जे. आर. दोरेस्वामी अय्यर, उनके पुत्र डी. रामास्वामी, तथा पी. पलानीअप्पन को सिटिंग दी। सिटिंग के पश्चात् जे. आर. डी. ने कहा कि यह उनके द्वारा अभी तक ली गयी सिटिंग में से सबसे अच्छी रिटिंग थी। शाम 7.15 बजे पंड्यन एक्सप्रेस से मदुरई से मद्रास की ओर रवाना हो गया।

24 जुलाई 1978 – सोमवार

सुबह 6.10 बजे मद्रास पहुँचकर सुबह 6.30 बजे अपने घर पर पहुँच गया।

आज मेरा बावनवाँ जन्मदिवस है। कोदण्ड तथा उनका परिवार अप्पा का हालचाल जानने के लिये मद्रास आया हुआ है। अप्पा अभी भी अस्वस्थ हैं तथा बिस्तर पर पड़े हुये हैं। दोपहर भोजन के पश्चात् कोदण्ड अपने परिवार के साथ बैंगलोर रवाना हो गये।

शाम 6.30 बजे – एस. मुथैया तथा अपनी पत्नी सुलोचना को सिटिंग दी।

मद्रास के अलावा अन्य स्थानों पर किये गये कार्य को छोड़कर मैं आज के पश्चात् अपने द्वारा दी गयी सिटिंग का रिकार्ड नही रखूँगा। मद्रास में दी गयी स्थानीय अभ्यासियों की सिटिंग की जानकारी तथा आध्यात्मिक लेखा जोखा मेरी वार्षिक डायरी में उल्लेखित रहेगा।

3 अगस्त 1978 – गुरुवार

कोयम्बटूर के प्रशिक्षक डॉ. एस. एस. रामकृष्णन तथा उनकी बहन अनुसुइया सुबह 7.00 बजे गायत्री पधारे। वे शाहजहाँपुर जा रहे हैं। शाम 4.00 बजे वे स्टेशन की ओर रवाना हो गये, उन्हें ग्रांड ट्रंक एक्सप्रेस से रवाना होना है।

4 अगस्त 1978 – शुक्रवार

दिल्ली से श्री सी. रामकृष्णा ने फोन पर चर्चा की।

6 अगस्त 1978 – रविवार

सुबह 7.30 बजे सामूहिक सत्संग कराया। सिटिंग पैंतालिस मिनट चली। यह बहुत गहरी और अच्छी थी। 8.00 बजे के पश्चात् प्राणाहुति

आत्माचक्र से प्राप्त हो रही थी। सत्संग में लगभग सत्तर अभ्यासी उपस्थित थे।

बैंगलोर के एस. के. सुन्दरम तथा उनकी पत्नी सरोजा यहीं हैं।

7 अगस्त 1978 – सोमवार

सुबह 9.00 बजे अपने व्यक्तिगत सहायक श्री टी. एस. राजगोपालन के साथ कार से मदुरई के लिये रवाना हुआ। वृधाचलम से दक्षिण की ओर 6 मील की दूरी पर स्थित करुवेप्पीलाँकुरिची में अभ्यासी भाई एस. सदाशिवम से भेंट करने के लिये रुके। वे यहाँ स्टेट बैंक में कार्यरत हैं। हम यहाँ दोपहर 12.00 बजे से दोपहर 12.15 बजे तक रुके। यहाँ से त्रिची की ओर रवाना होकर दोपहर 2.35 बजे त्रिची पहुँचे। त्रिची में दोपहर का भोजन करने के पश्चात् हम यहाँ से दोपहर 3.30 बजे कट्टमपट्टी मार्ग से पूर्व दिशा में पाँच मील की दूरी पर स्थित सिंगमपुनारी पहुँचे तथा अपने चाचा की पत्नी कामली से भेंट करने के पश्चात् रात्रि 7.00 बजे वापस मदुरई लौट आये।

8 अगस्त 1978 – मंगलवार (मदुरई)

सुबह 7.00 बजे– टी. एस. राजगोपालन को व्यक्तिगत सिटिंग दी।

शाम 7.00 बजे – वालमजी में सामूहिक सत्संग कराया जिसमें पच्चीस लोग उपस्थित थे। सत्संग के पश्चात् मैंने वहाँ एकत्रित सभी व्यक्तियों से रात्रि 9.15 बजे तक चर्चा की।

9 अगस्त 1978 – बुधवार

सुबह 7.00 बजे– टी. एस. राजगोपालन को व्यक्तिगत सिटिंग दी।

शाम 7.00 बजे – तिरुनगर उपकेन्द्र में श्री डब्ल्यू. एच. श्रीनिवासन के निवास पर सामूहिक सत्संग कराया। लगभग बीस अभ्यासी उपस्थित थे। सिटिंग चालीस मिनट की रही।

10 अगस्त 1978 – गुरुवार

शाम 7.00 बजे – वालमजी मेन्शन में सामूहिक सत्संग कराया। सिटिंग पैंतालिस मिनट की रही। लगभग चालीस अभ्यासी उपस्थित थे। सिटिंग अच्छी रही। मैंने एकत्रित अभ्यासियों से रात्रि 8.30 बजे तक चर्चा की।

11 अगस्त 1978 – शुक्रवार

शाम 7.00 बजे – तालाकुलम में श्री पलानीचामी के निवास पर चालीस मिनट तक सामूहिक सत्संग कराया। लगभग बीस अभ्यासी उपस्थित थे। सिटिंग अच्छी रही। प्राणाहुति अत्यन्त सूक्ष्म थी किन्तु गहरी थी। रात्रि 8.10 बजे तक चर्चा में व्यस्त रहा।

12 अगस्त 1978 – शनिवार (त्रिची)

दोपहर 3.00 बजे आई.टी.पी.टी. के अधिकारियों श्री बी. रामचन्द्रन, श्री टी. जकारिया तथा श्री एस. पी. लोकनाथ के साथ कार द्वारा मदुरई से रवाना हुआ। शाम 5.15 बजे त्रिची पहुँचा। एस. सदाशिवम करुवेप्पीलाँकुरिची से बस द्वारा शाम 5.30 बजे त्रिची पहुँचा।

शाम 7.00 बजे– अशोक भवन में सामूहिक सत्संग कराया जिसमें बीस अभ्यासी उपस्थित थे। सिटिंग के दौरान मुझे एक विशिष्ट अनुभव हुआ : मैंने अनुभव किया कि मेरी काया फैल गयी है जैसे कि तीन अभ्यासियों के शरीर को मिला दिया गया हो तथा मैं सत्संग कराने के साथ साथ अभ्यासियों के बीच बैठकर ध्यान भी कर रहा हूँ।

13 अगस्त 1978 – रविवार

सुबह 7.30 बजे से 8.15 बजे – तिल्लईनगर स्थित त्रिची केन्द्र में सामूहिक सत्संग कराया (कैप्टन टी. एन. रामास्वामी के निवास पर)। उसके पश्चात् मैंने सुबह 9.00 बजे तक अपने विचार उनके समक्ष रखे। सुबह 10.00 बजे आई.टी.पी.टी. के बी. रामचन्द्रन, टी. जकारिया, एस. पी. लोकनाथ तथा एस. सदाशिवम के साथ कार द्वारा त्रिची से रवाना हुआ। हमने सदाशिवम को वेपूर पर उतारा जहाँ से उन्हें वृधाचलम के लिये बस पकड़नी थी। दोपहर 3.00 बजे हम मद्रास पहुँच गये।

शाम 4.30 बजे फ्रांस के दो अभ्यासियों 1) कु.सिमोन मेकर्ट 2) श्रीमती पॉल गसिट ने मद्रास मेरे घर पर मुझसे फोन पर बात की। उन्होंने कल बॉम्बे जाने से पूर्व मुझसे सिटिंग प्राप्त की थी। वे बॉम्बे से फ्रांस रवाना हो जायेंगे।

20 अगस्त 1978 – रविवार

सुबह 7.30 बजे रविवारीय सामूहिक सत्संग कराया, सिटिंग

चालीस मिनट की रही। उसके बाद मैंने मृत्यु के भय पर अपने विचार सबके समक्ष प्रकट किये। मैंने उनसे कहा कि सच्ची लगन वाले अभ्यासी को तो मृत्यु की अपेक्षा लम्बी उम्र से भयभीत होना चाहिये क्योंकि जीवन के प्रत्येक दिन का प्रारम्भ नये प्रलोभनों के साथ होता है तथा कोई भी महत्वाकांक्षी व्यक्ति इसके जाल में फंस सकता है। मेरा यह भी मत था कि अच्छा स्वास्थ्य, समृद्धि तथा लम्बी उम्र सभी अपनी अपनी तरह से हानिकारक हैं।

शाम 7.30 बजे – त्रिवेन्द्रम मेल से एरनाकुलम की ओर रवाना हो गया।

21 अगस्त 1978 – सोमवार (एरनाकुलम)

रवि वर्मा, जो पूर्व में विदेश मंत्रालय में थे तथा मिशन के प्रशिक्षक भी हैं, केरल में वह एक मात्र प्रशिक्षक हैं। वह जब मेडागास्कर में रहते थे तब अभ्यासी बने थे। वर्तमान में वह सेवानिवृत्त होने के पश्चात् से हरिपद के समीप चेम्ब्रोल कोट्टारम नामक स्थान पर रह रहे हैं। गत रात्रि वह एरनाकुलम आ गये थे तथा उनके आग्रह पर आज मैंने उन्हें व्यक्तिगत सिटिंग दी।

सुबह 11.30 बजे मैं रवि वर्मा को साथ लेकर श्री भरत राजन, जो एरनाकुलम में नहीं थे, के निवास पर पहुँचा। उनका विवाह एस. सुखा स्वामी की ज्येष्ठ पुत्री सीतालक्ष्मी से हुआ है तथा वह यहाँ केन्द्रीय आबकारी विभाग में कार्यरत हैं। मैंने भरत राजन के निवास पर उनकी माता जी, बहन शारदा, रवि वर्मा तथा आई.टी.पी.टी. के बी. रामचन्द्रन को सामूहिक सिटिंग दी।

श्री के. सिकन्दन नायर जो टेलीफोन विभाग में संभागीय प्रबंधक हैं, शाम 6.00 बजे ग्रान्ड होटल में पधारे जहाँ हम ठहरे हुये हैं। वह हमें अपने साथ अपने घर ले गये जहाँ हमने शाम 7.00 बजे सामूहिक सत्संग किया जिसमें श्री सिकन्दन नायर, रवि वर्मा, बी. रामचन्द्रन, पी. के. वैंकटेशन (प्रशिक्षक विरुदनगर) तथा आर. वैंकटरमन (प्रशिक्षक कोयम्बटूर) उपस्थित थे।

22 अगस्त 1978 – मंगलवार

सुबह 7.00 बजे ग्रांड होटल के मेरे कक्ष में एक सामूहिक सिटिंग

हुयी जिसमें रवि वर्मा, पी. के. वैंकटेशन, बी. रामचन्द्रन, आर. वैंकटरमन तथा सलेम के के. वी. देशिकन उपस्थित थे।

ऐरनाकुलम में कंपनी का कार्य समाप्त करने के पश्चात् मैं कोयम्बटूर की ओर रवाना हो गया। कोयम्बटूर पहुँचकर रात्रि 8.00 बजे डॉ. एस. एस. रामकृष्णन से भेंट की तथा उनके परिवार के साथ एक घंटा व्यतीत किया।

23 अगस्त 1978 – बुधवार (कोयम्बटूर)

सुबह 7 बजे आर. स्वामीनाथन को व्यक्तिगत सिटिंग दी।

सुबह 8.00 बजे डॉ. एस. एस. रामकृष्णन के निवास पर सामूहिक सत्संग कराया जिसमें श्रीमती सुखास्वामी, अनुसुइया, शोभना तथा बी. रामचन्द्रन उपस्थित थे।

शाम 6.00 बजे श्री एस. एस. रामकृष्णन् के निवास पर सामूहिक सत्संग कराया। कोयम्बटूर के छः तथा तिरुपुर के छः अभ्यासियों के अलावा बी. रामचन्द्रन तथा स्वामीनाथन उपस्थित थे। सिटिंग चालीस मिनट चली तथा बहुत अच्छी रही।

24 अगस्त 1978 – गुरुवार (मैसूर)

कोयम्बटूर से सुबह 7.30 बजे कार से रवाना हुआ तथा कंपनी के कार्य हेतु भवानी सागर में पड़ाव किया एवं दोपहर भोजन के पश्चात् वहाँ से रवाना होकर (बन्नारी तथा नानजन्गुद के रास्ते) शाम 5.00 बजे मैसूर पहुँचा। स्टेट बैंक मैसूर के कर्मचारी प्रशिक्षक केन्द्र के मुख्य निरीक्षक श्री टी. आर. एस. शर्मा दशप्रकाश होटल पधारे जहाँ मैं ठहरा हुआ था। हमने आधा घंटे तक सहज मार्ग के विषय में चर्चा की।

शाम 7.00 बजे – स्टेट बैंक मैसूर के प्रशिक्षण केन्द्र में सामूहिक सत्संग कराया। अभ्यासियों की उपस्थिति अच्छी थी जिसमें कोलेगल के बाइस अभ्यासी, बैंगलोर से मेरा भाई कोदण्ड, बी. के. राजगोपाल, के. आर. कुमार तथा वी. वेणुगोपाल गुप्ता, कृष्णा राजा, सागर के दो, मद्रास से एस. के. मोहन, विरुदनगर से बी. रामचन्द्रन तथा मैसूर के बारह स्थानीय अभ्यासियों को मिलाकर कुल बयालिस अभ्यासी उपस्थित थे। उपस्थिति

अत्यन्त संतोषजनक थी। सिटिंग चालीस मिनट चली तथा बहुत अच्छी रही। मैंने बिना किसी पूर्व तैयारी के एकत्रित अभ्यासियों के समक्ष अपना उद्‌बोधन दिया जिसका विषय था "मालिक की सेवा"।

25 अगस्त 1978 – शुक्रवार (चन्नपटना)

सुबह 8.00 बजे – मैसूर के एस. बी. एम. प्रशिक्षण केन्द्र में सामूहिक सत्संग कराया। सिटिंग बहुत अच्छी रही, यद्यपि गत रात्रि की अपेक्षा अभ्यासियों की संख्या कम थी।

चन्नपटना में दोपहर 3.00 बजे – कु. रुनकाजाक्शी को प्रथम सिटिंग दी।

शाम 4.00 बजे – सामूहिक सत्संग कराया जिसमें बाइस अभ्यासी उपस्थित थे। इन अभ्यासियों में पन्द्रह अभ्यासी चन्नपटना के थे। कोदण्ड के अलावा बैंगलोर के तीन अन्य अभ्यासी, वेनूगोपाल गुप्ता, के. आर. कुमार तथा बी. के. राजगोपाल, कोलेगल के एन. आर. नारायणा, विरुदनगर के बी.रामचन्द्रन तथा मद्रास के एस. के. मोहन भी सिटिंग में उपस्थित थे। सिटिंग पचपन मिनट तक चली तथा बहुत अच्छी रही। कोदण्ड तथा अन्य अभ्यासियों ने कहा कि उन्हें मालिक की उपस्थिति का आभास हो रहा था। कोदण्ड पूर्ण विश्वास से कह रहा था कि उसे ऐसा आभास हुआ जैसे कि मालिक ने कमरे में प्रवेश किया, गद्‌दी पर बैठे तथा सबको प्राणाहुति दी।

शाम 7.00 बजे बैंगलोर पहुँचा।

बैंगलोर के इंदिरा नगर स्थित कोदण्ड के निवास पर पड़ाव किया।

शाम 7.30 बजे – अभ्यासियों के एक छोटे दल को सिटिंग दी जिसमें कोदण्ड, इन्दिरा, सुदर्शन, रामकुमार, राजू तथा एस. के. मोहन उपस्थित थे। सिटिंग तीस मिनट चली तथा बहुत अच्छी रही।

26 अगस्त 1978 – शनिवार

सिटी बाजार स्थित के. आर. कुमार के कार्यालय पहुँचा। बी. जी. जर्नादन तथा बी. के. राजगोपाल ने मुझसे भेंट की तथा हमने अप्रैल'78 के मालिक के जन्मोत्सव कार्यक्रम के लेखे को अन्तिम रूप देने के संदर्भ में चर्चा की। इस चर्चा में मुरूगेसन तथा कमलेश कुमार भी सम्मिलित थे।

हमने आश्रम निर्माण के सम्बन्ध में भी चर्चा की।

शाम 4.00 बजे श्रीमती पद्मिनी रामचन्द्रन तथा उनके पिता जी श्री वैंकट सुब्बा राव को सिटिंग दी। वह इससे पूर्व मद्रास में ही रहती थी।

शाम 7.00 बजे – हमारे आश्रम के केन्द्र बानशंकरी में सत्संग कराया। सिटिंग पैंतालिस मिनट चली तथा बहुत अच्छी रही। एस.के. सुन्दरम ने सिटिंग के पश्चात् मुझे बताया कि सिटिंग के दौरान उन्हें एक "दैवीय प्रकटन हुआ कि मालिक ही एक मात्र वास्तविकता हैं"।

27 अगस्त 1978 – रविवार

सुबह 8.15 बजे बानशंकरी में हमारे आश्रम के केन्द्र में सामूहिक सत्संग कराया। बड़ी संख्या में अभ्यासी उपस्थित थे। सिटिंग 45 मिनट चली तथा अच्छी रही। इसमें शान्ति तथा गहरायी का अनुभव हुआ। सत्संग के पश्चात् कोदण्ड ने बीस मिनट तक अपने विचार व्यक्त किये। सहज मार्ग के लिये उसका यह प्रथम प्रयास था जिसके माध्यम से उसने प्रशिक्षकों को लक्ष्य के सम्बन्ध में जोर देने की आवश्यकता पर बल दिया। फिर मैंने बिना किसी पूर्व तैयारी के चालीस मिनट तक अपना उद्बोधन दिया जिसका विषय था "ग्रेविटी एण्ड लव (आकर्षण और प्रेम)"।

दोपहर 1.50 बजे वृदांवन एक्सप्रेस से रवाना होकर शाम 7.00 बजे मद्रास पहुँचा।

30 अगस्त 1978 – बुधवार

शाम 6.30 से 7.15 बजे तक एस. नारायणस्वामी तथा दो अन्य अभ्यासियों को सिटिंग दी। सिटिंग में अत्यन्त गहरायी थी। मैं लगभग पूरी सिटिंग के दौरान बेसुध था और किसी दूसरी दुनिया में था। मुझे अपनी इस अवस्था से बाहर आने में बड़ी मशक्कत करनी पड़ी। तत्पश्चात् मैंने 7.15 बजे सिटिंग समाप्त की। यदि मैं यह प्रयास न करता तो शायद सिटिंग समाप्त ही न हुयी होती तथा हमारा अन्त हो गया होता। यह मेरा अपना स्वयं का विचार था। सिटिंग समाप्त होने के पश्चात् भी मै सामान्य नहीं हो पाया था तथा हल्के नशे का अहसास बना हुआ था।

नारायण स्वामी एकदम गुमसुम बैठे हुये थे तथा सिटिंग समाप्त

होने के चालीस मिनट पश्चात् तक वह ऐसे ही बैठे रहे। उनकी आँखें बन्द थीं और उनकी ठुड्डी छाती पर टिकी हुई थी। तत्पश्चात् वह यकायक उठे तथा लड़खड़ाते हुये तथा शराबी की तरह झूमते हुये हमसे कुछ कहे बगैर वहाँ से चले गये। हम सबके लिये यह एक अद्भुत तथा विलक्षण अनुभव रहा।

9 सितम्बर 1978 – शनिवार

अप्पा ने इन्दिरा, जाना तथा कुट्टी के साथ बैंगलोर की ओर प्रस्थान किया।

15 सितम्बर 1978 – शुक्रवार

मैंने त्रिची के लेखा परीक्षक श्री जी. सन्थानम के साथ शाहजहाँपुर जाने का कार्यक्रम निर्धारित किया। इसके लिये मालिक की अनुमति भी मिल गयी थी। वास्तव में मालिक स्वयं भी श्री सन्थानम से मिलने के लिये उत्सुक थे जिन्होंने हमसे केन्द्रीय प्रत्यक्ष कर परिषद् (सेन्ट्रल बोर्ड ऑफ डायरेक्ट टैक्सेस) में हमें धारा 10(23)सी(5) के अंतर्गत आयकर की छूट दिलवाने के लिये हमारा आवेदन दर्ज कराने का विश्वास दिलाया था। हमारी बैठक के संदर्भ में मुझे मिशन के लेखा परीक्षक (ऑडीटर) का दिल्ली से तार संदेश प्राप्त हुआ जिसमें उन्होंने हमारी शाहजहाँपुर की बैठक को आगे के लिये स्थगित करने का सुझाव दिया था। इसके जवाब में मैंने मालिक को विस्तृत तार संदेश द्वारा निवेदन किया कि बैठक को निर्धारित कार्यक्रम के अनुसार ही किशोर की अनुपस्थिति में रखा जाना उचित होगा। मैंने टेलीफोन पर दिल्ली के अभ्यासी श्री डी. गोपालकृष्णन से भी सम्पर्क किया तथा उनसे निवेदन किया कि वह शाहजहाँपुर सम्पर्क करके मालिक से इसकी पुष्टि प्राप्त कर लें। उन्होंने मुझे शाम 4.30 बजे पुनः टेलीफोन पर सम्पर्क कर सूचित किया कि मालिक निर्धारित कार्यक्रम के अनुसार बैठक रखने के लिये सहमत हो गये हैं। अतः मैं और सन्थानम शाहजहाँपुर आ सकते हैं। बाद में देर शाम को मुझे मालिक का तार संदेश प्राप्त हुआ जिसमें इसकी पुष्टि की गयी थी।

16 सितम्बर 1978 – शनिवार

श्री एम. मुरूगेसन, श्री एस. के. सुन्दरम, के. आर. कुमार और वी. वेनुगोपाल गुप्ता, सभी बैंगलोर से वृन्दावन एक्सप्रेस से शाम 7.50 बजे मद्रास पहुँचे। उनके साथ राजकुमार अमरचन्द्र भी थे। कृष्णा ने स्टेशन पर उनकी अगवानी की और उन्हें गायत्री ले आया। वे हमारे साथ हमारे शाहजहाँपुर के लिये रवाना होने तक यही रूकेंगे।

17 सितम्बर 1978 – रविवार

सुबह 7.30 बजे – मैंने सामूहिक सत्संग कराया।

लेखा परीक्षक श्री जी. सन्थानाम त्रिची से दोपहर 2.00 बजे वईगई एक्सप्रेस से मद्रास पहुँचे। कृष्णा ने उनकी अगवानी की और उन्हें घर पर ले आया।

पूज्य मालिक की ओर से दो तार संदेश प्राप्त हुये एक शुक्रवार की रात को और दूसरा कल सुबह प्राप्त हुआ। उनका परामर्श था कि झाँसी–लखनऊ के मार्ग से ही शाहजहाँपुर आयें, क्योकि विनाशक बाढ़ के कारण दिल्ली और मुरादाबाद के बीच रेल का आवागमन अवरुद्ध हो गया है। आज दोपहर 12.00 बजे दिल्ली के एक अभ्यासी ने टेलीफोन पर मालिक के इस परामर्श को पुनः याद दिलाया।

आठ सदस्यों का हमारा दल रात्रि 7.10 बजे ग्रांड ट्रंक एक्सप्रेस से रवाना हुआ । जी सन्थानम के साथ के.आर.कुमार, वी.वेणुगोपाल गुप्ता और मैं प्रथम श्रेणी के डिब्बे में जबकि सुन्दरम, राजकुमार, मुरूगेसन और आर.स्वामीनाथन दूसरी श्रेणी के डिब्बे में यात्रा कर रहे थे। ट्रेन में मैंने जी. सन्थानम से मालिक, मिशन और सहज मार्ग पद्धति के सिद्धान्तों के सम्बन्ध में विस्तार से चर्चा की।

19 सितम्बर 1978 – मंगलवार

ट्रेन में एक सुखद दिन व्यतीत करने के पश्चात् हम रात्रि 12.03 बजे निर्धारित समयानुसार झांसी पहुँचे। झांसी से हमारी सम्बद्ध पैसेंजर ट्रेन जिससे हमें लखनऊ जाना था, सामने के प्लेटफार्म पर खड़ी हुयी थी। हमें बिना पूर्व आरक्षण के आसानी से आरक्षण प्राप्त हो गया जिसमें तीन सीटें प्रथम श्रेणी के डिब्बे में और चार सीटें द्वितीय श्रेणी के डिब्बे में

आरक्षित की गयीं। हमारी पैसेंजर ट्रेन रात्रि 2.00 बजे झांसी से रवाना हुयी और दोपहर 1.20 बजे लखनऊ पहुँची। दूरी ज्यादा न होने के बावजूद भी हमारी यात्रा बहुत लम्बी एवं थकान भरी रही। रास्ते में हमने कानपुर में सुबह का नाश्ता किया जहाँ पर ट्रेन लगभग एक घंटे तक रुकी। लखनऊ में हमने दोपहर का भोजन किया और दो घंटे विश्राम करने के पश्चात् शाम 4.50 बजे हावड़ा अमृतसर मेल से शाहजहाँपुर की ओर रवाना हुये। ट्रेन अपने निर्धारित समय से 30 मिनट देरी से चल रही थी। अबकी बार भी हमें आसानी से ट्रेन में आरक्षण प्राप्त हो गया। शाम 7.20 बजे हम शाहजहाँपुर पहुँचे। बी. आर. गुण्डे राव को मालिक के निर्देशानुसार कार के साथ हमारा इन्तजार करते देख मुझे आश्चर्य हुआ। वह हमारी अगवानी के लिये आये थे। मैं लेखा परीक्षक श्री सन्थानम को स्टेशन से सीधे मालिक के दर्शन के लिये मालिक के घर पर ले गया। मालिक ने प्रफुल्लित होकर कहा, "देखो मुझे प्रकृति से हमेशा किस तरह मदद मिलती रहती है। यह सब लालाजी की कृपा है। मुझे जब भी जिस भी चीज की आवश्यकता होती है, वह उसी समय मुझे उपलब्ध हो जाती है।"

आधा घंटा मालिक के साथ व्यतीत करने के बाद हम आश्रम गये जहाँ पर हमें अगले तीन–चार दिनों के लिये ठहरना था। आश्रम पहुँचने पर मुझे डेनमार्क के पाँच अभ्यासी और इंग्लैंड का एक अभ्यासी मिला। इस पूरे सप्ताह भारी बारिश हुयी थी, इसलिये मौसम खुशनुमा था और वातावरण में ठंडक थी।

20 सितम्बर 1978 – बुधवार

सुबह 6.30 बजे – आश्रम के ध्यान कक्ष में सामूहिक सत्संग कराया। लगभग 20 अभ्यासी उपस्थित थे।

सुबह 8.30 बजे हम मालिक के घर पर पहुँचे (कुमार, एस. के. सुन्दरम, जी. सन्थानम और मैं)। कुमार और सुन्दरम सहायक के रूप यदि किसी कार्य की आवश्यकता हो, इस मकसद से यहाँ आये हैं। दोपहर 12.30 बजे तक हमने मालिक के कार्य से सम्बन्धित कागजातों और दस्तावेजों को व्यवस्थित करने का प्रयास किया क्योंकि सन्थानम स्वेच्छा

से मिशन के कार्य से पहले मालिक के व्यक्तिगत आयकर और राजस्व कर के मामले को सुलझाने के लिये राजी हो गये थे। मालिक को जब मैंने घर पहुंचते ही यह सूचित किया तो वे बोले, "यही तो मैं चाहता था। तुम्हें तो मालूम है कि ऐसे मामले में मैं स्वयं बहुत अधिक कुछ नहीं कर सकता। कृपया उन्हें कहिये कि मैं उनके द्वारा की गयी सहायता की पेशकश के लिये तहेदिल से धन्यवाद देता हूँ।"

मालिक के सारे दस्तावेजों को ढूँढ़कर उन्हें एक कपड़े में व्यवस्थित रूप में बाँधकर हम दोपहर के भोजन के लिये आश्रम की ओर रवाना हुये और दोपहर 2.45 बजे तक आश्रम में विश्राम किया। उसके पश्चात् हम तीन घंटे के लिये, अपना काम निपटाने के लिये मालिक के घर पर वापस आ गये (दोपहर 3.00 बजे से शाम 6.00 बजे तक)। श्री जी. सन्थानम उपलब्ध दस्तावेजों को कुछ क्रम में लगाने का प्रयास कर रहे थे। कुछ कागजात पर तो 50 वर्ष पहले की तारीख पड़ी हुयी थी। कागजात को व्यवस्थित करने का समस्त कार्य पूर्ण हो गया था क्योंकि अधिकतर दस्तावेज हिन्दी में थे, इसलिये बहुत से कागजात मेरी समझ में आ रहे थे, हालाँकि इसमें मुझे थोड़ी परेशानी अवश्य हो रही थी। चूँकि मालिक की अधिकतर अचल सम्पत्ति टुकड़ों में विभाजित थी इसलिये हमें बार बार यह ध्यान रखना पड़ रहा था कि कौन सी सम्पत्ति किससे सम्बन्धित है, इत्यादि, ताकि दस्तावेजों को व्यवस्थित रूप से जमाकर रखा जा सके। मालिक हमेशा की तरह हमारी सहायता करने के लिये तैयार थे और धैर्य पूर्वक पूरे समय चश्मा चढ़ाकर, धीर गम्भीर बनकर सब कुछ भूलकर और सभी तरफ से ध्यान हटाकर हमारे साथ बैठे रहे।

जब हम शाम 6.10 बजे आश्रम की ओर जाने के लिये रवाना हुये, मालिक ने भी हमारे साथ आश्रम चलने का निर्णय लिया। आश्रम पहुँचने पर मालूम हुआ कि म्यूनिख के दो अभ्यासी रॉल्फ मूलर और डोरिट क्राउज आये हुये थे। मालिक ने हम सभी को घर वापस जाने से पहले बीस मिनट की सिटिंग दी।

यहाँ पहले भी बरसात हो चुकी थी और आज भी बदली छायी हुई

थी जिस कारण मौसम में ठंडक थी और खुशनुमा ठंडी हवा बह रही थी।

21 सितम्बर 1978 – गुरुवार

सुबह 6.30 बजे – मैंने ध्यानकक्ष में सामूहिक सत्संग कराया। हम सुबह 8.30 बजे मालिक के घर पहुँचे। हमारे लिये एक कार की व्यवस्था की गयी है जिसका हम अपनी इच्छानुसार आने जाने के लिये उपयोग कर सकते हैं। मैंने जब मालिक को इसके लिये मना किया तो मालिक बोले, "मैं तुम्हारे बारे में बेशक जानता हूँ, कार तुम्हारे लिये नहीं है। किन्तु लेखा परीक्षक सन्थानम मेरे काम के लिये आये हुये हैं और उन्होंने फीस लेने के लिये भी इन्कार कर दिया है, अतः मैं नहीं चाहता कि वह रिक्शे में आयें जायें। इसलिये जब तक वह यहाँ पर हैं, तुम्हारे लिये कार उपलब्ध रहेगी"।

हमने मालिक के व्यक्तिगत दस्तावेजों का कार्य दोपहर 1.00 बजे तक समाप्त कर लिया। उसके बाद हम दोपहर भोजन के लिये आश्रम की ओर रवाना हुये। थोड़ी देर विश्राम करने के पश्चात् पुनः दोपहर 3.00 बजे मालिक के घर पर वापस आ गये। श्री सन्थानम ने, जो वह समझते थे और हमें आगे क्या करना है, उसके सम्बन्ध में बताया। वह लगभग एक घंटे तक हमें समझाते रहे। उन्होंने निष्कर्ष निकाला कि मालिक के ऊपर कोई आयकर की देनदारी नहीं बनती थी, क्योंकि मालिक की कोई कर योग्य आय नहीं है, इसकी बेशक मुझे पहले से जानकारी थी। उन्होंने यह भी पता लगाया कि मालिक के ऊपर कोई राजस्व कर की भी देनदारी नहीं बनती, लेकिन उन्हें इसके सम्बन्ध में कुछ स्पष्टीकरण की आवश्यकता थी। उनका मुख्य रूप से यह सुझाव था कि मालिक की उम्र को (79 साल) ध्यान में रखते हुये उन्हें अपने स्वास्थ्य और मन की शान्ति के लिये तुरंत अपनी सम्पत्ति का कानूनी तौर से बँटवारा कर देना चाहिये। उन्होंने मालिक को इस सुझाव पर विचार करने के लिये आग्रह किया।

मालिक के इच्छानुरूप हमने श्री सन्थानम के विचार और सुझाव टाइप किये। टाइपिंग का कार्य मैंने स्वयं किया क्योंकि मैं नहीं चाहता था कि मालिक के व्यक्तिगत मामलो की किसी को जानकारी हो। टाइपिंग के

पश्चात् मैंने कागजात मालिक को थमा दिये। मालिक ने इसका ध्यान पूर्व अध्ययन किया और मुझसे हिन्दी में बोले, "तुम एक बहुत ही योग्य व्यक्ति को लेकर आये हो। उन्होंने जो भी इसमें लिखा है, मैं इसे आवश्यक मानते हुये स्वीकार करता हूँ। लेकिन मैं अपनी सम्पत्तियों का बँटवारा अभी नहीं कर सकता।" तत्पश्चात् सत्थानाम की ओर मुखातिब होते हुये मालिक ने कहा, "आपने मुझे अपनी बहुत सेवायें दीं हैं, अब आपको भी मुझसे कुछ सेवा लेनी होगी, मैं। आपकी सेवा करने के लिये प्रतीक्षा कर रहा हूँ।" ऐसा सुनकर सन्थानम गदगद हो गये और उनकी आँखों में आँसू आ गये। उन्होंने मालिक के चरणों में नतमस्तक होकर मालिक से आग्रह किया कि वे जल्द ही बँटवारे इत्यादि के काम से मुक्त होकर चिन्तामुक्त जीवन व्यतीत करें। मालिक ने मुझसे हिन्दी में कहा, "चाहता तो मैं भी यहीं हूँ, लेकिन तुम जानते हो कि क्यों मैं अभी अपनी सम्पत्तियों का बँटवारा नहीं कर सकता। यहाँ गोलियाँ चलने की नौबत आ जायेगी।" मैंने मालिक को सन्थानम के सुझाव को मान लेने के लिये हर सम्भव प्रयास किया, किन्तु मालिक टस से मस नहीं हुये। मैंने मालिक से कहा, "यदि आप अपने रहते यह काम नहीं कर सके तो बाद में तो इसमें और भी परेशानी खड़ी हो सकती है। मेरा विचार है कि यही उचित होगा कि जितना जल्दी हो सके, आपको यह काम कर लेना चाहिए। अकारण ही कैसे गोलियाँ चल जायेंगी ?"

मालिक बोले, "ईश्वर की कृपा से ऐसा कुछ भी नहीं होगा, लेकिन तुम्हें इसकी जानकारी है कि मेरे एक पुत्र ने आत्महत्या की थी, उन दिनों मेरे घर में एक बन्दूक हुआ करती थी। यह जिला खतरनाक है और डकैती के लिये प्रसिद्ध है। तभी से मुझमें एक भय समाया हुआ है, और वास्तव में मैंने ऐसा पाया है कि आत्महत्या करने की प्रवृत्ति मेरे सभी बेटों में है। इसलिये इस प्रकरण पर कुछ समय के लिये ध्यान न देना ही बेहतर होगा। मुझे यह काम बहुत सोच समझकर करना होगा। यद्यपि मैं जानता हूँ कि उसने जो भी सुझाव दिये हैं वे सही हैं।"

थोड़ी देर पश्चात् मैं मालिक के साथ अकेला था, सन्थानम, भाई गुण्डेराव के पास पान लेने गये हुये थे। मालिक ने मेरी ओर देखा और

बोले, "तुम्हें याद है, मैंने तुम्हें इटली में या कहीं और तीस सेकेण्ड के लिये प्राणाहुति दी थी। क्या तुम्हें याद है ?" मैंने कहा याद है। यह कोपेनहेगन में हुआ था, जब हम हवाई अड्डे पर विमान पर चढ़ने के लिये अपने बुलावे का इन्तजार कर रहे थे, मालिक ने कहा, "वह परिस्थिति अब खुलना प्रारम्भ हो गयी है। क्या तुम अपने आप में कुछ बदलाव महसूस करते हो ?" मैंने कहा हाँ। तत्पश्चात् मैंने मालिक से पूछा कि प्राणाहुति के परिणाम आने में इतना अधिक समय क्यों लग गया। मालिक ने उत्तर दिया, "जब प्राणाहुति उच्च बिन्दु से दी जाती है, तो इसकी स्थिति खुलने में वर्षों का समय लग सकता है। यह तो लालाजी की कृपा है कि ऐसा करना अब सम्भव है और तुम सौभाग्यशाली व्यक्ति हो तुम्हें इनोम मिला है। मैंने आज तक ऐसा सम्प्रेषण किसी को नहीं दिया है, न तो कस्तूरी को और न ही राघवेन्द्र राव को।"

22 सितम्बर 1978 – शुक्रवार

सुबह 6:30 बजे – मैंने ध्यान कक्ष में सामूहिक सत्संग कराया।

हम सुबह 8:30 बजे मालिक के घर के लिये रवाना हुए। वहाँ पहुँचकर मैंने और सन्थानम ने सचिव, केन्द्रीय प्रत्यक्षकर मंडल (सेन्ट्रल बोर्ड ऑफ डायरेक्ट टैक्सेस) को आयकर में केन्द्र सरकार की नियमावली की धारा 10 (23) (सी) (5) के अन्तर्गत बिना शर्त आयकर में छूट दिये जाने के निवेदन की अर्जी का प्रारूप तैयार किया। हमारा काम दोपहर भोजन तक समाप्त हो गया।

कार्य के मध्य में चायकाल के समय सुबह 11:00 बजे जब मैं खाली था, मालिक ने मुझसे पूछा, "क्या तुम नौकरी से अगले वर्ष सेवा मुक्त हो रहे हो ? " मैंने कहा, "साहब अभी मुझे सेवा मुक्त होने में छः या सात वर्ष का समय शेष है, पर यदि आपकी ऐसी इच्छा है तो मैं पहले सेवा मुक्त हो सकता हूँ। यदि आप अनुमति दें तो मैं 31 दिसंबर 1978 को सेवामुक्त हो सकता हूँ, यद्यपि मैं पिछले तीन वर्षों से आपसे अनुमति माँग रहा हूँ लेकिन आपने इसके बारे में कुछ नहीं कहा।"

मालिक बोले, "देखो मैं भी यही चाहता हूँ कि तुम यहाँ आकर मेरे

साथ रहो लेकिन अभी नहीं। कृष्णा को नौकरी पर लगने दो। इसके अलावा तुम्हारे पास भी इतना पैसा होना चाहिये कि तुम अच्छे से अपना जीवनयापन कर सको, तुम्हें किसी की ओर मदद के लिये हाथ न फैलाना पड़े । इन दो जरूरतों को अपने जहन में रखो'' तत्पश्चात् मैंने उनसे पूछा कि यदि मैं 31 दिसम्बर 1979 को सेवा मुक्त हो जाऊँ, मालिक ने, एक दुर्लभ, करुणामयी, मोहित कर देने वाली मुस्कान बिखेरते हुये कहा, ''1979 का वर्ष व्यतीत हो जाने दो फिर मैं तुम्हारे इस निवेदन पर विचार करूँगा।''

हमारा समूह दोपहर भोजन के लिये वापस आश्रम चला आया, और तब हम शाम 4.00बजे मालिक के घर लौट आये, केवल मालिक को अपने साथ तुरन्त आश्रम लाने के लिये। आश्रम में दिल्ली से सात अभ्यासियों के आ जाने से समूह में वृद्धि हो गयी थी। मालिक ने समूह बड़ा हो जाने के कारण हम सबको ध्यान कक्ष में सिटिंग दी और फिर वापस घर चले गये। कल और परसों मालिक ने अपनी कॉटेज के कमरे में सिटिंग दी थी।

23 सितम्बर 1978 – शनिवार

सुबह 6:30 बजे – मैंने आश्रम के हाल में सामूहिक सत्संग कराया।

सुबह 8:30 बजे हम मालिक के घर पहुँचे और वहाँ दोपहर 1:00 बजे तक रहे। किसी अन्य से चर्चा के दौरान मुझे कुछ जानकारी प्राप्त हुयी थी, इसलिये हमने मालिक के कागजातों की एक बार फिर से जाँच कर लेना उचित समझा। कागजातों की अच्छी तरह से जाँच पड़ताल कर लेने के पश्चात् मि. जी.सन्थानम को यह विश्वास हो गया कि जहाँ तक मालिक का प्रश्न है, उनके ऊपर कर का कोई उत्तरदायित्व नहीं बनता। मालिक यह सुनकर प्रसन्न और निश्चिन्त हो गये। अपने स्वयं के मामले में मालिक पिछले कई वर्षों से चितिंत थे और इसे टाल रहे थे लेकिन अब हमने उनके कागजातों को पूर्णतया व्यवस्थित कर दिया है, उनकी पूर्ण रूपेण छंटनी इत्यादि कर उन्हें क्रमवार लगा दिया है और सन्थानम द्वारा

दिये गये सुझावों और परामर्श को संस्तुति के रूप लगा दिया है। आशा करता हूँ कि यह पहली बार हुआ है कि मालिक ने अपने स्वयं के मामले में किसी विशेषज्ञ की राय ली हो। यह अच्छा हुआ कि उन्होंने श्री सन्थानम को इस प्रेमपूर्वक परिश्रम के लिये आज्ञा दी।

हम दोपहर भोजन के लिये आश्रम वापस गये और उसके पश्चात् पुनः मालिक के घर पर शाम 4:00 बजे वापस आ गये। हम शाम 5.00 बजे आश्रम की ओर रवाना हुये। मालिक भी हमारे साथ थे और इस बार भी उन्होंने हमें बीस मिनट तक सिटिंग दी। लेकिन अबकी बार वे हमारे साथ अपेक्षाकृत ज्यादा देर तक रुके और उसके बाद शाम 6:30 बजे अपने घर वापस लौट गये।

24 सितम्बर 1978 – रविवार

सुबह 6:30 बजे– सामूहिक सत्संग कराया। पचास से अधिक अभ्यासी उपस्थित थे।

मैं सुबह 10:30 बजे तक सी. बी. डी. टी. को दी जाने वाली अर्जी टाइप करने में व्यस्त था। बाकी लोग मालिक के घर के लिये सुबह 8:30 बजे रवाना हो चुके थे। आज पहली बार हमारे सभी साथियों को एक साथ आने की आज्ञा मिली थी, जबकि पिछले चार दिनों से हममें से कुछ तीन–चार लोग ही मालिक के साथ काम में व्यस्त थे, जिन्हें उन्होंने बड़े प्रेम पूर्वक मिशन के महत्वपूर्ण और अति आवश्यक कार्य के लिये बुलाया था। एस. के सुन्दरम और मैंने दो टाइपिंग मशीन में अर्जी की आठ कापी (सेट) तैयार की और उसके पश्चात् सुबह 11:00 बजे मालिक के घर पहुँचे। घर पहुँचकर मुझे पता चला कि मालिक सुबह से बाहर ही नहीं निकले हैं। अभ्यासियों का दल जो सुबह से उनके घर पर गया था बाहर बरामदे में एवं कुयें इत्यादि के समीप धैर्य पूर्वक बैठकर मालिक का इन्तजार कर रहा था, जैसे ही मैं वहाँ पहुँचा मालिक मुस्कुराते हुये बाहर आये। यह मालूम होने पर कि काम पूरा हो चुका है और अब वे निश्चिन्त हो सकते हैं, उन्होंने प्रसाद की पेशकश की । उसके पश्चात् हमने मालिक के साथ बरामदे में डेढ़ घंटा हँसी मजाक करते हुये व्यतीत किया।

तत्पश्चात् हम दोपहर भोजन के लिये आश्रम वापस पहुँचे। दोपहर के बाद हम मालिक के घर पर वापस नहीं जा सके। हमें अपने सामान इत्यादि को व्यवस्थित करना था, क्योंकि आज रात्रि को हमें दिल्ली के लिये रवाना होना था। हमारे वापस लौटने के इस विचार के कारण हमारा उत्साह ठंडा पड़ गया था और हम अत्यन्त उदासीनता महसूस कर रहे थे। मालिक शाम 5:00 बजे आश्रम आये और तत्काल ही हमें पच्चीस मिनट की सिटिंग दी। सिटिंग बहुत अच्छी रही। मुझे अपना अहसास ही नहीं रहा। मैंने गहरी शान्ति और परम आनन्द का अनुभव किया। मेरी आँखे मालिक के प्रति कृतज्ञता से नम हो गयीं। मालिक हमारे साथ 6:30बजे तक रहे और उसके पश्चात् बड़ी अनिच्छा से घर की ओर रवाना हो गये। हमने विदा ली और आश्रम में ही उनसे वापस लौटने के लिये अनुमति देने की प्रार्थना की।

हमारे आठ साथी, पाँच डेनिस अभ्यासी और त्रिची के श्री और श्रीमती दशरथन इस तरह कुल पन्द्रह लोग रात्रि 9.00 बजे बस से स्टेशन के लिये रवाना हुये। डेनिस अभ्यासी, त्रिची के दशरथन और उनके साथी काशी विश्वनाथ एक्सप्रेस से रात्रि 11:15 बजे रवाना हुये। यह ट्रेन गत दिनों आयी विनाशकारी बाढ़ के उपरान्त आज से ही पुनः आरम्भ हुयी है। हम सब भी रात्रि 12:40 बजे लखनऊ मेल से दिल्ली की ओर रवाना हो गये।

25 सितम्बर 1978 – सोमवार

हम निर्धारित समयानुसार सुबह 7.00 बजे दिल्ली पहुँच गये। श्री वी.जी. जोशी, पी.डी. गायकवाड़, और गोपाल मूर्ति ने स्टेशन पर हमारी अगवानी की। स्वामीनाथन अपनी बहन के घर रुकने के लिये चले गये और वेणुगोपाल गुप्ता अपनी बहन के घर चले गये, बाकी बचे हम सभी लोग पुरुषोत्तम गायकवाड़ के घर रुके।

जी. सन्थानम और मैं महालेखाकार (ऑडिटर जनरल) के कार्यालय गये और श्री वी. गौरीशंकर उप–महालेखाकार से मिशन द्वारा, सी. बी. डी. टी. को भेजी गयी अर्जी के सम्बन्ध में जानकारी लेने के लिये सम्पर्क किया। उन्होंने हमारी अपील का परीक्षण करने के बाद कहा कि अपील का प्रारूप बहुत अच्छा बना है। उसके पश्चात् हम सी.बी.डी.टी. गये और

संचालक से सचिवालय के उत्तरी खंड में स्थित उनके कार्यालय में सम्पर्क किया और अपील की एक प्रति दी। इसके साथ ही हमारी इस यात्रा के दौरान किये जाने वाले सम्पूर्ण कार्य सम्पन्न हुये।

दोपहर भोजन के पश्चात् मैंने मिशन के लेखा परीक्षक (ऑडिटर) से आसफ अली रोड पर ब्रॉड वे हॉटल के समीप स्थित उनके कार्यालय में सम्पर्क किया और उन्हें पूरे घटनाक्रम का संक्षिप्त विवरण दिया एवं अपील की एक प्रति उन्हें रिकार्ड में रखने के लिये और उस पर कार्यवाही करते रहने के लिये दी ।

शाम 5.40 बजे हम दो टैक्सियो में सवार होकर गायकवाड़ के घर से रवाना हुये और पश्चिमपुरी में वी. जी. जोशी के निवास पर पहुँचे। टैक्सी वाले ने 45 मिनट में तय हुई दूरी के एक तरफ के 28 रुपये लिये। मैंने वहाँ शाम 7.00 बजे सिटिंग दी। मुझे यह देखकर आश्चर्य हुआ कि श्री जोशी का घर दूरी पर स्थित होने के बावजूद भी वहाँ पर पैंतीस अभ्यासी उपस्थित थे जिनमें दो डेनमार्क के अभ्यासी भी थे। सिटिंग एक घंटे तक चली और बहुत ही अच्छी रही। प्राणाहुति अत्यन्त सूक्ष्म, गहरी और स्थिरतापूर्ण थी जिसमें अत्यन्त गहरायी के साथ–साथ असीम शान्ति का अहसास हो रहा था। जोशी के घर पर रात्रि भोजन करने के पश्चात् हम रात्रि 10.00 बजे वापस गायकवाड़ के घर लौट आये ।

26 सितम्बर 1978 – मंगलवार (दिल्ली)

दिल्ली के मुख्य बाजारों में भ्रमण कर श्री जी. सन्थानम को उनकी खरीददारी में सहायता की।

शाम 6.00 बजे – बसंत विहार में एम.एस.सुन्दरा के घर पहुँचे। वह दिल्ली केन्द्र के प्रभारी प्रशिक्षक है, लेकिन मिशन के कार्यो में उनकी कोई रुचि नहीं है। ऐसा प्रतीत होता है कि उनके रहन सहन का ढंग और समाज में उनका रुतबा, उनके अभ्यासी बनने के बीच में आड़े आता है। वह एक अच्छे और नेकदिल व्यक्ति हैं लेकिन अभ्यासियों से उनकी घनिष्टता नहीं है।

शाम 7.00 बजे – सुन्दरा के घर पर सामूहिक सत्संग कराया।

लगभग 55 अभ्यासी उपस्थित थे। सिटिंग एक घंटे चली, प्राणाहुति बहुत गहरी और प्रभावपूर्ण थी।

सुन्दरा के घर से हम सी.रामकृष्णा के साथ रात्रि का भोजन करने के लिये विक्रम विहार गये और उसके पश्चात् देर रात्रि को गायकवाड़ के घर वापस लौट आये ।

27 सितम्बर 1978 – बुधवार

सुबह 4.00 बजे सोकर उठे। दैनिक नित्यक्रिया से निपटकर तैयार होकर नई दिल्ली स्टेशन के लिये रवाना हो गये। हम सभी सुबह 7.10 बजे तमिलनाडु एक्सप्रेस से मद्रास की ओर रवाना हुये। जी.सन्थानम को कल ही मालिक के निर्देशानुसार विमान से रवाना कर दिया गया था और बाकी हम सभी सातों साथी हमेशा की तरह द्वितीय श्रेणी के थ्री–टायर के डिब्बे में यात्रा कर रहे थे। स्टेशन पर हमें पी.डी.गायकवाड़, किशनचन्द मानिकवाला और उनके बड़े भाई सोहनलाल मानिकवाला जो हमारे हरियाणा के भेल में नव स्थापित केन्द्र के प्रशिक्षक हैं, के द्वारा बिदाई दी गयी।

28 सितम्बर 1978 – गुरुवार

हम दोपहर 12.50 बजे मद्रास पहुँचे। हमारी यात्रा सुखद रही। मुरुगेसन एक्सप्रेस से तुरन्त बैंगलोर के लिये रवाना हो गये। राजकुमार अमरचन्द अपनी बहन के घर चले गये। के.आर.कुमार, एस.के.सुन्दरम और वेणुगोपाल गुप्ता मेरे साथ मेरे घर पर आ गये और उसी रात मेल से बैंगलोर के लिये रवाना हो गये।

1 अक्टूबर 1978 – रविवार

रायचूर के श्री राघवेन्द्र राव कडप्पा के रामचन्द्र रेड्डी और उमेश के साथ सुबह 7.35 बजे घर पर आये।

राघवेन्द्र राव ने सामूहिक सत्संग कराया। सिटिंग एक घंटे की रही। सिटिंग के पहले 20 मिनट मुझे कुछ भी अहसास नहीं हुआ और आखिरी के बीस मिनट सिटिंग में बहुत गहराई रही और अंत तक बनी रही। सिटिंग के पश्चात् मैंने अभ्यासियों के समक्ष अपने विचार रखे और तत्पश्चात् राघवेन्द्र राव अभ्यासियों से रुबरू हुये।

इसके बाद मरकरी ट्रेवल के मि. कृष्णन, राघवेन्द्र राव के साथ उनकी अगली विदेश यात्रा के कार्यक्रम के बारे में सुबह 10.00 बजे तक चर्चा करने में व्यस्त रहे। मेरा पुत्र कृष्णा, राघवेन्द्र राव को टीका लगवाने के लिये मीनाम्बकम के हवाई अड्डे ले गया। वे लोग दोपहर भोजन के समय तक गायत्री वापस लौट आये ।

श्री राघवेन्द्र राव मुझसे एकांत में कुछ गोपनीय चर्चा करना चाहते थे। हम लोग चर्चा के लिये सामने के शयन कक्ष, जिसका दरवाजा दक्षिण की ओर है (मालिक का गायत्री में शयन कक्ष) में चले गये। वह बोले, "भाई तुम्हें विदेश यात्रा और वहाँ की परिस्थितियों का अच्छा अनुभव है। तुमने पूज्य मालिक के साथ भी विदेश यात्रायें की हैं, कृपया मेरा मार्गदर्शन करो ताकि विदेश में आचार व्यवहार किस तरह का होना चाहिये, की सारी जानकारी मुझे रह सके।" मैंने उन्हें लगभग पन्द्रह मिनट तक सारी जानकारी दी। उसके पश्चात् वह बोले, "मैं कुछ और बिन्दुओं पर तुम्हारा स्पष्टीकरण चाहता हूँ, भाई मदिरा पान के बारे में क्या करें ? यदि मुझसे कोई इसे लेने के लिये आग्रह करे या यदि इसकी ठंडे मौसम के कारण आवश्यकता लगे तो क्या मैं इसे ले सकता हूँ ?" मैंने उत्तर दिया, "भाई तुम तो जानते हो कि मालिक ने अभ्यासियों को मदिरा पान के लिये मना किया है, अतः विदेश में कोई भी तुम्हें मदिरा पीने के लिये आग्रह नहीं करेगा, मालिक के इस तरह के निर्देश हैं और सभी को इसकी जानकारी है। इसलिये तुम्हें विदेशी अभ्यासियों से कोई खतरा नहीं है। और यदि कोई तुम्हें इसके लिये आग्रह करता भी है तो वह तुमसे यह अपेक्षा करेगा कि तुम इसके लिये इन्कार कर दो। यदि तुम ऐसा नहीं करते तो ऐसा समझा जायेगा कि तुम कोई बड़ी भूल कर रहे हो। जहाँ तक सर्द मौसम का प्रश्न है तो वहाँ पर कारें, मकान इत्यादि सबमें हीटर की व्यवस्था रहती है, अतः सर्दी को बर्दाश्त करने के लिये मदिरा की आवश्यकता नहीं पड़ती।" मैंने उन्हें बताया कि यद्यपि मालिक की ओर से दवाई के तौर पर इसका उपयोग करने की अनुमति दी गयी है। वह भी केवल उस परिस्थिति के लिये जब इसके उपयोग करे बिना काम न चलता हो।

मालिक के शब्दों के अनुसार "मैं मदिरा पीने की अनुमति तब देता हूँ जब स्वास्थ्य के लिये इसकी आवश्यकता हो ओर वह भी बूंदों की मात्रा में न कि बोतल की मात्रा में"।

उसके पश्चात् राघवेन्द्र राव ने मुझसे पूछा, "मांसाहार के बारे में क्या कहना है?" मैंने उन्हें बताया मालिक की दृष्टि में मांसाहार से स्थूलता आती है। इसके बारे में सभी को जानकारी है और मिशन का कोई भी अभ्यासी उससे मांसाहार लेने के लिये आग्रह नहीं करेगा। उसके पश्चात् राघवेन्द्र राव ने मुझसे बड़ी असभ्यता के साथ–साथ गम्भीरतापूर्वक चौंका देने वाले अंदाज में पूछा कि मिशन की औरतों से सम्पर्क करने के बारे में क्या नीतियाँ हैं ? इस प्रश्न ने मुझे चौंका दिया, मैं समझ नहीं पा रहा था कि वह इसका उत्तर चाह रहा है या केवल मेरी परीक्षा ले रहा है। मैंने उन्हें बताया कि मालिक इसका विशेष ध्यान रखते हैं कि अभ्यासी का चरित्र उत्तम होना चाहिये और लालाजी द्वारा इस सम्बन्ध में दिये गये उनके विचारों के बारे में जानकारी देते हुये मैंने उन्हें बताया कि लालाजी के अनुसार आध्यात्मिकता में कोई भी कितनी ही ऊँचाई तक क्यों न पहुँच जाये, लेकिन यदि उसका चरित्र उत्तम नहीं है तो उसे यह समझ लेना चाहिये कि उसने आध्यात्मिकता के क्षेत्र में कदम भी नहीं रखा है।

श्री राघवेन्द्र राव और आर. रामचन्द्र रेड्डी हमारे साथ गायत्री में दोपहर का भोजन करने के पश्चात् उमेश के घर बसंत नगर रवाना हो गये।

शाम 5.00 बजे हम सभी उमेश के जुड़वाँ पुत्रों सोनू और मोनू (सुनीत और पुनीत) के जन्मदिवस कार्यक्रम के समारोह में उपस्थित होने के लिये उनके घर पहूँचे।

2 अक्टूबर 1978 – सोमवार

शाम 5.00 बजे कृष्णा के साथ उमेश के घर राघवेन्द्र राव से मिलने के लिये गया। मैंने उससे मिशन के क्रिया कलापों और उनकी प्रस्तावित विदेश यात्रा के सम्बन्ध में लम्बी चर्चा की।

तत्पश्चात् उन्होंने हमें सिटिंग दी। सिटिंग समाप्त होने के पश्चात् उन्होंने कृष्णा की ओर देखा और मुझसे कहा, "वह एक बहुत अच्छा

लड़का है श्रीमान् ! उसमें ग्रहण करने की बहुत अधिक क्षमता है।'' पुनः उन्होंने कृष्णा के सम्बन्ध में दूसरा प्रश्न किया, ''क्या वह प्रशिक्षक है ?'' मैंने कहा नहीं। तत्पश्चात् उन्होंने कारण स्पष्ट करते हुये बताया, ''मैंने इसलिये पूछा क्योंकि सिटिंग के दौरान हृदय क्षेत्र के सभी बिन्दुओं को चमकते हुये पाया। अतः मैंने सोचा कि मालिक शायद उसे कार्य करने की अनुमति दे चुके हैं।''

उसके पश्चात् राघवेन्द्र राव ने कृष्णा से पूछा कि क्या उसे जानकारी है कि प्रसाद कैसे अर्पण किया जाता है। उसके बाद जानकारी देते हुये उन्होंने बताया (प्रसंगवश उनके द्वारा दी गयी जानकारी गलत थी) कि जब प्रसाद अर्पण करते हैं तो हमें लालाजी, चैतन्य महाप्रभू, स्वामी विवेकानन्द, और भगवान श्री कृष्ण पर किसी भी क्रम में ध्यान करना चाहिये, क्योंकि वे सहज मार्ग पद्धति के मार्गदर्शक हैं। अतः सभी का आशीर्वाद हमें प्रसाद के रूप में प्राप्त होगा।

8 अक्टूबर 1978 – रविवार

सुबह 7:30 बजे – मैंने सामूहिक सत्संग कराया। सिटिंग 45 मिनट चली जिसमें बहुत गहराई और तल्लीनता थी।

मेरे पुत्र कृष्णा ने ''साक्षात्कार में सतत् स्मरण सहायक है'' के विषय पर अपने विचार रखे। यह उसका पहला भाषण था जो बहुत अच्छा रहा।

9 अक्टूबर 1978 – सोमवार

कृष्णा बालाजी टूरिस्ट की रात्रि बस सेवा से रात्रि 9:30 बजे बैगलोर के लिये रवाना हुआ।

10 अक्टूबर 1978 – मंगलवार

शाम 6:00 बजे श्री बैश्नो, जो वर्तमान में बगदाद में रहते हैं, उनकी माताजी, एस.के. मोहन और के. महालिंगम मेरे घर पर आये। मैंने उन्हें शाम 7:00 बजे से 7:40 तक सामूहिक सिटिंग दी। सिटिंग के बाद के. महालिंगम ने बताया कि उन्हें ऐसा महसूस हुआ कि जैसे कोई ठोस पदार्थ से बना खोल चटक गया, उसे खोला गया और उसे अंदर से बाहर

निकाल दिया गया। तत्पश्चात् उन्होंने बहुत हल्कापन महसूस किया। उन्हें एक और नया अनुभव हुआ जब उन्होंने महसूस किया कि उनका शरीर यहाँ पर न होकर किसी अन्य स्थान पर है।

11 अक्टूबर 1978 – बुधवार

सुबह 9:00 बजे – एस. के. मोहन, ए. ए. पई और मैं, म्यूनिख के गेब्रियल डाइट्रिच और माइकल को अपने घर पर लाने के लिये वुडलैंड होटल पहुँचे और उन्हें साथ ले आये।

सुबह 10:30 बजे – गाबी, माइकल, एस. के. मोहन, के. महालिंगम, ए. ए. पई, वाई. वी. एस. लक्ष्मी और उनकी माताजी को सिटिंग दी। सिटिंग बत्तीस मिनट तक चली जो बहुत अच्छी, गहरी और प्रभावकारी थी।

शाम 6:30 बजे – मोहन, स्वामीनाथन, दोरेइवेलू, गाबी, माइकल, डॉ. विश्वनाथन और सुब्बारायुडू को सिटिंग दी जो 50 मिनट तक चली और बहुत अच्छी रही।

सिटिंग के बाद मोहन ने कहां उसे ऐसा महसूस हुआ कि उससे काले बादल लहराते हुये दूर जा रहे हैं, जबकि स्वामी नाथन का कहना था कि उसे सिंटिग का वास्तविक प्रभाव सिंटिग की समाप्ति पर महसूस हुआ।

गाबी, माइकल, मोहन और स्वामीनाथन रात्रि भोजन तक रुके रहे और भोजन के तुरन्त पश्चात् रात्रि 9:00 बजे रवाना हो गये।

14 अक्टूबर 1978 – शनिवार (बॉम्बे)

आई. सी. की उड़ान से सुबह 7:30 बजे मद्रास से रवाना होकर सुबह 9:10 बजे बॉम्बे पहुँचा। श्री रमनलाल बी. देसाई ने हवाई अड्डे पर मेरी अगवानी की और मुझे नजदीक ही अपने निवास पर ले गये। उनके घर पर चाय पीने के पश्चात् वह मुझे डॉ. जाजोदिया के घर ले गये, जहाँ मैंने सुबह 11:00 बजे सामूहिक सत्संग कराया जिसमें लगभग बाइस अभ्यासी उपस्थित थे। डॉ. जाजोदिया के घर से दोपहर 3:00 बजे अहमदाबाद जाने के लिये विमान तल की ओर रवाना हुआ। मेरी उड़ान 4 घंटे विलम्ब से चल रही थी। रमनभाई देसाई को किसी तरह इस विलम्ब की सूचना प्राप्त हो गयी, वह हवाई अड्डे पर आये और शाम 5:00 बजे

मुझे अपने साथ अपने घर पर ले गये। उनके घर पहुँचकर मुझे मालूम हुआ कि सी. राजगोपालन ने उन्हें अहमदाबाद से फोन करके उड़ान के विलम्ब के बारे में सूचना दे दी थी।

शाम 6:00 बजे – रमनभाई और उनकी पत्नी को सिटिंग दी।

शाम 7:00 बजे हवाई अड्डे के लिये रवाना हुआ। विमान ने रात्रि 8:00 बजे उड़ान भरी और रात्रि 8:50 बजे अहमदाबाद पहुँचा। देवराम चावड़ा, सी.राजगोपालन और उनकी पत्नी प्रेमा, कांतिभाई की पत्नी विरूबेन, बाबूभाई पटेल, कृष्णाभाई शाह सभी ने हवाई अड्डे पर मेरी अगवानी की। उसके पश्चात् राजगोपालन मुझे सूर्योदया पार्क में अपने निवास पर रात्रि भोज के लिये ले गये। भोजन के पश्चात् रात्रि 11:30 बजे मैं कामा होटल में ठहरने के लिये पहुँचा। यहाँ मैं कम्पनी की तरफ से दौरे पर आया हूँ।

15 अक्टूबर 1978 – रविवार

मैं सुबह के सत्संग में उपस्थित नहीं हो सका क्योंकि कार्यालय के कार्य हेतु मेरा किसी से मुलाकात करने का समय निर्धारित था। मैं इसी कार्य के सिलसिले में अहमदाबाद दौरे पर आया हूँ।

सुबह 11:00 बजे मैं सी. राजगोपालन के निवास पर पहुँचा और दोपहर का भोजन वहीं किया। उसके बाद दोपहर 12:30 बजे से शाम 4:30 बजे तक कुछ अभ्यासियों से हिन्दी में बातें कीं।

शाम 7:00 बजे – राजगोपालन के निवास की खुली छत पर सामूहिक सत्संग कराया जिसमें लगभग 60 अभ्यासी उपस्थित थे। सिटिंग पचपन मिनट तक चली और बहुत अच्छी रही। सत्संग के बाद मैंने एकत्रित अभ्यासियों से एक घंटे तक हिन्दी में विचार विमर्श किया।

रात्रि 9:30 बजे मैं रात्रिभोज के लिये श्री कांतिभाई वी. पटेल के निवास पर पहुँचा और वहाँ एकत्रित लोगों से पन्द्रह मिनट तक हिन्दी में चर्चा की। सी.राजगोपालन की पत्नी प्रेमाबेन भोजन के दौरान अचानक भावुक हो गयीं और रोने लगीं।

16 अक्टूबर 1978 – सोमवार

सुबह 8:00 बजे – हमारी प्रशिक्षक बहन द्रोपदी देवी अग्रवाल के घर पर सामूहिक सत्संग कराया। अभ्यासियों की संख्या कम थी, कुल तीस ही अभ्यासी उपस्थितं थे। सिटिंग बहुत अच्छी रही।

दोपहर 12:00 बजे से 5:00 बजे तक – कॉंतिभाई पटेल, श्रीमती वीरबाला पटेल, उनकी पुत्री दक्षा, गनपती अय्यर, श्रीमती अय्यर, श्रीमती वेदा राजगोपालन, बाबूभाई एफ. पटेल, डी. पाठक और द्रोपदी देवी को व्यक्तिगत सिटिंग दी।

शाम 7:00 बजे – पुनः सी. राजगोपालन के घर की खुली छत पर सामूहिक सत्संग कराया। मात्र पच्चीस अभ्यासी उपस्थित थे। यह सिटिंग बहुत कम समय, मात्र तीस मिनट की रही, लेकिन अच्छी थी। श्री दण्डपाणि और श्री कान्तिभाई दोनों ने दस–दस मिनट के लिये सबके समक्ष अपने विचार व्यक्त किये।

रात्रि 9:30 बजे भोजन के लिये श्री सूरजभान अग्रवाल के निवास पर पहुँचे जो द्रोपदी देवी के पति श्री गोविंदराम अग्रवाल के साले हैं। उनके निवास पर लगभग बीस लोग भोजन पर आमंत्रित थे।

17 अक्टूबर 1978 – मंगलवार

सुबह 8:00 बजे – कामा होटल में अपने कमरे में सी. राजगोपालन को व्यक्तिगत सिटिंग दी। उसके पश्चात् होटल का कमरा खाली कर दिया और द्रोपदी बेन के घर चला गया जहाँ मैंने निम्नलिखित अभ्यासियों को दो–दो के ग्रुप में सिंटिग दी। श्री एवं श्रीमती आत्माराम सरोद, श्री सुब्रामनियम एवं श्री पिशारोती, विरूबेन पटेल और मेवाबेन अग्रवाल, श्रीमती वेदा राजगोपालन एवं श्रीमती सी. राजगोपालन और चार अन्य जिनके नाम मैंने दर्ज नहीं किये। इसके पश्चात् सुबह 11:00 बजे ही दोपहर का भोजन कर लिया, क्योंकि मुझे दोपहर 1.00 बजे की उड़ान से उदयपुर के लिये निकलना था। दोपहर भोजन के पश्चात् मैं विमान तल जाने के लिये रवाना होने ही वाला था कि अकस्मात् ही मैंने किसी से उड़ान की स्थिति की जानकारी प्राप्त करने के लिये इंडियन एयर लाइन फोन करने के

लिये निवेदन किया। मुझे यह जानकर आश्चर्य हुआ कि आई. ए. सी. द्वारा उदयपुर की उड़ान निरस्त कर दी गयी थी क्योंकि यह उड़ान बम्बई से रवाना होती है जो अभी तक वहाँ से नहीं चली थी। पुर्ननिर्धारित समयानुसार यह उड़ान शाम 4.00 बजे बॉम्बे से रवाना होगी। अतः उदयपुर में रात्रि में विमान उतरने की सुविधा न होने के कारण उड़ान निरस्त कर दी गयी है। अब यह उड़ान सीधे अहमदाबाद से दिल्ली जायेगी। मैंने गोविंदराम से निवेदन किया कि वह कु. सुधा गुप्ता को उदयपुर फोन करके मेरे कार्यक्रम के निरस्त होने की सूचना दे देवें। तत्पश्चात् मैं दोपहर 1:00 बजे सी. राजगोपालन के घर पहुँचा और दोपहर 3:30 बजे तक वहीं विश्राम किया।

शाम 7:00 बजे – सांयकालीन सत्संग, द्रोपदी देवी अग्रवाल ने कराया। सिटिंग आधे घण्टे तक चली और बहुत अच्छी रही। उसके पश्चात् सूरजभान जी ने हिन्दी में आधे घंटे तक अपने विचार व्यक्त किये और वक्तव्य देने की अपनी आकर्षक शैली से सबका मन मोह लिया। उसके पश्चात् मैंने एक घण्टे तक हिन्दी में अपने विचार सबके सम्मुख रखे।

रात्रि में सी. राजागोपालन के यहाँ भोजन के पश्चात् मैंने थोड़े लेकिन अत्यधिक रुचि रखने वाले अभ्यासियों से रात्रि 11:30 बजे तक विचार विमर्श किया। चूंकि मैंने होटल का कमरा सुबह ही खाली कर दिया था, अतः भाई राजगोपालन द्वारा उनके निवास पर रात्रि विश्राम हेतु किये गये निवेदन को मैंने सहर्ष स्वीकार कर लिया।

18 अक्टूबर 1978 – बुधवार (बड़ौदा)

अहमदाबाद से सुबह 7:00 बजे रवाना होकर बड़ौदा के रास्ते सुबह 10:30 बजे अंकलेश्वर पहुँचा। मैं वहाँ कम्पनी के काम से पूरे दिन था, फिर बड़ौदा की ओर रवाना हुआ। शाम 6:00 बजे बड़ोदा के प्रशिक्षक श्री मधुभाई टी. अमीन के निवास पर पहुँचा, मेरा आज उन्हीं के निवास पर विश्राम करने का कार्यक्रम निर्धारित था।

शाम 7:30 बजे – मधुभाई के निवास की खुली छत पर सामूहिक सत्संग कराया। कुल पचपन अभ्यासी उपस्थित थे अर्थात् इस केन्द्र की

कुल क्षमता के अनुसार सभी के सभी अभ्यासी उपस्थित थे। सिटिंग बहुत अच्छी रही और पैंतालिस मिनट चली। उसके पश्चात् रात्रि 9:00 बजे तक मैंने हिन्दी में अपने विचार व्यक्त किये।

19 अक्टूबर 1978 – गुरुवार (बड़ौदा)

सुबह 7:30 बजे – मधुभाई के घर पर सामूहिक सत्संग कराया, कुल अठ्ठाइस की उपस्थिति रही। सिटिंग की अवधि एक घण्टे की रही, तत्पश्चात् मैंने बीस मिनट तक अपने विचार व्यक्त किये।

सुबह 9:00 बजे – मधुभाई अमीन को व्यक्तिगत सिटिंग दी।

बड़ौदा से सुबह 10:00, बजे मधुभाई और एक अन्य अभ्यासी के साथ कार से रवाना हुआ और दोपहर 12:30 बजे अहमदाबाद में सी. राजगोपलन के घर पहुँचा।

शाम 5:00 बजे से श्रीमती परमेश्वरन, श्री के.राजगोपालन, श्रीमती सुलोचना राजगोपालन, बाबूभाई पटेल, आनन्द के एक अभ्यासी और श्री मधुभाई को व्यक्तिगत सिटिंग दीं।

शाम 8:00 बजे – श्री सूरजभान अग्रवाल के घर पर सामूहिक सत्संग कराया जिसमें छब्बीस अभ्यासी उपस्थित थे। सिटिंग बहुत अच्छी रही और पैंतालिस मिनट चली। उसके पश्चात् श्री बाबूभाई एफ. पटेल के घर पर रात्रि भोज के लिये पहुँचा और रात्रि 11:30 बजे सी. राजगोपालन के घर पर वापस लौट आया।

20 अक्टूबर 1978 – शुक्रवार

सुबह 8:00 बजे – सी. राजगोपालन के घर पर सामूहिक सत्संग कराया। बीस की उपस्थिति रही। सिटिंग कम अवधि, मात्र आधे घण्टे तक चली। इसके पश्चात् द्रोपदी देवी अग्रवाल ने चिर परिचित अंदाज में अपना वक्तव्य देकर सबका मन मोह लिया। उनका वक्तव्य अत्यंत भावविह्वल कर देने वाला था और इस दौरान उनके नेत्रों से अविरल अश्रुधारा बहती रही जबकि उनकी आवाज कभी कभार ही भर्राई एवं उनके कथन में भी लयबद्धता बनी रही। उनका मेरे बारे में कहना था कि, "भाई (यानि मैं), बाबूजी महाराज के समान ही गड़बड़ –सड़बड़ अन्दाज में उर्दू (हिन्दुस्तानी)

बोलते हैं।'' यह मेरे हिन्दी बोलने के बारे में उसका अपना मत था। अन्त में मैंने कार्यक्रम की समाप्ति पर हिन्दी में लगभग आधे घण्टे तक अपने विचार व्यक्त किये।

सुबह 10:00 बजे से हर्षद भाई मेहता, कु. शालिनी शिनोय, श्रीमती राजगोपालन, कु. बसंती राजगोपालन, कु. ऊषा आत्माराम सरोद, श्री आत्माराम सरोद, श्री कान्तिभाई पटेल, श्रीमती विरूबेन पटेल, श्री गनपति अय्यर, श्रीमती गनपति अय्यर, श्री सूरजभान अग्रवाल, श्रीमती मेवाबेन अग्रवाल और श्री सुब्रामनियम को व्यक्तिगत सिटिंग देने में व्यस्त रहा।

दोपहर का भोजन मैंने देरी से 2.15 बजे किया। उसके पश्चात् मैंने घनश्यामदास अग्रवाल और श्री रामकृष्णन को व्यक्तिगत सिटिंग दी। इस तरह कुल मिलाकर मेरे द्वारा आज पन्द्रह व्यक्तिगत सिटिंग दी गई।

राजगोपालन के घर से शाम 4:45 बजे हवाई अड्डे की ओर रवाना हुये और शाम 6:10 बजे अहमदाबाद से सी. राजगोपालन के साथ विमान द्वारा उड़ान संख्या आई. सी. 504 से बम्बई के लिये रवाना हुये। हवाई अड्डे पर हमें द्रोपदीबेन, प्रेमाबेन, और घनश्यामदास द्वारा विदाई दी गयी। हमारा विमान शाम 7:00 बजे बम्बई पहुँचा।

शान्ताक्रूज हवाई अड्डे पर रमनभाई देसाई ने हमारी अगवानी की और हमें डॉ. जाजोदिया के निवास पर ले गये।

रात्रि 9.00 बजे – डॉ. और श्रीमती जाजोदिया, सी. राजगोपालन, रमनभाई, विजय गायकवाड़ को सामूहिक सिटिंग दी। सिटिंग की अवधि पैंतालिस मिनट की रही। सिटिंग बहुत अच्छी थी। देर रात्रि तक मिशन के विषय में डॉ. जाजोदिया से लम्बी वार्ता चलती रही।

21 अक्टूबर 1978 – शनिवार

सुबह 7:30 बजे से दोपहर 3:00 बजे तक व्यक्तिगत सिटिंग देने में व्यस्त रहा, इस दौरान दोपहर भोजन के लिये थोड़ी देर का विश्राम रखा। कुल मिलाकर चौदह सिटिंग दी गयीं जो निम्नप्रकार हैं :–

1) डॉ. ए.बी. जाजोदिया – चौथे बिन्दु तक पहुँच की स्थिति प्रतीत हो रही थी, उच्च बिन्दु पर स्थूलता पायी गयी।

2) शिवराम एच. जोशी, आई.टी.ओ.
3) राम मोहन आचार्या
4) मंगेश मेहता – वकील – बहुत स्थूलता पायी गयी।
5) डॉ. एन.जी. गाँधी– स्थूल लेकिन ग्रहण करने की क्षमता बहुत अच्छी थी।
6) रमनभाई देसाई – हृदय क्षेत्र के उच्च भाग के विभिन्न खण्डों में स्थूलता पायी गयी।
7) श्री बी.बी. मोतीवाला।
8) श्रीमती मोतीवाला – थोड़ी बहुत स्थूलता पायी गयी।
9) कु. जेरबानू पी. सेठना – धरातल में ठोस स्थूलता, उसके ऊपर हल्कापन !
10) प्रो. सुधाकर देशपाण्डे।
11) विजय गायकवाड़– बोलचाल में अभद्रता एवं असन्तुलन की स्थिति।
12) डी.जी. चित्रे – ग्रहण क्षमता अच्छी, स्थिति एकदम साफ ।
13) श्रीमती जैजी।

शाम 5:30 बजे अचानक श्री वी.जी. जोशी का आगमन हुआ – वह मिराज से दिल्ली अपने घर वापस जा रहे थे।

शाम 6:30 से 7:15 बजे – सामूहिक सत्संग कराया जिसमें लगभग तीस की उपस्थिति रही। उसके पश्चात् मैंने पैंतालिस मिनट तक "ग्रेविटी एण्ड लव" विषय पर अपने विचार व्यक्त किये। इसी विषय पर मैंने कुछ माह पूर्व बैंगलोर में अपने विचार व्यक्त किये थे। मेरे वक्तव्य का मूल प्रसंग यह था कि जैसे ग्रेविटी का सम्बन्ध भौतिकता से है, वैसे ही प्रेम का सम्बन्ध आध्यामिकता से।

22 अक्टूबर 1978 – रविवार

सुबह 7:30 बजे– डॉ. आत्माराम जाजोदिया को व्यक्तिगत सिटिंग दी।

सुबह 9:00 बजे हम हमारे दक्षिण अफ्रीका के प्रशिक्षक श्री खूसलभाई के. पटेल से मिलने अँधेरी रेलवे स्टेशन गये जो सूरत से विशेष तौर पर मुझसे मिलने के लिये आ रहे हैं। हमने सुबह 10:10 बजे स्टेशन

पर उनकी अगवानी की और वहाँ से सीधे रमनभाई के घर पहुँचे जहाँ लगभग पैंतालिस अभ्यासी पहले से ही, रविवार के सत्संग के लिये एकत्रित थे।

सुबह 10:30 बजे से 11:00 बजे तक मैंने सामूहिक सत्संग कराया। सिटिंग बहुत अच्छी रही, जो गहरी, निश्छल, शान्त और स्थिर थी। मालिक की कृपा से मेरी अधिक से अधिक सिटिंग में ऐसा ही प्रभाव होता है। मेरी भतीजी जयश्री, उसका पति एन.रंगाराजन्, ललिता श्रीनिवासन और श्री श्रीनिवासन (अहमदाबाद के सुब्रामनियम की बेटी और दामाद), जो आसाम में एस. बी. आई. में कार्यरत हैं एवं तीन अन्य और अभ्यासी भाई, कुल पैंतालिस अभ्यासियों की टोली में उपस्थित थे। मैंने खूसलभाई का परिचय सबसे कराया। उसके पश्चात् दस मिनट तक वह सबसे रूबरू हुये। सत्संग के पश्चात् खूसलभाई और मैंने दक्षिण अफ्रीका और मारीशश में मिशन के कार्यो के बारे में लम्बी चर्चा की। वह कुछ दिनों पश्चात् मालिक से मिलने शाहजहाँपुर जा रहे हैं। खूसलभाई बहुत विनम्र हैं, अथवा वह विनम्र दिखने का भरपूर प्रयास करते हैं, यह तो वहीं जाने।

दोपहर के भोजन के पश्चात् मुझे तेज सिरदर्द था जिसकी शुरूआत आज सुबह से ही हो गयी थी, इसलिये मैंने विश्राम करना उचित समझा और दोपहर 3.00 बजे तक आराम किया।

दोपहर 3.00 बजे – खूसलभाई को व्यक्तिगत सिटिंग दी।

मैं शाम 4.15 बजे रमन भाई के घर से हवाई अड्डे की ओर रवाना हुआ और शाम 6.00 बजे आईएसी की उड़ान संख्या आईसी 171 से जो अपने निर्धारित समय से तीस मिनट देरी से चल रही थी, मद्रास की ओर रवाना हो गया। मुझे विमानतल पर डॉ. जाजोदिया, सी. राजगोपालन और रमनभाई ने विदाई दी। मैं शाम 7.40 बजे मद्रास पहुँच गया।

24 अक्टूबर 1978– मंगलवार

मलेशिया के के. वी. रेड्डी और अमेरिका के वेनस्टॉक, दोनों का दिल्ली से सुबह 10.00 बजे आगमन हुआ। मैंने कार्यालय से दोपहर बाद की छुट्टी ले ली ताकि के. वी. से मिशन के कार्य के सम्बन्ध में विस्तार से

चर्चा कर सकूँ। वह वाकई में मिशन के लिये एक अच्छी खोज हैं और वह बहुत थोड़े से समय में ही मालिक के स्नेहिल और विश्वासपत्र बन गये हैं।

शाम 6.30 बजे – के. वी. रेड्डी ने शाम को विशेष सामूहिक सत्संग कराया – पैंतीस की उपस्थिति रही, सिटिंग वास्तव में बहुत अच्छी रही। रेड्डी ने दस मिनट के लिये अपने विचार व्यक्त किये, उसके पश्चात् लगभग आधा घंटे तक मैंने "सार्वभौमिक प्रेम और स्थूलता" विषय पर अपने विचार प्रकट किये।

रात्रि 11.00 बजे तक के.वी.और फ्रेड से विचार विमर्श किया। दोनों ही हमारे निवास पर ठहरे हुये हैं।

25 अक्टूबर 1978 – बुधवार

के. वी. रेड्डी, सुबह 8.35 बजे एयर इंडिया के विमान से कुआलालम्पुर की ओर रवाना हो गये। उनके जाने के पश्चात् फ्रेड और मैंने अमेरिका में मिशन के कार्यो के सम्बन्ध में विस्तृत चर्चा की।

27 अक्टूबर 1978 – शुक्रवार

शाम 6.30 बजे – फ्रेड वेन स्टॉक ने सामूहिक सत्संग कराया। पैंतीस मिनट की अच्छी सिटिंग रही। अड़तीस अभ्यासी उपस्थित थे। फ्रेड ने अपने देश में मिशन के कार्य के बारे में बताया, उसके बाद बीस मिनट "सरलता (Simplicity)" पर बोले।

29 अक्टूबर 1978 – रविवार

प्रातः 7.30 बजे – मैंने सामूहिक सत्संग कराया– सिटिंग पैंतालिस मिनट की रही। साठ से अधिक संख्या में अभ्यासी उपस्थित थे। सिटिंग के पश्चात् सुलोचना बहुत विचलित महसूस कर रही थी जबकि फ्रेड का कहना था कि सिटिंग बहुत अच्छी थी।

फ्रेड वेन स्टॉक आई. ए. सी. की शाम की उड़ान से रात्रि 8.45 बजे दिल्ली के लिये रवाना हो गये। उड़ान दो घंटे देरी से चल रही थी। उनकी अमेरिका लौटने से पूर्व कल शाहजहाँपुर जाने की भी योजना है।

31 अक्टूबर 1978 – मंगलवार

स्वप्न :– मैं किसी ऐसे स्थान पर हूँ जिसके बारे में मुझे कोई

जानकारी नहीं है। मैं वहाँ पर शायद किसी अन्य गंतव्य पर पहुँचने के पूर्व बीच पड़ाव पर हूँ। मैं एक भवन जो महाविद्यालय के छात्रावास जैसा प्रतीत हो रहा है, के प्रथमतल पर एक कमरे में हूँ और शौचालय की तलाश में हूँ, शौचालय का रास्ता बड़ा दुर्गम और अत्यन्त क्षत विक्षत स्थिति में है और वहाँ बहुत अंधकार भी है। मैं जिस स्थान पर शौचालय स्थित है, वहाँ जाने में बहुत भयभीत महसूस कर रहा हूँ। मुझे कमरे के बगल से जुड़े हुये स्नानागार के बारे में पता चलता है और जैसे ही मैं इसके अंदर प्रेवश करता हूँ तो पाता हूँ कि एक औरत और उसके बच्चे ने जो बाहर के दरवाजे से अन्दर आये थे, शौचालय को बहुत गन्दा कर रखा है। मैं इसके उपयोग में अपने आपको असमर्थ पाता हूँ और उस औरत पर बहुत क्रोधित होता हूँ। स्वप्न समाप्त।

1 नवम्बर 1978 – बुधवार

रायचूर के श्री और श्रीमती राघवेन्द्र राव, कडप्पा के डी. बी. अनीगीरी, डी. आर. विठ्ठल राव, आर. रामचन्द्र रेड्डी, और एम. डी. जहाँगीरदार ये सभी इसी शहर में हैं और उमेश के साथ बसंत नगर में ठहरे हुये हैं।

बी. एम. हेबल, डॉ. एस. बी. श्याम राव, चन्नाबासप्पा और श्रीनिवास राव कसमपुरकर सभी का दोपहर 2.00 बजे बॉम्बे मद्रास जनता एक्सप्रेस से गुलबर्गा से आगमन हुआ और यह चारों गायत्री में हमारे साथ ही ठहरेंगे।

शाम 6.30 बजे – उमेश के घर पर राघवेन्द्र राव ने विशेष सामूहिक सत्संग कराया जिसमें सौ से भी अधिक की उपस्थिति रही।

रात्रि 11.10 बजे – राघवेन्द्र राव एयर इंडिया की उड़ान से बॉम्बे के लिये रवाना हुये जहाँ से वह रोम जायेंगे। मैंने और बहुत से अन्य अभ्यासियों ने उन्हें विदाई दी और देर रात्रि को वापस लौटा। रात्रि 2.00 बजे तक सोने के लिये जाने से पहले गुलबर्गा की चौकड़ी से गुफ्तगू चलती रही।

2 नवम्बर 1978 – गुरुवार

गुलबर्गा के चार अभ्यासी, डॉ. एस. बी. श्याम राव, श्री बी. एम. हेबल, श्री चन्नाबासप्पा और श्री एस. आर. कसमपुरकर भाई राघवेन्द्र राव

से मिशन के कार्य के सम्बन्ध में उनकी पहली यूरोप की विदेश यात्रा के सिलसिले में उनसे मिलने के लिये यहाँ आये थे। ये सभी बॉम्बे जनता एक्सप्रेस से दोपहर 3.35 बजे गुलबर्गा के लिये रवाना हो गये।

3 नवम्बर 1978– शुक्रवार

अप्पा का रात्रि 8.00 बजे वृन्दावन एक्सप्रेस से बैंगलोर से आगमन हुआ।

8 नवम्बर 1978 – बुधवार

अप्पा मायावरम के लिये सुबह 9.55 बजे ट्रेन से रवाना हुये।

9 नवम्बर 1978 – गुरुवार

कनाडा के डॉन सेबोरियन और उनकी पत्नी जैकी का रात्रि11.25 बजे, आई. ए. सी. की उड़ान संख्या 540 से दिल्ली से आगमन हुआ। उड़ान निर्धारित समय से आधा घंटे देरी से यहाँ पहुँची। वे मालिक के साथ शाहजहाँपुर में पिछले पन्द्रह से भी अधिक दिनों से थे और अब कुछ दिनों के लिये हमारे साथ रहेंगे।

12 नवम्बर 1978 – रविवार

सुबह 7.30 बजे – डॉन सेबोरियन ने सुबह का सत्संग कराया। ध्यान कक्ष खचाखच भरा हुआ था। लगभग सत्तर अभ्यासी उपस्थित थे। सिटिंग पैंतालिस मिनट चली और बहुत अच्छी रही। डॉन ने अभ्यासियों के समक्ष आधे घंटे तक बड़े अच्छे ढंग से अपने विचार व्यक्त किये। इसके पश्चात् हमारे येरागुन्टला के प्रशिक्षक श्री एम.वैकटसुबैय्या ने भी बहुत अच्छे ढंग से तेलगू में एक घंटे तक अपना वक्तव्य दिया।

सुबह 10.30 बजे – डॉन ने अपने नये ऑडियो – विजुअल कैमरे से मेरा पन्द्रह मिनट तक साक्षात्कार लिया जो ढाई मिनट की छः कैमरा रोल में रिकार्ड हुआ।

14 नवम्बर 1978 – मंगलवार

डॉन सेबोरियन और जेकी कोट्टूरपुरम में हमारे आश्रम की प्रस्तावित जमीन देखने के लिये गये। वे दोनों शाम 6.00 बजे, आई सी की उड़ान से दिल्ली के लिये रवाना हो गये। कृष्णा, एस. नारायणस्वामी और मैंने उन्हें विमानतल पर विदाई दी।

16 नवम्बर 1978 – गुरुवार (मदुरई)

पांड्यन एक्सप्रेस से सुबह 7.00 बजे मद्रास से मदुरई पहुँचा। सारा दिन विरुदनगर में अपनी कम्पनी के कार्य में व्यस्त रहा।

शाम 7.00 बजे–वालमजी मेन्शन में सत्संग कराया जिसमें छब्बीस अभ्यासी उपस्थित थे जिनमें जे.आर.दोरेस्वामी अय्यर, वी. जे. चन्द्रशेखर और डब्ल्यू. एच. श्रीनिवासन भी सम्मिलित थे। ये सभी प्रशिक्षक हैं। सिटिंग बहुत अच्छी रही और चालीस मिनट चली। उसके पश्चात् मैंने रात्रि 9.00 बजे तक सबके समक्ष अपने विचार व्यक्त किये।

17 नवम्बर 1978 – शुक्रवार (तालाकुलम)

शाम 7.00 बजे – पलानीचामी के निवास पर तालाकुलम में शाम का सत्संग कराया। सिटिंग पैंतालिस मिनट की रही। उसके पश्चात् रात्रि 8.45 तक तामिल में अपने विचार व्यक्त किये ।

18 नवम्बर 1978 – शनिवार (राजापलायम)

मदुरई के डब्ल्यू. एच. श्रीनिवासन और वी. जे. चन्द्रशेखर, विरुदनगर के आर. वर्धन और पी. के. वैंकटेशन और तिरूनेलवेली के श्री के. आर. सुब्रामनियम जो सभी प्रशिक्षक हैं, के साथ राजापलायम पहुँचा।

शाम 6.00 बजे से 6.45 बजे तक सत्संग कराया जिसमें केवल छः स्थानीय अभ्यासी उपस्थित थे। रात्रि 9.00 बजे वापस मदुरई लौट आया। के.आर.सुब्रामनियम कुछ दिनों से मेरे साथ ही ठहरे हुये हैं।

19 नवम्बर 1978 – रविवार (मदुरई)

सुबह 7.30 बजे मुदरई केन्द्र में श्री थस्मास्वामी के निवास पर सबेरे का सत्संग कराया, सिटिंग 35 मिनट चली।

नाश्ते के बाद, डब्ल्यू. एच. श्रीनिवासन, के. आर. सुब्रामनियम प्रशिक्षक वी. जे. चन्द्रशेखर और विरुदनगर के अभ्यासी एस शंकर के साथ त्रिची के लिये रवाना हुआ। वालमजी से सुबह 9.00 बजे रवाना होकर सुबह हम 11.15 बजे त्रिची पहुँचे और सीधे समीप ही स्थित थिलाईनगर में जी.सन्थानम के निवास पर पहुँचे, जहाँ पर हम सबने दोपहर का भोजन किया। तत्पश्चात् हम होटल अशोक भवन पहुँचे।

शाम 4.30 बजे – बीस अभ्यासियों को सिटिंग दी जो पैंतालिस मिनट चली।

शाम 6.30 बजे – श्री एस. सुब्रामनियम को पहली सिटिंग दी जो विजया बैंक में मैंनेजर हैं और हमारे एक अभ्यासी ए.एच.कृष्णा के चचेरे भाई हैं।

रात्रि का भोजन सुब्रामनियम के घर पर करने के उपरान्त हम रात्रि 8.15 पर त्रिची से रवाना हो गये और रात्रि 10.35 बजे मदुरई पहुँचे। तीनों प्रशिक्षकों और एस.शंकर ने रात्रि में वालमजी में ही विश्राम किया।

20 नवम्बर 1978 – सोमवार

सारा दिन मदुरई में व्यतीत किया ।

शाम 6.30 बजे– वालमजी में के.आर.सुब्रामनियम ने सामूहिक सत्संग कराया जिसमें पचास से अधिक संख्या में अभ्यासी उपस्थित थे। सत्संग के पश्चात् एक सामूहिक चर्चा का दौर चला जिसका विषय था "हृदय के न होने पर भी क्या स्थूलता बनी रहेगी ?"

1) सुबह 8.00 बजे श्री के. आर. सुब्रामनियम; 2) दोपहर 3.00 बजे पलानी अप्पन; 3) दोपहर 3.30 बजे पलानीचामी और 4) शाम 4.00 बजे, के. आर. सुब्रामनियम को व्यक्तिगत सिटिंग दी।

21 नवम्बर 1978 – मंगलवार (विरुदनगर)

सुबह 8.00 बजे के. आर. सुब्रामनियम को व्यक्तिगत सिटिंग दी।

सारा दिन विरुदनगर में व्यतीत किया। श्री के. आर. सुब्रामनियम दोपहर भोजन के पश्चात् तिरुनेलवेली के लिये रवाना हो गये।

शाम 6.30 बजे – सामूहिक सत्संग कराया, सिटिंग पैंतालिस मिनट चली जिसमें मदुरई के पी. पलानीअप्पन को मिलाकर कुल बयालिस अभ्यासी उपस्थित थे। श्री पलानी अप्पन ने सत्संग के पश्चात् तमिल में अपने विचार व्यक्त किये। रात्रि 9.00 बजे मदुरई वापस लौट आये।

22 नवम्बर 1978 – बुधवार (मदुरई)

सारा दिन विरुदनगर में व्यतीत किया ।

शाम 7.15 बजे से 7.50 बजे – मदुरई के उपकेन्द्र तिरुनगर में डब्ल्यू.एच. श्रीनिवासन के निवास पर सामूहिक सत्संग कराया। सिटिंग

बहुत अच्छी रही जिसमें लगभग 35 अभ्यासी उपस्थित थे। इसके पश्चात् मैंने रात्रि 9.00 बजे तक सबके समक्ष अपने विचार व्यक्त किये ।

29 नवम्बर 1978 – बुधवार

भाई राघवेन्द्र राव का निर्धारित कार्यक्रम के अनुसार यूरोप से एयर इंडिया के विमान संख्या 402 से सुबह 10.55 पर आगमन हुआ। उड़ान एक घंटा देरी से चल रही थी। आगमन के समय उनका सामान इत्यादि उनके साथ में नहीं था। उमेश ने हवाई अड्डे पर उनकी अगवानी की और उन्हें अपने घर ले गये। हम लोग उमेश के घर पर उनसे मिलने के लिये पहुँचे और शाम 4.00 बजे से 7.30 बजे तक वहीं रहे। वह अपनी उम्र से 10 वर्ष कम का हष्ट–पुष्ट नौजवान लग रहे थे। उन्हें तुरन्त बैंगलोर के लिये रवाना होना था लेकिन उन्होंने अपने सामान प्राप्त होने तक इन्तजार करने का निर्णय लिया।

30 नवम्बर 1978 – गुरुवार

सुबह 9.30 बजे श्री राघवेन्द्र राव मेरे कार्यालय आये और मुझे अपने साथ मीनाम्बक्कम विमानतल ले गये। उनके सामान का कुछ पता नहीं लग पा रहा था। हम दोपहर भोजन के लिये गायत्री वापस आये। राघवेन्द्र राव हमारे साथ शाम 6.00 बजे तक रुके रहे जिसके पश्चात् हम उसे बैंगलोर की 7.00 वाली बस पर छोड़ने के लिये बस स्टैण्ड पहुँचे।

9 दिसम्बर 1978 – शनिवार

रात्रि 10.10 बजे मद्रास बॉम्बे मेल से, एम. रविकुमार और एस.के. मोहन के साथ येरागुन्टला की ओर रवाना हुआ।

10 दिसम्बर 1978 – रविववार (येरागुन्टला)

सुबह 6.20 बजे निर्धारित समय से लगभग पन्द्रह मिनट की देरी से येरागुन्टला पहुँचे।

सुबह 7.00 बजे – एक घंटे तक सामूहिक सत्संग कराया जिसमें लगभग पचास अभ्यासी उपस्थित थे।

नाश्ते के उपरान्त कडप्पा के आर.वैंकट सुब्बारेड्डी जो तत्काल में ही कडप्पा से यहाँ पहुँचे थे, के साथ प्रोदातुर की ओर रवाना हुआ।

सुबह 9.30 से 10.30 बजे – कल्याण मण्डपम् जो विशेष तौर पर इसी आयोजन के लिये लिया गया था, में सामूहिक सत्संग कराया जिसमें लगभग एक सौ सत्तर अभ्यासी उपस्थित थे। सुबह 11.00 बजे एक सार्वजनिक बैठक का आयोजन किया गया था जिसमें मैंने एक घंटे तक अपने विचार सबके समक्ष रखे। मेरे साथ साथ रवि कुमार तेलगू में मेरे भाषण का अनुवाद कर रहा था। उसके पश्चात् उसके पिताजी एम. वैंकटसुब्बैया जो येरागुन्टला में हमारे मिशन के प्रशिक्षक हैं, ने दोपहर 12. 30 बजे तक अपने विचार व्यक्त किये।

राजाजी मार्ग पर मल्लिकार्जुन चेट्टी के निवास पर दोपहर भोजन लेने के पश्चात् शाम 4.00 बजे दोरेसानिपल्ली की ओर रवाना हुये। यहाँ पर हमने बुन्देला बैंकटसुब्बारेड्डी के निवास पर आलादुपल्ले जो प्रोदातुर कडप्पा मार्ग पर स्थित है, जाने से पूर्व दस मिनट के लिये विश्राम किया। फिर आलादुपल्ले गये जहाँ पर मैंने शाम 4.30 बजे से 5.15 बजे तक सामूहिक सत्संग कराया जिसके बाद हम प्रोदातुर की ओर रवाना हो गये।

शाम 6.30 बजे – प्रोदातुर में सामूहिक सत्संग कराया। सिटिंग बहुत अच्छी रही और पचास मिनट चली।

रात्रिभोज एवं रात्रि विश्राम मल्लिकार्जुन चेट्टी के निवास पर किया।

11 दिसम्बर 1978 – सोमवार

सुबह 7.00 बजे – प्रोदातुर में सामूहिक सत्संग कराया जिसमें लगभग एक सौ चालीस अभ्यासी उपस्थित थे। सिटिंग पूरे एक घंटा तक चली जिसमें में बहुत गहराई थी एवं समाधि की अवस्था का अहसास हुआ।

सुबह 8.15 बजे – येरागुन्टला की ओर रवाना हुये जहाँ मैंने सुबह 10.00 बजे से 10.40 बजे तक सौ अभ्यासियों के एक बड़े समूह को सत्संग कराया। इसके तुरन्त पश्चात् सुबह 11.00 बजे से एक सार्वजनिक बैठक का आयोजन किया गया था, बैठक तीन घंटे तक चली।

शाम 3.45 बजे – मद्रास–दादर एक्सप्रेस से मि. एम. वैंकटसुब्बैया, एम. रविकुमार, जी. पुल्लारेड्डी एवं तिरुपुर के टी. के. रामास्वामी के साथ टाडापतरी की ओर रवाना हुये और शाम 5.25 बजे टाडापतरी पहुँचे।

शाम 6.30 बजे– तीस मिनट तक पैंतीस अभ्यासियों को सामूहिक सत्संग कराया। सिटिंग के दौरान ऐसा अनुभव हुआ कि अभ्यासियों के इस समूह में ग्रहण क्षमता की कमी है। रात्रि 9.00 बजे तक सबके समक्ष अपने विचार व्यक्त किये एवं रेड्डी कृष्णामूर्ति के निवास पर विश्राम किया।

12 दिसम्बर 1978 – मंगलवार

सुबह 4.00 बजे सोकर उठा। सुबह 6.15 बजे रेड्डी कृष्णामूर्ति की कार से एम. रवि कुमार, श्री एम. वैंकटसुब्बैया और तिरुपुर के टी. के. रामास्वामी के साथ अनन्तपुर के लिये रवाना हुआ जो टाडापतरी से चालीस मील की दूरी पर स्थित है। हम रिटायर्ड जिला एवं सत्र न्यायाधीश श्री के.वैंकटरमैया के अरविन्द नगर, अनन्तपुर स्थित निवास पर सुबह 7.40 बजे पहुँचे। लगभग दस अभ्यासी वहाँ पर पहले से हमारे आगमन पूर्व ही हमारी प्रतीक्षा कर रहे थे। हमारे लिये बहुत बढ़िया नाश्ते की व्यवस्था की गयी थी।

8.40 बजे से 9.50 बजे – सामूहिक सत्संग कराया। सिटिंग देर तक चली और बहुत अच्छी रही जिसमें लगभग तीस अभ्यासी उपस्थित थे। सत्संग के पश्चात् मैंने उपस्थित अभ्यासियों से दोपहर 1.00 बजे तक विचार विमर्श किया। हम दोपहर 1.30 बजे कार से टाडापतरी की ओर रवाना हुये एवं टाडापतरी में रेड्डी कृष्णामूर्ति के निवास पर दोपहर 2.45 बजे पहुँचे। आज हमने दोपहर में भोजन नहीं किया। शाम 4.00 बजे तक विश्राम करने के पश्चात् एक बस्ती में स्थित हॉल में शाम 4.30 बजे से 5. 20 बजे तक मेरे द्वारा सत्संग कराया गया जिसमें नवासी अभ्यासी उपस्थित थे।

शाम 6.00 बजे – हॉल में सार्वजनिक सभा आयोजित की गयी थी जिसमें 350 से अधिक संख्या में व्यक्ति उपस्थित थे। हमारे आयोजक रेड्डी कृष्णामूर्ति ने आयोजन से पूर्व अच्छा प्रचार प्रसार किया था। सारी दोपहर रिक्शे पर माइक लगाकर प्रचार किया जा रहा था जिसकी आवाज मेरे कानों तक भी पहुँच रही थी। मैंने लगभग पैंतालिस मिनट तक उपस्थित जन समूह के समक्ष अपना वक्तव्य दिया जिसका रवि कुमार ने

तेलगू में अनुवाद किया। उसके पश्चात् येरागुन्टला के एम. वैंकटसुब्बैया ने रात्रि 8.10 बजे तक अपने विचार सबके समक्ष रखे। तत्पश्चात् हम सीधे स्टेशन की ओर रवाना हुये। मैं और रविकुमार रात्रि 8.25 बजे बॉम्बे–मद्रास मेल से मद्रास की ओर रवाना हो गये। उसी ट्रेन से श्री एम.वैंकटसुब्बैया, श्री पुल्ला रेड्डी और टी.के.रामास्वामी येरागुन्टला की ओर रवाना हुये।

21 दिसम्बर 1978 – गुरुवार

"दस उसूलों की सरह (कमेन्ट्री ऑन टेन मेक्सिम)" के तीसरे संस्करण की छपायी का कार्य आज पूर्ण हो गया।

22 दिसम्बर 1978 –शुक्रवार (बैंगलोर)

एस. के. मोहन के साथ सुबह 7.25 बजे बृन्दावन एक्सप्रेस से बैंगलोर की ओर रवाना हुआ और निर्धारित समय से दो घंटे देरी से दोपहर 3.20 बजे बैंगलोर केन्टोनमेन्ट (स्टेशन) पहुँचे।

शाम 6.00 बजे से 9.30 बजे – श्री राघवेन्द्र राव के साथ डॉ राघवेन्द्र राव के क्लीनिक गया। यूरोप से लौटने के शीघ्र उपरान्त राघवेन्द्र राव की तबियत बिगड़ गयी थी और उन्हें अस्पताल में भरती करना पड़ा था एवं यहाँ पर उनका इलाज चल रहा है। मैं बैंगलोर मात्र उनका हाल चाल जानने के मकसद से ही आया हूँ।

राघवेन्द्र राव बिस्तर पर बैठे हुये थे। इसी दौरान हमने एकान्त में देर तक गुफ्तगू की। उन्होंनें बताया कि यूरोप से लौटते वक्त वह हैदराबाद एक विवाह समारोह में उपस्थित होने के लिये गये थे। यहाँ उनके द्वारा मालिक के आदेशों का उल्लंघन हो गया और वह इस खतरनाक बीमारी की चपेट में आ गये जिसके परिणाम स्वरूप उन्हें आपरेशन कराना पड़ा। उनके द्वारा दी गयी जानकारी से मैं केवल यह अनुमान लगा पाया कि उन्होंनें विवाह समारोह के दौरान बहुत ज्यादा मदिरा पान किया था।

गुलबर्गा के डॉ. एस. बी. श्याम राव एवं उनकी पत्नी और मि. हनुमन्थापा, जो श्यामराव के उच्चाधिकारी हैं, सभी क्लीनिक में उपस्थित थे। मुझे यह देखकर आश्चर्य हो रहा था कि श्रीमती राघवेन्द्र राव एक

युवा अभ्यासी दिनेश से अपनी चाकरी करवा रही थीं और उस पर हुक्म चला रही थीं। यहाँ तक कि वह राघवेन्द्र राव के कमरे से उनके लिये चप्पलें भी लाकर दे रहा था।

एस. के. सुन्दरम और उनकी पत्नी, श्याम राव और उनकी पत्नी एवं राज कुमार सभी इंदिरा नगर में कोदण्ड के घर पर पहुँचे और रात्रि 11.30 तक वहीं रहे।

23 दिसम्बर 1978 – शनिवार

सारा दिन इंदिरा नगर में व्यतीत किया।

शाम 7.00 से 7.40 बजे तक – बानशंकरी में अपने मिशन के आश्रम में सत्संग कराया जिसमें उपस्थिति बहुत कम रही। मात्र लगभग पच्चीस अभ्यासी ही उपस्थित थे लेकिन सिटिंग बहुत अच्छी रही। आश्रम से हम राघवेन्द्र राव का हाल–चाल पूछने के लिये क्लीनिक पहुँचे और एक घंटे तक उनके साथ ही रहे। कर्नाटक के कुछ अभ्यासियों, जो राघवेन्द्र राव के करीबी जाने जाते थे, से चर्चा के दौरान जानकारी प्राप्त हुयी कि कुछ वर्षो पहले राघवेन्द्र राव बहुत ज्यादा मद्यपान के आदी थे और दुर्भाग्यवश, मालिक के पास आने के पश्चात् भी वह इससे अपने आपको मुक्त नहीं कर सके और कभी कभार इसका सेवन कर लिया करते थे।

24 दिसम्बर 1978 – रविवार

सुबह 8.15 से 9.00 बजे– बानशंकरी में, आश्रम में सत्संग कराया जिसमें लगभग पचास अभ्यासी उपस्थित थे। सिटिंग बहुत अच्छी रही और लगभग सभी अभ्यासियों ने अनुभव किया कि सिटिंग के अंतिम दस मिनट विलक्षण थे। उसके पश्चात् आधे घंटे तक मैंने अपने विचार व्यक्त किये। तत्पश्चात् आश्रम में जारी निर्माण कार्य का निरीक्षण किया। कार्य अच्छी गति से चल रहा था लेकिन मुझे इसके मई ' 79 से पूर्व पूर्ण होने की उम्मीद नहीं थी। एस.के.सुन्दरम के निवास पर दोपहर का भोजन किया और उसके पश्चात् दोपहर 2.00 बजे इंदिरा नगर वापस लौट आया।

शाम 5.00 बजे – इंदिरानगर में कोदण्ड के निवास से एक मील की दूरी पर बीमा–नगर पहुँचे जहाँ पर राघवेन्द्र राव का निवास है। उन्हें

आज सुबह ही अस्पताल से छुट्टी दी गयी थी, इसलिये हम उनके घर पर उनका हालचाल पूछने के लिये पहुँचे और उनके साथ शाम 7.30 बजे तक रहे। डी.आर.विठ्ठल राव भी कुछ देर पश्चात् वहाँ पर आ गये थे। अतः हमने मिशन से सम्बन्धित विषयों और इससे जुड़े हमारे व्यक्तिगत हितों को लेकर विस्तार से खुलकर चर्चा की। उसके पश्चात् कोदण्ड के निवास पर रात्रि भोज के लिये लौट आये। कुछ अभ्यासी (श्री एवं श्रीमती सुन्दरम, विरूपक्षा देवर, राजकुमार) रात्रि में कोदण्ड के यहाँ पहुँचे और रात्रि लगभग 11.00 बजे तक वहीं पर रहे।

25 दिसम्बर 1978 – सोमवार (बैंगलोर)

सुबह 9.00 बजे – राघवेन्द्र राव के निवास पर पहुँचा और उसके साथ एक घंटा व्यतीत किया। कोदण्ड, इंदिरा, पोनम्मा, सुदर्शन और मोहन को सुबह 10.30 बजे सिटिंग दी।

बैंगलोर सिटी स्टेशन से दोपहर 2.10 बजे वृन्दावन एक्सप्रेस से मद्रास की ओर रवाना हुआ। कोदण्ड के परिवार के सदस्यों के अलावा श्री एवं श्रीमती सुन्दरम, कुमार एवं बी.के.राजगोपाल द्वारा मुझे विदाई दी गयी। ट्रेन निर्धारित समय से दो घंटे देरी से रात्रि 9.15 बजे मद्रास पहुँची।

1979

7 जनवरी 1979 – रविवार (बॉम्बे)

पूना से कार से सुबह 8.00 बजे रवाना होकर मैं सुबह 11.30 बजे डॉ. जाजोदिया के निवास पर पहुँचा। सी. राजगोपालन, देवराम चावड़ा, कांतिभाई पटेल और बाबूभाई पटेल सभी अहमदाबाद से पहले ही यहाँ पहुँच चुके थे। इस वर्ष हमारे प्रिय मालिक के जन्मोत्सव कार्यक्रम का आयोजन अहमदाबाद में किया जा रहा था। इस कारण वे यहाँ पर मुझसे मिलने और आयोजन की व्यवस्था इत्यादि के सम्बन्ध में चर्चा करने के लिये आये हैं। हमारी चर्चा दोपहर 1.00 बजे तक चलती रही। दोपहर भोजन के पश्चात् नवसारी के देवराम चावड़ा से शाहजहाँपुर में आगामी बसंत पंचमी के कार्यक्रम की व्यवस्था के सम्बन्ध में एक घंटे तक चर्चा की। वे सभी शाम 4.00 बजे नवसारी की ओर रवाना हो गये। शाम की उड़ान से मैं मद्रास की ओर रवाना हो गया। उड़ान निर्धारित समय से डेढ़ घंटे देरी से चल रही थी। मैं रात्रि 9.30 बजे मद्रास पहुँच गया।

8 जनवरी 1979 – सोमवार

पश्चिम जर्मनी में मिशन के प्रभारी प्रशिक्षक हैंस गैंगलोफ का सुबह 8.30 बजे दिल्ली से विमान से आगमन हुआ। वह यहाँ आने से पूर्व नौ या दिस दिनों तक शाहजहाँपुर में मालिक के साथ थे। मैंने उनकी हवाई अड्डे पर अगवानी की और उन्हें अपने घर गायत्री ले आया। यहाँ पर लगभग एक सप्ताह वे गायत्री में ही ठहरेंगें।

फ्रांस का फ्लेयूरी परिवार, गे, पॉल, पेट्रिक और अलब्रेता पिछले कुछ दिनों से मद्रास में ही हैं और एग्मोर में विक्टोरिया होटल में ठहरे हुये हैं। आज वे सब दोपहर 3.00 बजे हमसे मिलने के लिये गायत्री आये। मैंने उन्हें सिटिंग दी।

13 जनवरी 1979 – शनिवार

हैंस गैंगलोफ और मैं गायत्री से सुबह 6.30 बजे रवाना होकर,

एग्मोर में होटल विक्टोरिया पहुँचे। वहाँ से पेट्रिक फ्लेयूरी और अलब्रेता को साथ लेकर तिरुपति की ओर रवाना हो गये। सुबह 10.00 बजे हम डॉ. जी. कुप्पुस्वामी के निवास पर पहुँचे। राघवेन्द्र राव और एम.डी. जहाँगीरदार बैंगलोर से पहले ही यहाँ पहुँच चुके थे। उनके साथ हॉलैण्ड के प्रशिक्षक जानवेनडेन बींत भी थे। हम सभी तिरुपति में प्रशिक्षकों के एक सम्मेलन जो तिरुपति केन्द्र के पुर्नरुद्धार एवं पुर्नगठन के सम्बन्ध में विचार विमर्श करने के लिये आयोजित किया गया है, में एकत्रित हुयें हैं। यह सम्मेलन भाई राघवेन्द्र के दिमाग की उपज है और पिछली बार जब हम बैंगलोर में मिले थे तब उन्होंने मुझसे इस विषय पर चर्चा की थी।

आठ वर्ष पूर्व डॉ. के. सी. वरदाचारी के दुःखद निधन के पश्चात् से तिरुपति केन्द्र की गतिविधियों में ठहराव सा आ गया है और केन्द्र निष्क्रिय हो गया है। डॉ. वरदाचारी एक विद्वान व्यक्ति थे और उनका रोम रोम ऊर्जा से ओतप्रोत था। उनका मालिक में भी अटूट विश्वास था। हर दृष्टि से मनुष्य जाति के बीच एक सिंह की भाँति थे। उनके निधन के पश्चात् तिरुपति केन्द्र में काम काज लगभग ठप्प सा हो गया है। डॉ. कुप्पुस्वामी तिरुपति केन्द्र के वर्तमान प्रभारी हैं। वह बहुत नेकदिल, ईमानदार और उत्साही व्यक्ति हैं लेकिन उनके गम्भीर ईमानदार और विश्वासनीय होने के बावजूद वे दो कारणों से तिरुपति में सफल नहीं हो पा रहे हैं। 1) लोगों के मन में बसी डॉ. वरदाचारी की छवि के सामने वे अपने आपको तुच्छ महसूस करते हैं। 2) वे डॉ. के. सी. वी. के पुत्र, के. सी. नारायणा के नक्शे कदम पर और उनके इशारों पर ही काम करते हैं। नारायणा काबिल पढ़े लिखे, हृष्ट–पुष्ट नवयुवक हैं। दुर्भाग्यवश तिरुपति केन्द्र में उनके आगे किसी का भी जोर नहीं चलता।

तिरुपति केन्द्र अनुचित राजनीतिक गतिविधियों का अड्डा है और यहाँ लोगों में आपस में गहरे मतभेद हैं। एक व्यक्ति से दूसरे व्यक्ति के बीच यह पता लगाना कठिन है कि किसका किसके ग्रुप से ताल्लुक है। जहाँ तक मेरा प्रश्न है, मुझे यहाँ सभी नापसंद करते हैं और मैं यहाँ के लोगों को फूटी आँख नहीं सुहाता जिसके पीछे मुख्य कारण यह है कि,

डॉ. के. सी. वरदाचारी ने अपने अंतिम समय में मेरे विरुद्ध जोर शोर से यह कुप्रचार किया था कि मेरे द्वारा उन्हें तिरस्कृत कर दिया गया है और इस कारण से उन्होंने मुझे विश्वासघाती करार दिया। उनके इस व्यवहार के पीछे दो मुख्य कारण थे जो मेरे अधिकार क्षेत्र के नहीं थे। 1) मिशन के सचिव पद पर मेरी नियुक्ति और 2) सिटिंग के लिये डॉ. के. सी. वी. के पास मेरा न जाना क्योंकि मालिक ने मुझे यह आदेश दिया था कि मैं उनके पास सिटिंग के लिये न जाऊँ।

खैर यह सब अब बीते समय की बात हो चुकी है और तब से लेकर अब तक इसके सम्बन्ध में बहुत टीका टिप्पणी की जा चुकी है। लेकिन इस केन्द्र के वातावरण में कोई परिवर्तन नहीं आया है। इसका सुधरना बड़ी टेढ़ी खीर प्रतीत होता है क्योंकि यहाँ लगभग सभी अच्छे पढ़े लिखे हैं और अपना महत्व दिखाना चाहते हैं। इस कारण वे एक दूसरे की उपेक्षा करते हैं, वे समझते हैं कि वे बहुत बुद्धिमान हैं जितने कि शायद वे नहीं हैं। गुटबाजी के कारण उनमें अहंकार प्रबल है, और मुझे समझ में नहीं आता कि इन परिस्थितियों में कैसे सुधार होगा। मालिक अपने किन्हीं अज्ञात कारणों से एक गुट विशेष को बढ़ावा देते हैं और उनके ऊपर मालिक का वरदहस्त है ।

सुबह 11.00 बजे – सुबह 11.00 बजे से 12.45 तक मैंने प्रशिक्षकों की बैठक की अध्यक्षता की जिसमें तिरुपति केन्द्र के राघवेन्द्र राव, एम. डी. जहाँगीरदार, डॉ. जी.कुप्पुस्वामी, डॉ. वी. एस. आर. मूर्ति, डॉ. आर. एस. स्वामी, डॉ. के. सी. अरविन्दा राजगोपाल, प्रो. के. कमलनाथन, श्रीमती चित्रा श्रीनिवासन, डॉ. वी. पांडूरंगा राव, बहन डी. रंगनायकी, कडप्पा से आर. रामचन्द्र रेड्डी, कावेली से डी. एस. के. सुब्रामन्या शास्त्री, नेल्लोर से के. रामचन्द्र रेड्डी, तिरुपति से वी. वैंकटपति, चित्तूर से डी. रामामूर्ति, विदेश के प्रशिक्षकों में हैंस गैंगलोफ, पेट्रिक फ्लेयूरी और जेनवेनडेन बींत इस तरह कुल अठारह प्रशिक्षक बैठक में उपस्थित थे।

गहन विचार विमर्श के उपरान्त भी मेरे विचार से ऐसा कोई ठोस निर्णय नहीं हो सका जिससे इस केन्द्र का किसी भी तरह उद्धार हो सके।

वे लोग टस से मस होने को तैयार नहीं थे और हमारे सामने ऐसा प्रदर्शित कर रहे थे जैसे कि उनमें आपस में गहरा मेलजोल हो। केवल मालिक ही इस समस्या का समाधान कर सकते हैं। मुझे डॉ. जी. कुप्पुस्वामी से संवेदना थी, क्योंकि उन्हें वह जिम्मेदारी निभानी पड़ रही थी जिसका उनके लिये निभाना अत्यंत दुश्कर कार्य था। उस प्रकाण्ड विद्वान की छाया जो आठ वर्ष पहले इस धरती से चले गये थे, उनके सारे प्रयासों और क्रियाकलापों पर ग्रहण की तरह पड़ रही थी।

शाम 4.00 बजे – आश्रम का निरीक्षण किया। इसके विस्तारीकरण के नक्शे और प्रस्ताव का अनुमोदन किया। इसके पश्चात् हैंस गैंगलोफ द्वारा आश्रम में तीस मिनट की सिटिंग दी गयी। तत्पश्चात् उसने दस मिनट तक अपने विचार सबके समक्ष रखे। उसके पश्चात् मैंने बीस मिनट तक अपने विचार व्यक्त किये। चाय काल के पश्चात् हैंस और मैं कार से शाम 6.00 बजे मद्रास की ओर रवाना हो गये। फ्लेयूरी तिरुपति में ही रुक गये, कैप्टन के.के.मूर्ति के कारण हमें मजबूरीवश नायुडूपेरा के मार्ग से आना पड़ा। वे वहाँ उतर गये क्योंकि उन्हें नैल्लोर के लिये बस पकड़नी थी।

रास्ते में हैंस ने बड़ी दृढ़ता से अपना मत रखते हुये कहा कि डॉ. वी.एस. आर. मूर्ति की किताब "न्यूरोलॉजिकल बेसिस ऑफ राजयोगा इन द लाइट ऑफ सहज मार्ग" को नहीं छपना चाहिये। उनका ऐसा मानना था कि किताब की हस्तलिपि के वैज्ञानिक पहलू वाले खण्ड में "यूरोप की लगभग 50–60 वर्ष पुरानी जानकारी" का विवरण दिया गया है। इसके योग वाले खण्ड से भी हैंस को परेशानी थी। मालिक ने शाहजहाँपुर में हस्तलिपि की एक प्रति उसे दिखाई थी और आज दोपहर में उन्होंने तिरुपति में एक अन्य प्रति का गहन अध्ययन किया था। मैंने उनसे जानना चाहा कि उन्होंने मालिक के समक्ष अपने यह विचार क्यों नहीं प्रगट किये, उन्होंने कहा कि उन्हें इसका जरा भी अंदेशा नहीं था कि इस किताब के छपने के बारे में भी कभी गम्भीरता से विचार किया जा सकता है। उन्होंने कहा यदि किसी तरह इसकी छपाई का निर्णय हो जाता है तो, "कृपया इसकी एक भी प्रति यूरोप न भेजी जाये अन्यथा मिशन और मालिक

दुनिया के सामने हँसी का पात्र बनेंगे। यह बचकाना हरकत है और मुझे अब इस बात पर ग्लानि हो रही है कि मैंने मालिक के समक्ष इसका दृढता से विरोध क्यों नहीं किया।''

रात्रि 9.30 बजे हम मद्रास पहुँच गये, हमें बहुत थकान महसूस हो रही थी और भूख भी लगी हुयी थी।

14 जनवरी 1979 – रविवार

हैंस गैंगलोफ सुबह 6.00 बजे की उड़ान से दिल्ली की ओर रवाना हो गये जहाँ से वह मंगलवार को जर्मनी के लिये रवाना होंगे।

15 जनवरी 1979 – सोमवार

हॉलैण्ड के जेनवेनडेन बींत (प्रभारी प्रशिक्षक) का तिरुपति से दोपहर 3.30 बजे बस से आगमन हुआ। उनका यहाँ एक सप्ताह का प्रवास रहेगा और इस दौरान वे हमारे घर पर ही ठहरेंगे।

शाम 6.30 बजे – जॉन को व्यक्तिगत सिटिंग दी, उसमें बहुत स्थूलता थी।

16 जनवरी 1979 – मंगलवार

हॉलैण्ड के बेरनाडेट और केरेल बॉमहाफ का दिल्ली से ग्रांड ट्रंक एक्सप्रेस से आगमन हुआ। वे हमारे साथ एक सप्ताह रुकेंगे।

19 जनवरी 1979 – शुक्रवार

अप्पा बहुत कमजोर और उदास लग रहे थे। मेरे विचार से मालिक के उनके साथ पिछले वर्ष हुये वार्तालाप से उन्हें गहरा आघात पहुँचा है, यद्यपि वे इससे उबरने का पुरजोर प्रयास करते रहते हैं। दुर्भाग्यवश मालिक की इतनी कठोर हिदायतों के पश्चात् भी अप्पा के बर्ताव में लेश मात्र भी परिवर्तन नहीं आया है। ऐसा प्रतीत होता है कि उन्होंने अपने व्यक्तिगत जीवन को अपने अंदाज से जीने की ठान ली है। मैंने उन्हें बहुत समझाने का प्रयास किया कि एक गलत धारणा आध्यामिकता के लिये अहितकारी हो सकती है, किन्तु कौन पिता अपने बच्चे के समझाने पर अमल करता है ? जबसे हैंस गैंगलोफ यहाँ आये हैं, उनका स्वास्थ्य प्रतिदिन गिरता जा रहा है। एक अन्य समस्या है अप्पा का जर्मनी जाकर

इलाज करवाने की बात पर अडिग रहना। उन्हें दो महीने के लिये बैंगलोर भी जाना है। मैंने उन्हें अपना जर्मनी जाने का विचार त्याग देने के सम्बन्ध में बहुत समझाने का प्रयास किया लेकिन वह टस से मस नहीं हुये। उन्होंने कहा, "मैं किसी तरह वहाँ चला तो जाऊँगा, लेकिन पाचू मुझे डर है कि मैं कभी वापस यहाँ नहीं लौट पाऊँगा।" अप्पा के इस कथन से मैं विचलित हो गया और आधे घंटे तक अपने कमरे में रोता रहा। सुबह 11. 30 बजे मैंने मालिक को अप्पा के और मेरे कार्यालय की परेशानी के बारे मे पत्र लिखा जिसके कारण मैं पिछली 3 जनवरी 1979 से लगातार परेशानी में था।

दोपहर 12.30 बजे जब मैं दोपहर के भोजन के लिये कार्यालय से घर के लिये निकलने ही वाला था कि मुझे मि. टी. टी. वासू की ओर से एक पत्र प्राप्त हुआ जिसमें अपमानजनक शब्दों का प्रयोग किया गया था। मैंने तत्काल ही इस्तीफा देने का निर्णय लिया और अपने सारे व्यक्तिगत सामान और मिशन की फाइलें इत्यादि ऑफिस से उठाईं और उन्हें कार में रखकर घर पर आ गया। दोपहर भोजन के दौरान मैंने अप्पा और सुलोचना को अपने त्यागपत्र देने के निर्णय के बारे में जानकारी दी। वे दोंनों मेरे निर्णय पर सहमत थे लेकिन उन्होंने मुझे इस पर एक बार पुनः विचार कर लेने के लिये आग्रह किया और अपना फैसला आज के बजाय कल सुबह तक स्थगित करने का सुझाव दिया। मैं दोपहर पश्चात् कार्यालय नहीं गया। आज मैं अत्यंत विचलित था तथा अपने आपको चारों ओर विपत्तियों से घिरा हुआ पा रहा था ।

"इफिकेसी ऑफ राजयोग" के पांचवे संस्करण की छपाई पूर्ण हो चुकी थी और प्रेस से शाम 5.00 बजे तक इसकी 310 प्रतियाँ छप कर आ चुकी थीं।

20 जनवरी 1979 – शनिवार

अप्पा बैंगलोर में अपने दो माह के प्रवास के प्रस्तावित कार्यक्रम के अनुसार सुबह 7.40 बजे वृन्दावन एक्सप्रेस से रवाना हुये। वाहन चालक राजन को भी वे अपने साथ ले गये हैं।

बेरनाडेट और केरेल बॉमहाफ आज मिड–डे एक्सप्रेस ट्रेन से

बैंगलोर के लिए रवाना हुये।

21 जनवरी 1979 – रविवार

सुबह 7.30 बजे – जेनवेनडेन बींत ने सुबह का सत्संग कराया, सिटिंग पैंतालिस मिनट चली जिसमें साठ की उपस्थिति रही। तत्पश्चात् उसने पाँच मिनट के लिये अभ्यासियों के समक्ष अपने विचार रखे।

शाम 5.00 बजे – मैंने जेन को एक व्यक्तिगत सिटिंग दी। उन्होंने बताया कि सिटिंग के दौरान उसे अत्यंत गहरायी का अनुभव हुआ और उन्हें ऐसा महसूस हुआ कि उन पर विभिन्न स्तरों से कार्य किया जा रहा है। उन्होंने कहा प्राणाहुति "अत्यन्त प्रबल थी।"

सिटिंग के पश्चात् हमने लम्बी चर्चा की। उन्होंने भी श्री राघवेन्द्र राव द्वारा यूरोप में दिये गये सुझावों के संदर्भ में जानकारी दी। तत्पश्चात् उन्होंने कहा, "चारी, इस पूरे सप्ताह तुम्हारे साथ रहने से मुझे बहुत मदद मिली है और मैं अब तुम्हें अच्छी तरह समझ पाया हूँ। पहले मैं समझता था कि तुम मात्र एक काम करने वाली मशीन की भाँति हो, अब मैं समझ पाया हूँ कि तुम एक मानव भी हो जिसके पास हृदय भी है।"

22 जनवरी 1979 – सोमवार

जेनवेनडेन बींत वृन्दावन एक्सप्रेस से बैंगलोर की ओर रवाना हुये।

सुबह 7.00 बजे– त्रिची के टीवीएस के मैनेजर श्री एस.सुन्दरम को प्रथम सिटिंग दी। इनका परिचय हमारे मदुरई के प्रशिक्षक वी. के. चन्द्रशेखर के माध्यम से हुआ है।

26 जनवरी 1979 – शुक्रवार

कोदण्ड, इंदिरा, एस. के. सुन्दरम और बैंगलोर के पन्द्रह स्वयं सेवक दोपहर 1.15 बजे एक्सप्रेस से यहाँ पहुँच गये।

शाम 4.00 बजे – कोदण्ड, इंदिरा, सुन्दरम, पॉल फ्लेयूरी, पेट्रिक फ्लूयेरी और अलब्रेता को सामूहिक सत्संग कराया।

शाम 7.40 बजे हम ग्रांड ट्रंक एक्सप्रेस से दिल्ली के लिये रवाना हुये। ट्रेन अपने निर्धारित समय से बीस मिनट देरी से चल रही थी। हमारे ग्रुप में मद्रास के बाइस, तिरुपुर के दो, बैंगलोर के सत्रह अभ्यासी थे,

नेल्लोर से सत्रह अन्य अभ्यासियों के सम्मिलित होने के पश्चात् अभ्यासियों की कुल संख्या अठ्ठावन हो गयी थी।

27 जनवरी 1979 – शनिवार

दिल्ली के रास्ते में, ट्रेन में, मैंने सारे ग्रुप को सुबह 7.30 बजे और शाम 6.30 बजे सामूहिक सिटिंग दी।

प्रशिक्षक के. महालिंगम को शाम की सिटिंग के दौरान एक अनुभव हुआ जिसके बारे में उन्होंने बताया : "मैंने बाबूजी को एक गढ्ढे में देखा, वे गर्दन तक ढके हुये थे। केवल उनका सर दिखायी दे रहा था सर हड्डियों के ढाँचे में तब्दील हो गया। यह दृष्य देख कर मैं सिहर गया, लेकिन वही दृष्य मेरे समक्ष दो मर्तबा दृष्टिगोचर हुआ।"

28 जनवरी 1979 – रविवार

सुबह 8.30 बजे हम दिल्ली स्टेशन पर पहुँच गये और स्टेशन पर ही प्रतीक्षालय में विश्राम किया। दिल्ली से हम शाहजहाँपुर के लिये रवाना होने ही वाले थे कि एक तार संदेश के साथ प्रशिक्षक आर.कृष्णास्वामी शाहजहाँपुर से हमारे पास पहुँचे जिसमें उनको निर्देशित किया गया था कि उन चार दक्षिण भारतीय रसोइयों का कार्यक्रम निरस्त कर दिया जाये जिनकी बसंत उत्सव के कार्यक्रम के लिये व्यवस्था की गयी थी। यह निस्संदेह मालिक के बड़े बेटे प्रकाश चन्द्र सक्सेना का ही किया धरा था। आजकल वह मिशन के कार्यों में बहुत ज्यादा दखलंदाजी करने लगे हैं और उसके विषय में हम कुछ भी नहीं कर सकते। मैंने कृष्णास्वामी से शीघ्र निर्देशों का पालन करने के लिये कहा।

दोपहर 2.00 बजे हम काशी विश्वनाथ एक्सप्रेस से शाहजहाँपुर की ओर रवाना हुये। गाड़ी में बेतहाशा भीड़ थी, बरेली तक तो हमें पैर रखने की भी जगह नहीं मिली तथा इसमें लेशमात्र भी अतिशयोक्ति नहीं है।

हमारे सत्तर की क्षमता वाले डिब्बे में तीन सौ यात्री ठसाठस भरे हुये थे। हम शौचालय जाने की भी स्थिति में नहीं थे। भिखारी नीचे बैठे हुये यात्रियों की जाँघों पर पैर रख कर इधर से उधर जा रहे थे। कोदण्ड बहुत परेशानी में थे। शाजहाँपुर जहाँ हमारी ट्रेन केवल तीन मिनट के लिये

रुकती थी, को हमें चेन खींच कर रोकना पड़ा। ट्रेन में कुल अस्सी अभ्यासी थे जिनमें से बावन हमारे डिब्बे में थे और सामान से बुरी तरह लदे हुये थे। स्वयं के सामान के साथ साथ किताबों के सोलह बंडल भी हमारे पास थे। हमारे लिये एक बस की व्यवस्था की गयी थी। हम रात्रि 9.00 बजे आश्रम पहुँच गये।

29 जनवरी 1979 – सोमवार

बसंत उत्सव कार्यक्रम की व्यवस्था का निरीक्षण करने के लिये मैं आश्रम परिसर में चारों ओर भ्रमण करके व्यवस्था का जायजा ले रहा था। मैंने कांशीराम अग्रवाल, देवराम चावड़ा और मालिक के पुत्र प्रकाश से अलग–अलग से चर्चा की। सबसे एक साथ चर्चा करना मैंने उचित नहीं समझा क्योंकि इससे आपसी मन–मुटाव होने की सम्भावना थी और मैं सोच रहा था कि काम में किसी भी तरह का व्यवधान उत्पन्न नहीं होना चाहिए। इसके अलावा मुझे प्रत्येक व्यक्ति से उसकी क्षमता अनुसार अधिक से अधिक सहयोग प्राप्त करना था।

सुबह 7.00 बजे – हॉल में सामूहिक सत्संग कराया। लगभग दो सौ अभ्यासियों की उपस्थिति रही। मेरा गला खराब था और मैं बुरी तरह खांसी से पीड़ित था। विदेश से बहुत से अभ्यासी पहले ही यहाँ पहुँच चुके थे जिनमें डेनमार्क के थॉमस मोगेन्शन, जैंस क्लासेन, फ्लेमिंगरिस, बोर्न ज्युविक, ली स्टेन, क्रिसटेन कोव; फ्रांस के पॉल फ्लूयेरी, पेट्रिक फ्लूयेरी और अलब्रेता; कनाडा के टॉम व्हिटलम और क्रिसटिन लेंगस्टाफ, नेपाल से अखिलेश्वर प्रसाद सिंह और मलेशिया से के. वी. रेड्डी।

मालिक शाम 4.00 बजे आश्रम पधारे। उन्होंने आश्रम परिसर का सरसरी तौर पर निरीक्षण किया, उसके पश्चात् उन्होंने राघवेन्द्र राव के साथ दस मिनट कुछ बातचीत की। तदुपरान्त थोड़ी और देर तक वे परिसर में ही व्यवस्था का जायजा लेते रहे, तत्पश्चात् वे राघवेन्द्र राव के कक्ष में चले गये एवं वहाँ से एक घंटे के पश्चात् ही बाहर आये। मुझे आश्चर्य हो रहा था कि इतनी देर तक दोनों में क्या गुफ्तगू होती रही। राघवेन्द्र राव ने बाद में मुझे बताया कि मालिक ने उनसे केवल पाँच मिनट

बिस्तर पर लेटे लेटे बात की, उसके पश्चात् उन्हें नींद आ गयी। प्रिय मालिक आप बच्चों की तरह कितने भोले हैं। हमारी प्रार्थना है कि, "आपका साथ सदा के लिये हमारे साथ बना रहे"। कक्ष से बाहर निकलने के तुरंत पश्चात् मालिक घर की ओर रवाना हो गये।

30 जनवारी 1979 – मंगलवार

मैंने सम्पूर्ण आश्रम परिसर का सरसरी तौर पर निरीक्षण किया। मेरा अनुमान है कि इस कार्य के दौरान मैं प्रतिदिन आठ से दस किलोमीटर तक चहल कदमी कर लेता हूँ। मेरा पहला निरीक्षण सुबह 4.00 बजे शुरू होता है और यह क्रम रात बारह बजे तक चलता रहता है।

मैंने दो घंटे तक डेनमार्क में मिशन के सचिव जैंस क्लासेन और प्रशिक्षक थॉमस मोगेन्सन से डेनमार्क तथा स्वीडन में मिशन के क्रियाकलापों के सम्बन्ध में चर्चा की। थॉमस अक्सर स्वीडन जाते रहते हैं और उन्होंने वहाँ पन्द्रह अभ्यासियों का एक समूह बनाने में सफलता प्राप्त की है। हमारा डेनमार्क का समूह प्रशंसनीय कार्य कर रहा है और इसमें कोई आश्चर्य की बात नहीं है कि इसीलिये मालिक उनसे इतना प्रेम करते हैं। रात्रि 8.00 बजे मैंने जैन्स और थॉमस को एक सिटिंग दी।

पूज्य मालिक शाम 4.00 बजे आश्रम में अपने निवास पर आये। वे शान्त थे और आकर्षक लग रहे थे। उनके आगमन पर जब मैंने उनका स्वागत किया तो वह प्रफुल्लित होकर मुस्कुरा दिये। इलाहाबाद के न्यायाधीश एम. एल. चतुर्वेदी मालिक के निवास पर उनके साथ थे। दोपहर में श्री एम. एस. सुन्दरा और उनकी पत्नी प्रभा सुन्दरा उत्सव में सम्मिलित होने के लिये आश्रम पहुँचे। सुन्दरा का बसंत उत्सव में आना नियमित नहीं है, क्योंकि उन्हें सर्दी और धूल के कारण अपनी तकलीफ देह अस्थमा की समस्या से परेशानी का सामना करना पड़ता है।

मैं लगभग शाम 7.00 बजे रसोई कक्ष के समीप खड़ा हुआ था। अंधेरा हो चुका था कि यकायक किसी ने झुककर मेरे चरण स्पर्श किये। मैंने उसे उठाया, मुझे यह देखकर आश्चर्य हुआ कि वह कोई और नहीं के.सी.नारायण। थे जो मुझे और अप्पा को 'गंवार' की श्रेणी में रखते थे तथा

उन्होंने मालिक को लिखे अपने पत्रों में भी इसका उल्लेख किया था कि हमारी शिक्षा स्तरहीन है और हम किसी भी तरह आध्यात्मिकता के लायक नहीं हैं अथवा ऐसा ही कुछ उन्होंने हमारे बारे मे मालिक को लिखा था। उनकी दृष्टि में हम बड़े निकृष्ट व्यक्तियों में से थे जबकि उनके पिता स्वर्गीय डॉ. के. सी. वरदाचारी हमारे बारे में इसके विपरीत विचार रखते थे और आज अचानक उनका मेरे समक्ष इस तरह नतमस्तक होना मेरे मालिक के चमत्कार के अलावा और कुछ नहीं हो सकता। मैं उन्हें मालिक से मिलवाने ले गया जहाँ हमने दो घंटे तक तिरुपति में हमारे अनुसंधान संस्थान के सम्बन्ध में विस्तार से चर्चा की। संस्थान के कार्य में अभी तक कोई खास प्रगति नहीं हुई है। डॉ. के. सी. वरदाचारी ने अपने कार्यकाल में दो संगोष्ठियों का आयोजन किया था और उस समय जो लेख आदि प्रस्तुत किये गये थे उनका प्रकाशन एक कृति "पर्सनालिटी प्रॉब्लम्स एण्ड सुपरस्टिशन इन स्प्रिचुयेलिटी" में किया गया था। उसके पश्चात् इसमें आगे कोई प्रगति नहीं हुई है। नारायणा इसके पुर्नगठन में अत्यधिक रुचि ले रहे हैं, किन्तु तिरुपति के लोगों के अनुसंधान पर विचार मालिक के विचारों से मेल नहीं खाते। वे लोग पश्चिमी विज्ञान के तौर तरीके अपनाना चाहते हैं जैसे ई. सी. जी., ई. ई. जी., पल्स रेट, प्लमोनरी रेट, रेस्पिरेशन इत्यादि। यह सब कुछ वर्षों पहले भी किया जा चुका था पर वास्तविक रूप में इससे ऐसी कुछ भी उपलब्धि नहीं हुयी जो सहज मार्ग के लिये उपयोगी हो। मालिक ने टिप्पणी की, "मैं यह तो चाहता हूँ कि अनुसंधान किया जाना चाहिये, लेकिन यह मेरे द्वारा निर्धारित रूपरेखा के अनुसार होना चाहिये। विज्ञान का सम्बन्ध केवल पदार्थ से है। आध्यात्मिकता पदार्थ के परे है। इसलिये मैं चाहता हूँ कि अनुसंधान में मेरे द्वारा निर्धारित तौर तरीके अपनाये जायें।" नारायणा अनुसंधान संस्थान के लिये भवन और समुचित धनराशि की भी माँग कर रहे थे, किन्तु इस बैठक में इस पर कोई निर्णय नहीं लिया जा सका।

31 जनवरी 1979– बुधवार

6.30 बजे – मालिक ने बंसत उत्सव कार्यक्रम का शुभारम्भ वहाँ

एकत्रित अभ्यासियों को एक घंटे की सिटिंग देकर किया। सिटिंग में प्रारम्भ के चालीस मिनट में मुझे बहुत अच्छा महसूस हुआ। पिछली रात बारह बजे तक मात्र बारह सौ पैंतीस अभ्यासियों का पंजीकरण हुआ था।

मैंने सुबह 11.00 बजे आयोजित कार्यकारिणी समिति (वर्किंग कमेटी) की बैठक में भाग लिया। इसकी अध्यक्षता स्वयं मालिक ने की, बैठक दोपहर 12.45 बजे तक चली। इसमें 'अध्यक्षीय परिषद्' (प्रेसीडेन्ट्स काउन्सिल) का भी जिक्र आया था जिसका प्रस्ताव मालिक ने 1977 में किया था। आज का दिन मेरे लिए व्यस्ततम दिन था।

दोपहर 2.00 बजे से 5.00 बजे तक– एम.एल.चतुर्वेदी ने प्रशिक्षकों की बैठक की अध्यक्षता की। मालिक दोपहर 3.30 बजे ध्यान कक्ष में आयोजित इस बैठक में सम्मिलित हुये और बैठक के समाप्त होने तक रहे। उन्होंने बैठक में दिये अपने वक्तव्य में कहा कि –

1) प्रशिक्षकों को यह महसूस करना चाहिये कि वे मिशन के सेवक हैं, यह नहीं सोचें कि वे गुरु हैं। उन्होंने कहा, "मैं आपको बताना चाहता हूँ, मैंने कभी भी नहीं सोचा कि मैं एक शिष्य अथवा मालिक या भगवान हूँ। हमें अभ्यासियों के कदमों में चींटी के समान होना चाहिये न कि ततैयों की तरह कि जब भी कोई उनके ऊपर पैर रख कर आगे बढ़े तो वे उसे डंक मारें।"

2) "प्रशिक्षक अभ्यासियों को मेरे पास भेजने से पूर्व जितना अधिक से अधिक हो सके उनकी सफाई करें अन्यथा मालिक का समय और ऊर्जा दोनों व्यर्थ जाते हैं। मैंने प्रशिक्षक अपने कार्य में मदद करने के लिये बनाये हैं लेकिन वे चाहते हैं कि उनका कार्य भी मैं ही करूँ।"

3) "लालाजी ने मुझे विश्वास दिलाया है कि मिशन तरक्की कर रहा है और लगातार करता रहेगा। सम्पूर्ण विश्व में इसका प्रचार होगा लेकिन हमें आपसी खींचतान से बचना होगा।"

मालिक ने कलकत्ता के श्री रमन लाल भट्टर को रात्रि लगभग 8.00 बजे अंतरिम अनुमति प्रदान की। वह रमन लाल मिमानी के साले हैं।

तत्पश्चात् तिरुपति में "सहज मार्ग अनुसंधान संस्थान" के

सम्बन्ध में विस्तार से चर्चा की गयी।

2 फरवरी 1979 – शुक्रवार

सुबह 6.30 बजे– मालिक ने स्वयं उत्सव की अंतिम सिटिंग दी। इस दौरान उन्होंने केवल पन्द्रह मिनट प्राणाहुति दी, जिसमें पहले दस मिनट तक तो मुझे कुछ भी एहसास नहीं हुआ, किन्तु आखिरी के पाँच मिनट मैंने बहुत अच्छा महसूस किया।

मालिक ने आज बैंगलोर के एस. के. सुन्दरम को अंतरिम अनुमति प्रदान की। लगभग एक हजार से भी अधिक अभ्यासी नाश्ते के पश्चात् अपने गंतव्यों की ओर रवाना हो चुके थे एवं बाकी के चार सौ अभ्यासियों ने रात्रि में प्रस्थान किया । मालिक शाम 4.00 बजे अपने निवास की ओर रवाना हो गये। के. सी. नारायणा प्रस्थान से पूर्व, विदा लेने के लिये मुझसे मिलने आये। वह मेरे चरण स्पर्श करना चाहते थे, लेकिन मैंने उन्हें ऐसा नहीं करने दिया और उन्हें अपने आगोश में भर लिया। उन्होंने मुझसे कहा कृपया मुझे अपनी पूर्ण स्वीकृति दीजिये। मैंने उत्तर दिया, "मेरी ओर से कभी भी कोई शिकायत नहीं रही।"

3 फरवरी 1979 – शनिवार

हम सुबह 8.00 बजे मालिक के निवास पर पहुँचे। मालिक ने एस. सदाशिवम को आज सुबह 10.30 बजे दीक्षा प्रदान की। हम मालिक के घर पर 6.30 बजे तक थे। मालिक द्वारा मुझे और एस.सी.किशोर को बीस मिनट की सिटिंग दी गयी। मुझे ऐसा महसूस हुआ कि मेरे शरीर को कहीं गहरायी में धकेला जा रहा है। यह अत्यन्त गहरी और उन्मादक सिटिंग थी।

पूज्य मालिक के साथ हमने दोपहर का भोजन किया। भोजन के दौरान मुझे यह देखकर आश्चर्य हुआ कि मालिक ने दो मर्तबा चम्मच भर कर गाजर का हलुआ लिया, जबकि मालिक अत्यन्त कम भोजन करते हैं तथा मीठा तो वह बहुत कम मात्रा में लेते हैं। अतः उनके द्वारा दो बार हलुआ लिया जाना आश्चर्य का विषय था। मैं कनखियों से उनकी ओर देख रहा था कि यकायक मालिक ने नजरें उठाकर मेरी ओर देखा तथा बोले, "देखो अभी अभी ऊपर से सूचना आयी है कि मेरी माता जी की

आत्मा को अभी अभी मुक्ति मिली है। इसमे काफी वक्त लग गया।'' उन्होंने मेरी ओर मुखातिब होते हुये कहा, ''तुम्हें याद होगा कि, करुणा शंकर के प्रकरण में ड़ेढ या दो वर्ष लग गये थे। मैंने उस पर डेनमार्क में काम पूरा किया था। तुम्हें वह घटना स्मरण तो है न ?'' इसमें कोई आश्चर्य नहीं कि मालिक सम्भवतः अपनी माँ की आत्मा के मुक्त होने की खुशी में ही दो–दो बार हलुआ खा रहे हों तथा कार्य पूर्ण होने के पश्चात् अपनी खुशी का इजहार कर रहे हों।

तत्पश्चात् मालिक ने एस. सदाशिवम, जिसे उन्होंने आज सुबह ही दीक्षा प्रदान की थी, उनसे कहा, ''भाई तुमने वह प्रकरण बहुत अच्छी तरह तैयार किया है। कल तुम यहाँ आओ और सारा दिन यहीं पर रहो। मुझे तुम्हें और भी अनेक जानकारियाँ देनी हैं।''

4 फरवरी 1979 – रविवार

सुबह जब 8.30 बजे से शाम 6.00 बजे तक मैं पूज्य मालिक के निवास पर था, इसी दौरान मैंने मालिक से अप्पा के बिगड़ते स्वास्थ्य और मेरी स्वयं की कार्यालय सम्बन्धी समस्या का जिक्र किया। उन्होंने इस पर अपनी कोई प्रतिक्रिया नहीं दी। कुछ देर पश्चात् उन्हों कहा, ''हाँ मैं चाहता हूँ कि तुम स्वयं अपनी तरफ से अपनी नौकरी मत छोड़ो। भाई जब तक वे तुम्हें वेतन दे रहे हैं, ऐसे में तुम अनावश्यक नौकरी क्यों छोड़ना चाहते हो? हाँ यदि तुम्हारा आत्मसम्मान और प्रतिष्ठा दाँव पर लगी हो तथा तुम्हारे पास त्यागपत्र देने के अलावा कोई विकल्प शेष नहीं रहता, तब तो तुम्हें आवश्यक रूप से अपनी नौकरी छोड़ देना चाहिये। मैंने सुना है कि बैंक आजकल अच्छा ब्याज देते हैं।''

इसके अलावा उन्होंने किसी के सम्बन्ध में कुछ भी नहीं कहा। जब मैंने उन्हें स्मरण कराने का प्रयास किया कि वे मुझसे बहुत कुछ कहना चाहते थे तो उन्होंने कहा, मुझे कुछ भी याद नहीं है।

दस डेनिस अभ्यासी, हमारे सत्रह साथी और आंध्र के छः अभ्यासी रात्रि 9.00 बजे आश्रम से रवाना हुये। हम सभी ने रात्रि में काशी विश्वनाथ एक्सप्रेस से दिल्ली की ओर प्रस्थान किया। दिल्ली से हम मद्रास की ओर

5 फरवरी 1979 – सोमवार

काशी विश्वनाथ एक्सप्रेस शाहजहाँपुर से अपने निर्धारित समय से तीन घंटे देरी से रात्रि 2.15 बजे ही रवाना हो सकी। हमें खुले प्लेटफार्म पर रात्रि 9.30 बजे से रात्रि 2.15 बजे तक पाँच घंटे, कड़कड़ाती ठंड में गुजारने पड़े। दिल्ली में भी हमारी ट्रेन तीन घंटे देरी से सुबह 10.40 बजे पहुँची। हमने नई दिल्ली स्टेशन पर ही अपना सारा दिन व्यतीत किया। शाम 7.20 बजे हमारे सभी सत्रह साथी ग्रांड ट्रंक एक्सप्रेस से मद्रास की ओर रवाना हो गये ।

9 फरवरी 1979 – शुक्रवार (मदुरई)

वाल्यापट्टी से पुडूकोट्टई मार्ग से होते हुए हम दोपहर 2.30 बजे मदुरई पहुँचे।

शाम 7.00 बजे – तालाकुलम में पलानीचामी के निवास पर सामूहिक सत्संग कराया जिसमें लगभग बीस अभ्यासी उपस्थित थे। सिटिंग के पश्चात् सुलोचना ने कहा कि सिटिंग में बहुत गहरायी थी। इस दौरान कुछ देर पश्चात् उन्होंने महसूस किया कि उन्हें किसी खाई में धकेला जा रहा है। वह भयभीत हो गईं और उन्होंने मालिक को मदद के लिये पुकारा। जैसे ही उन्होंने उनका विचार किया अपने आपको समतल जमीन पर पाया ।

वी. जे. चन्द्रशेखर से मुझे जानकारी प्राप्त हुयी कि हमारे अम्बा सुमुन्द्रम के अभ्यासी भाई श्री वी. एस. नरसिंहमन का लगभग दो माह पूर्व बहुत अधिक नींद की गोलियों का सेवन करने के कारण देहावसान हो गया। यह सुनकर मुझे गहरा आघात पहुँचा कि जो व्यक्ति इतना नेकदिल और अपनी साधना के प्रति अत्यंत गम्भीर था, उसका अंत इतना दर्दनाक कैसे हुआ। मैंने मालिक से उनकी आगे की यात्रा की शान्ति के लिये प्रार्थना की ।

10 फरवरी 1979 – शनिवार

शाम 7.00 से 7.30 बजे – वालमजी मेन्शन में सामूहिक सत्संग कराया जिसमें पचास से अधिक संख्या में अभ्यासी उपस्थित थे। इस

दौरान मैंने केवल सफाई का कार्य किया। सत्संग के पश्चात् पी. पलानीअप्पन ने बसंत उत्सव पर अपनी शाहजहाँपुर की यात्रा के सम्बन्ध में दिये गये अपने वक्तव्य से सबका मन मोह लिया। उनका ऐसा विचार था कि तमिल लोगों में आध्यात्मिकता के प्रति रुचि अपेक्षाकृत कम होती है। इसके पश्चात् मैंने उसी के विषय को आगे बढ़ाते हुये आधे घंटे तक अपने विचार व्यक्त किये।

एस. सदाशिवम और एस. के. मोहन वृधाचलम से रात्रि 8.30 बजे यहाँ पहुँचे। उनका यहाँ एक दिन का प्रवास रहेगा ।

11 फरवरी 1979 – रविवार

सुबह 7.30 बजे – मदुरई केन्द्र में मेरे द्वारा सामूहिक सत्संग कराया गया जिसमें लगभग पचहत्तर अभ्यासी उपस्थित थे। सिटिंग आधा घंटे की रही।

शाम 8.00 बजे – वी. जे. चन्द्रशेखर ने सुलोचना, कृष्णा, मोहन, सदाशिवम और मुझे एक सिटिंग दी जो बहुत अच्छी, गहरी और उन्मादक रही।

आज सुबह मैंने एक स्वप्न देखा। मैंने देखा : मैं एक खुले मैदान में बहुत से लोगों के मध्य भीड़ के बीच में घिरा हूँ। अकस्मात् जिमी कार्टर दिखाई देते हैं और मेरी ओर आते हैं। वह मेरा अभिवादन करते हैं, मुझे गले से लगाते हैं और कहते हैं "चारी ! मैं संस्था के लिये कुछ करना चाहता हूँ क्या तुम थोड़ा वक्त उसे देखने के लिये दोगे जो मैं लेकर आया हूँ ? मैंने कहा मैं कर सकता हूँ। मुझे घेरकर खड़े लोग मुझसे पूछते हैं कि वह कौन हैं ? मैं उन्हें बताता हूँ, "यह अमेरिका के राष्ट्रपति जिमी कार्टर हैं। क्या आपने उन्हें नहीं पहचाना ?" वे सब आश्चर्य से भौचक्के रह जाते हैं, तभी उनके दो सहायक, एक बड़े डिब्बे के साथ वहाँ पहुँचते हैं। वे इसे खोलते हैं। इसके अन्दर एक चौरस सी कोई वस्तु दृष्टिगोचर हो रही है जिसका सामने का भाग एकदम सपाट है। यह एक इमारत और एक विमान के बीचों बीच एक क्रॉस दिखाई देता है। जिमी इस विमान के साथ कुछ करते हैं और यह सीधे लम्बवत् उड़ान भरने लगता है, मैं सोचता

हूँ – एक **VTOL** है।

12 फरवरी 1979 – सोमवार

सुबह 6.30 बजे – एस.सदाशिवम को व्यक्तिगत सिटिंग दी जो बहुत अच्छी रही तथा तीस मिनट चली। सिटिंग के पश्चात् उन्होंने कहा कि उन्हें मदहोशी जैसा एहसास हुआ और जैसे ही वह जाने लगे मैंने देखा उनके कदम लड़खड़ा रहे थे। मुझे भी हल्के नशे जैसा एहसास हुआ। सदाशिवम पर तो इस सिटिंग का प्रभाव दोपहर तक बना रहा।

शाम 7.00 बजे – वालमजी में सामूहिक सत्संग कराया। लगभग पैंतालिस अभ्यासी उपस्थित थे। सिटिंग बहुत गहरी थी और आधे घंटे तक चली।

13 फरवरी 1979 – मंगलवार

सुलोचना, कृष्णा और मैंने मदुरई से कार से प्रस्थान किया। एस. सदाशिवम और एस. के. मोहन भी हमारे साथ थे। हम सुबह 8.30 बजे त्रिची पहुँचे, जहाँ हमने नाश्ता किया। तत्पश्चात् पिल्लईमामा, जी. सन्थानम के लेखापरीक्षक और अंत में उमा से सम्पर्क करने के उपरान्त हम त्रिची से 11.30 बजे मद्रास की ओर रवाना हो गये। सदाशिवम वेप्पूर में ही उतर गये जहाँ से उन्हें वृधाचलम के लिये बस पकड़नी थी तथा हम सभी गर्मी, धूल और थकान भरी यात्रा के पश्चात् शाम 5.15 बजे मद्रास पहुँचे।

16 फरवरी 1979 – शुक्रवार (बैंगलोर)

सुबह 7.30 बजे – मैंने अपनी भतीजी जानकी (कोदण्ड की पुत्री) को प्रथम सिटिंग दी, तत्पश्चात् जाना और मैं समीप ही स्थित जीवन बीमा नगर में भाई राघवेन्द्र राव से उनके निवास पर मिलने पहुँचे और उनके साथ आधा घंटा व्यतीत किया। राघवेन्द्र राव के निवास से सीधे हम बानशंकरी खण्ड–दो में स्थित एस. के. सुन्दरम के निवास पर पहुँचे और वहाँ चल रहे आश्रम निर्माण के कार्य की प्रगति का निरीक्षण किया। वर्तमान में वहाँ गोलाकार छतरीनुमा छत की सेन्टरिंग का कार्य प्रगति पर था। निर्माण के उपरान्त यह छत वाकई बहुत भव्य लगेगी लेकिन आर्किटेक्ट को इसके निर्माण पर विशेष ध्यान देना होगा ।

शाम 3.00 बजे से 6.00 बजे तक मेरे द्वारा के. आर. कुमार, एम.

गुरुगेसन, एस. के. सुन्दरम, सरोजा सुन्दरम, वेणुगोपाल गुप्ता और विरुपाक्ष देवर को व्यक्तिगत सिटिंग दी गई। तत्पश्चात् हम इन्दिरा नगर अपने निवास पर वापस लौट आये। सुन्दरम और उनका परिवार भी हमारे साथ ही था ।

शाम 7.00 बजे – मेरी भतीजी जानकी को मैंने द्वितीय सिटिंग दी।

शाम 7.30 बजे – मैंने मेरी भाभी इन्दिरा को व्यक्तिगत सिटिंग दी।

शाम 7.45 बजे के. आर. कुमार और वेनुगोपाल गुप्ता भी हमारे घर पर पधारे। रात्रि 11.30 बजे तक हमारी गुफ्तगू चलती रही ।

17 फरवरी 1979 – शनिवार

मैं, जानकी और नारायणा सुबह 8.00 बजे एस.के.सुन्दरम के निवास पर पहुँचे तथा सारा दिन वहीं व्यतीत किया। मुझे पिछली रात से हल्का सा सिरदर्द था जो बढ़ता जा रहा था और सुबह 11.30 बजे तक मेरा सिरदर्द असहनीय हो गया और मैंने बिस्तर पकड़ लिया। इसके कारण मैं आश्रम में शाम के सत्संग में उपस्थित नहीं हो सका। अप्पा, कोदण्ड, इन्दिरा और सुदर्शन सभी दोपहर 3.00 बजे सुदर्शन के निवास पर पहुँच गये तथा सत्संग में उपस्थित हुये। रात्रि भोजन में हमें इडली परोसी गयी। भोजन के पश्चात् हम सभी इन्दिरा नगर अपने घर वापस लौट आये।

18 फरवरी 1979 – रविवार

सुबह 7.30 बजे, सत्संग में उपस्थित होने के लिये बानशंकरी के लिये अप्पा के साथ रवाना हुआ। अप्पा द्वारा सुबह 8.15 से 8.40 बजे तक सत्संग कराया गया, तत्पश्चात् मैं आश्रम निर्माण कार्य के लेखे तथा वित्त सम्बन्धी विषय पर चर्चा के लिये के. आर. कुमार, एल. एस. हेगड़े और कुछ अन्य लोगों के साथ एक घंटे तक व्यस्त रहा। उसके बाद 10 बजे हम एस. के.सुन्दरम के निवास पर चले गये। थोड़ी देर पश्चात् यकायक ही मुझे पुनः सिरदर्द की शिकायत हुयी और मुझे मितली सी महसूस हुयी। मैं अन्दर जाकर बिस्तर पर लेट गया, मुझे हल्का बुखार सा भी महसूस हो रहा था। सारा दिन मैं बिस्तर पर लेटा रहा, इसी दौरान अभ्यासी भाई श्री

नारायण राव ने मेरी तेल मालिश की। तत्पश्चात् उन्होंने गर्म कपड़े से मेरी सिकाई की तथा मेरे माथे पर किसी मल्हम का लेप लगाया जिसके कारण मुझे शाम 5.00 बजे के पश्चात् थोड़ी राहत महसूस हुयी। श्री नारायण राव को शाम 6.00 बजे व्यक्तिगत सिटिंग देने के पश्चात् मैंने श्री एवं श्रीमती एच.एम.सबनीश तथा श्री एवं श्रीमती एस.के.सुन्दरम को व्यक्तिगत सिटिंग दी एवं अंत में दिनेश को सिटिंग देने के पश्चात् मेरा आज के दिन का कार्य समाप्त हुआ। सुन्दरम के निवास पर हम देर रात्रि तक रहे। जैसा अक्सर होता है उसी तरह असहनीय सिर दर्द और उल्टी के पश्चात् मैंने थोड़ी राहत महसूस की तथा मेरे स्वास्थ्य में थोड़ा सुधार हुआ ।

19 फरवरी 1979 – सोमवार

इन्दिरा, जेना, सुन्दरम तथा एस. के. मोहन को व्यक्तिगत सिटिंग दी। तत्पश्चात् एस. के. सुन्दरम, सरोजा सुन्दरम तथा एस. सदाशिवम को सामूहिक सिटिंग दी । अगली सामूहिक सिटिंग इन्दिरा एवं श्री एवं श्रीमती सबनीश को दी।

अप्पा, मोहन और मैं कार से बैंगलोर से दोपहर 1.00 बजे रवाना होकर शाम 6.15 बजे मद्रास पहुँच गये।

22 फरवरी 1979 – गुरुवार (मदुरई)

मैं आर. स्वामीनाथन और टी. वी. पिचुमनी के साथ कार से दोपहर 12.30 बजे मदुरई की ओर रवाना हुआ तथा रात्रि 8.00 बजे मदुरई पहुँच गया।

23 फरवरी 1979 – शुक्रवार

सुबह 7.00 बजे – मैंने टी.वी.पिचुमनी और आर.स्वामीनाथन को व्यक्तिगत सिटिंग दी।

शाम 7.00 बजे – तालाकुलम में सामूहिक सत्संग कराया जिसमें तीस अभ्यासी उपस्थित थे।

शाम 4.00 बजे सुलोचना ने मुझे फोन पर सूचित किया कि मेरे सबसे छोटे मामा श्री आर.नारायनन (अय्या) का तंजावुर के समीप सेंगीपत्ती के एक क्षयरोग चिकित्सालय (टी. बी. सेनिटोरियम) में 21

फरवरी 1979 को रात में देहावसान हो गया है । मालिक उन्हें शान्ति प्रदान करें।

24 फरवरी 1979 – शनिवार

सुबह 7.00 बजे – आर. स्वामीनाथन तथा टी. वी. पिचुमनी को मेरे द्वारा सिटिंग दी गयी। प्रशिक्षक श्री के. आर. सुब्रामनियम आज दोपहर में तिरुनेलवेली से विरुदनगर पहुँचे। वहाँ से हम दोनों साथ में मदुरई लौटे।

शाम 7.00 बजे – वालमजी में सामूहिक सत्संग कराया । सिटिंग बहुत अच्छी रही।

25 फरवरी 1979 – रविवार

सुबह 7.30 बजे – मदुरई केन्द्र में सामूहिक सत्संग कराया जिसमें लगभग सत्तर अभ्यासी उपस्थित थे।

दोपहर 1.10 बजे से 2.25 बजे – तिरुनेलवेली के के. आर. सुब्रामनियम और पिचुमनी तथा बी.रामचन्द्रन को व्यक्तिगत सिटिंग दी। पिचुमनी क्वीलोन मेल से रात्रि 8.10 बजे मद्रास की ओर रवाना हो गये एवं बी. रामचन्द्रन एवं के. आर. सुब्रामनियम ने शाम 4.25 बजे विरुदनगर के लिये प्रस्थान किया ।

26 फरवरी 1979 – सोमवार

सुबह 6.30 बजे – आर. स्वामीनाथन को व्यक्तिगत सिटिंग दी। मुझे यह जानकर अत्यन्त अफसोस हुआ कि उनकी स्थिति में लेशमात्र भी प्रगति नहीं दिखी।

शाम 7.00 बजे – तिरुनगर उपकेन्द्र में प्रशिक्षक श्री डब्ल्यू.एच. श्रीनिवासन के निवास पर सामूहिक सत्संग कराया जिसमें इक्कीस अभ्यासी उपस्थित थे। सिटिंग बहुत अच्छी रही और पैंतीस मिनट तक चली।

27 फरवरी 1979 – मंगलवार

सुबह 6.35 बजे आर. स्वामीनाथन के साथ कार से मदुरई से रवाना हुये तथा सुबह 8.15 बजे त्रिची में लेखा परीक्षक जी. सन्थानम के निवास पर पहुँचे। वहाँ भोजन करने के पश्चात् हम सुबह 10.30 बजे त्रिची

से रवाना होकर शाम 4.15 बजे मद्रास पहुँच गये। रास्ते में हमारा एक घंटे का समय एस.सदाशिवम से मुलाकात करने के लिये वृधाचलम जाने के कारण अनावश्यक व्यर्थ हुआ, जबकि वह अभी बैंगलोर से वापस ही नहीं लौटे थे।

15 मार्च 1979 – गुरुवार

डॉ वी. एस. आर. मूर्ति की पुस्तक "न्यूराफिजियोलोजिकल बेसिस ऑफ राजयोगा इन द लाइट ऑफ सहज मार्ग" के फार्म एक और दो के प्रथम पृष्ठ की छपाई की प्रमाणित प्रति प्राप्त हुयी जिसकी छपाई का कार्य यहाँ जी.एस.प्रेस में चल रहा है।

16 मार्च 1979– शुक्रवार

डेनमार्क की हन्नाह तथा उनकी माँ विवेका शाम 4.50 बजे बैंगलोर से यहाँ पहुँचे। उन्होंने मुझसे सिटिंग प्राप्त की, तत्पश्चात् रात्रि भोजन लेने के उपरान्त वे होटल प्रेसीडेंट चले गये।

23 मार्च 1979 – शुक्रवार

तड़के सुबह का स्वप्न :– मैंने देखा कि मैं एक बड़े से हॉल में हूँ, जिसमें दो द्वार हैं जो हॉल से बाहर जाने के लिये हैं। दोनों द्वार साथ साथ हैं तथा घर के पिछवाड़े की ओर खुलते हैं। कुछ अभ्यासी भी हॉल में एकत्रित हैं। मुझे इसकी भी जानकारी थी कि बाबूजी महाराज भी वहीं मौजूद हैं, लेकिन मैंने अभी तक उन्हें देखा नहीं था। तभी मैं हमारे हैदराबाद के प्रशिक्षक मि. एन. कुमारास्वामी को एक द्वार से अंदर प्रवेश करते हुये देखता हूँ। वह सभी उपस्थित अभ्यासियों को सिटिंग देते हैं लेकिन मैं सत्संग में शामिल नहीं होता हूँ और मालिक के आने की प्रतीक्षा करता हूँ। कुछ देर प्रतीक्षा करने के पश्चात् मैं दूसरे द्वार से बाहर निकल कर एक छोटे से कमरे में पहुँचता हूँ जिसमें एक तरफ कोयले की भरी बोरियाँ रखी हुयी हैं तथा जिस द्वार से मैंने अंदर प्रवेश किया था उसके ठीक विपरीत दिशा में एक अन्य द्वार भी है जो स्नानागार की ओर जाने के लिये है। तभी मैं देखता हूँ कि मालिक अंदर प्रवेश कर रहे हैं। वे मेरी ओर देखकर मुझसे कहते हैं, "थोड़ा ठहरो पहले मुझे स्नान कर लेने दो!"

मुझे किसी जगह के लिये उड़ान पकड़नी है जिसकी टिकट मुझे अभी–अभी एक विमान परिचारिका के माध्यम से प्राप्त हुयी है और उसने मुझे दोपहर 12.30 बजे तक हवाई अड्डे पर पहुँचने की हिदायत दी है।

मेरे भाई कोदण्ड ने टेलीफोन पर मुझे बताया कि उसकी एक मात्र पुत्री सौ. आर. जानकी ने उसके मामा सुरेश (देवकी एवं आर.शेषाद्रि के पुत्र) से विवाह करने का निर्णय किया है। कोदण्ड ने बताया उन्होंने हाल ही में अपने प्रेम सम्बन्धों का खुलासा किया है तथा इन सम्बन्धों पर अपनी स्वीकृति तथा आशीर्वाद देने के लिये उनसे आग्रह कर रहे हैं। उसने यह भी कहा कि मैं पहला व्यक्ति हूँ जिसे वह इसकी जानकारी दे रहे हैं। मुझे यह जानकर आश्चर्य हो रहा था कि उन्हें इसकी जानकारी कैसे नहीं थी, जबकि पिछले एक वर्ष या उससे भी अधिक समय से सभी को इन सम्बन्धों के बारे में जानकारी थी।

''न्यूरोफिजियोलोजिकल बेसिस ऑफ राजयोग'' की छपाई का कार्य प्रगति पर है। फार्म–छः तक की प्रमाणित प्रति में मेरे द्वारा अभी तक संशोधन किया जा चुका है।

31 मार्च 1979– शनिवार

वी. एस. आर. मूर्ति को डाक द्वारा ''न्यूरोफिजियोलोजिकल बेसिस ऑफ राजयोग'' के ग्यारह फार्म इस निवेदन के साथ तिरुपति भेजे कि वे इन्हें सूचीबद्ध कर संकलित कर लें।

1 अप्रैल 1979 – रविवार

प्रस्तावना और भूमिका के साथ अंतिम दो फार्म, फार्म चौदह और पन्द्रह की प्रमाणित प्रति संशोधन हेतु प्राप्त हुयी। यह किताब 8 अप्रैल 1979 तक छपकर तैयार हो जायेगी।

3 अप्रैल 1979 – मंगलवार

तड़के सुबह के स्वप्न के पश्चात् मेरी नींद खुल गई :– मैं अपने घर पर नहीं हूँ अपितु किसी अन्य स्थान पर हूँ। यह शायद कोई गाँव अथवा कोई ग्रामीण क्षेत्र है और मुझे ऐसा प्रतीत हो रहा है कि मेरे माँ के परिवार की ओर का कोई सदस्य मेरे साथ है वस्तुतः सुलि अथवा अय्या।

अचानक ही मेरे जेहन में यह विचार आता है कि मेरी बहन जिसके बारे में मैं यह सोचता था कि उसका स्वर्गवास हो गया है (उसका स्वर्गवास तीन वर्ष की आयु में सन् 1935 में हो गया था और मेरी माँ जानकी का स्वर्गवास प्रसव के कुछ समय पश्चात् 1933 में अप्रैल/मई में हुआ था) वह वास्तव में जीवित है तथा भलीचंगी है एवं पड़ोस के किसी कस्बे या गाँव में किसी के साथ रह रही है, मैं चिल्लाता हूँ, "मैं वहाँ जाऊँगा और उससे मिलूँगा तथा उसे घर ले आऊँगा। आखिरकार उसके परिवार में वापस आने का यही समय है।" वे लोग जो मेरे साथ हैं कहते हैं "लेकिन वह व्यक्ति कौन है जिसके साथ वह रह रही है ? बेचारी, कितना अकेलापन महसूस कर रही होगी!" तभी मेरी नींद टूट जाती है।

जहाँ तक मुझे याद पड़ता है मैंने कभी भी अपनी इस छोटी बहन जिसका नाम वसन्ता था को स्वप्न में भी नहीं देखा था, क्योंकि मैंने कभी उसकी सूरत तक नहीं देखी थी। उसका जन्म टूटीकोरीन में हुआ था तथा उसके जन्म के दस दिन पश्चात् ही मेरी माँ का प्रसव के बुखार के कारण देहावसान हो गया था। मेरी माँ की मृत्यु हमारे घोर अन्धविश्वासी रीति रिवाजों के कारण हुयी थी। उन्हें शुद्धिकरण हेतु खुले स्थान में ठण्डे पानी से स्नान हेतु बाध्य किया गया था जिसके कारण वह ज्वर से पीड़ित हो गयीं तथा तत्पश्चात् वही उनकी मृत्यु का कारण बना। मुझे याद है मेरी माँ को मृत्यु के पश्चात् एक टीन की बनी शय्या पर लिटाया गया था तथा हम अपने पिता के बॉम्बे से लौटने का इंतजार कर रहे थे। लेकिन अपनी बहन के बारे में मुझे कुछ भी स्मरण नहीं है, उस समय वह मात्र दस दिन की छोटी सी बच्ची थी और न ही मुझे कभी याद पड़ता है कि मैंने उसके पश्चात् उसे देखा होगा क्योंकि उसका लालन पालन अगरावल्लम गाँव में हमारे नाना के यहाँ हुआ था तथा वहीं पर उसका करीब वर्ष 1935 के दौरान देहावसान हो गया था, जबकि उस समय उसकी उम्र तीन वर्ष से भी कम की थी ।

7 अप्रैल 1979 – शनिवार

तड़के सुबह के स्वप्न के पश्चात् सुबह 4.40 बजे मेरी नींद खुल

गयी। स्वप्न :– मैंने देखा कि मैं किसी घर में एक कक्ष में हूँ। मालिक दूसरे कक्ष में हैं। ऐसा प्रतीत हो रहा है कि यहाँ कुछ अन्य व्यक्ति भी एकत्रित हैं, तभी कोई व्यक्ति मेरे कक्ष में प्रवेश करता है और मुझसे कहता है कि मालिक मुझे बुला रहे हैं। तत्काल ही मैं उनके कमरे में पहुँचता हूँ तथा देखता हूँ कि वे फर्श पर लेटे हुये हैं। मैं भी उनके पैरों के समीप फर्श पर बैठ जाता हूँ। वे अत्यंत असहाय एवं कातर नजरों से मेरी ओर देखकर मुझसे कहते हैं "तुमने मेरे लिये बहुत बड़ी चिन्ता खड़ी कर दी है। अब मुझे तुम्हारे प्रकरण को पुनः हाथ में लेना पड़ेगा। तुम्हारे ऊपर किये गये कार्य को मैं व्यर्थ नहीं जाने दे सकता हूँ। अब तुम्हें भी सब हँसी खेल छोड़कर अपने आपको काम में झोंक देना चाहिये।" अगले दृष्य में मैं देखता हूँ कि मालिक बैठे हुये हैं। मैं अपने दाहिने हाथ की हथेली उनके दाहिने घुटने पर रख कर उनसे कहता हूँ "मैं आपसे वादा करता हूँ कि दोबारा ऐसा नहीं होगा।" दृष्य पुनः परिवर्तित हो जाता है। इस बार मालिक और मैं किसी विमान में हैं तथा विमान कहीं पर खड़ा हुआ है। मैं बाहर आता हूँ जहाँ मेरी नजर एक बहुमंजिला इमारत पर पड़ती है। मुझे यह जानकारी है कि हमारे कोई अभ्यासी इस इमारत में रहते हैं। मैं इमारत के नजदीक जाकर उनका ध्यान आकर्शित करने के लिये ताली बजाता हूँ। वे प्रथम तल की बालकनी से मेरी ओर देखते हैं तथा नीचे उतरकर मेरे समीप पहुँचते हैं। मैं उन्हें मालिक के पास जाने का निर्देश देता हूँ। तत्पश्चात् मैं समीप ही स्थित एक अन्य इमारत में किसी गुजराती अभ्यासी के सम्बन्ध में पूछताछ करता हूँ। अचानक मेरी निगाह बैंगलोर की श्रीमती सुन्दरम पर पड़ती है। वे मुझसे पूछती हैं कि क्या मैं चाय लूँगा, लेकिन मैं उनसे कहता हूँ कि मुझे कॉफी पीना है। दृष्य पुनः परिवर्तित हो जाता है। अबकी बार मालिक और मैं मदुरई के हमारे वालमजी मेंशन के फ्लैट में हैं। मुझे ऐसा महसूस होता है। मालिक फ्लैट के पिछले हिस्से में एक चारपाई पर लेटे हुये हैं। मैं उनसे सामने वाले कक्ष में जिसमें वे हमेशा ठहरते हैं, में चलने के लिये निवेदन करता हूँ। वे मेरा आग्रह स्वीकार कर लेते हैं। मैं उन्हें अपने साथ उस कक्ष तक लेकर जाता हूँ

तथा देखता हूँ कि कमरे में राघवेन्द्र राव और जहाँगीरदार अपनी फटी मच्छरदानी को लपेट रहे हैं। इसी के साथ स्वप्न समाप्त हो जाता है।

12 अप्रैल 1979 – गुरुवार

बैंगलोर के एच. एम. सबनीश तथा उनकी पत्नी शाम 4.00 बजे मद्रास पहुँचे। मैंने उन्हें शाम 4.45 बजे से 5.15 बजे तक सिटिंग दी तथा उनकी अच्छी तरह से सफाई की। सबनीश ने कहा कि उन्होंनें अत्यंत गहरायी का अनुभव किया है।

शाम 6.00 बजे वी. एसं. नारायनन तथा जे. विश्वनाथन हमसे मुलाकात करने के लिये हमारे यहाँ पहुँचे। नारायनन आज सुबह ही शाहजहाँपुर से लौटे थे। रात्रि 8.15 बजे तक वे हमारे घर पर ही रहे। इस दौरान नारायनन ने मालिक के साथ उनके द्वारा गुजारे गये पलों को विस्तार से वर्णित किया। इस यात्रा के उपरान्त उनमें अच्छा परिवर्तन दिखाई दे रहा है। स्वभाव से भी वह बहुत विनम्र हो गये हैं। सामान्यतया व्यवहार से वह बड़े रूखे और गुस्सैल हुआ करते थे, यद्यपि यदाकदा वह बच्चों जैसा आचरण भी करते थे। उनके रुख में बहुत बदलाव आ गया है। उनके हावभाव में विनम्रता भी प्रदर्शित होती है। मेरे पुत्र कृष्णा के अनुसार, "वे कुत्ते जैसे वफादार हो गये हैं", एक नयी निष्ठा के साथ।

15 अप्रैल 1979 – शुक्रवार

सुबह 7.30 बजे – एच. एम. सबनीश और उनकी पत्नी ऊषा को सिटिंग दी। सिटिंग चालीस मिनट तक चली जिसमें बहुत गहरायी रही। सिटिंग के पश्चात् सबनीश ने कहा, "मुझे आज के पूर्व ऐसा अनुभव कभी नहीं हुआ। उन्होंने बताया कि सिटिंग समाप्त होने के कुछ क्षण पूर्व थोड़े से समय के लिये मुझे ऐसा अनुभव हुआ कि मैं हवा में तैर रहा हूँ।" तत्पश्चात् उन्होंने नाश्ता किया तथा वहाँ से रवाना हो गये।

16 अप्रैल 1979 – सोमवार

डॉ. वी. एस. आर. मूर्ति की "न्यूरोफिजियोलोजिकल बेसिस ऑफ राजयोग इन द लाइट ऑफ सहज मार्ग" की पहली जिल्दबन्द प्रति आज जी.एस.प्रेस से प्राप्त हुई। शाम 6.45 बजे मैं कन्याकुमारी एक्सप्रेस से

विरुदनगर की ओर रवाना हो गया। ट्रेन निर्धारित समय से आधा घन्टे विलम्ब से चल रही थी।

पुस्तक बहुत अच्छी तैयार हुयी है।

17 अप्रैल 1979 – मंगलवार (मदुरई)

शाम 7.00 बजे मैंने वालमजी मेन्शन में सामूहिक सत्संग कराया। लगभग पैंतालिस अभ्यासी उपस्थित थे। सिटिंग बहुत बच्छी रही। एस. सदाशिवम रात्रि 9.45 बजे बस द्वारा वृधाचलम से आज यहाँ पहुँचे।

18 अप्रैल 1979 – बुधवार

सुबह 7.00 बजे – एस. सदाशिवम को व्यक्तिगत सिटिंग दी तथा उनके हृदय क्षेत्र की अच्छी तरह सफाई करने के पश्चात् उनके ब्रह्माण्ड मंडल की भी सफाई की। सदाशिवम ने बताया "मेरा ध्यान हृदय पर केन्द्रित था। सिटिंग के प्रारम्भ के लगभग दस मिनट तक उनकी स्थिति भ्रमपूर्ण रही तथा अनवरत अनावश्यक विचार आते–जाते रहे, तत्पश्चात् मैंने महसूस किया कि मेरा ध्यान ऊपर की ओर यहाँ (माथे की ओर इशारा करते हुये) केन्द्रित हो रहा है तथा मेरे प्रयास के बावजूद भी मैं अपने ध्यान को पुनः हृदय पर केन्द्रित कर रहा था, परन्तु ध्यान नहीं था, यह स्थिति सिटिंग के समाप्त होने तक बनी रही। क्या मेरा अनुमान सही है? सिटिंग के अंतिम दस मिनट में अत्यंत गहरायी एवं तल्लीनता थी।"

शाम 7.00 बजे – मदुरई केन्द्र में सामूहिक सत्संग कराया। लगभग पचास अभ्यासी उपस्थित थे। सिटिंग की अवधि पैंतालिस मिनट की रही और इसमें अत्यन्त गहरायी और तन्मयता थी। रात्रि 8.45 तक मैंने उन्हें सम्बोधित किया।

19 अप्रैल 1979 – गुरुवार

सुबह 7.00 बजे – एस. सदाशिवम को व्यक्तिगत सिटिंग दी। आज पुनः मेरे द्वारा कुछ समय के लिये उनके हृदय क्षेत्र की सफाई करने के बाद उनके ब्रह्माण्ड मंडल की सफाई की। उसके उपरान्त उनके आत्मा चक्र पर कार्य किया। सदाशिवम ने बताया, "मैंने महसूस किया कि मेरा शरीर सीधाई में (सिर से पैर तक) ठीक मध्य से, दो भागों में विभाजित हो

गया है तथा मेरा दाहिना हिस्सा प्रकाश से भर गया है। निश्चित रूप से यह अत्यन्त ही सुखद अनुभव था। ''

शाम 7.00 बजे – वालमजी में सामूहिक सत्संग कराया जिसमें पैंतालिस अभ्यासी उपस्थित थे। चालीस मिनट की सिटिंग बहुत अच्छी रही। रात्रि 8.45 तक मैंने उन्हें सम्बोधित किया, तत्पश्चात् मैंने वईगई नदी तट पर स्थित अन्ना नगर में जे. आर. दोरेस्वामी के निवास की ओर रात्रि के भोजन के लिये प्रस्थान किया।

20 अप्रैल 1979 – शुक्रवार

सुबह 7.00 बजे – एस. सदाशिवम को व्यक्तिगत सिटिंग दी।

शाम 5.00 बजे – प्रशिक्षक डब्ल्यू. एच. श्रीनिवासन को व्यक्तिगत सिटिंग दी।

एस. सदाशिवम् ने दोपहर 2.45 बजे बस से वृधाचलम की ओर प्रस्थान किया। मैं शाम 7.25 बजे पांड्यन एक्सप्रेस से मद्रास की ओर रवाना हो गया।

26 अप्रैल 1979 – गुरुवार

हमने सुबह 9.40 बजे दादर एक्सप्रेस से अहमदाबाद होते हुये बॉम्बे की ओर प्रस्थान किया। हमारा पचास व्यक्तियों का दल है जिसमें मदुरई के ग्यारह और चार व्यक्ति तिरुपुर के भी सम्मिलित थे। रेनुगुन्टा और टाडापतरी से भी कुछ अभ्यासी इस ट्रेन में सवार हुये। ट्रेन में कोदण्ड की पत्नी इन्दिरा, श्रीमती सरोजा सुन्दरम, एस. सदाशिवम तथा एस. के. मोहन को व्यक्तिगत सिटिंग दी तथा शाम 6.30 बजे सबको एक सामूहिक सिटिंग भी दी जिसके सम्बन्ध में सामान्य प्रतिक्रिया रही, ''सिटिंग बहुत अच्छी थी।''

27 अप्रैल 1979 – शुक्रवार (बॉम्बे)

ट्रेन अपने निर्धारित समयानुसार ठीक 11.40 बजे दादर पहुँची। वहाँ से हमारे अभ्यासियों का दल बॉम्बे के सेन्ट्रल रेलवे स्टेशन चला गया, जबकि मैं रमनभाई देसाई के साथ जे. आर. दोरेस्वामी अय्यर को साथ लेकर डॉ. जाजोदिया के निवास पर चला गया। दोपहर का भोजन हमने

वहीं किया तथा शाम 4.00 बजे तक विश्राम करने के पश्चात् हम अपने बाकी साथियों के पास बॉम्बे सेन्ट्रल स्टेशन चले गये ।

दोपहर 3.30 बजे – डॉ. जाजोदिया, श्रीमती जाजोदिया तथा जे. आर. डी. को व्यक्तिगत सिटिंग दी।

रात को 11.30 बजे हमारा दल हॉलिडे स्पेशल से अहमदाबाद की ओर रवाना हुआ। आरक्षण को लेकर हमें अत्यन्त असुविधा हुयी। इस ट्रेन से कुल अस्सी से भी अधिक अभ्यासी यात्रा कर रहे थे।

28 अप्रैल 1979 – शनिवार (अहमदाबाद)

सुबह 10.40 बजे हम अहमदाबाद पहुँच गये। स्थानीय केन्द्र द्वारा आगंतुक अभ्यासियों को पूज्य मालिक के जन्मोत्सव समारोह कार्यक्रम के आयोजन स्थल तक पहुँचाने के लिये आवागमन हेतु बसों की व्यवस्था की गयी थी। आगामी कुछ दिनों में पूज्य मालिक के जन्मोत्सव समारोह कार्यक्रम का आयोजन इसी परिसर में ही होना था। मेरे द्वारा आयोजन स्थल का निरीक्षण कर व्यवस्था का जायजा लिया गया। व्यवस्था बहुत अच्छी की गयी थी।

प्रिय मालिक की अगवानी के लिये मैं शाम 7.00 बजे हवाई अड्डे पर पहुँचा। सर्वप्रथम भाई राघवेन्द्र राव तथा एम. डी. जहाँगीरदार का बैंगलोर से बम्बई के रास्ते रात्रि 8.30 बजे आगमन हुआ। राघवेन्द्र राव का पुष्पाहार इत्यादि से अत्यंत आत्मीय स्वागत किया गया। अनेक अभ्यासी उनके चरण स्पर्श कर उनके प्रति सम्मान प्रदर्शित कर रहे थे।

पूज्य मालिक का श्री गुण्डे राव नागनूर तथा श्री राजेश्वर प्रसाद माथुर के साथ निर्धारित समय से एक घंटे विलम्ब से रात्रि लगभग 9.00 बजे दिल्ली से विमान से आगमन हुआ। मालिक स्वस्थ थे किन्तु थके हुये नजर आ रहे थे और उनके नेत्रों से कमजोरी के लक्षण स्पष्ट दृष्टिगोचर हो रहे थे। सभी अभ्यासियों ने सम्मान के साथ हाथ जोड़कर मालिक का स्वागत किया। सभी को मालिक के चरण न छूने के निर्देश मेरे द्वारा पहले ही दिये जा चुके थे। सभी बहुत आज्ञाकारी थे। उनका पुष्पाहार इत्यादि से स्वागत किया गया, उसके पश्चात् मालिक ने सोफे पर पन्द्रह मिनट

तक विश्राम किया। इसी दौरान श्रीमती प्रेमा राजगोपालन ने मालिक को एक ग्लास ठंडा दूध देकर, जो कि वह विशेष तौर पर अपने साथ लेकर आयी थीं, अपनी अच्छी समझ बूझ का परिचय दिया। तत्पश्चात् मालिक को गोविंद राम अग्रवाल के निवास पर ले जाया गया, उनके ठहरने की व्यवस्था वहीं पर की गयी थी ।

29 अप्रैल 1979 – रविवार

मालिक के जन्मोत्सव समारोह कार्यक्रम का आज प्रथम दिवस है, यह मालिक का इक्यासिवाँ जन्म दिवस है।

सुबह 9.00 बजे कार्यक्रम का शुभारम्भ एक सार्वजनिक बैठक से हुआ, जिसकी अध्यक्षता स्वयं पूज्य मालिक ने की । विशाल पंडाल की व्यवस्था की गयी थी जिसकी सज्जा अत्यंत साधारण एवं सुचारु रूप से की गयी थी। मैं मालिक को अपने साथ लेकर स्टेज पर पहुँचा। बाकी सभी व्यक्ति जैसाकि उनसे पहले ही आग्रह कर दिया गया था, उसी प्रकार अपने स्थान पर शान्त बैठे रहे। इस भीड़ में से न तो किसी ने कोई हुल्लड़ किया और न ही किसी ने अपनी पंक्ति तोड़ी। मालिक के स्टेज पर पहुँचते ही सभी ने अपने स्थान पर खड़े होकर हाथ जोड़कर उनका अभिवादन किया। सम्पूर्ण कार्यक्रम अत्यंत व्यवस्थित रूप से सम्पन्न हुआ। तत्पश्चात् मैंने विश्व के समस्त अभ्यासियों की ओर से अत्यंत ही सुन्दर और खुशबूदार पुष्पाहार से मालिक का स्वागत किया।

अहमदाबाद के प्रभारी प्रशिक्षक सी. राजगोपालन द्वारा संक्षिप्त रूप से परिचय सम्बोधन दिया गया। सम्बोधन के उपरान्त रायचूर के भाई राघवेन्द्र राव ने मिशन के नये संस्करण "न्यूरोफिजियोलोजिकल बेसिस ऑफ राजयोग इन द लाइट ऑफ सहज मार्ग" का विमोचन किया जिसकी 800 प्रतियाँ हम बिक्री के लिये अपने साथ लेकर आये थे। विमोचन कार्यक्रम के पश्चात् मैंने "मानवीय श्रेष्ठता और ईश्वर साक्षात्कार" विषय, पर अपने प्रातःकालीन सत्र का मुख्य सम्बोधन दिया। सम्बोधन चालीस मिनट का रहा जिसकी सभी के द्वारा प्रशंसा की गयी। मैंने अपने तात्कालिक रूप से तैयार किये इस सम्बोधन को वैज्ञानिक आधार दे दिया

था जोकि आज के आधुनिक युग के बुद्धिजीवियों को समझाने के लिये आवश्यक था। तत्पश्चात् श्री एस.ए.सरनाड तथा डॉ. ए.बी. जाजोदिया ने दस–दस मिनट के लिये हिन्दी में अपने विचार सबके समक्ष रखे। नवसारी के श्री देवराम चावड़ा द्वारा गुजराती में आज के कार्यक्रम का अंतिम वक्तव्य दिया गया। बैठक सुबह 11.30 बजे समाप्त हो गयी। मैं मालिक को अपने साथ लेकर उनकी कार तक पहुँचा तथा उन्हें कार में बैठाकर मेजबान के निवास की ओर रवाना किया। इस दौरान सभी अभ्यासी शान्तिपूर्वक अपने स्थान पर ही बैठे रहे ।

शाम 4.00 बजे – मैं अपने चचेरे भाई बी.चक्रपाणी, कोदण्ड की पत्नी इंदिरा तथा मेरी भतीजी जैना को श्री गोविन्द राम अग्रवाल के निवास पर उन्हें मालिक से मिलवाने के लिये ले गया। इंदिरा 27 जून को जैना के विवाह समारोह पर मालिक को व्यक्तिगत रूप से आमंत्रित करना चाहती थी। मालिक ने मुस्कुराते हुये उससे कहा कि वे विवाह समारोह में उपस्थित होने का प्रयास करेंगे।

शाम 5.30 बजे – सहज मार्ग अनुसंधान संस्थान (रिसर्च इन्स्टीट्यूट) के विषय पर चर्चा हेतु आयोजित बैठक एक घंटे तक चली जिसमें मेरे अलावा श्री राघवेन्द्र राव, के. सी. नारायणा, प्रो., के. कमलानाथन तथा श्री एस. ए. सरनाड उपस्थित थे। तत्पश्चात् मैंने मालिक के साथ एकांत में एक घंटे का समय व्यतीत किया। हम रात्रि 9.30 बजे आयोजन स्थल पर वापस लौट आये।

30 अप्रैल 1979 – सोमवार

मालिक के इक्यासिवें जन्मदिवस समारोह का शुभारम्भ सुबह 6. 30 बजे बहन कस्तूरी की सिटिंग से हुआ । बाबूजी महाराज सुबह 8.30 बजे आयोजन स्थल पर पधारे। मैंने कार से उतरते समय उनका अभिवादन किया तथा उनके जन्मदिवस पर विशेष तौर पर हिन्दी में उन्हें शुभकामनायें दीं। फिर मैं उन्हें स्टेज पर ले गया। कलकत्ता के प्रभारी प्रशिक्षक श्री रमन लाल मिमानी द्वारा एक विशेष "उत्सव स्मारिका" का विमोचन किया गया। तदुपरांत कस्तूरी ने हिन्दी में एक भक्ति गीत गाया

तथा उनके द्वारा हिन्दी में ही अपना सम्बोधन दिया गया। कस्तूरी के पश्चात् उदयपुर की डॉ. सुधा गुप्ता ने भी हिन्दी में ही अपने विचार व्यक्त किये, तदुपरांत लखनऊ की एक अभ्यासी बहन का गीत गायन (हिन्दी में) का कार्यक्रम बहुत देर तक चलता रहा। आज के कार्यक्रम का समापन सुबह 10.30 बजे हुआ।

उसके पश्चात् पंडाल में ही एक हिस्से में हमने दोपहर 12.30 बजे तक प्रशिक्षकों की एक बैठक आयोजित की जिसकी अध्यक्षता स्वयं मालिक के द्वारा की गयी। बैठक में लगभग अस्सी प्रशिक्षक उपस्थित थे। मालिक द्वारा बैठक में चर्चा हेतु आठ बिन्दु प्रस्तावित किये गये। चर्चा मुख्य रूप से नये अभ्यासियों के मिशन में चयन करते वक्त विशेष ध्यान दिये जाने के बिन्दु पर केन्द्रित रही। तत्पश्चात् मालिक वहाँ से रवाना हो गये।

मैं शाम 4.00 बजे गोविन्दराम जी के निवास पर पहुँचा तथा वहाँ से बाबूजी महाराज तथा अन्य साथियों के साथ हम शाम 6.00 से 6.30 बजे के मध्य सी.राजगोपालन के निवास की ओर रवाना हो गये। बाबूजी महाराज ने श्रीमती द्रोपदी देवी अग्रवाल, श्री सी. राजगोपालन तथा श्रीमती प्रेमा राजगोपालन को दीक्षा प्रदान की। वे अत्यंत सौभाग्यशाली तथा धन्य आत्मायें हैं।

हम सभी ने रात्रि का भोजन सी. राजगोपालन के निवास पर किया जिसमें हमारे अन्य भाई, राघवेन्द्र राव, एस. ए. सरनाड, डॉ. ए. बी. जाजोदिया तथा जहाँगीरदार भी सम्मिलित हुये। रात्रि 10.30 बजे मैं आयोजन स्थल पर वापस लौट आया ।

दिन में यहाँ का तापमान बहुत अधिक रहता है तथा उमस भी होती है जबकि रातें सुहावनी तथा आश्चर्यजनक रूप से सर्द होती हैं जिसके कारण रात में अच्छी नींद आती है।

1 मई 1979 – मंगलवार

मालिक सुबह 8.00 बजे आयोजन स्थल पर पधारे तथा वहाँ पहुँचने के तुरन्त पश्चात् उनके द्वारा बीस मिनट तक सत्संग कराया गया। समारोह के समापन कार्यक्रम के अंतिम सत्र का प्रारम्भ व्याख्यानों से

हुआ। सबसे अंत में मैंने कार्यक्रम समाप्ति पर अपना सम्बोधन दिया, जो अब व्यवहारिक हो गया है। मैंने अपने बीस मिनट के सम्बोधन में कल मालिक द्वारा प्रशिक्षकों के सम्मेलन में दिये गये आठ बिन्दुओं के विषय पर ही अपने विचार प्रस्तुत किये।

मालिक मेरे साथ रसोई की व्यवस्था वाले विशाल टेन्ट में पहुँचे तथा स्वयं सेवकों के साथ पाँच मिनट व्यतीत किये एवं उन्हें अपने दर्शनों से कृतार्थ किया। उसके बाद गोविंद राम के घर चले गये। मुझे आज सारा दिन आयोजन स्थल पर ही व्यतीत करना था, लेकिन शाम 5.00 बजे किसी तरह मुझे मालिक के पास जाने का अवसर मिल ही गया तथा मैं भी मालिक की पार्टी में शामिल हो गया। वहाँ से हम सभी श्री कांतिभाई वी. पटेल के भव्य और आलीशान निवास पर रात्रिभोज के लिये पहुँचे। रात्रि 9.30 बजे मैं आयोजन स्थल पर वापस लौट आया। मेरे चचेरे भाई कैप्टन बी. चक्रपाणी ने आज बॉम्बे के लिये प्रस्थान किया। मेरे आयोजन स्थल पर पहुँचने तक अभ्यासियों की संख्या घटकर मात्र दो सौ के लगभग रह गयी थी। अधिकांश अभ्यासी दिन में ही देश के विभिन्न हिस्सों में अपने अपने गंतव्यों की ओर रवाना हो चुके थे।

2 मई 1979 – बुधवार

पूज्य मालिक सुबह 8.10 बजे कार से श्री गुण्डेराव, एस. ए. सारनाड, देवराम चावड़ा इत्यादि के साथ बड़ौदा की ओर रवाना हो गये। मैंने उन्हें गोबिंदराम अग्रवाल के निवास से विदाई दी। मालिक से बिछुड़ते वक्त मैं कुछ क्षणों के लिये भावुक हो गया था। मालिक बड़ौदा से कल नवसारी जायेंगे, चार तारीख को वे सूरत में रहेंगे तथा वहाँ से नवसारी वापस लौट आयेंगे जहाँ वे रात्रि विश्राम करेंगे। पाँच तारीख की शाम को मालिक अहमदाबाद वापस लौट आयेंगे तथा अहमदाबाद में रात्रि विश्राम करने के पश्चात् छः तारीख को विमान द्वारा उदयपुर की ओर रवाना हो जायेंगे। मुझे अफसोस हो रहा था कि इस दौरे पर मैं मालिक के साथ नहीं जा सका।

एस. के. सुन्दरम, एस. सदाशिवम, एस. के. मोहन, के. महालिंगम

और मैंने श्री सुब्रामनियम के साथ दोपहर का भोजन किया। भोजन के उपरान्त उनकी पुत्री गौरी से दोपहर लगभग 3.30 बजे तक लम्बी चर्चा हुयी।

हम सभी साथियों ने रात्रि–भोज श्री गोबिन्दराम के निवास पर किया।

3 मई 1979 – गुरुवार

हमारे सभी साथी लोग सुबह 4.00 बजे उठ गये तथा स्नानादि करने के पश्चात् तीन बसों में सवार होकर अहमदाबाद रेलवे स्टेशन पर पहुँचे। सुबह 6.40 बजे नवजीवन एक्सप्रेस जो सूरत, जलगाँव, मनमाड तथा दौण्ड के रास्ते सीधे मद्रास की ओर जाती है, से अहमदाबाद से रवाना हुये। 150 से भी अधिक संख्या में अभ्यासी इस ट्रेन से यात्रा कर रहे थे ।

हम जब बड़ौदा से होकर गुजर रहे थे तब मुझे इस विचार ने व्याकुल कर दिया कि मालिक इसी क्षेत्र में ही कहीं हैं तथा दुर्भाग्यवश मैं उनके साथ नहीं हूँ।

सूरत और जलगॉव के मध्य ट्रेन की गति अत्यन्त धीमी थी। (शाम 5.30 बजे) झुलसती गर्मी में यह अत्यन्त थकान भरी यात्रा थी।

4 मई 1979 – शुक्रवार

हमारी ट्रेन मद्रास पहुँचने वाली थी, मेरे स्मरण में नहीं है कि मैंने इससे पूर्व कभी भी इतनी कष्टप्रद यात्रा की हो। झुलसती गर्मी के कारण यात्रा और भी कष्टप्रद हो गयी थी । गुन्टाकल से रेनूगुन्टा तक की यात्रा विशेष तौर पर अत्यन्त ही कष्टदायी थी। रात्रि 8.10 बजे हम मद्रास (बीच स्टेशन) पहुँचे। ट्रेन निर्धारित समय से लगभग एक घंटे विलम्ब से यहाँ पहुँची थी।

अप्पा कार से कोदण्ड, पुनम्मा और सुदर्शन के साथ रात्रि 10.00 बजे बैंगलोर से मद्रास पहुँचे।

7 मई 1979 – सोमवार

मेरी भतीजी सौ. जानकी की चि. सुरेश के साथ मंगनी की रस्म शाम 5.30 बजे बसन्त नगर में उनके निवास पर विधिवत् सम्पन्न हुयी

जिसमें हम सब लोग भी उपस्थित हुये।

11 मई 1979 – शुक्रवार

अप्पा, कोदण्ड, इन्दिरा, जेना, सुदर्शन तथा कुट्टी, सभी सुबह 7.00 बजे कार से, बैंगलोर, के लिए रवाना हो गये ।

14 मई 1979 – सोमवार

सुबह 6.30 से 7.10 बजे – मेरे ध्यान के दौरान एक स्थिति पर मैंने ऐसा अनुभव किया कि मैं और कुछ नहीं अपितु शारीरिक बनावट के अन्दर एक चेतना मात्र हूँ। मेरे इस अनुभव का मेरे समक्ष सजीव चित्रण हुआ तथा मैं ऐसा अनुभव कर रहा था जैसे कि सूखे नारियल के दूध को नारियल के भीतर रहकर अनुभव होता होगा।

17 मई 1979 – गुरुवार

सुबह 7.00 बजे – एम. रविकुमार, जे. श्रीनिवासन तथा पी. वी. सुब्रानायडू को सामूहिक सिटिंग दी, सिटिंग बहुत अच्छी रही तथा अंतिम दस मिनट के दौरान मदहोशी सी छा गयी।

18 मई 1979 – शुक्रवार

शाम 6.30 बजे – एस. के. मोहन तथा सुलोचना को सिटिंग दी। सिटिंग के प्रारम्भ होने के कुछ देर पश्चात् ही आंध्र प्रदेश के मंडामारी का एक अभ्यासी भी सिटिंग में सम्मिलित हुआ। उसके अन्दर आने की मुझे कोई जानकारी नहीं थी। लेकिन सिटिंग के दौरान मुझे ऐसा आभास हुआ कि कोई बड़ी सी काली आकृति ने अन्दर प्रवेश किया है तथा वह सिटिंग में सम्मिलित हो गयी है। सिटिंग समाप्त होने के पश्चात् मैंने उसकी ओर देखा, वह मंडामारी का अभ्यासी श्री आदिनारायण था।

21 मई 1979 – सोमवार

सुबह 7.00 बजे – मैंने अपनी पत्नी सुलोचना को एक व्यक्तिगत सिटिंग दी। उसकी स्थिति अच्छी है। केवल सतही तौर पर उसमें थोड़ी स्थूलता है।

22 मई 1979 – मंगलवार

चि. उमेश ने मुझे जानकारी दी कि उनके ससुर ने लखनऊ से

उन्हें पत्र द्वारा सूचित किया है कि हाल ही में पूज्य मालिक अपने मासिक चिकित्सीय परीक्षण हेतु लखनऊ पधारे थे। पत्र में उन्होंने आगे लिखा था कि इस दौरान उन्होंने देखा कि मालिक न केवल शारीरिक रूप से अत्यन्त अस्वस्थ नज़र आ रहे थे, अपितु वे अपनी याददाश्त भी लगभग खो चुके थे। यहाँ तक कि मालिक उमेश की पत्नी सौ.अमिता तथा बच्चों नीतू, सोनू एवं मोनू को भी नहीं पहचान पा रहे थे। उमेश इसके कारण अत्यंत चिंतित थे तथा मुझे भी कुछ समझ में नहीं आ रहा था कि ऐसी परिस्थति में क्या किया जाना चाहिये। उमेश को संदेह था कि मालिक अपने बिगड़े स्वास्थ्य के कारण आगामी जून में बैंगलोर तथा मद्रास की अपनी प्रस्तावित यात्रा पर शायद नहीं आ सकेंगे जिसका कार्यक्रम स्वयं उनके द्वारा निर्धारित किया गया था ।

23 मई 1979 – बुधवार

शाम 6.30 बजे– सामूहिक सत्संग कराया जिसमें आर. स्वामीनाथन, वी. एस. नारायनन, एस. रंगराजन, ए. टी. सम्पथ, पी. एस. दोराइवेलू, श्रीमती शारदा रामनाथन, अहमदाबाद की श्रीमती वेदा राजगोपालन तथा भोपाल के मि.आयंगर उपस्थित थे। सिटिंग बहुत ही अच्छी रही, प्राणाहुति अत्यन्त ही सूक्ष्म, गहरी तथा तल्लीन कर देने वाली थी। सिटिंग के प्रारम्भ से लेकर अंत तक मुझे ऐसा महसूस होता रहा जैसे कि मालिक की कृपा अनवरत बरस रही हो। सिटिंग वाकई बहुत अच्छी रही।

स्वामीनाथन ने कहा, "आपने कभी भी इतने कम अभ्यासियों के ग्रुप को इस तरह की सिटिंग नहीं दी। सिटिंग बहुत उम्दा रही। मैं अपनी आँखें नहीं खोल पा रहा था, इसमें अत्यंत गहरायी थी तथा मैं पूरी तरह से इसमें तल्लीन हो गया था।"

वी. एस. नारायनन ने कहा, "मैं तो अभी भी आँखे नहीं खोल पा रहा हूँ मैं चाह रहा था कि काश सिटिंग थोड़े लम्बे समय तक जारी रहती। आपको इतनी जल्दी इसे विराम नहीं देना चाहिये था। यह बहुत ही अच्छी सिटिंग थी। मेरी इच्छा थी कि यह लम्बे समय तक जारी रहती।"

पी. एस. दोराइवेलू :– "मैंने भी ऐसा ही अनुभव किया। सिटिंग में अत्यंत गहराई एवं तल्लीनता थी। मैं दुःखी हो गया जब आपने इसे समाप्त कर दिया।"

26 मई 1979 – शनिवार

मेरा भाई कैप्टन एस. राजगोपाल, पत्नी कोमला, पुत्र श्रीवत्सा तथा श्रीराम, सभी आज देर रात्रि में सिंगापुर से मद्रास पहुँचे।

27 मई 1979– रविवार

सुबह 7.30 बजे – मैंने सुबह का सामूहिक सत्संग कराया।

अप्पा, कोदण्ड, इन्दिरा तथा सुदर्शन सुबह 11.30 बजे बैंगलोर से कार से मद्रास पहुँचे।

1 जून 1979– शुक्रवार (बैंगलोर)

मैं सुबह 7.30 बजे, आईटीपीटी की एम्बेसेडर कार टीएनआर 1569 द्वारा कोदण्ड, इन्दिरा, कृष्णा तथा सुदर्शन के साथ बैंगलोर की ओर रवाना हुआ तथा सुबह 9.10 बजे कान्जीवरम पहुँचा। वहाँ से सुबह 11.30 बजे रवाना होकर दोपहर 3.45 बजे बैंगलोर पहुँच गया ।

2 जून 1979 – शनिवार

सुबह 10.30 बजे – सर्वप्रथम इन्दिरा तत्पश्चात् उसकी माँ पोनम्मा को व्यक्तिगत सिटिंग दी।

दोपहर बाद 3.30 बजे अहमदाबाद के श्री राजगोपालन, श्रीमती वेदा तथा पुत्री श्रीमती से जयनगर के खण्ड–6 में स्थित उनके पुत्र के निवास पर उनसे मुलाकात की। तत्पश्चात् शाम 5.30 बजे मैं एस. के. सुन्दरम के निवास पर पहुँचा।

शाम 7.00 बजे मेरे द्वारा बैंगलोर आश्रम में सामूहिक सत्संग कराया गया जिसमें लगभग तीस अभ्यासी उपस्थित थे। प्राणाहुति अत्यन्त सूक्ष्म थी। वातावरण में स्थिरता तथा शान्ति व्याप्त थी ।

रायचुर के राघवेन्द्र राव भी वहीं मौजूद थे। उन्होंने मेरे पुत्र कृष्णा से कुछ देर औपचारिक बातचीत की और उसे व्यक्तिगत सिटिंग दी। सिटिंग के पश्चात् उसने मुझसे कहा, "मैं कृष्णा से उसके बारे में

जानकारी ले रहा था तथा उससे घनिष्ठता बढ़ा रहा था।'' मैंने कृष्णा के हृदय क्षेत्र के प्रत्येक बिन्दु से प्रकाश प्रस्फुरित होते देखा। क्या मालिक ने उन्हें कार्य करने की अनुमति दे दी है?'' मैंने उन्हें जानकारी दी कि कृष्णा, प्रशिक्षक नहीं है तथा वैसे भी वह अभी उम्र में बहुत छोटा है। राघवेन्द्र राव ने कहा, ''श्रीमान् ! उसकी स्थिति बहुत अच्छी है तथा उसके हृदय क्षेत्र के सभी बिन्दु चमक रहे हैं अतः मेरा अनुमान था कि शायद मालिक ने अनुमति देकर उसे कृतार्थ कर दिया है।''

रात्रि 9.00 बजे हम इन्दिरा नगर घर पर वापस लौट आये।

3 जून 1979 – रविवार

बैंगलोर आश्रम के निर्माण कार्य का निरीक्षण किया। इसमें मेरी पिछली यात्रा के बाद से कोई विशेष प्रगति नहीं हुई थी। हमारे तकनीकी ठेकेदार की ओर से कुछ अड़चन के कारण प्रगति में अवरोध उत्पन्न हो रहा है।

सुबह 8.15 बजे – आश्रम में सामूहिक सत्संग कराया जिसमें लगभग पचास अभ्यासी उपस्थित थे। सिटिंग पैंतालिस मिनट चली तथा बहुत अच्छी रही। सिटिंग के दौरान प्रारम्भ से लेकर अंत तक प्राणाहुति ब्रह्माण्ड मण्डल से प्राप्त होती रही। सत्संग में राघवेन्द्र राव भी मौजूद थे।

एस. के. सुन्दरम ने कहा, ''बहुत सुन्दर। मैंने नीला रंग देखा। अत्यंत गहरी तथा शान्ति थी। यह अत्यंत विशिष्ट सिटिंग थी। मेरा ऐसा अनुमान है शायद आपने कुछ विशेष किया क्योंकि राघवेन्द्र राव मौजूद हैं।''

श्रीमती सरोजा सुन्दरम ने कहा, ''आप जब भी प्राणाहुति देते हैं, मैं मालिक की मौजूदगी का आभास करती हूँ। लेकिन आज मैंने उन्हें आपके स्थान पर बैठे हुये पाया, मेरे कहने का तात्पर्य है कि मैंने अपनी खुली आँखों से मालिक को देखा। वे गद्दी पर बैठे हुये थे तथा आप वहाँ से नदारद थे। यह सारा नजारा मैंने अपनी खुली आँखो से देखा ! ऐसा अनुभव मुझे पहली बार हुआ है।''

अनेक अन्य अभ्यासियों को भी गहरायी, नीला रंग इत्यादि का

अनुभव हुआ।

शाम को सुन्दरम के परिवार के सदस्य इंदिरा नगर पहुँचे ।

शाम 7.00 बजे – एस.के.सुन्दरम, श्रीमती सरोजा सुन्दरम, कोदण्ड, इंदिरा, जेना, पोनम्मा, कृष्णा तथा सुदर्शन को सामूहिक सिटिंग दी।

4 जून 1979 – सोमवार

सुबह 6.30 बजे – श्री आर. श्रीनिवासन को व्यक्तिगत सिटिंग दी।

मैं तथा कृष्णा सुबह 7.15 बजे कार से मद्रास की ओर रवाना हुये तथा दोपहर 1.30 बजे अपने घर गायत्री पहुँच गये।

12 जून 1979 – मंगलवार (मदुरई)

सुबह 7.40 बजे कार द्वारा मद्रास से रवाना हुआ तथा दोपहर 1.00 बजे त्रिची पहुँचा। ऐश्बी होटल में दोपहर का भोजन किया तथा वहाँ से दोपहर 2.00 बजे रवाना होकर शाम 4.30 बजे मदुरई पहुँचा। सारा दिन कार्यालय के कार्य में व्यस्त रहा।

13 जून 1979 – बुधवार

सारा दिन विरुदनगर में कंपनी के कार्य में व्यस्त रहा।

शाम 7.00 बजे – मदुरई केन्द्र में थस्मास्वामी के निवास पर सामूहिक सत्संग कराया। अभ्यासियों की उपस्थिति बहुत कम रही लगभग पच्चीस अभ्यासी सत्संग में उपस्थित थे।

14 जून 1979 – गुरुवार

सारा दिन विरुदनगर में व्यतीत हुआ ।

शाम 5.00 बजे डब्ल्यू. एच. श्रीनिवासन ने मुझे व्यक्तिगत सिटिंग दी। मेरा मन अत्यंत उचाट तथा व्याकुल था, सिटिंग से मुझे राहत मिली तथा मैंने शांति महसूस किया ।

शाम 7.00 बजे – वालमजी मेंशन में सामूहिक सत्संग कराया। सिटिंग बहुत अच्छी रही तथा पैंतालिस मिनट तक चली। लगभग पैंतीस अभ्यासी उपस्थित थे।

एस. सदाशिवम वृधाचलम से रात्रि 9.30 बजे यहाँ पहुँचे।

15 जून 1979 – शुक्रवार

सुबह 7.00 बजे – सदाशिवम को व्यक्तिगत सिटिंग दी। सारा दिन विरुदनगर में व्यतीत हुआ ।

शाम 5.00 बजे – सदाशिवम तथा प्रशिक्षक डब्ल्यू. एच. श्रीनिवासन को व्यक्तिगत सिटिंग दी।

शाम 7.00 बजे – तालाकुलम में पलानीचामी के निवास पर सामूहिक सत्संग कराया। सिटिंग पैंतालिस मिनट चली जिसमें अच्छी उपस्थिति रही।

16 जून 1979 – शनिवार

सुबह 7.00 बजे – वालमजी में एस. सदाशिवम को व्यक्तिगत सिटिंग दी। सुबह 8.40 बजे कार से एस. सदाशिवम के साथ मदुरई से रवाना हुआ तथा सुबह 11.50 बजे तंजावुर में आई. टी. डी. सी. के होटल पहुँचा। दोपहर का भोजन करने के पश्चात् हम दोपहर 1.00 बजे बी. एम. सुन्दरम के निवास की ओर रवाना हो गये ।

दोपहर 3.00 बजे – तंजावुर केन्द्र में सामूहिक सत्संग कराया। बारह अभ्यासी उपस्थित थे। सिटिंग बहुत अच्छी रही। इस केन्द्र की प्रगति निश्चित तौर पर उत्साहवर्धक है ।

हम शाम 5.00 बजे तंजावुर से रवाना होकर शाम 6.10 बजे त्रिची के अशोक भवन पहुँच गये। श्री के. आर. सुब्रामनियम, (बी.ई.), जो तिरूनेलवेली में फैक्ट्री में सुपरिन्टेन्डेन्ट इंजीनियर हैं तथा मिशन के प्रशिक्षक भी हैं, उनका यहाँ स्थानांतरण हो गया है तथा वे आजकल त्रिची में ही हैं।

शाम 7.00 बजे – अशोक भवन में सामूहिक सत्संग कराया जिसमें पच्चीस अभ्यासी उपस्थित थे, सिटिंग अच्छी रही।

17 जून 1979 – रविवार

सुबह 7.00 बजे एस. सदाशिवम के साथ त्रिची से प्रस्थान किया। रास्ते में हमारे प्रशिक्षक भाई श्री के. आर. सुब्रामनियम को उनके निवास से साथ लिया तथा सुबह 8.40 बजे त्रिची से 71 कि.मी. दूर स्थित एक

कस्बे एरियालूर पहुँचे। श्री एम. पाकियम, विशेष डिप्टी कलेक्टर (भूमि अधिग्रहण) जो कुछ वर्ष पूर्व मदुरई में अभ्यासी बने थे, का यहाँ स्थानांतरण हो गया है तथा यहाँ पर उन्होंने अभ्यासियों का एक छोटा ग्रुप भी बना लिया है जिसके कारण एरियालूर में भी अब राम चन्द्र मिशन का केन्द्र स्थापित हो गया है।

सुबह 9.30 बजे – एरियालूर केन्द्र में सामूहिक सत्संग कराया। सत्संग में पच्चीस से अधिक संख्या में अभ्यासी उपस्थित थे जिसमें कुछ अभ्यासी त्रिची के भी थे। सिटिंग बहुत अच्छी रही।

सुबह 11.00 बजे एरियालूर से सदाशिवम के साथ रवाना होकर दोपहर 1.00 बजे वृधाचलम में सदाशिवम के निवास पर पहुँचे। के. आर. सुब्रामनियम एरियालूर से त्रिची की ओर रवाना हो गये थे। दोपहर का भोजन सदाशिवम के निवास पर किया।

दोपहर 2.00 बजे – श्रीमती शान्ता सदाशिवम को व्यक्तिगत सिटिंग दी।

एस. के. मोहन भी त्रिची में ही थे। हम दोनों दोपहर 3.00 बजे मद्रास की ओर रवाना होकर शाम 6.50 बजे अपने घर पर पहुँच गये। झुलसा देने वाली गर्मी तथा धूल भरी सड़कों के कारण हमारी यात्रा अत्यन्त कष्टदायी तथा थकान भरी रही ।

21 जून 1979 – गुरुवार (बैंगलोर)

सीना, कोमला, अप्पा, श्रीवत्सा तथा श्रीराम, आई. टी. पी. टी. के वाहन से सुबह 7.45 बजे वाहन चालक पेरयास्वामी के साथ तथा मैं और सुलोचना पंडी के साथ सुबह 8.45 बजे मद्रास से रवाना हुये। दोनों ग्रुप का रानीपत में "मोटल एमरेल्ड" में सम्पर्क हुआ। तत्पश्चात् वहाँ से एक साथ रवाना होकर हम दोपहर 2.45 बजे बैंगलोर में कोदण्ड के निवास इंदिरा नगर पहुँच गये।

23 जून 1979 – शनिवार

मलेशिया के के. वी. रेड्डी का दोपहर में दिल्ली से विमान से आगमन हुआ। मैंने और ए. एच. कृष्णा ने हवाई अड्डे पर उसकी अगवानी

की तथा उसे अपने साथ इंदिरा नगर घर पर ले आये। वह हमारे साथ इन्दिरा नगर में ही ठहरेगा ।

24 जून 1979 – रविवार

सुबह 8.15 बजे – बैंगलोर आश्रम में अप्पा ने सामूहिक सत्संग कराया। के. वी. रेड्डी ने राघवेन्द्र राव से व्यक्तिगत सिटिंग प्राप्त की। तत्पश्चात् हम साथ में अपने घर इन्दिरा नगर वापस लौट आये।

हम सभी शाम 6.00 बजे के पश्चात् ठहरने के लिये बेलागोडू कला मंडप चले गये, के. वी. रेड्डी रात्रि 10.30 बजे की बस से मद्रास की ओर रवाना हो गये। जहाँ से वह कल विमान द्वारा कोलम्बो के लिये रवाना होंगे तथा वहाँ से वह कुआलालम्पुर जायेंगे।

27 जून 1979 – बुधवार

कोदण्ड की पुत्री सौ. जानकी का विवाह देवकी तथा आर. शेषाद्रि के पुत्र चि. सुरेश के साथ बेलागोडू कला मंडप में सम्पन्न हुआ जिसमें बड़ी संख्या में अतिथिगण आमंत्रित थे। विवाह समारोह में श्री टी. टी. नरसिंहमन, श्रीमती पद्मा नरसिंहमन, टी.टी. वासु, टी. टी. जगन्नाथन के अलावा पचास से अधिक मिशन के अभ्यासियों के साथ साथ प्रशिक्षक राघवेन्द्र राव, एम. डी. जहाँगीरदार, बी. के. राजगोपाल इत्यादि भी उपस्थित थे। मेरी प्रार्थना है कि मालिक जानकी तथा उसके द्वारा चुने गये वर को आशीर्वाद प्रदान करें। शाम को स्वागत समारोह कार्यक्रम का अत्यन्त भव्य आयोजन किया गया था जिसमें एन. रामानी के बांसुरी वादन का कार्यक्रम आयोजित किया गया था। मृदंगम पर वेलोर रामवर्धन तथा सुरेश बी. एससी., वायलिन पर उनका साथ दे रहे थे।

28 जून 1979 – गुरुवार

राजू तथा सीना ने मुझे बताया कि कल शाम को जब वे कुछ समय के लिये मेरे उच्चाधिकारी श्री टी. टी. नरसिंहमन के साथ थे तब श्री नरसिंहमन ने उनसे मेरे संदर्भ में चर्चा की तथा उनसे कहा, "जबसे पाचू ने ध्यान करना प्रारम्भ किया है, उसकी कार्य के प्रति कोई रुचि नहीं रही है तथा अब वह मेरे लिये अनुपयोगी हो गया है। अतएव शीघ्र ही मुझे उसे

सेवा से निवृत्त करना पड़ सकता है।''

बेलागोडू कला मंडप को खाली कर हम आज पुनः अपने घर इंदिरा नगर वापस लौट आये।

सीना तथा बी. चक्रपाणी के परिवार के सभी सदस्य नाइट मेल से मद्रास की ओर रवाना हो गये।

29 जून 1979 – शुक्रवार

सुबह 7.00 बजे हम कार में बैठ चुके थे तथा मद्रास की ओर रवाना होने ही वाले थे कि अचानक कोदण्ड भावुक हो गये तथा रोते हुए बोले कि सब लोग उसे यहाँ अकेला छोड़कर जा रहे हैं। इसलिये कार्यक्रम में फेरबदल करना पड़ा। अब हम रविवार को यहाँ से रवाना होंगे।

शाम 2.30 से 6.00 बजे – एस. के. सुन्दरम के निवास पर डॉ. राव, श्रीमती श्यामराव, गुण्डेराव तथा इन्दौर की सुधा गुप्ता, सभी को सिटिंग दी। तत्पश्चात् एम.मुरूगेसन को व्यक्तिगत सिटिंग दी।

1 जुलाई 1979 – रविवार

सौ.गीता (पैयान की पुत्री) के विवाह समारोह में उपस्थित होने के पश्चात् हम सुबह 11.30 बजे बैंगलोर से रवाना होकर शाम 4.30 बजे मद्रास पहुँच गये। सुलोचना, कृष्णा तथा पन्डी जो मदुरई के आई. टी. पी. टी. विश्राम गृह में रसोइया है, भी हमारे साथ थे।

5 जुलाई 1979– गुरुवार

टी. के. नरसिंहमन, जिन्हें बैंगलोर में जेना के विवाह समारोह में आमंत्रित किया गया था तथा जिन्होंने स्वागत समारोह में अपना अधिकांश समय टी. टी. नरसिंहमन के साथ ही व्यतीत किया था, ने मुझे बताया कि उसी दौरान टी. टी. एन. ने उन्हें बताया था, ''पाचू ने मेरे यू. के. के अध्यक्षों के समक्ष मेरी बेइज्जती की है तथा अब वह मेरे लिये बेकार हो गया है। एक दो वर्ष में मुझे उसे सेवामुक्त करना पड़ेगा।'' यह सुनकर मुझे अत्यंत ठेस पहुँची तथा मैं परेशान हो गया।

अप्पा वृन्दावन एक्सप्रेस से शाम 7.10 बजे मद्रास पहुँचे ।

6 जुलाई 1979 – शुक्रवार

सुबह के 6.30 बजे स्वप्न से मेरी नींद खुली :–

मैं एक अत्यन्त विशाल औद्योगिक क्षेत्र से बाहर निकल कर आ रहा हूँ। इस क्षेत्र में कुछ कारखाने स्थापित हो चुके हैं तथा अभी भी बहुत सारी जमीन खाली पड़ी हुई है। वस्तुतः यह क्षेत्र गुजरात के अंकलेश्वर में स्थित औद्योगिक विकास निगम के औद्योगिक क्षेत्र के सदृश्य प्रतीत हो रहा है। तभी मैं देखता हूँ कि सैकड़ों की संख्या में सभी उम्र के छात्र एक पहाड़ी क्षेत्र से मेरे बाँयी ओर चले आ रहे हैं। वे सब राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ के सदस्य हैं, यह जानकारी मुझे उनमें से एक छात्र के माध्यम से प्राप्त होती है। यह सूर्यास्त का समय है तथा मुझे आसपास कोई पक्की सड़क दिखाई नहीं दे रही है, लेकिन मैं उनमें से एक युवा छात्र का अनुसरण करते हुये सड़क पर पहुँच जाता हूँ जो मेरे बाँयी ओर से सीधी ढलान में नीचे की ओर जा रही है। मैं लड़के को मौसम्मी का फल देता हूँ, तत्पश्चात् मैं उस छात्र की तलाश में अंधेरे में सड़क से नीचे उतरता हूँ क्योंकि उसने उस मौसम्मी की एक ही फाँक ली थी जो मैंने उसे दी थी तथा बाकी मौसम्मी मेरे हाथ में ही रह गयी थी। मैं दो जोड़ी लकड़ी की ढलवाँ सीढ़ियों से नीचे उतरता हूँ तथा एक आवास में पहुँचता हूँ एवं देखता हूँ कि वहाँ पर कोई मौजूद है, शायद वे मदुरा कोट्स लिमिटेड के मि. के. रमन हैं, यद्यपि मुझे स्पष्ट दिखाई नहीं दे रहा है।

अगले दृष्य में मैं देखता हूँ कि मैं पुनः उसी स्थान पर हूँ तथा अबकी बार कस्तूरी भी वहीं पर हैं। मैं उनसे सिटिंग लेने के बारे में विचार कर रहा हूँ कि तभी मेरी दृष्टि प्रिय मालिक पर पड़ती है। उनके दोनों पैरो पर पट्टियाँ बँधी हुयी हैं जिन्हें हटाया जा रहा था। तत्पश्चात् वे पुनः उन्हीं पट्टियों को बाँधने के लिये कहते हैं, वे मुझसे कहते हैं कि, "रामास्वामी को इसकी जानकारी है कि वे कहाँ हैं।" वे दिल्ली के टी. टी. के. कंपनी के कर्मचारी के सन्दर्भ में बात कर रहे थे। रामास्वामी पट्टियों को ढूँढ़ने का प्रयास करता है लेकिन वह उसे नहीं मिलतीं। मालिक कहते हैं कि वे विशेष प्रकार की पट्टियाँ हैं जिन पर आर्सेनिक अथवा फास्फोरस का लेप

लगा हुआ है। मैं स्वामीनाथन से कहता हूँ कि वह कोई पुरानी धोती फाड़कर उसकी पट्टी बना कर ले आयें ।

अगले दृष्य में मालिक एक बड़े से हॉल के मध्य में बैठे हुये हैं, उनके दाँयी तरफ लगभग 30 अभ्यासी बहनें बैठी हैं तथा उनके बाँयी तरफ कुछ अभ्यासी भाई उनके सम्मुख बैठे हुये हैं। मैं अंतिम छोर पर एकदम मध्य में ठीक मालिक की सीध में उनके सम्मुख बैठा हुआ हूँ। स्वप्न समाप्त हो जाता है।

7 जुलाई 1979 – शनिवार

''माई मास्टर'' के तीसरे संस्करण की 100 प्रतियाँ आज जी.एस. प्रेस से प्राप्त हुयीं।

13 जुलाई 1979 – शुक्रवार

मैं दोपहर 3.35 बजे एस. के. मोहन के साथ बॉम्बे जनता एक्सप्रेस से रायचुर के लिये रवाना हुआ। भीषण गर्मी थी। शौचालयों में पानी भी उपलब्ध नहीं था, सेन्ट्रल स्टेशन पर भी पानी की कोई व्यवस्था नहीं थी। अरकोनम में पानी की व्यवस्था तो थी किन्तु उसे भरने के लिये पाइप की व्यवस्था नहीं थी। अंत में रेनूगुंटा स्टेशन पर ही किसी तरह पानी के भरने की व्यवस्था हो पायी।

14 जुलाई 1979 – शनिवार

शाम 5.00 बजे हम रायचूर पहुँच गये। गुलबर्गा के भाई बी. एम. हेबल ने स्टेशन पर हमारी अगवानी की तथा हमें जीप से मिशन के आश्रम तक पहुँचाया। येरागुन्टला तथा प्रोदातुर केन्द्रों के लगभग तीस अभ्यासियों का एक दल प्रशिक्षक श्री एम. वैंकटसुबैया के नेतृत्व में उसी ट्रेन से यहाँ पहुँचा। आश्रम पहुँचने पर हमें ज्ञात हुआ कि लगभग तीन सौ पचास अभ्यासी पहले से वहाँ पहुँच चुके थे। हमें पूज्य मालिक हेतु आरक्षित कक्ष में ठहराया गया।

स्नानादि के पश्चात् शाम 7.00 बजे मैंने भाई राघवेन्द्र राव से उनके निवास पर जो आश्रम से तीन मिनट पैदल की दूरी पर स्थित था, मुलाकात की। भाई श्री डी. आर. विठ्ठलराव से भी मेरी मुलाकात वहीं

हुयी।

मैंने सुबह 8.30 बजे – प्रारम्भिक सत्संग कराया, सिटिंग पैंतालिस मिनट चली तथा बहुत अच्छी रही। तत्पश्चात् मैंने प्रसाद अर्पण किया। तदुपरांत भाई एस.ए.सरनाड तथा श्री कांतेय ने कन्नड़ भाषा में अपने सम्बोधन दिये। तदुपरांत एस. बैंकटसुबैया ने तेलगू में सम्बोधन दिया।

शाम 5.00 बजे एक सार्वजनिक बैठक का आयोजन किया गया था जिसमें मैंने भी अपना सम्बोधन दिया। शाम का सत्संग भाई राघवेन्द्र राव ने कराया। इस कार्यक्रम से पूर्व आज दोपहर 3.00 बजे प्रशिक्षकों की भी एक बैठक आयोजित की गयी थी जिसमें मेरे अलावा एस. ए. सरनाड, आर. एन.महेन्द्रकर, आर. रामचन्द्र रेड्डी, के. रामचन्द्र रेड्डी, एच. जोगाराव, एस. के. सुन्दरम, डी. आर. विठ्ठलराव, एम. डी. जहाँगीरदार, गोपाल राव मजूमदार, डी. बी. अन्नीगेरी, एम. नारायणराव, अयाल रेड्डी, राम शास्त्री, के. वी. अभय कुमार, श्रीमती राघवेन्द्र राव, श्रीमती जहाँगीरदार, श्रीमती शान्ताबाई दत्ताराज, श्रीमती रामचन्द्र रेड्डी उपस्थित थे। राघवेन्द्र राव ने बैठक की अध्यक्षता की। येरागुन्टला के एम. वैंकटसुबैया द्वारा उनके "शिबीराम" में छात्रों के प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजन के प्रस्ताव पर चर्चा की गयी तथा उस पर सहमति भी दे दी गयी। आगे की कार्यवाही निर्धारित कार्यक्रमानुसार ही रही।

15 जुलाई 1979 – रविवार (रायचुर)

सुबह 8.00 बजे – राघवेन्द्र राव ने सुबह का सत्संग कराया। इसी के साथ पूज्य बाबूजी महाराज के जन्मोत्सव समारोह कार्यक्रम का समापन हुआ। मोहन तथा मैं अन्तिम थे जिन्होंने शाम 5.30 बजे रायचुर से बॉम्बे मद्रास मेल से प्रस्थान किया जो तीन घंटे विलम्ब से चल रही थी। हमें अन्नीगेरी ने विदाई दी।

17 जुलाई 1979 – मंगलवार

भाई राघवेन्द्र राव का दोपहर 2.10 बजे बैंगलोर से एक्सप्रेस ट्रेन से मद्रास आगमन हुआ। कृष्णा ने स्टेशन पर उनकी अगवानी की तथा उन्हें अपने साथ घर पर "गायत्री" ले आया। शाम 5.00 बजे का सत्संग

राघवेन्द्र राव ने कराया तथा ग्रांड ट्रंक एक्सप्रेस से दिल्ली की ओर जाने के लिये वह शाम 6.00 बजे स्टेशन की ओर रवाना हो गये। दिल्ली से उन्हें शाहजहाँपुर जाना है। उनकी इस यात्रा के लिये मालिक द्वारा उन्हें विशेष तार संदेश के माध्यम से बुलावा भेजा गया था। यह तार संदेश जब उन्हें प्राप्त हुआ था तब मैं रायचूर में ही था, जिसमें मालिक ने उन्हें अतिशीघ्र दस दिवस के लिये शाहजहाँपुर आने के लिये निर्देशित किया था, यह कहते हुये कि अपनी इस यात्रा को गोपनीय रखें।

18 जुलाई 1979– बुधवार

मैंने रात्रि 9.00 बजे नीलगिरी एक्सप्रेस से कोयम्बटूर के लिये प्रस्थान किया। इस यात्रा के दौरान अराकोनम तथा सलेम के मध्य अत्यन्त तेज बारिश हो रही थी। ट्रेन में मैं निरन्तर कृष्णा की सफलता के लिये प्रार्थना करता रहा। कल उसे अमेरिकन दूतावास में वीसा लेने के लिये जाना है।

19 जुलाई 1979 – गुरुवार (कोयम्बटूर)

सुबह 7.00 बजे कोयम्बटूर पहुँच गया तथा अपने चिर परिचित होटल अलंकार में ठहर गया ।

सुबह 8.00 बजे – डॉ. एस. एस. रामकृष्णन के निवास पर सामूहिक सत्संग कराया।

शाम 6.30 बजे – डॉ. एस. एस. रामकृष्णन के निवास पर सामूहिक सत्संग कराया।

कृष्णा ने शाम 4.30 बजे मद्रास से टेलिफोन पर बताया कि उसे आज सुबह अमेरिका का वीसा प्राप्त हो गया है, यह सब मालिक की कृपा से सम्भव हुआ है। अमेरिकी दूतावास में एक अधिकारी है जिसने अमेरिका का वीसा लेने वालों के नाक में इस हद तक दम कर रखा है कि उनमें से कइयों को तो उसके कारण ही देश में अन्य शहरों में स्थित अमेरिकी दूतावासों में वीसा लेने के लिये सम्पर्क करना पड़ा। मैं काफी चिन्तित था। खैर यह सब मालिक की कृपा है कि अंतिम व्यवधान भी अब दूर हो गया है। अब उसकी औद्योगिक अभियांत्रिकी (इन्डस्ट्रियल इंजीनियरिंग) की

एम एस डिग्री की पढ़ाई के लिये मेडिसन, विश्कोसिन जाने की तैयारी पूर्ण हो चुकी है। मुझे इस बात का अफसोस था कि कृष्णा को सारी व्यवस्था स्वयं ही करनी पड़ रही थी। लेकिन ऐसा मैंने जानबूझकर किया था क्योंकि मैं चाहता था कि मेरा इकलौता पुत्र होने के नाते उसे सब कुछ अपने आप से करना आना चाहिये। अभी तक की सारी व्यवस्था उसने ठीक तरह से की है। मैं जानता हूँ कि कई बार उसकी सहायता न करने के कारण वह मुझसे चिढ़ भी जाता है तथा मुझे इसका आभास भी हो जाता है। लेकिन फिर भी मैंने उसकी सहायता न करने का निश्चय कर रखा है, इसके पीछे मेरी मंशा यह थी कि वह वास्तव में आत्म निर्भर हो सके तथा एक योग्य नवयुवक बन सके।

20 जुलाई 1979 – शुक्रवार (भवानी सागर)

मैंने, सुबह 7.00 बजे कोयम्बटूर से कार से वी.शेषन के साथ कंपनी के कार्य हेतु इरोड की ओर प्रस्थान किया तथा हम शाम 5.30 बजे भवानीसागर पहुँच गये।

शाम 8.00 बजे – तमिलनाडु कार्ड बोर्ड के औद्योगिक जन सम्पर्क अधिकारी (इन्डस्ट्रियल ऑफीसर) श्री आर. शंकरनारायणन को प्रथम सिटिंग दी।

शाम 8.30 बजे – वी. शेषन, आर. रमणन तथा बी. रामचंद्रन को सामूहिक सिटिंग दी।

21 जुलाई 1979 – शनिवार

सुबह 7.30 बजे – भवानीसागर में सामूहिक सत्संग कराया।

दोपहर भोजन के पश्चात् कोयम्बटूर की ओर रवाना हुआ तथा शाम 4.30 बजे कोयम्बटूर में अलंकार होटल पहुँचा।

शाम 5.30 बजे – सामूहिक सिटिंग दी जिसमें तिरुपुर के छः अभ्यासी भी उपस्थित थे।

शाम 7.35 बजे नीलगिरी एक्सप्रेस से मद्रास की ओर रवाना हुआ। ट्रेन में मैं रात भर परेशान रहा तथा मुझे दो बार उल्टी भी हुयी। सम्भवत भोजन में कुछ गड़बड़ी (फूड पॉयजनिंग) के कारण यह सब परेशानी हो

रही थी।

24 जुलाई 1979 – मंगलवार

आज मेरा तिरपनवाँ जन्म दिवस है। विगत वर्षों में मैंने ऐसा कोई कार्य नहीं किया जिस पर गर्व कर सकूँ। भविष्य में भी मुझे क्या करना है, इसके बारे में केवल मालिक ही जानते हैं, सब कुछ उन्हीं पर निर्भर है।

अप्पा ने कृष्णा को यह कह कर दुःखी कर दिया था कि जब वह अमेरिका से अध्ययन करके लौटेगा तब तक सम्भवतः वे जीवित न रहें। अप्पा का स्वभाव आजकल अत्यन्त चिड़चिड़ा हो गया है, यदाकदा मैं उनकी सफाई करने का प्रयास करता रहता हूँ जिसके लिये मालिक ने मुझे निर्देशित किया है, लेकिन मुझे इसका ध्यान नहीं रहता। शायद अभी तक मैंने मात्र छः या सात मर्तबा उनकी सफाई की होगी। मेरी इतनी कमजोर याददाश्त तथा मालिक के आदेशों के प्रति मेरा सचेत न रहना अवांछनीय है ।

25 जुलाई 1979 – बुधवार

मेरी अस्वस्थता के कारण मैं कोयम्बटूर से लौटने के पश्चात् से अपने कार्यालय नहीं जा पाया हूँ तथा आज भी मैंने छुट्टी मारी जबकि मेरी हालत में काफी सुधार था। आजकल कार्यालय के प्रति मेरी अरुचि बढ़ती जा रही है। मात्र कुछ समय, लगभग पन्द्रह दिनों के लिये मैं कार्यालय के प्रति अति उत्साहित था, लेकिन अब कार्यालय जाने के लिये वास्तu में मुझे अपने आप को तैयार करना पड़ता है। कभी कभी तो मेरी पत्नी सुलोचना मुझे प्यार से यह कह कर घर के बाहर धकेल देती है कि "उद्योगं पुरुषलक्षणाम्" (कर्म करना ही पुरुष का लक्षण है)। मालिक से मेरी केवल यही प्रार्थना है कि मुझे कभी भी ऐसा कुछ करने के लिये मजबूर न होना पड़े जिसके प्रति मेरी इच्छा न हो, यही मुझे एकमात्र हल समझ में आता है ।

28 जुलाई 1979 – शनिवार

जैना तथा सुरेश दोपहर भोजन के लिये समय से पूर्व ही हमारे घर पहुँच गये। विवाह के पश्चात् शायद वे पहली मर्तबा हमारे घर पर

आये हैं। दोपहर भोजन के पश्चात् अप्पा ने कोदण्ड, इंदिरा तथा सुदर्शन के साथ सुबह 11.00 बजे कार से बैंगलोर के लिये प्रस्थान किया।

मैंने दोपहर 1.35 बजे मद्रास से कार से श्री हरिकोटा की ओर प्रस्थान किया जहाँ पर मिशन का एक उप केन्द्र स्थापित हो गया है। एम. रविकुमार तथा एस. के. मोहन भी मेरे साथ थे। हम शाम 4.00 बजे श्री हरिकोटा पहुँच गये। हमारी कार की गति अत्यन्त धीमी थी, 105 किलोमीटर की यात्रा में हमें 2 घंटे पच्चीस मिनट का समय लगा।

शाम 5.00 बजे – सामूहिक सत्संग कराया। नैल्लोर के प्रशिक्षक रामचन्द्र रेड्डी तथा तिरुपति के प्रशिक्षक एरला पुल्लिया, दोनों सत्संग में उपस्थित हुये। हम सभी को मिलाकर सत्संग में कुल तेरह व्यक्ति उपस्थित थे। पचास मिनट की सिटिंग के पश्चात् मैंने रात्रि 8.00 बजे तक अपना सम्बोधन दिया। तत्पश्चात् हम सभी रात्रि के भोजन के लिये वी. आई. पी. स्वल्पाहार गृह पहुँचे। भोजन के पश्चात् हमने थोड़ी देर चहल कदमी की, तदुंपरान्त हम घर वापस लौट आये।

29 जुलाई 1979– रविवार

सुबह 6.30 बजे – एक घंटे तक सामूहिक सत्संग कराया। सिटिंग बहुत अच्छी रही। नाश्ते के पश्चात् हमने सुबह 8.30 बजे प्रस्थान किया तथा सुबह 11.00 बजे मद्रास पहुँच गये।

6 अगस्त 1979 – सोमवार

सुबह 7.00 बजे – त्रिची के प्रशिक्षक श्री के. आर. सुब्रामनियम कल यहाँ पहुँचे। मैंने उन्हें व्यक्तिगत सिटिंग दी तथा उनके हृदय क्षेत्र एवं ब्रह्माण्ड मंडल की अच्छी तरह सफाई की।

शाम 4.45 बजे – के. आर. सुब्रामनियम को व्यक्तिगत सिटिंग दी, सिटिंग के दौरान शाम लगभग 5.00 बजे मुझे आभास हुआ कि उन्होंने ब्रह्माण्ड मंडल में प्रवेश कर लिया है। मालिक से मुझे इसकी प्रमाणिकता का पता करना पड़ेगा। के. आर. सुब्रामनियम ने रात्रि 10.10 बजे रॉक फोर्ट एक्सप्रेस से त्रिची की ओर प्रस्थान किया।

9 अगस्त 1979 – गुरुवार

सुलोचना, कृष्णा तथा मुझे आज सुबह तमिलनाडु एक्सप्रेस से दिल्ली की ओर प्रस्थान करना था, लेकिन नागपुर के समीप आयी बाढ़ के कारण ट्रेन निरस्त कर दी गयी थी। अतः मैंने विमान यात्रा के लिये टिकटों की व्यवस्था की तथा हम तीनों शाम 6.10 बजे विमान से दिल्ली की ओर रवाना हो गये। हवाई अड्डे पर हमें टी. टी. श्रीधरन तथा एस. के. मोहन ने विदाई दी। नागपुर में उतरने से पूर्व विमान में काफी उथल पुथल होती रही जिसके कारण सुलोचना अत्यंत विचलित तथा चितिंत थी। ऐसा प्रतीत हो रहा था कि तेज हवा के झोंके के कारण एक पत्ता इधर से उधर डगमगा रहा हो। विमान निर्धारित समयानुसार नागपुर में उतरा लेकिन लगभग एक घंटा विलम्ब से रात्रि 11.00 बजे दिल्ली पहुँचा। अभ्यासी भाई सी. रामकृष्णा ने हवाई अड्डे पर हमारी अगवानी की तथा हमें लाजपत नगर बसन्त विहार में स्थित अपने निवास ले गये।

यकायक ही आज दोपहर 3.00 बजे के पश्चात् से मैं कृष्णा के अमेरिका प्रस्थान के कारण भावना का तीव्र आवेग महसूस कर रहा था। मैं मन ही मन सोच रहा था कि उससे बिछोह को मैं कैसे सहन कर सकूँगा। अत्यंत कठिनाई पूर्वक मैं अपने आँसू रोक पा रहा था।

10 अगस्त 1979– शुक्रवार (दिल्ली)

दोपहर 2.00 बजे तक कृष्णा के लिये आवश्यक सामान इत्यादि की खरीदारी की। हमने वोल्गा रेस्टारेन्ट में दोपहर का भोजन किया तथा दोपहर 3.00 बजे हम लाजपत नगर वापस लौट आये।

शाम 7.00 बजे – मैंने सी. रामकृष्णा के निवास पर सामूहिक सत्संग कराया जिसमें लगभग तीस अभ्यासी उपस्थित थे। सिटिंग बहुत अच्छी रही।

कृष्णा, सुलोचना तथा मैंने रात्रि 10.10 बजे लखनऊ मेल से शाहजहाँपुर की ओर प्रस्थान किया। हमारा आरक्षण द्वितीय श्रेणी वातानुकुलित शयनयान में था। हमें सी.रामकृष्णा ने विदाई दी।

मद्रास केन्द्र के एक अभ्यासी श्री वी. सम्बा शिवम् की लीबिया में नौकरी लग गयी थी, अतः उन्होंने अपनी मद्रास की नौकरी से त्याग पत्र

दे दिया था तथा वह 2 अगस्त 1979 को लीबिया जाने के लिये मद्रास से दिल्ली की ओर रवाना भी हो गये थे। आज शाम के सत्संग में उन्हें देखकर मुझे अत्यंत आश्चर्य हुआ, ज्ञात हुआ कि वह बेचारे अत्यंत परेशानी में थे तथा उन्हें अभी तक वीसा भी प्राप्त नहीं हुआ था क्योंकि जिस एजेन्ट के माध्यम से उन्हें लीबिया में नौकरी मिली थी, उसने उन्हें झांसा दे दिया था तथा वह एजेन्ट इस बात से इन्कार कर रहा था कि उसने उनके साथ किसी भी तरह का कोई छल कपट किया है। मैंने उन्हें सुझाव दिया था कि उन्हें मालिक से मिल लेना चाहिए। आज शाम को मैंने उन्हें दिल्ली स्टेशन के प्लेटफार्म पर देखा, वह भी इसी ट्रेन से यात्रा कर रहे थे।

11 अगस्त 1979 – शनिवार (शाहजहाँपुर)

हम सुबह 5.15 बजे शाहजहाँपुर पहुँच गये। श्री गुण्डे राव ने रेलवे स्टेशन पर हमारी अगवानी की। वह हमें मालिक की फिएट कार से आश्रम ले जाने के लिये आये थे। रास्ते में हम गुण्डे राव को मालिक के निवास के समीप छोड़कर आश्रम की ओर रवाना हो गये।

सुबह 7.45 बजे हम सभी मालिक के निवास पर पहुँचे तथा सुबह 11.30 बजे तक वहीं रहे। मालिक ने हमें तथा विजयवाड़ा के दो अभ्यासियों को जो वहीं पर मौजूद थे, सुबह 10.30 बजे एक सिटिंग दी। सिटिंग बहुत अच्छी थी तथा मैं लगभग समाधि की अवस्था में चला गया था तथा अपनी सुध–बुध खो बैठा एवं मेरी गर्दन मेरे बाँयी तरफ सामने की ओर लटक गयी थी।

तत्पश्चात् मालिक ने मेरा ध्यान आकर्षित करते हुये कहा, "प्रत्येक को ध्यान में बैठने से पूर्व अथवा एक–दूसरे को सिटिंग देते समय उसकी सफाई अवश्य करनी चाहिये। यदि सफाई कुछ मिनट के लिये ही की जाये तब भी यह काफी है। तुमने आज कैसा महसूस किया? तुम्हें आज पर्याप्त मिल गया है।"

हम सुबह लगभग 11.30 बजे आश्रम वापस लौट आये तथा दोपहर का भोजन करने के उपरान्त सारा दिन विश्राम किया। तत्पश्चात् एन. एस. राव से लम्बी चर्चा की।

12 अगस्त 1979– रविवार

सुबह 7.45 से 11.30 बजे तक हम पूज्य मालिक के निवास पर ही रहे। मेरे दांत में तेज दर्द हो रहा था। श्री राजाराम भरतिया, श्री बी. के. शर्मा, बिजनौर के जिला न्यायाधीश तथा कृष्णा मुझे दंत चिकित्सक के पास ले गये। मैं सारा दिन असहनीय दर्द के कारण बेचैन होता रहा।

13 अगस्त 1979 – सोमवार

मेरे चेहरे पर दाँयी तरफ सूजन आ गयी थी तथा मुझे अभी भी असहनीय दर्द हो रहा था। दंत चिकित्सक के सुझाव के अनुसार मैंने रात्रि में नींद की गोली (लाइपोस) ली थी, जिसे अपने जीवन में मैंने पहली बार लिया था जिसके कारण मुझे गहरी नींद आयी तथा मैं सुबह देरी से उठा। उठने के पश्चात् भी मैं उनींदा सा महसूस कर रहा था तथा मेरा अपने स्वयं पर पूर्ण नियंत्रण भी नहीं था, अतः हम सुबह मालिक के निवास पर नहीं गये।

मालिक सुबह 9.30 बजे आश्रम में पधारे। यह हमारे लिये अत्यधिक हर्ष का विषय था। वे शाम 4.00 बजे तक आश्रम में अपने निवास पर ही रहे। हम सब सारा समय उनके ही साथ थे।

दोपहर 12.30 बजे– मालिक ने मुझे अपने शयनकक्ष में बीस मिनट तक एक व्यक्तिगत सिटिंग दी। वे अत्यंत प्रसन्नचित्त एवं उत्साहित नजर आ रहे थे तथा उनकी आँखे चमक रहीं थीं। अधिकांशतः वे अपने घर के वातावरण से दूर रहना पसन्द करते हैं, घर पर बैठकर वे अधिक चिन्ता तथा तनाव महसूस करते हैं। मेरे विचार से यह उनके लिये अत्यंत लाभकारी रहेगा यदि वे प्रत्येक सुबह नियमित रूप से आश्रम आना प्रारम्भ कर दें तथा शाम 5.00 बजे तक आश्रम में ही रहें। उनमें यह परिवर्तन दिखना अत्यंत सुखद अनुभव था। पिछली बार जब मैं शाहजहाँपुर आया था, तब मैंने उन्हें नियमित रूप से आश्रम आने का सुझाव दिया था जिसके लिये उन्होंने हामी भी भरी थी, किन्तु किसी कारणवश यह सम्भव नहीं हो पाया ।

14 अगस्त 1979 – मंगलवार

हम सुबह 7.30 बजे मालिक के निवास पर पहुँचे, हमारे पहुँचने के

तुरन्त पश्चात् मालिक ने प्रेमपूर्वक हमें यह निर्देश दिया कि हम वापस जाकर अपना सामान इत्यादि ले आयें तथा उनके निवास पर उनके साथ ही रहें अर्थात् "खुशियों में एक और खुशी"। उनके इस आदेश का हमने बिना समय व्यर्थ किये पालन किया तथा अपने सामान इत्यादि के साथ उनके निवास पर 10.00 बजे तक वापस लौट आये।

मैंने मालिक से एकान्त में विस्तार से चर्चा की तथा उन्हें स्पष्ट रूप से अवगत कराया कि किस तरह कुछ व्यक्ति मेरे विरुद्ध साजिश कर रहे हैं। मैंने उन्हें यह भी बताया कि उनका उद्धेश्य मात्र मेरा चारित्रिक हनन करना है। मैंने उन्हें बताया कि ये व्यक्ति मेरे विरुद्ध एक फाइल तक तैयार कर रहे हैं ताकि जब भी मौका मिले वे मेरे विरुद्ध इसका उपयोग कर सकें। उन्होंने मुझसे उन व्यक्तियों के नाम जानने चाहे। मैंने उन्हें बताया कि इसमें श्री रामचन्द्र सक्सेना (रामजी भाई), श्री प्रकाशचन्द्र सक्सेना तथा लेखा परीक्षक श्री एस.सी.किशोर मुख्य रूप से सम्मिलित हैं। मैंने मालिक को यह भी बताया कि मेरा ऐसा अनुमान है कि रायचुर के श्री राघवेन्द्र राव की भी इनसे मिलीभगत है तथा वे शायद अनमने मन से तथा बिना कुछ जाने समझे कि वे क्या कर रहे हैं इनका साथ दे रहे हैं। मैंने मालिक को बताया कि मेरे द्वारा उनके साथ व्यक्तिगत मसलों पर किये गये पत्राचार को एकत्रित कर मेरे विरुद्ध एक फाइल तैयार की गयी है। मैंने मालिक को सारी जानकारी विस्तृत रूप से दी। मालिक ने कहा "देखो मुझे सारी जानकारी है लेकिन मुझे रामजी से ऐसे बर्ताव की उम्मीद नहीं थी। उन्होंने कहा इसके पीछे ईर्श्या ही एकमात्र कारण है, लेकिन तुम्हें इससे विचलित होने की आवश्यकता नहीं है। मुझे अपनी इच्छा–शक्ति का उपयोग कर इस समस्या को सुलझाना पड़ेगा।

मुझे उम्मीद है कि सब कुछ व्यवस्थित हो जायेगा। उन्होंने कहा कि अनावश्यक रूप से किसी के ऊपर कीचड़ उछालना अच्छी बात नहीं है। तुम्हें इससे लेशमात्र भी चिन्तित होने की आवश्यकता नहीं है।"

मैंने उन्हें बताया कि इसी तरह की चरित्रहनन की मुहिम गुण्डेराव के विरुद्ध भी छेड़ी गई थी तथा उसके विरुद्ध भी इन्हीं तीनों व्यक्तियों ने

व्यक्तियों ने गलत बर्ताव करने के आरोप लगाये थे। मैंने मालिक को बताया कि यह दक्षिण भारतीयों को दर किनार करने की सोची समझी साजिश है। मेरी इस बात पर वे भी सहमत थे, लेकिन उन्होंने कहा कि मुझे इस प्रकरण को उनकी जिम्मेदारी पर छोड़ कर चिन्ता मुक्त हो जाना चाहिये।

मालिक के साथ इस तरह गुफ्तगू करना, मालिक के साथ रहना, उनके साथ एक ही टेबल पर भोजन करना, उनके साथ बरामदे में बैठना, उन बीते सुखद पलों की याद ताजा कर रहा था जब आश्रम का निर्माण नहीं हुआ था। वाकई वे अत्यन्त ही सुखद क्षण थे।

कृष्णा अत्यंत उदास तथा उद्विग्न नजर आ रहा था। कुछ देर पश्चात् मुझे सुलोचना से जानकारी मिली कि उसने मालिक से अपनी व्यक्तिगत आध्यात्मिक उन्नति तथा यात्रा की स्थिति इत्यादि के सम्बन्ध में पूछताछ की थी, लेकिन मालिक ने उसे कोई उत्तर नहीं दिया। सुलोचना के दबाव डालने पर मैंने स्वयं कृष्णा से इसके बारे में बातचीत की तब उसने बताया कि उसका ऐसा अनुमान था कि उसकी प्रगति रूक गयी है, अतएव उसने मालिक से इसके बारे में पूछा था। उसका कहना था कि मालिक द्वारा इसके सम्बन्ध में उत्तर न दिये जाने के कारण वह उदास हो गया था। तत्पश्चात् मैंने स्वयं मालिक से इसके सम्बन्ध में बात की। मालिक ने मुस्कराते हुये कहा, "देखो कृष्णा ने मुझे बताया कि वह ऐसा महसूस करता है कि उसकी प्रगति रुक गयी है, अब मुझे इसका क्या जवाब देना चाहिये था? उसका यह अनुमान सही है। उसकी प्रगति रुक जाने के सम्बन्ध में उसका अनुमान यथोचित है। वास्तव में मैंने उसकी प्रगति को नियंत्रित कर दिया है क्योंकि मैं नहीं चाहता था कि वह अत्यंत तेजी से तरक्की करे, वह अभी युवा है तथा उसे अभी पढ़ाई पूरी करनी है, वैसे भी उसे अभी इतनी जल्दबाजी क्यों है? पहले उसकी पढ़ाई पूरी हो जाये, तब उसकी आध्यामिक प्रगति पुनः प्रारम्भ हो जायेगी। अन्यथा उसका ध्यान पूरी तरह से इस ओर परिवर्तित हो जाने का खतरा हो सकता है तथा सामान्य जीवन के प्रति उसकी रुचि में भी कमी हो सकती

है। उसे समझा दो कि इस विषय पर उसे ज्यादा चिंतित होने की आवश्यकता नहीं है। उसे केवल अपनी पढ़ाई में ध्यान लगाना चाहिये तथा अपनी आध्यात्मिक प्रगति की जिम्मेदारी मुझ पर छोड़ देना चाहिये। तुम मेरी बात समझ रहे हो न ?''

15 अगस्त 1979– बुधवार (शाहजहाँपुर)

मेरे दाँत का दर्द समाप्त हो गया था किन्तु चेहरे पर सूजन अभी बरकरार थी। आज श्रीकृष्ण जन्माष्टमी है। बहुत से अभ्यासियों द्वारा प्रसाद अर्पण किया गया। हमारे द्वारा भी प्रसाद का अर्पण किया गया।

राजाराम भरतिया अपनी तेल मिल का विस्तारीकरण कर रहे हैं। उसने मालिक से आग्रह किया था कि मिल के नये खण्ड का शिलान्यास उन्हीं के हाथों से हो। पहले तो मालिक इसके लिये सहमत हो गये थे, किन्तु जब राजाराम ने आज उनसे इस बारे में सम्पर्क किया तो मालिक अकस्मात् ही बोले कि वे इसके लिये किसी को नियुक्त कर देंगे। अतएव शाम को मैं वहाँ पहुँचा तथा मिल के नये भवन का शिलान्यास किया।

कृष्णा, सुलोचना तथा मैं जे.आर.के. रायजादा के साथ मालिक के निवास से रात्रि 10.00 बजे स्टेशन के लिये रवाना हो गये। हमने काशी विश्वनाथ एक्सप्रेस से दिल्ली की ओर प्रस्थान किया। ट्रेन रात्रि 11.15 पर रवाना होनी थी, किन्तु इसके विलम्ब से रात्रि 12.30 बजे स्टेशन पर पहुँचने तथा लखनऊ मेल के भी विलम्ब से आने के कारण हमारी ट्रेन लखनऊ मेल के रवाना होने के पश्चात् ही स्टेशन से रवाना हुयी। रायजादा रात्रि 12.45 बजे तक ट्रेन के शाहजहाँपुर से रवाना होने तक हमारे साथ स्टेशन पर ही रुके रहे।

16 अगस्त 1979 – गुरुवार (दिल्ली)

सुबह 7.45 बजे हम न्यू दिल्ली पहुँच गये। स्टेशन पर सी. रामकृष्णा ने सम्मान पूर्वक हमारी अगवानी की तथा हमें अपने घर ले गये। दोपहर 3.00 बजे तक हम कृष्णा के लिये खरीददारी में व्यस्त रहे। इसी दौरान हमने उसकी उड़ान के बारे में भी पूछताछ की तथा दोपहर भोजन के पश्चात् हम घर लौट आये। एस. ए. एस. द्वारा दी गयी इस जानकारी

से हमें आश्चर्य हुआ कि कृष्णा के लिये विमान में कोई सीट आरक्षित नहीं है, जबकि हमारे द्वारा एक माह पूर्व ही आरक्षण करा लिया गया था। सम्भवतया इसके पीछे यह कारण था कि उनके भारत सरकार के साथ हुये अनुबंध तथा उसकी शर्तो के अनुसार एस. ए. एस. को प्रति वर्ष निर्धारित संख्या में ही यात्रियों को दिल्ली से सीट उपलब्ध करानी थी तथा इसकी सीमा पूर्व में ही समाप्त हो चुकी थी। एसएएस के कर्मचारियों का कहना था कि उन्होंने सीटों की संख्या बढ़ाने के लिये सरकार के पास आवेदन प्रस्तुत किया है तथा वे इसके लिये आश्वस्त भी थे कि कृष्णा निर्धारित कार्यक्रम के अनुसार ही यात्रा करेगा।

शाम 7.00 बजे – मोतीबाग II में स्थित श्री रामशरण चोपड़ा के निवास के खुले अहाते में सामूहिक सत्संग कराया जिसमें श्री एवं श्रीमती सुन्दरा, बी.डी.महाजन, आर.कृष्णास्वामी को मिलाकर कर कुल पचास अभ्यासी उपस्थित थे। सिटिंग बहुत अच्छी थी। सत्संग के पश्चात् प्रसाद अर्पण किया गया। लगभग 9.00 बजे हम रामकृष्णा के निवास पर वापस लौट आये।

17 अगस्त 1979 – शुक्रवार

हम कृष्णा की तैयारी में व्यस्त थे ताकि उसकी जरूरत का कोई सामान छूट न जाये। मैं अपनी भावनाओं पर नियंत्रण रखने का प्रयास कर रहा था तथा भयभीत था कि कहीं मेरे आवेग का बाँध टूट न जाये और मैं आवेग में आकर रोने की मूर्खता न कर बैठूँ। मालिक की कृपा से मैं अपने आप पर नियंत्रण रख पा रहा था, लेकिन मुझे इसके लिये अत्यंत प्रयास करने पड़ रहे थे। पिछले लगभग एक वर्ष से मुझे हमारे भावी विछोह का विचार परेशान कर रहा था तथा मेरे मन मस्तिष्क में यह विचार निरन्तर चलता रहता था जिसके कारण मैंने कई रातें बिना सोये गुजारी थीं तथा आज मुझे महसूस हो रहा था कि जैसे मेरे आवेग का बाँध टूट जायेगा।

हम सुबह 9.30 बजे एन. के. रंगनाथ के निवास की ओर रवाना हुये। उनका प्रेस एन्क्लेव में एक आलीशान फ्लैट है। दोपहर का भोजन हमने वहीं किया तथा दोपहर दो बजे रामकृष्णा के निवास पर वापस लौट

आये। शाम 5.00 बजे तक हमने विश्राम किया। कृष्णा श्रीमती लीला रत्नम (टीवीएस)के साथ बाजार चला गया।

शाम 6.00 बजे – हम अपने सामान इत्यादि के साथ मोतीबाग–II में स्थित श्री आर.एस.चोपड़ा के निवास की ओर रवाना हुये। मैं अत्यन्त व्याकुल था तथा मुझे ऐसा महसूस हो रहा था कि किसी भी क्षण मेरी अश्रुधारा बह निकलेगी किन्तु मैंने अपनी भावनाओं पर नियत्रंण रखा हुआ था।

शाम 7.00 बजे – श्री चोपड़ा के निवास पर कल की तरह लॉन में सामूहिक सत्संग कराया। प्रसाद अर्पण किया गया। प्रसाद अर्पण के दौरान सुलोचना को एक अनुभव हुआ, उसने बताया "मैं मि.सुन्दरा के निवास में थी तथा डाइनिंग टेबल पर खाना खाने के लिये बैठी हुयी थी। मैंने टेबल पर पड़े कटोरे में से कुछ लेने के लिये हाथ डाला तथा जैसे ही मैंने कटोरे में से हाथ बाहर निकाला मैंने देखा मेरी उँगलियाँ बड़ी तथा लम्बी हो गयी हैं एवं उनमें में से रक्त रिस रहा है। मुझे ऐसा महसूस हुआ कि मैं सुन्दरा का रक्त ले रही हूँ तथा उसके पैर के अग्र भाग से रक्त ऊपर की ओर खिंच रहा है। अगले दृष्य में मैंने देखा कि मालिक अपनी आराम कुर्सी पर बैठे हैं तथा मैं उनके बगल में बैठी हूँ। मैं अपने दाँये हाथ की तर्जनी को पैर के अंगूठे और अग्र भाग के बीच में रखती हूँ तथा दूसरी उँगली को मालिक के दाँये पैर पर रखकर उनसे पूछती हूँ कि उन्हें कुछ महसूस हो रहा है। मालिक मुझसे पूछते हैं यह सब क्या माजरा है ?' मैंने उत्तर दिया कि मैं उन्हें अपना सम्पूर्ण रक्त उनके स्वास्थ्य के लिये दे रही हूँ।

सत्संग के उपरान्त हम वंसत विहार में श्री सुन्दरा के निवास पर रात्रि भोज के लिये पहुँचे तथा वहाँ से रात्रि 10.00 बजे चोपड़ा के निवास पर वापस लौट आये। तत्पश्चात् हम रात्रि 11.30 बजे तक लॉन में ही बैठकर बातचीत करते रहे, उसके बाद टैक्सी से पालम हवाई अड्डे की ओर रवाना हो गये। सी.रामकृष्णा हमें हवाई अड्डे तक छोड़ने गये।

मेरे द्वारा निर्णय ले लिये जाने के कारण सुन्दरा अनमने मन से मालिक के अगले 30 अप्रैल 1980 को होने वाले जन्मोत्सव कार्यक्रम का आयोजन दिल्ली में कराने के लिये राजी हो गये। उनके निवास पर रात्रि

में भोजन के दौरान मैंने उन्हें उत्सव में अपनी व्यक्तिगत भागीदारी देने का विश्वास दिलाया तथा उन्हें उत्सव की जिम्मेदारी लेने के लिये राजी कर लिया।

18 अगस्त 1979–शनिवार

मेरा पुत्र चि. कृष्णा तथा उसकी कक्षा का साथी चि. एस. आर. श्रीनाथ (टी. वी. एस. के श्री आर. रत्नम के पुत्र) ''स्केन्डीनेवियन एयर लाइन्स सिस्टम'' के विमान से रात्रि 2.00 बजे कोपेनहेगन के लिये रवाना हो गये। सुलोचना, मैं तथा सी. रामकृष्णा पालम हवाई अड्डे पर उन्हें बिदाई देने के लिये उपस्थित थे तथा उनके विमान के रवाना होने तक वहीं रहे। हम सबके लिये यह अत्यन्त ही भावुकतापूर्ण क्षण थे यहाँ तक कि कृष्णा जिसका स्वभाव एकदम मर्दाना किस्म का है, भी अपनी माँ से विदा होते वक्त भावुक हो गया था। उसके लिये यह अत्यन्त ही कठिनाई पूर्ण तथा एकाकीपन का दौर होगा, क्योंकि अगले डेढ़–दो वर्ष तक उसे विदेश में ही रहना होगा जबकि अभी उम्र में भी वह बहुत छोटा है। मुझे विश्वास है कि मालिक उसकी हर प्रकार से रक्षा करेंगे। सुलोचना ने भी इस विषय में शाहजहाँपुर में मालिक से बातचीत की थी तथा उनसे कहा था कि चि. कृष्णा अब उन्हीं का पुत्र है तथा वह उसकी पढ़ाई एवं देखरेख के लिये बिलकुल भी चिंतित नहीं है। इस पर मालिक ने उनसे कहा, ''ठीक है बहू जब मामला तुमने मेरे हाथों में सौंप ही दिया है तो तुम्हें निश्चिंत हो जाना चाहिये। कृष्णा अपनी पढ़ाई पूरी करके तुम्हारे पास सकुंशल लौट आयेगा।''

इसके पश्चात् भी उससे बिछुड़ने के वक्त मैं अत्यन्त बेचैनी महसूस कर रहा था। मैंने अपने डेनमार्क के साथियों से निवेदन किया कि अगले दो–तीन दिनों तक जब ये दोनों नवयुवक वहाँ पर होंगे तब वे इनकी देखभाल करें। इसके अलावा मैंने मेडिसन (विश्कोंसिन) के एक अभ्यासी स्टीफेनी फसान्च को उनके आगमन के सम्बन्ध में भी सूचित कर दिया था । हम रात्रि 2.30 बजे तक हवाई अड्डे पर ही रहे तथा उसके पश्चात् सी.रामकृष्णा के साथ एक टैक्सी से उनके निवास पर वापस लौट आये।

दोपहर 2.00 बजे से शाम 5.00 बजे तक श्री आर. एन. चड्ढा तथा श्रीमती बेला (श्रीमती आर. एस. चोपड़ा के भाई की पुत्री) को व्यक्तिगत

सिटिंग दी। तत्पश्चात् सी. रामकृष्णा के मकान मालिक के साथ जो अपनी पत्नी के साथ वहाँ आये थे, लम्बी चर्चा का दौर चला।

हम, सुलोचना और मैं, शाम 5.30 बजे सी.रामकृष्णा के निवास से नई–दिल्ली रेलवे स्टेशन की ओर रवाना हुये जहाँ से हमें आज मद्रास की ओर प्रस्थान करना था। हमारी सीटें प्रथम श्रेणी शयनयान में आरक्षित थीं। अभ्यासी सी.रामकृष्णा, पुरुषोत्तम गायकवाड़, कृष्णास्वामी का पुत्र रामजी, प्रेम तथा श्याम टण्डन ने हमें दिल्ली से भावभीनी विदाई दी। हमारी ट्रेन दिल्ली से आधा घंटा विलम्ब से रात्रि 8.00 बजे रवाना हुयी क्योंकि जैसे ही ट्रेन स्टेशन से रवाना हुयी थी किसी ने चेन खींच दी थी जिसके कारण ट्रेन थोड़ी देर तक प्लेटफार्म पर ही खड़ी रही।

24 अगस्त 1979 – शुक्रवार

हमारे वरिष्ठ एकाउन्टेन्ट श्री टी. वी. पिंचुमनी जो अभ्यासी भी हैं, ने एक खुशखबरी देते हुये बताया कि टी. टी. के. एण्ड कंपनी के सभी अधिकारी जिन्हें 500/– रुपये या उससे अधिक वेतन मिलता है तथा जिनकी संख्या 32 है, को जीवन बीमा निगम की विशेष योजना के अन्तर्गत सम्मिलित करने का निर्णय लिया गया है। उन्होंने यह भी जानकारी दी कि वर्ष 1979 की इसकी वार्षिक किश्त भी पहले ही जमा की जा चुकी है। मेरी सेवा समाप्ति का समय जुलाई 1985 है, क्योंकि उसी समय मेरे 58 वर्ष पूरे हो रहे हैं। अर्थात् मेरे सेवाकाल के मात्र 6 वर्ष शेष रह गये हैं। पिंचुमनी का ऐसा अनुमान था कि मुझे पेन्शन के रूप में प्रतिमाह कम से कम 800.00 रुपये अवश्य मिलेंगे। वास्तव में मेरे लिये यह एक अच्छी खबर थी। इसके लिये मैं मालिक का शुक्रगुजार हूँ। यह सब उन्हीं की कृपा के कारण हुआ है।

सुलोचना, एस. सदाशिवम, एस. के. मोहन तथा मैं दोपहर 2.00 बजे कार से मालिक के 81वें जन्मोत्सव कार्यक्रम में सम्मिलित होने के लिये तिरुपति के लिये रवाना हुये। जन्मोत्सव समारोह कार्यक्रम मिशन के तिरुपति केन्द्र द्वारा आज तथा कल दो दिवस के लिये आयोजित किया गया है। हम शाम 5.30 बजे तिरुपति पहुँच गये। अभ्यासियों के ठहरने के

लिये नं.–2 गोविन्दाराजास्वामी चोल्ट्री (धर्मशाला) में व्यवस्था की गयी थी। व्यवस्था बहुत अच्छी थी। बहन कस्तूरी, भाई वी. जी. जोशी के साथ आज दोपहर 1.30 बजे दिल्ली से पहले ही यहाँ पहुँच चुकी थीं। कार्यक्रम की अध्यक्षता उन्हीं के द्वारा की गयी। बैंगलोर के भाई राघवेन्द्र राव तथा डी. आर. विट्ठलराव के साथ एम.डी. जहाँगीरदार भी कार्यक्रम में उपस्थित थे।

शाम 7.00 बजे– बहन कस्तूरी ने सामूहिक सत्संग कराया जिसमें लगभग पाँच सौ अभ्यासी उपस्थित थे। सिटिंग बहुत अच्छी रही।

कुछ देर पश्चात् अप्पा, कोदण्ड, इन्दिरा तथा पोनम्मा भी कार्यक्रम में सम्मिलित होने के लिये बैंगलोर से कार द्वारा यहाँ पहुँच गये।

25 अगस्त 1979 – शनिवार

सुबह 7.00 बजे – बहन कस्तूरी ने सामूहिक सत्संग कराया।

दोपहर 3.00 बजे से 4.00 बजे तक प्रशिक्षकों की एक बैठक आयोजित की गयी थी जिसमें, कस्तूरी, राघवेन्द्र राव, डी. आर. विट्ठलराव, एम.डी. जहाँगीरदार, पुल्लिया चैट्टी, डॉ. वी. एस. आर. मूर्ति, श्रीमती चित्रा श्रीनिवासन, बहन रंगानायकी, के. सी. नारायण, डॉ. के. कमलनाथन, डॉ. के. सी. अरविन्दा राजगोपाल, श्रीमती द्रोपदी बाई (श्री राघवेन्द्र राव की पत्नी), श्री डी. एस. के. सुब्रामन्याशास्त्री, श्रीमती शास्त्री, आर. रामचन्द्र रेड्डी और उनकी पत्नी रामासुब्बम्मा, डॉ. सी. ए. राजगोपालाचारी, मेरी पत्नी सुलोचना, श्री डी.रामामूर्ति, श्री एम. वैकटसुबैया, श्री वी. जी. जोशी, श्री सी. राजगोपालन, श्री गोपालराव मजूमदार, श्री वी. वैंकटपति तथा मुझे मिलाकर कुल पच्चीस प्रशिक्षक उपस्थित थे। बैठक की अध्यक्षता मेरे द्वारा की गयी। कार्यक्रम व्यवस्थित रूप से चल रहा था कि अचानक मेरे पिताजी ने के. सी. नारायण को यह जानकारी देकर बखेड़ा खड़ा कर दिया कि मिशन में एक अन्य प्रकार की दीक्षा भी दी जाती है, ''जो केवल चुनिंदा लोगों के लिये ही है। ''इसके कारण बैठक का माहौल गरमा गया, तथा मेरे अलावा जो भी दीक्षा प्राप्त शिष्य वहाँ उपस्थित थे, वे सभी विचलित हो गये। लेकिन मैंने शीघ्र ही परिस्थिति को नियंत्रण में कर

लिया। मुझे बैठक के पश्चात् के. सी. नारायण से बात करनी ही पड़ेगी, क्योंकि उन्होंने मुझे द्वार पर ही रोक कर मुझसे यह जानना चाहा था कि आजकल मिशन में क्या चल रहा है। क्या मालिक उनसे कुछ छिपा रहे हैं ? कहीं उन्हें कोई धोखा तो नहीं दिया जा रहा और यदि ऐसा है तो मालिक के इस कथन का क्या औचित्य है कि प्रकृति में कोई लुकाव छिपाव नहीं होता, इत्यादि–इत्यादि। मैंने उन्हें समझाया कि मालिक किसी से भी पक्षपात नहीं करते और न ही किसी भी योग्य व्यक्ति के लिये उच्च आध्यात्मिक पहुँच में कहीं भी कोई बाधा आती है। अंततः वह मुझसे सहमत हो गये। मैंने मालिक को इसके लिये धन्यवाद दिया तथा राहत की सांस ली।

शाम 6.00 बजे – राघवेन्द्र राव द्वारा सामूहिक सत्संग कराया गया। तत्पश्चात् कुछ व्यक्तियों द्वारा अपने सम्बोधन इत्यादि दिये गये। मैंने भी संक्षिप्त में सबके समक्ष अपने विचार व्यक्त किये।

26 अगस्त 1979 – रविवार

सुबह 7.00 बजे – बहन कस्तूरी द्वारा सामूहिक सत्संग कराया गया। नाश्ते के पश्चात् मैंने, सुलोचना, सदाशिवम तथा मोहन के साथ सुबह 10.00 बजे कार से मद्रास की ओर प्रस्थान किया तथा दोपहर 2. 00 बजे घर पहुँच गया।

रात्रि 9.30 बजे – बहन कस्तूरी तथा वी. जी. जोशी तिरुपति से सप्तगिरी एक्सप्रेस से मद्रास पहुँचे। मैंने स्टेशन पर उनकी अगवानी की तथा उन्हें अपने साथ घर पर "गायत्री" ले आया, वे हमारे घर पर ही ठहरेंगे।

27 अगस्त 1979 – सोमवार

सुबह 7.00 बजे – कस्तूरी ने सामूहिक सत्संग कराया जिसमें लगभग साठ अभ्यासी उपस्थित थे।

शाम 6.30 बजे – कस्तूरी ने सामूहिक सत्संग कराया। इस सत्र में लगभग अस्सी अभ्यासी उपस्थित थे।

28 अगस्त 1979 – मंगलवार

सुबह 6.30 बजे – बहन कस्तूरी ने पहले मुझे तत्पश्चात् सुलोचना को व्यक्तिगत सिटिंग दी।

सिटिंग के दौरान मैंने देखा कि मैं ढलावदार, लोहे की सीढ़ियाँ चढ़ रहा हूँ जिसमें रेलिंग नहीं हैं। सीढ़ियाँ एकदम सीधी लम्बवत हैं, मैं लगभग पूरी ऊँचाई तक सीढ़ियाँ चढ़ जाता हूँ लेकिन अंत में जब दो–तीन पायदान शेष रह जाते हैं, तब मुझे ऐसा प्रतीत होता हैं कि मैं हवा के झोंके के साथ झूल रहा हूँ तथा कभी भी गिर सकता हूँ। किन्तु किसी तरह से मैं आगे की ओर झूलकर अगली पायदान पकड़ लेता हूँ और अंततः मैं आखिरी पायदान तक पहुँच जाता हूँ जहाँ मेरा स्वयं का चेहरा मेरे समक्ष दृष्टिगोचर होता है। मैं देखता हूँ कि एक काला कपड़ा पट्टी की तरह मेरी आँखों पर बँधा हुआ है तथा जैसे ही यह कपड़ा हटता है, मुझे मेरा सम्पूर्ण चेहरा दिखाई पड़ता है जो सूर्य की लालिमा सा चमक रहा है। इस स्थिति पर मुझे यह आभास होता है कि कस्तूरी मेरी स्थिति को पढ़ने का प्रयास कर रही हैं तथा मुझे दृढ़ विश्वास हो जाता है कि वह जिस गहरायी तक मेरी स्थिति को भेदना चाह रहीं थीं, वह इसके योग्य नहीं थीं और इसी कारण वह मेरी अवस्था को पढ़ने में असमर्थ थीं। मेरी सिटिंग सुबह 7.00 बजे समाप्त हुयी।

सिटिंग के पश्चात् मैंने उन्हें अपने अनुभव के बारे में बताया। कस्तूरी ने अपनी दोनों हथेलियाँ मेरे माथे पर रखकर मुझे आशीर्वाद दिया। तत्पश्चात् मैंने उन्हें विश्वास के साथ बताया कि वह प्रयास करने के बावजूद भी मेरी स्थिति को पढ़ पाने में असमर्थ थीं। मेरे द्वारा दी गयी इस जानकारी से वह कुछ क्षण के लिये विचलित हो गयीं तथा कहने लगीं, "ऐसा कोई भी प्रकरण या स्थिति आज तक मेरे समक्ष नहीं आयी है जिसे पढ़ पाने में मैं असमर्थ रही हूँ। ऐसा सम्भव नहीं है, बाबूजी महाराज ने तो यहाँ तक कहा है कि बेटी जो मैं स्वयं नहीं कर सकता, वह तुम कर सकती हो। तुम्हारी अति संवेदनशीलता तो ईश्वरीय देन है।"

कुछ क्षण पश्चात् वह बोलीं उन्हें इस पर और विचार करने की आवश्यकता है ।

सुबह 7.30 बजे – कस्तूरी ने सामूहिक सत्संग कराया। दोपहर 3.00 बजे कस्तूरी ने मुझे अपने कमरे में व्यक्तिगत चर्चा के लिये बुलाया

तथा बोलीं "भाई आज सुबह तुमने जो कुछ भी कहा वह सत्य है, मैं उस विशिष्ट कार्य की विशेषता जो मालिक तुम्हारे ऊपर कर रहे हैं, को नहीं समझ पायी, मुझे ऐसा अनुमान है कि मालिक तुम्हारे अन्दर एक व्यक्तित्व का विकास कर रहे हैं जिसे मैं नहीं समझ पायी"।

शाम 7.00 बजे – कस्तूरी ने सामूहिक सत्संग कराया जिसके पश्चात् वह वी. जी. जोशी के साथ रॉकफोर्ट एक्सप्रेस से एग्मोर से त्रिची की ओर रवाना हो गयीं। मैंने उन्हें स्टेशन से विदा किया। ट्रेन रात्रि 10. 20 बजे स्टेशन से रवाना हुयी।

29 अगस्त 1979 – बुधवार (त्रिची)

सुलोचना, एस. के. मोहन, आर. स्वामीनाथन और मैंने सुबह 9.00 बजे कार से मालिक के जन्मोत्सव कार्यक्रम में सम्मिलित होने के लिये त्रिची की ओर प्रस्थान किया। समारोह कार्यक्रम का आयोजन त्रिची केन्द्र द्वारा किया गया था। दोपहर 3.00 बजे हम त्रिची पहुँच गये। सुलोचना तथा मैं हमारे प्रशिक्षक भाई के निवास पर ठहर गये (श्रम विभाग क्वार्टर काजामलई कॉलोनी) जबकि स्वामीनाथन तथा मोहन अशोक भवन चले गये। बहन कस्तूरी तथा वी. जी. जोशी के ठहरने की व्यवस्था भी वहीं की गयी थी।

शाम 5.00 बजे – सांयकालीन कार्यक्रम पाँच अभ्यासियों द्वारा दिये गये सम्बोधन से प्रारम्भ हुआ। उसके बाद कस्तूरी ने हिन्दी में अपने विचार व्यक्त किये और मैंने इसका साथ–साथ तमिल में अनुवाद किया।

शाम 7.00 बजे – कस्तूरी ने सामूहिक सत्संग कराया, सिटिंग में बेचैनी रही ।

30 अगस्त 1979 – गुरुवार

सुबह 7.00 बजे – तिल्लईनगर स्थित केन्द्र में कैप्टन रामास्वामी के निवास पर कस्तूरी द्वारा सत्संग कराया गया। सिटिंग पचास मिनट तक चली तथा बहुत अच्छी रही। तत्पश्चात् उन्होंने संक्षेप में अपना सम्बोधन दिया जिसका मेरे द्वारा अनुवाद किया गया। उनके सम्बोधन के पश्चात् बीस मिनट तक मैंने अपने विचार व्यक्त किये। कार्यक्रम के

पश्चात् मैं कस्तूरी तथा वी. जी. जोशी को त्रिची एवं श्रीरंगम के दृश्यावलोकन के लिये भ्रमण पर ले गया तथा वापसी में उन्हें अशोक भवन छोड़ दिया।

कस्तूरी से मैंने उनके कक्ष में लगभग दो घंटे तक एकांत में व्यक्तिगत चर्चा की। इस दौरान उनके द्वारा व्यक्त किये गये कुछ विचारों से मैं बिल्कुल भी सहमत नहीं था। 1) मालिक के स्वास्थ्य तथा सामान्य स्थिति के बारे में जानकारी देते हुये उन्होंने इस बात पर जोर देकर कहा कि उनका ऐसा अनुमान है कि मालिक का लालाजी महाराज से सम्पर्क टूट गया है। उनकी इस बात से मैं चकित रह गया। यह मालिक पर सीधा दोषारोपण था। उनका यह भी कहना था कि मालिक से प्रार्थना करने पर अब उन्हें कोई जवाब नहीं मिलता। उन्होंने कहा कि बाबूजी महाराज ने स्वयं उन्हें बताया है कि वे इस बात को लेकर अत्यंत चितिंत हैं कि लालाजी महाराज से उनकी प्रार्थना का जवाब क्यों नहीं मिल पा रहा है।

2) उन्होंने मुझे राघवेन्द्र राव तथा कर्नाटक के समूचे ग्रुप से सचेत रहने के लिये आगाह किया, उन्होंने कहा कि राघवेन्द्र यह प्रयास कर रहे थे, बल्कि वह इसके लिये लगातार प्रयासरत रहेंगे कि किसी भी तरह वह मुझे मिशन से बाहर करवा दें। वह निरन्तर इस बात पर जोर देती रहीं कि राघवेन्द्र राव ही मेरे लिये सबसे बड़ी समस्या होंगे।

3) वह शाहजहाँपुर की घटना को लेकर विशेषतौर से परेशान थीं।

दोपहर का भोजन के. आर. सुब्रामनियम के निवास पर किया। सुलोचना, स्वामीनाथन, मोहन और मैंने कार से दोपहर 3.00 बजे मदुरई की ओर प्रस्थान किया। श्री के.आर.सुब्रामनियम भी हमारे साथ थे। हम शाम 5.20 बजे मदुरई में वालमजी मेंशन पहुँच गये। मदुरई केन्द्र के प्रभारी प्रशिक्षक से चर्चा करने एवं अगले दिन आयोजित मालिक के जन्मोत्सव कार्यक्रम के लिये की गयी व्यवस्था का निरीक्षण करने के लिये मैं रात्रि 8.00 बजे श्री थस्मास्वामी के निवास पर पहुँचा।

कस्तूरी तथा वी. जी. जोशी त्रिची से बईगई एक्सप्रेस से रात्रि 9.

50 बजे मदुरई पहुँचे। मैंने स्टेशन पर उनकी अगवानी की तथा उन्हें अपने साथ घर पर वालमजी मेंशन ले आया। उनके ठहरने की व्यवस्था हमने हमारे घर पर ही की थी।

31 अगस्त 1979– शुक्रवार

मालिक के जन्मोत्सव कार्यक्रम का शुभारम्भ नाश्ते से हुआ। तत्पश्चात् सुबह 9.00 बजे कस्तूरी ने सामूहिक सत्संग कराया, सिटिंग अच्छी रही। मुझे ऐसा अनुभव हुआ जैसेकि एक लेटा हुआ व्यक्ति अत्यंत सजगता से उठकर बैठ गया है। राजापलायम, विरुदनगर, कोयम्बटूर, तिरुपुर, एरियालूर तथा शोलावन्दन से लगभग दो सौ पचास अभ्यासी यहाँ उत्सव मनाने के लिये एकत्रित हुये हैं।

कस्तूरी, सुलोचना, स्वामीनाथन, के. आर. सुब्रामनियम तथा मैंने आज सारा दिन मदुरई केन्द्र में ही व्यतीत किया तथा रात्रि 9.30 बजे ही हम वालमजी मेन्शन वापस लौट पाये ।

1 सितम्बर 1979– शनिवार

सुबह 7.30 बजे – कस्तूरी ने सामूहिक सत्संग कराया, यद्यपि कोयम्बटूर तथा तिरुपुर के अभ्यासियों का दल रात में ही रवाना हो चुका था, तथापि बड़ी संख्या में अभ्यासी अभी भी वहाँ पर उपस्थित थे।

कस्तूरी तथा वी. जी. जोशी क्वीलोन मेल से रात्रि 8.00 बजे मद्रास की ओर रवाना हो गये। लगभग बीस से भी अधिक संख्या में अभ्यासी उन्हें विदाई देने के लिये स्टेशन पर उपस्थित थे। मद्रास पहुँचने पर उनकी देखभाल की जिम्मेदारी उमेश की रहेगी। वहाँ से कल वह कावेली की ओर रवाना हो जायेंगी, तत्पश्चात् उन्हें विजयवाड़ा तथा वहाँ से दिल्ली के लिये रवाना होना है।

2 सितम्बर 1979 – रविवार

सबुह 7.30 बजे – मैंने मदुरई केन्द्र में सामूहिक सत्संग कराया। सिटिंग अच्छी रही। तत्पश्चात् मैं नाश्ते के लिये विजया बैंक परिसर में स्थित सुब्रामनियम के निवास की ओर रवाना हो गया। उनका तबादला त्रिची से यहाँ मदुरई में हो गया है। के.आर. सुब्रामनियम दोपहर 3.30 बजे

की बस से त्रिची की ओर तथा एस.के.मोहन रात्रि 9.00 बजे की बस से मद्रास की ओर रवाना हो गये।

4 सितम्बर 1979 – मंगलवार

कल तथा आज सारा दिन मैं विरुदनगर में कंपनी के कार्य में व्यस्त रहा।

शाम 7.00 बजे– वालमजी मेंशन में सामूहिक सत्संग कराया। श्री थस्मास्वामी, जे. आर. दोरेस्वामी अय्यर तथा डब्ल्यू. एच. श्रीनिवासन के अलावा लगभग बीस अन्य अभ्यासी भी उपस्थित थे। सिटिंग अच्छी रही, इस दौरान शान्ति तथा स्थिरिता का अनुभव हुआ।

5 सितम्बर 1979 – बुधवार

बईगई नदी के तट के समीप स्थित सदाशिव नगर में श्री पूवालिंगम के निवास जिसका नाम ''सत्योदयम'' रखा गया है, में गृह प्रवेश के कार्यक्रम का आयोजन रखा गया था। सुबह 6.30 बजे के सामूहिक सत्संग के पश्चात् प्रसाद वितरण किया गया तथा इस प्रकार अत्यन्त व्यवस्थित ढंग से व सहज मार्ग पद्धति के अनुरूप गृह प्रवेश का कार्यक्रम सम्पन्न हुआ।

दोपहर तक मैं विरुदनगर में ही रहा तथा दोपहर 2.00 बजे मदुरई वापस लौट आया। सुलोचना तथा मैं कार से दोपहर 2.40 बजे त्रिची के लिए रवाना होकर शाम 4.50 बजे त्रिची में के. आर. सुब्रामनियम के निवास पर पहुँच गये।

शाम 7.00 बजे– वोराइयुर के कलई पल्ली में सामूहिक सत्संग कराया जिसमें लगभग एक दर्जन अभ्यासी उपस्थित थे। सिटिंग अच्छी रही।

6 सितम्बर 1979 – गुरुवार

के. आर. सुब्रामनियम के निवास पर नाश्ता करने के पश्चात् मैंने तथा सुलोचना ने सुबह 8.00 बजे त्रिची से मद्रास की ओर प्रस्थान किया तथा दोपहर 1.45 बजे हम मद्रास में अपने घर 'गायत्री' पहुँच गये।

7 सितम्बर 1979 – शुक्रवार

आज दोपहर 3.30 बजे श्रीमती पद्मा नरसिंहमन की ओर से टी.

टी. के. एण्ड कं. के महाप्रबंधक वी. गोपालन की बैठक की सूचना हेतु एक सम्मन प्राप्त हुआ। अपने अधीनस्थों एवं सहयोगियों के प्रति मेरे सचेत न रहने तथा उनसे तालमेल न रखने के कारण बैठक में मेरी भर्त्सना की गयी। उन्हें यह भी संदेह था कि मैं उन्हें धोखा देकर पैसा कमा रहा हूँ। लगभग पंद्रह मिनट चली इस बैठक के कारण मैं अत्यंत निराश हो गया था।

रात्रि 10.10 बजे सुलोचना, एस.के.मोहन, प्रशिक्षक के. महालिंगम पी. कामेश्वर राव, एस. नारायणास्वामी तथा मैंने मद्रास से बॉम्बे मेल से येरागुन्टला की ओर प्रस्थान किया। कडप्पा के आर. वैंकटसुब्बा रेड्डी भी उसी डिब्बे में यात्रा कर रहे थे। मैंने उनका अभिवादन किया किन्तु उन्होंने इसे नजर अंदाज कर दिया तथा मुझसे कन्नी काट ली। उनके इस रूखे व्यवहार का क्या मतलब निकाला जाना चाहिये? जबकि वे मिशन के प्रशिक्षक भी हैं। जबसे वे तथा उनके भाई रामचन्द्र रेड्डी के उमेश से करीबी ताल्लुकात बने हैं एवं उनका आपस में व्यवसायिक तालमेल स्थापित हुआ है तभी से उनका व्यवहार इस तरह से अशिष्ट हो गया है। वे यह समझते हैं कि उमेश के माध्यम से वे मालिक का दिल जीत सकते हैं।

8 सितम्बर 1979 – शनिवार

सुबह 5.30 बजे हम येरागुन्टला पहुँच गये। रवि कुमार ने स्टेशन पर हमारी अगवानी की तथा वह हमें अपने निवास जो स्टेशन रोड पर रेलवे लाइन के सामानान्तर सौ गज की दूरी पर ही था, पर ले गये। उनके पिता श्री एम. वैंकट सुबैया तथा उनके अन्य रिश्तेदारों ने हमारा अभिवादन किया।

सुबह 7.30 बजे – समीप ही स्थित एक विद्यालय में मैंने सामूहिक सत्संग कराया जिसमें लगभग चालीस अभ्यासी उपस्थित थे। सिटिंग पैंतालिस मिनट तक चली तथा बहुत अच्छी रही। तत्पश्चात् सुबह 9.15 बजे तक मैंने उन्हें सम्बोधित किया तथा रवि कुमार ने तेलगू में इसका अनुवाद किया। तत्पश्चात् नाश्ता करने के उपरान्त हमने विश्राम किया, तदुपरान्त दोपहर का भोजन किया।

दोपहर 3.30 बजे – हम वैन में प्रादातुर की ओर रवाना हुये जो येरागुन्टला से लगभग सत्रह किलोमीटर दूरी पर स्थित था। शाम 4.00

बजे हम वहाँ पहुँच गये। कोप्पारा मेमोरियल हॉल के एक कक्ष में हमारे ठहरने की व्यवस्था की गयी थी। तिरुपति के डॉ. जी कुप्पुस्वामी तथा बहन रंगानायकी, तिरूतानी के वी. वैंकटपति, तिरुपति के डॉ. के. एस. स्वामी, कडप्पा के आर. रामचन्द्र रेड्डी तथा आर. वैंकटसुब्बारेड्डी, ये सभी प्रशिक्षक भी पहले ही वहाँ पहुँच चुके थे।

शाम 6.00 बजे – हॉल में सामूहिक सत्संग कराया, सिटिंग पैंतालिस मिनट चली। इस दौरान गहरायी तक सफाई की गयी। सिटिंग के पश्चात् अभ्यासियों ने बताया कि वे अत्यन्त बेचैनी अनुभव कर रहे हैं। इसके बाद मैंने एक घंटे तक उन्हें सम्बोधित किया तथा रवि कुमार ने अत्यंत सुरुचि पूर्ण ढंग से तेलगू में उसका अनुवाद किया। रात्रि विश्राम हमने प्रोदातुर में ही किया।

9 सितम्बर 1979 – रविवार

सुबह 9.00 बजे – मैंने हाल में सामूहिक सत्संग कराया। लगभग चार सौ अभ्यासी उपस्थित थे। सिटिंग पचास मिनट चली तथा बहुत अच्छी रही। मेरे संक्षिप्त सम्बोधन के पश्चात् प्रशिक्षक भाई श्री एन. कुमारास्वामी, आर. एन. महेन्द्रकर एवं वी वैंकटपति ने उन्हें सम्बोधित किया।

दोपहर 2.30 बजे – प्रशिक्षकों की एक बैठक आयोजित की गयी जिसमें लगभग वही सब कुछ दोहराया गया जो तिरुपति में 25 अगस्त 1979 की बैठक में मेरे द्वारा कहा गया था।

शाम 4.00 बजे – एक सार्वजनिक बैठक आयोजित की गयी जिसमें मैंने उपस्थित श्रोताओं को एक घंटे तक सम्बोधित किया। तत्पश्चात् एस.वैंकटसुबैया ने तेलगू में एक घंटे तक अपने विचार व्यक्त किये।

शाम 6.30 बजे – श्री एन. कुमारास्वामी ने सामूहिक सत्संग कराया।

रात्रि भोजन के पश्चात् हम सभी छः व्यक्ति रात्रि 8.30 बजे प्रोदातुर से येरागुन्टला की ओर रवाना हो गये। वहाँ से रात्रि 9.50 बजे बॉम्बे मद्रास मेल द्वारा मद्रास की ओर प्रस्थान किया।

11 सितम्बर 1979 – मंगलवार

मेरे पिताजी आज शाम 7.10 बजे वृन्दावन एक्सप्रेस से बैंगलोर से

मद्रास पहुँचे।

30 सितम्बर 1979 – रविवार

सुबह 7.30 बजे – अप्पा ने सामूहिक सत्संग कराया। सिटिंग बहुत अच्छी रही।

अप्पा, सुलोचना, एस. के. मोहन तथा मैंने सुबह 9.00 बजे कार से उलुन्डुरपेट तथा सलेम के मार्ग से तिरुपुर की ओर प्रस्थान किया। शाम 7.00 बजे हम तिरुपुर पहुँच गये। यात्रा के दौरान भीषण गर्मी थी, अप्पा को थकान हो गयी थी। हमने होटल इंडिया हाउस मे ठहरने का निर्णय किया।

रात्रि 8.30 बजे – मैं शहरी क्षेत्र से बाहर कंगेयाम मार्ग पर् स्थित बैंकटेश्वरा तिरूमना महल पहुँचा तथा वहाँ पर पहले से ही एकत्रित लगभग पचास अभ्यासियों को सिटिंग दी। सिटिंग बहुत अच्छी रही। प्राणाहुति अत्यंत सूक्ष्म तथा गहरी थी एवं लगभग समाधि जैसी अवस्था का अनुभव हो रहा था। त्रिची के प्रशिक्षक के. आर. सुब्रामनियम, कोयम्बटूर के डॉ. एस. एस. रामाकृष्णन तथा आर. वैंकटरमन, तथा विरुदनगर के पी. के. वैंकटेशन, सभी यहाँ उपस्थित थे।

1 अक्टूबर 1979– सोमवार

बाबूजी महाराज के अस्सीवें जन्मोत्सव समारोह कार्यक्रम का आयोजन तिरुपुर में किया गया था। हम प्रार्थना करते हैं कि मालिक सदैव हमारे साथ रहें।

सुबह 7.00 बजे – अप्पा ने सुबह का सत्संग कराया। आज सुबह का सत्र केवल अभ्यासियों के लिये रखा गया। बहुत सारी वार्तायें दी गयीं।

शाम 4.00 बजे – सायंकालीन सत्र के प्रारम्भ में सार्वजनिक बैठक का आयोजन हुआ जिसमें अच्छी उपस्थिति रही। मदुरई के पी. पलानी अप्पन ने अत्यंत सुरुचिपूर्ण ढंग से अपना सम्बोधन दिया। तत्पश्चात् मैंने भी अपने विचार रखे। मैंने सुबह तीस मिनट तक तमिल में अपने विचार व्यक्त किये थे जिसके लिये अप्पा ने मुक्त कंठ से मेरी प्रशंसा की। उन्हें मेरे धारा प्रवाह तमिल बोलने पर अत्यंत आश्चर्य हो रहा था।

2 अक्टूबर 1979– मंगलवार

समारोह के समापन सत्र में अप्पा द्वारा सुबह का सत्संग कराया गया। जैसा कि अक्सर होता है उसी तरह मेरे द्वारा आज भी कार्यक्रम समाप्ति पर अपना सम्बोधन दिया गया।

भोजन के पश्चात् हमने दोपहर 2.00 बजे कार से कोयम्बटूर की ओर प्रस्थान किया तथा दोपहर 3.15 बजे कोयम्बटूर में होटल अलंकार पहुँच गये। मैं असहनीय सिरदर्द के कारण परेशानी में था, अतः मैंने होटल में ही ठहरना उचित समझा तथा इसी कारण मैं शाम के सत्संग में भी उपस्थित नहीं हो सका। अप्पा कोयम्बटूर से आइसलैंड एक्सप्रेस द्वारा बैंगलोर की ओर रवाना हो गये। मोहन ने मद्रास की ओर प्रस्थान किया।

शाम 8.00 बजे – श्री के. आर. रामास्वामी को व्यदितगत सिटिंग दी। गुलबर्गा के एक अभ्यासी श्री एल. टी. चौहान रात्रि 8.30 बजे मुझसे मुलाकात करने के लिये आये। उन्हें हमारे साथ मदुरई जाना था जहाँ उनके रिश्तेदार रहते हैं। तत्पश्चात् वह आश्रम स्थल का निरीक्षण करने के लिये मद्रास तक हमारे साथ जायेंगे।

3 अक्टूबर 1979 – बुधवार

आई. टी. पी. टी. की कोयम्बटूर इकाई में मैं सुबह अपने कार्यालय के कार्य में व्यस्त रहा।

दोपहर 1.00 बजे – सुलोचना तथा मैं, एल. टी. चौहान एवं लक्ष्मी अम्मल के साथ कार से मदुरई की ओर रवाना हुये तथा दोपहर 4.30 बजे मदुरई में वालमजी मेंशन पहुँच गये।

शाम 7.00 बजे – मदुरई केन्द्र में सामूहिक सत्संग कराया।

4 अक्टूबर 1979 – गुरुवार

सारा दिन विरुदनगर में कंपनी के कार्य में व्यस्त रहा।

शाम 7.00 बजे– वालमजी मेंशन में सामूहिक सत्संग कराया। लगभग पच्चीस अभ्यासी उपस्थित थे। शाम 6.30 बजे के उपरान्त लगातार मुसलाधार बारिश होने के पश्चात् भी उपस्थिति अच्छी थी तथा लगभग पच्चीस अभ्यासी उपस्थित थे। सिटिंग अच्छी रही।

5 अक्टूबर 1979 – शुक्रवार

सारा दिन विरुदनगर में रहे।

शाम 7.00 बजे सामूहिक सत्संग श्री पलानीचामी के घर पर तालाकुलम में कराया। पैंतालिस मिनट की बहुत अच्छी सिटिंग रही। शाम 6.30 बजे के उपरान्त लगातार मूसलाधार बारिश होने के पश्चात् भी उपस्थिति अच्छी थी तथा लगभग पच्चीस अभ्यासी उपस्थित थे।

6 अक्टूबर 1979 – शनिवार

दोपहर तक विरुदनगर में रहा।

शाम 7.00 बजे – वालमजी में सामूहिक सत्संग कराया जिसमें तीस अभ्यासी उपस्थित थे।

7 अक्टूबर 1979 – रविवार

सुबह 7.30 बजे – मदुरई केन्द्र में सामूहिक सत्संग कराया तत्पश्चात् मैंने तीस मिनट तक उन्हें सम्बोधित किया।

सुलोचना, मैं तथा एल. टी. चौहान कार से सुबह 10.00 बजे मदुरई से रवाना होकर दोपहर 12.20 बजे हम त्रिची के काजामलई स्थित के.आर. सुब्रामनियम के निवास पर पहुँचे।

शाम 7.00 बजे – त्रिची केन्द्र मे सामूहिक सत्संग कराया जिसमें बाइस अभ्यासी उपस्थित थे। यह केन्द्र प्रभारी प्रशिक्षक कैप्टन टी. एन. रामास्वामी की अनुपस्थिति के कारण निरन्तर पिछड़ता जा रहा है। उन्हें परेशानी न हो इसके लिये पूज्य मालिक कुछ करना भी नहीं चाहते। उनकी पत्नी लगनशील हैं तथा वह नियमित सत्संग में उपस्थित होती हैं एवं सिटिंग इत्यादि देती हैं, जबकि उनके पति ने पिछले कुछ सालों से न तो कभी सिटिंग ली है और न ही वह कभी सत्संग में उपस्थित हुये हैं।

8 अक्टूबर 1979 – सोमवार

श्री के. आर. सुब्रामनियम, एल. टी. चौहान तथ श्री के. सुब्रामनियम को सिटिंग दी।

सुलोचना, मैं तथा चौहान ने काजामलई से सुबह 9.00 बजे कार से मद्रास की ओर प्रस्थान किया तथा दोपहर 2.45 बजे हम घर पहुँच गये।

शाम को एल. टी. चौहान ने हमारे आश्रम के प्रस्तावित स्थल का निरीक्षण किया। मेरे भाई कोदण्ड मद्रास में ही थे। वह इस बात को लेकर मुझ पर क्रोधित हुये कि "जब कार्यालय में मेरे विरुद्ध विस्फोटक स्थिति निर्मित हो रही है" ऐसे समय में मुझे अपने मुख्यालय से बाहर नहीं रहना चाहिये था। मेरा अनुमान था कि शायद टी.टी. जगन्नाथन ने उनसे यह कहा था "पी.आर.सी. (यानि मैं) ने हमारी पीठ पीछे वार किया है तथा वह डेनिस ग्रोव का समर्थन कर रहे हैं। स्थिति अत्यंत विस्फोटक है फिर भी वह पैसा बनाने के चक्कर में बेबी एण्ड कंपनी के साथ जुड़ गये हैं।" कोदण्ड अत्यंत परेशान थे। मैंने उन्हें विस्तार से समस्त जानकारी दी, वह रात्रि 8.30 बजे टी.टी. जगन्नाथन के घर गये तथा मेरे बारे में उन्हें सारी स्थिति स्पष्ट की एवं भरोसा दिलाया। सुलोचना इस बात को लेकर खफा थी कि कोदण्ड ने उनके दामाद चि. सुरेश के सामने मुझे भला बुरा कहा।

9 अक्टूबर 1979 – मंगलवार

सुबह 9.30 बजे – मैं श्रीमती पद्मा नरसिंहमन, श्री टी. टी. वासू और श्री वी. गोपालन से मिला। उनका निर्णय था कि आई .टी. पी. टी. के संचालक मण्डल के सदस्य कल टी. टी. रघुनाथन और श्रीमती पद्मा नरसिंहमन का मंडल सदस्य के रूप में चयन करने के लिये बैठेंगे।

शाम 4.00 बजे मुझे श्रीमती पद्मा नरसिंहमन तथा श्री टी. टी. जगन्नाथन के समक्ष उपस्थित होने का निर्देश प्राप्त हुआ। जग्गू से मेरी पैंतालिस मिनट तक स्पष्ट रूप से खुले खुले शब्दों में विस्तार से चर्चा हुयी। मेरे विरुद्ध उसे जो भी गिला शिकवा था उसने खुलकर मेरे समक्ष रखा तथा मैंने उसी क्षण उसकी सारी शंकाओं का समाधान कर दिया तथा मेरा ऐसा अनुमान था कि मैंने उसे सारी स्थिति स्पष्ट कर दी है। मैं सोच रहा था कि आज का दिन टी. टी. के. एण्ड कं. में मेरा अंतिम दिन होगा, लेकिन शायद मालिक की इच्छा इसके विपरीत है। चर्चा के दौरान निर्मित परिस्थिति में जितना सम्भव हो सका, हम एक दूसरे से सोहाद्रपूर्ण तरीके से पेश आये।

शाम 7.00 बजे – मैंने जेन्स नॉर, माइकल जेरनो तथा डेनमार्क

के एक अन्य अभ्यासी को सिटिंग दी। एम.रवि कुमार, एस.के.मोहन, के. महालिंगम तथा डॉ. विश्वनाथन भी एल.टी.चौहान के साथ सिटिंग में उपस्थित थे। सिटिंग प्रत्येक दृष्टि से बहुत ही अच्छी रही।

एल. टी. चौहान बॉम्बे मेल से गुलबर्गा के लिये रवाना हो गये।

19 अक्टूबर 1979 – शुक्रवार

अपने कार्यालय में सुबह 10.30 बजे आधे घंटे तक मैं अत्यंत भावुक महसूस कर रहा था। मुझे ऐसा महसूस हो रहा था कि किसी भी क्षण मेरी रुलाई फूट पड़ेगी। कार्यालय में मेरे विरुद्ध विपरीत वातावरण, मेरे पुत्र कृष्णा से मेरे बिछोह तथा मालिक की चुप्पी ने मेरे तनाव को असहनीय कर दिया था। मैंने निर्णय लिया कि मैं मालिक को इसके बारे में पत्र लिखूँगा तथा उनसे अपनी नौकरी से इस्तीफे के लिये विनम्र अनुमति देने का आग्रह करूँगा। इस समस्या का मुझे कोई और समाधान नजर नहीं आता।

20 अक्टूबर 1979 – शनिवार

दिवाली का दिन है, मुझे आज कृष्णा की कमी बहुत खल रही थी मैं बिस्तर पर पड़े–पड़े आधे घंटे तक रोता रहा।

21 अक्टूबर 1979 – रविवार

सुबह 6.00 बजे बाथरूम में मालिक की सरलता के बारे विचार करते समय मैं अत्यंत भावुक हो गया। मैं सोच रहा था कि यह सरलता उनके आकर्षक चेहरे पर कितनी फबती है। मुझे इस विचार ने व्याकुल कर दिया कि मुझमें तो उनकी सरलता का एक अंश पाने की भी काबलियत नहीं है। सुबह के सत्संग के दौरान भी जिसे मैंने ही कराया था, सरलता का यही विचार मेरे मन में चलता रहा तथा मुझे यह आभास हो रहा था कि शायद मालिक मुझे यह समझाना चाह रहे हैं कि जब तक व्यक्ति में संस्कार रहते हैं उसमें सरलता नहीं आ सकती, अर्थात् सरलता मूल स्थिति में आपकी वापसी का आभास कराती है। सिटिंग के दौरान यही विचार चलता रहा। सिटिंग पैंतालिस मिनट तक चली जिसमें अत्यंत गहरायी तथा तल्लीनता थी।

अप्पा कोदण्ड की कार से बैंगलोर से शाम 4.30 बजे मद्रास पहुँचे।

24 अक्टूबर 1979 – बुधवार

सुबह 8.30 बजे कार्यालय में एक विशेष बैठक आयोजित की गयी थी जिसमें उपस्थित होने के लिये मैं घर से सुबह 8.00 बजे रवाना हुआ। बैठक सुबह 9.00 बजे प्रारम्भ हुयी जिसमें टी. टी. नरसिंहमन अध्यक्ष टी. टी. के. समूह, उनकी पत्नी पद्मा नरसिंहमन, बहू शान्ति रंगनाथन, भाई टी. टी. वासू, पुत्र टी. टी. जगन्नाथन एवं टी. टी. रघुनाथन, टी. टी. के. के महाप्रबंधक वी. गोपालन, वित्त शाखा के प्रमुख (फाइनेन्स चीफ) के. कुप्पुस्वामी, वाणिज्य प्रबंधक (मार्केटिंग मैनेजर) एन. आर. दुग्गर, बॉम्बे के श्री एस. एन. अय्यर तथा आई. टी. पी. टी. के कार्यकारी प्रबंधक बी. रामचंद्रन भी बैठक में उपस्थित थे।

टी. टी. नरसिंहमन ने घोषणा की कि टी. टी. रघुनाथन तात्कालिक रूप से आई. टी. पी. टी. का प्रभार संभालेंगे तथा उनके पद का नाम 'कार्यकारी निर्देशक (एक्सीक्यूटिव डाइरेक्टर)' होगा, जो कि वर्तमान में मेरे पद का नाम था। जब टी. टी. एन. नवम्बर के अंत में यूरोप से वापस लौटेंगे उन्होंने कहा, "पाचू ! लौटने के बाद मैं तुम्हारे भविष्य का फैसला करूँगा। मैं तुमसे चर्चा करूँगा तथा तभी यह तय करूँगा कि टी. टी. के. ग्रुप में कौन सी जगह तुम्हारे लिये उपयुक्त है।" कम्पनी अध्यक्ष द्वारा की गई इस एकमात्र घोषणा के साथ ही बैठक समाप्त हो गयी। बैठक समाप्ति के तुरन्त पश्चात् जब मैं उठकर कक्ष से बाहर की ओर जा रहा था, तभी टी. टी. एन. ने मुझसे कहा "तुम आई. टी. पी. टी. के निदेशक (डायरेक्टर) के पद पर बने रहोगे।"

28 अक्टूबर 1979 – रविवार

मिशन की पत्रिका "सहज मार्ग" की जीवन सदस्यता का आंकड़ा आज चार सौ बीस पर पहुँच गया है। प्रगति अच्छी है।

1 नवम्बर 1979 – गुरुवार

आज कार्यालय नहीं गया। कार्यालय में मेरी अनिश्चित स्थिति के कारण मुझे कार्यालय जाने से घृणा सी हो गयी है जो मेरी कार्यालय में

अनुपस्थिति के बनिस्बत मेरी बीमारी के लिये ज्यादा जिम्मेदार है। जब भी मैं अस्वस्थ होता हूँ मुझे ऐसा महसूस होता है कि यह तनाव ही मेरी अस्वस्थता का मुख्य कारण है। स्वभाव से भी मैं थोडा दब्बू मानसिक प्रवृत्ति का हूँ, जबकि मालिक का कहना है कि ऐसी परिस्थिति में व्यक्ति को अपनी इच्छा–शक्ति का उपयोग करना चाहिये। किन्तु मेरे प्रकरण में मेरी पत्नी सुलोचना ऐसी स्थिति में मेरी हर समय सहायता करती है। वह मुझे ढाढस बँधाती है तथा मेरा उत्साहवर्धन करती है। जब यह सब भी कारगर नहीं होता तो वह लगभग मुझे धकेल कर घर के बाहर कर देती है ।

3 नवम्बर 1979 – शनिवार

जी. एस. प्रेस से मालिक की 'अनन्त की ओर' (तृतीय संस्करण) की 150 प्रतियाँ प्राप्त हुयीं।

4 नवम्बर 1979 – रविवार

सुबह 4.00 बजे एक डरावने स्वप्न के कारण मेरी नींद खुल गयी। स्वप्न में मैंने देखा कि मेरे पुत्र चि. कृष्णा की मृत्यु हो चुकी है तथा मैं फूट–फूट कर रो रहा हूँ। तभी मेरे कानों मे उसकी आवाज सुनायी पड़ती है। वह मुझे 'अप्पा' कह कर पुकार रहा है। मुझे ऐसा महसूस होता है जैसे यह वही आवाज है जो दिवाली के दिन सुबह मुझे सुनायी दी थी जब उसने मेडिसन (विश्कोंसिन) से हमें फोन किया था। नींद खुलने के पश्चात् भी मैंने देखा कि मेरे आँसू थम नहीं रहे हैं। अतः सुबह 4.50 बजे तक मैं ध्यान में बैठ जाता हूँ तथा मालिक से अपने पुत्र के कुशलक्षेम के लिये प्रार्थना करता हूँ। क्या यह कोई बुरा संस्कार था जो मालिक द्वारा स्वप्न के माध्यम से काट दिया गया? मेरा अनुमान तो यही कहता है।

7 नवम्बर 1979 – बुधवार

डॉन सेबोरियन तथा उनकी पत्नी जैकी विनियेग के क्रिस्टन जॉर्ज के साथ दिल्ली से विमान द्वारा रात्रि 9.40 बजे मद्रास पहुँचे। ए.एच.कृष्णा तथा मैंने हवाई अड्डे पर उनकी अगवानी की और उन्हें अपने साथ घर "गायत्री" ले आये। वे 11 नवम्बर तक अपने प्रवास के दौरान हमारे घर पर ही ठहरेंगे ।

11 नवम्बर 1979 – रविवार

डॉन सेबोरियन ने सुबह का सत्संग कराया। सिटिंग के अंतिम दस मिनट बहुत अच्छे रहे तथा इस दौरान अत्यंत गहरायी का अनुभव हुआ।

डॉन, जैकी तथा क्रिस्टन जार्ज शाम की उड़ान से सायं 7.30 बजे दिल्ली की ओर रवाना हो गये ।

15 नवम्बर 1979 – गुरुवार

मेरे स्वयं के ध्यान में मैंने अपराधिक भावना का आवेग महसूस किया। इसके पीछे ऐसा कोई भाव नहीं था लेकिन अक्सर मैं अपने आपको एक लम्बे धारदार चाकू के साथ किसी के ऊपर वार करते हुये देखता हूँ। पिछले कुछ महीनों से यदा कदा मैं स्वयं में अपराधिक प्रवृत्ति की भावना का आवेग महसूस करता हूँ लेकिन मालिक को मैंने इसके सम्बन्ध में कुछ नहीं लिखा है।

16 नवम्बर 1979 – शुक्रवार

तड़के सुबह का स्वप्न – मैं अपनी कंपनी के अध्यक्ष टी.टी. नरसिंहमन के साथ हूँ तथा वह मुझे यह जानकारी देना चाह रहे हैं कि क्यों वे सब मेरे विरुद्ध हैं। वह मुझे एक विशाल मिल के अहाते में ले जाते हैं। इसी बीच वह किसी अन्य व्यक्ति से कुछ चर्चा करते हैं तथा जब हम आफिस की ओर वापस लौट रहे होते हैं, (यह हमारे टी टी के कं. का ऑफिस नहीं है) वह एक कैन्टीन ट्राली के पास रुक जाते हैं जिस पर कुछ जूठे कप प्लेट रखे हुये हैं। वह उनमें से दो प्लेट अपने ऑफिस के लिये उठा लेते हैं तथा उनसे वह प्लेट मैं ले लेता हूँ। तत्पश्चात् वह तेजी से चहलकदमी करते हुये एक ढलावदार चढ़ाई पर चढ़ जाते हैं जिसमे कोई सीढ़ियां इत्यादि नहीं हैं बल्कि कांक्रीट की बनी हुयी एक तिरछी पगडंडी सी है। मैं भी थोड़ी मशक्कत कर उनका अनुसरण करता हूँ। ऊपरी तल पर पहुँचने पर मैं उनके कक्ष का पता नहीं लगा पाता, यद्यपि वह मुझे बुला रहे हैं तथा उनकी आवाज भी मुझे सुनाई पड़ रही है। तभी दृश्य धुंधला हो जाता है। अगले दृश्य में मैं अपने आपको उनके छोटे भाई टी.टी. वासू के साथ पाता हूँ। इस दफा भी हम किसी अन्जान से कार्यालय में हैं, यह

भी टी.टी. के का कार्यालय नहीं है। वह मुझे कुछ जानकारी देते हैं अथवा मुझसे कुछ कहते हैं जिसके कारण मैं विचलित हो जाता हूँ। मैं उनसे निवेदन करता हूँ कि वह मुझे गलत न समझें तथा मुझसे घृणा न करें। वह मुझसे कहते हैं "मैं तुम्हें बताऊँगा कि यहाँ के सब लोग तुम्हारे विरुद्ध क्यों हैं। सर्वप्रथम मैं तुम्हें कुप्पू (के. कुप्पू स्वामी) के बारे में कुछ जानकारी देना चाहता हूँ", इसी क्षण कोई व्यक्ति उनसे मिलने के लिये उनके कक्ष में प्रवेश करता है तथा मैं उनके लिये कॉफी लाने को कहकर कक्ष के बाहर आ जाता हूँ एवं बाहर बैठकर उस व्यक्ति के जाने का इंतजार करता हूँ। दृश्य धुंधला हो जाता है तथा मेरी नींद खुल जाती है।

अप्पा सुलोचना तथा मुझे आज टाडापतरी जाना था किन्तु अप्पा को चक्कर आने की वजह से तथा मेरे कार्यालय की समस्या के कारण मैंने आज का कार्यक्रम निरस्त कर दिया।

20 नवम्बर 1979– मंगलवार

तड़के सुबह का स्वप्न – मैं एक अन्जानी सी जगह पर एक इमारत में हूँ। वहाँ पर और भी व्यक्ति हैं। तभी अचानक वर्दी पहने अधिकारियों का एक दल तलाशी के लिये वहाँ पहुँचता है, मैं अत्यंत चिंतित हो जाता हूँ। अगले दृश्य में, मैं किसी अन्य स्थान पर किसी के घर में हूँ तभी श्री वी. नटराज अय्यर (स्वामी नाथन के स्वसुर) सड़क पर चहल कदमी करते हुए वहाँ पहुँचते है तथा मेरा अभिवादन करते हैं। वे मुझे एक इमारत के अंदर ले जाते हैं। अन्दर पहुँचकर वे एक कक्ष का द्वार खोलकर मेरे साथ उस कक्ष में प्रवेश करते हैं ताकि हमें एकांत प्राप्त हो सके क्योंकि वहाँ पर अन्य व्यक्ति भी मौजूद हैं। लेकिन कमरे में कुछ महिलायें कपड़े बदल रही होती हैं, अतः वह कमरे से वापस लौट आते हैं। अगले दृश्य में मैं मालिक तथा एक अन्य अभ्यासी के साथ ट्रेन में हूँ। अभ्यासी मालिक की बगल में बैठा है और मैं मालिक से थोड़ा दूरी पर हूँ। मालिक मेरी ओर देखकर अपने बगल वाली सीट पर हथेली से थपथपाकर मुझे इशारा करते हैं तथा मुझसे कहते हैं "आकर यहाँ बैठ जाओ तुम्हारे दूर होने के कारण मैं तुमसे बात नहीं कर पा रहा हूँ", मैं जाकर उनके

बगल वाली सीट पर बैठ जाता हूँ। जब मैं नजरें उठाकर सामने की ओर देखता हूँ तो पाता हूँ कि मेरे समक्ष एक लम्बे कद का नवयुवक खड़ा हुआ है। वह कहता है "मैं मालिक के लिये कार लेकर आया हूँ", प्रत्यक्षतः हम अपने गंतव्य पर पहुँच चुके हैं। कार एक सर्वसुविधायुक्त, मिनी बस है इसमें बैठकर हम अपने गंतव्य स्थल पर पहुँचते हैं। यहाँ पहुँचने पर मेरी दृष्टि एक तिरछी ढलावदार, लोहे की बनी सीढ़ियों पर पड़ती है जिस पर मुझे चढ़ना है जो बड़ी मेहनत तथा कठिनाई का काम है। सौभाग्य से सीढ़ियों में पकड़ने के लिये यहाँ वहाँ कुछ हुक बड़ी बेढंगे तरह से लगे हुये हैं। गुलबर्गा का एक अभ्यासी बी.एस.हेबल सीढ़ियां चढ़ने में मेरी सहायता करता है। सीढ़ियां चढ़कर मैं एक सजे–धजे सर्वसुविधायुक्त कक्ष में पहुँचता हूँ तथा देखता हूँ कि मालिक अपने पलंग पर बैठे हुये हैं। स्वप्न समाप्त हो जाता है।

29 नवम्बर 1979 – गुरुवार

विगत सारा सप्ताह मैंने कार्यालय मे मेरी अनिश्चित स्थिति के कारण अत्यन्त तनाव में व्यतीत किया जिसका मेरे स्वास्थ्य पर बुरा असर पड़ रहा है तथा मुझे उम्मीद है कि यह समस्या किसी भी तरह मालिक की कृपा से शीघ्र ही सुलझ जायेगी।

1 दिसम्बर 1979 – शनिवार

तड़के सुबह का स्वप्न – मैं एक पुरानी खंडहरनुमा इमारत के एक बड़े से हॉल में हूँ। यह किसी बड़े मंदिर के हॉल जैसा दिख रहा है। वस्तुतः यहाँ पर मिशन की कोई बैठक आयोजित की गयी है। बहुत से व्यक्ति भी यहाँ पर मौजूद हैं, सभी पंक्तिबद्ध बैठे हुये हैं तथा भोजन परोसने की तैयारी चल रही है। इसी समय मालिक कुछ व्यक्तियों के साथ हॉल में प्रवेश करते हैं तथा पंक्तिबद्ध बैठे व्यक्तियों के बगल से चहल कदमी करते हुये लगभग दस गज की दूरी पर जाकर अपनी कुर्सी पर बैठ जाते हैं। मैं भोजन करने में व्यस्त हूँ तभी यकायक मेरा ध्यान मेरे बैज की ओर जाता है। मैं देखता हूँ मैंने बैज नहीं लगाया है, मैं उठ खड़ा होता हूँ और जिस स्थान पर मैं बैठा था उसके समीप से बह रही नहर अथवा

छोटी सी नदी में अपने हाथ धोकर अपने बैग में से बैज निकालकर लगा लेता हूँ। अगले दृश्य में मैं किसी तालाब अथवा झील में छाती तक गहरे पानी में चहल कदमी कर रहा हूँ कि अचानक मेरा बैज गुम हो जाता है। समीप ही बैठी कुछ लड़कियाँ मेरी ओर देखकर ठिठोली करती हैं। मैं कुछ कदम पीछे की ओर जाकर देखता हूँ कि मेरा बैज झील की तलहटी में पड़ा हुआ है। मैं इसे उठाकर लगा लेता हूँ। अगले दृश्य में मैं किसी शौचालय की तलाश में हूँ, तभी आर.रामचन्द्र रेड्डी मेरी ओर देखकर एक शौचालय की ओर इशारा करते हैं। जैसे ही मैं द्वार खोलता हूँ तो देखता हूँ कि अन्दर दो शौचालय बने हुये हैं लेकिन वहाँ बहुत भीड़ है। अतः मैं अपने रास्ते पर आगे बढ़ जाता हूँ तथा स्वयं को एक नदी के किनारे किसी ऊँचाई वाली जगह पर पाता हूँ। वहाँ पर कुछ लड़के मौजूद हैं जो मुझसे बदतमीजी से पेश आते हैं लेकिन मैं उन्हें कुछ भी नहीं कहता तथा शान्त बना रहता हूँ। स्वप्न समाप्त हो जाता है।

3 दिसम्बर 1979 – सोमवार

बहन कस्तूरी का दिनांक 27 नवम्बर 1979 का लिखा पत्र मुझे आज प्राप्त हुआ। पत्र में उन्होंने मेरी आध्यात्मिक स्थिति का उल्लेख किया है तथा लिखा है "भाई तुम बड़े धन्य हो क्योंकि श्री बाबूजी के विचार हमेशा तुम में लय रहते है एवं वे ही परम हैं तथा व्यापक रूप से चारों ओर विद्यमान हैं। ऐसी स्थिति में तुम्हें केवल विचारों मात्र से ही उनमें लय नहीं होना है अपितु तुम्हें पूर्णरूपेण उनमें विलय होना होगा। यदि तुम मात्र विचारों से उनमें विलय होने की अपेक्षा वास्तविक रूप से अपने आपको उनमें पूर्णरूपेण लय कर लेते हो तो तुम्हारा ज्यादा समय व्यर्थ नहीं होगा। तुम हमेशा उदास रहते हो जिसका कारण यह है कि उनके स्मरण की स्थिति तुम्हारे अंदर लय हो चुकी है जो पार्थसारथी को पूर्णता में अपनी ओर आकर्षित करती है तथा जब भी इसमें कुछ कमी रह जाती है तो इसके परिणामवश मन में उदासीनता की अवस्था पैदा होती है। दूसरी बात यह है कि दुःखी होना त्याग की भावना का लक्षण है तथा तुम्हारे अन्दर दोनों ही स्थितियाँ विद्यमान हैं।"

8 दिसम्बर 1979 – शनिवार

सुबह 6.00 बजे – कौवई एक्सप्रेस से मद्रास से सलेम के लिये प्रस्थान किया। एस.के.मोहन, वी.एस.नारायनन, जे.विश्वनाथन्, जे.श्रीनिवासन, एस.नारायण स्वामी, टी.एस.राजाराम, प्रशिक्षक के. महालिंगम तथा बहन एस.वत्सला भी मेरे साथ थे। ट्रेन रवाना होने ही वाली थी कि अचानक मेरे सामने वाली सीट के ऊपर सामान रखने वाली रैक पर पड़ा हुआ एक बैग नीचे गिरा और टूट गया। इसमें पड़ी शीशी में रखा कुमकुम छिटक कर मेरे दोनो पैरों पर गिर गया। इस पर नारायण स्वामी बोले "यह अच्छे मुर्हत का संकेत है जो यह प्रदर्शित करता है कि एक दिन सभी को तुम्हारे समक्ष नतमस्तक होना पड़ेगा तथा इससे इस बात का भी संकेत मिलता है कि तुम्हारे भविष्य में कोई बड़ा तथा महत्वपूर्ण बदलाव होने की सम्भावना है।"

सुबह 10.30 बजे हम सलेम पहुँच गये तथा स्टेशन से सीधे वसावी महल पहुँचे जहाँ पर जे.आर.दोरेस्वामी अय्यर की अध्यक्षता में मिशन की एक बैठक चल रही थी। बैठक में प्रशिक्षक एस.रंगानायकी (तिरुपति) एम. बैंकट सुबैया (येरागुन्टला) आर. वेंकटाराम (कोयम्बटूर), जे.आर. दोरेस्वामी अय्यर तथा डब्लयू.एच.श्रीनिवासन (मदुरई), के. सुब्रामनियम तथा के.आर. सुब्रामनियम (त्रिची) एवं के.महालिंगम (मद्रास) उपस्थित थे।

शाम 5.00 बजे – मैंने सायंकालीन सामूहिक सत्संग कराया। उपस्थित लगभग एक सौ पचास अभ्यासियों में मद्रास के दस, चित्तूर के दो, कडप्पा के तीन, कोयम्बटूर के दो, येरागुन्टला का एक, तिरुपति का एक, कोलेगल के तीन, बैंगलोर के बाइस, तिरुपुर के बाईस, मदुरई के सोलह, त्रिची के सात तथा राजपलायम के पाँच अभ्यासी थे।

शाम 6.30 बजे – एक सार्वजनिक बैठक आयोजित की गयी थी जिसमें बहन रंगानायकी, एस.नारायण स्वामी, स्वयं मैं और पी.पलानीअप्पन ने क्रमवार अपना वक्तव्य दिया। बैठक रात्रि 9.00 बजे समाप्त हुयी और अच्छी रही। रात्रि भोजन के पश्चात् पूज्य मालिक की एक स्लाइड दिखायी गयी।

9 दिसम्बर 1979–रविवार

सुबह 7:30 बजे – सामूहिक सतसंग कराया, सिटिंग चालीस मिनिट तक चली। तत्पश्चात् बीस मिनट तक मैंने अपने विचार व्यक्त किये। नाश्ते के उपरान्त कुछ अभ्यासियों ने भी अपने विचार व्यक्त किये। दोपहर के भोजन के साथ कार्यक्रम समाप्त हो गया।

शाम 7:00 बजे – हमारे मद्रास के दल ने श्री करुप्पुस्वामी चेट्टियार के निवास पर रात्रि का भोज किया जिसके पश्चात् हमने यरकॉड एक्सप्रेस से रात्रि 10:10 बजे मद्रास की ओर प्रस्थान किया।

कोयम्बटूर के एक जाने माने ज्योतिशज्ञ श्री वी. कंडास्वामी नाइकर जो कुछ माह पूर्व ही अभ्यासी बने हैं, भी इस समारोह में उपस्थित थे तथा उनसे यह मेरी पहली मुलाकात थी । उन्होंने मेरे बारे में भविष्य वाणी करते हुए कहा कि,

1. मैं टी टी के एण्ड कम्पनी में अपने सेवाकाल के समाप्त होने तक बिना अपना पद तथा प्रतिष्ठा गँवाये नौकरी पर बना रहूँगा, लेकिन वर्ष 1980 के दौरान मैं किसी भी समय यांत्रिकी (इंजीनियरिंग) अथवा इलेक्ट्रॉनिक क्षेत्र में अपने स्वयं का व्यवसाय प्रारम्भ कर सकता हूँ।
2. मैं मालिक का प्रतिनिधित्व करुँगा तथा एस. आर. सी. एम. का अध्यक्ष बनूँगा।
3. मेरी कुल आयु 97 वर्ष की होगी।
4. मानवता के उत्थान के लिये मुझे आध्यात्मिक तथा भौतिक दोनों ही क्षेत्रों में अत्यन्त परिश्रम करना पड़ेगा ।

10 दिसम्बर 1979 – सोमवार

सुबह 7:05 बजे हम मद्रास पहुँचे। ट्रेन में सारी रात मैं सिरदर्द के कारण परेशान रहा, इस दौरान मुझे तीन बार उल्टी भी हुयी। घर पहुँचने के उपरान्त मेरी हालत और बिगड़ गयी, इस कारण मैं कार्यालय नहीं जा सका।

सुलोचना ने मुझसे कहा कि मैं अनुमान लगाकर उसे बताऊँ कि कल का सत्संग किसके द्वारा कराया गया होगा ? मैंने उसे अनुमान लगाकर तीन नाम बताये लेकिन तीनों ही मर्तबा मेरा अनुमान गलत

निकला। वास्तव में श्री आर. शेषाद्रि सत्संग में उपस्थित हुये थे, उन्होंने सुलोचना को बताया कि वह सेवामुक्त हो चुके हैं तथा उन्होंने अपना समय मिशन के कार्यों हेतु देने का निर्णय किया है। अप्पा ने उनसे सत्संग कराने के लिये आग्रह किया जिसे उन्होंने सहजता से स्वीकार कर लिया। वह पिछले चार वर्षों से मिशन के बाहर थे तथा उन्होंने बताया कि इस दौरान वह पुट्टपर्ती के श्री सत्य सांईबाबा के सम्पर्क में थे। मालिक का कार्य भी अद्भुत है लेकिन इसका परिणाम हमारे समक्ष समय आने पर ही प्रगट होता है जिससे उनकी दिव्यता की गहरायी का अनुमान लगाया जा सकता है। मालिक श्री शेषाद्रि के कारण अत्यंत दुःखी थे। उन्हें इस बात से गहरी ठेस पहुँची थी क्योंकि उन्होंने श्री शेषाद्रि पर बहुत अधिक कार्य किया था जो व्यर्थ जा रहा था। अतः शेषाद्रि की वापसी से वे अत्यंत प्रसन्न हुये होंगे।

17 दिसम्बर 1979 – सोमवार

ईश्वर सहाय की श्रेष्ठ कृति "ए पीप इन टू सहज मार्ग" के तृतीय संस्करण जिसकी छपाई का कार्य जी. एस. प्रेस में हुआ है, की 1000 प्रतियाँ आज प्राप्त हुयीं।

22 दिसम्बर 1979 – शनिवार

मैंने आज शाम 4:30 बजे मद्रास–अहमदाबाद एक्सप्रेस से एस. के. मोहन, एम. रवि कुमार, वी. एस. नारायणन, आर. जी विश्वनाथन, जे. विश्वनाथन के साथ खम्मम की ओर प्रस्थान किया। हम सभी पालवानचा में अपने नवनिर्मित आश्रम के उद्घाटन तथा मालिक के जन्मोत्सव समारोह के कार्यक्रम में सम्मिलित होने के लिये जा रहे हैं।

23 दिसम्बर 1979 – रविवार (पालवानचा)

हम सुबह 3:00 बजे खम्मम पहुँचे। मनुगुरु के प्रशिक्षक भाई श्री सी. एस.चारी ने तीन अन्य अभ्यासियों के साथ हमारी अगवानी की। वहाँ से हम महिन्द्रा वैन में सवार होकर 90 कि.मी. दूर स्थित पालवानचा पहुँचे। 90 कि.मी. की यात्रा में हमें एक घंटे चालीस मिनट का समय लगा। पालवानचा में एक खाली फ्लैट में हमारे ठहरने की व्यवस्था की गयी थी।

श्री मार्टिन के निवास पर सुबह का नाश्ता किया। उसके पश्चात् मैंने सुबह 8.00 बजे सत्संग कराया जिसमें लगभग साठ अभ्यासी उपस्थित थे। सत्संग के पश्चात हम आश्रम पहुँचे। आश्रम में निर्माण कार्य उत्तम दर्जे का हुआ था जिसका श्रेय प्रभारी प्रशिक्षक श्री तन्डरा कृष्णाराव तथा उनके साथी अभ्यासियों के प्रेम और समर्पणयुक्त प्रयासों को जाता है।

जैसाकि अक्सर होता है, उसी तरह इस बार भी पालवानचा पहुँचने वालों में हम पहले क्रम पर थे । अन्य केन्द्रों के अभ्यासियों के आज शाम को अथवा रात में पहुँचने की सम्भावना थी। कुछेक अभ्यासियों के तो कल तक यहाँ पहुँचने की संभावना थी। श्री मार्टिन के निवास पर हमने दोपहर का भोजन किया, भोजन अत्यंत स्वादिष्ट था ।

शाम 6.30 बजे – सायंकालीन सत्संग श्री मार्टिन के निवास पर कराया। इसमें लगभग एक सौ अभ्यासी उपस्थित थे । सिटिंग अच्छी रही।

24 दिसंबर 1979– सोमवार

सुबह 8.30 बजे – मैंने फीता काटकर पालवानचा के आश्रम का विधिवत उद्घाटन किया। यह सब मेरे द्वारा मालिक की पूर्व अनुमति से किया गया। उनके द्वारा इस आश्रम के उद्घाटन की जिम्मेदारी मुझे सौंपी गयी थी। तत्पश्चात् मैंने सुबह 9.00 बजे सामूहिक सत्संग कराया। उपस्थित एक सौ पच्चास अभ्यासियों में हैदराबाद के पच्चीस, बेलमपल्ली के बीस, करीमनगर के दस,रामागुण्डम से आठ के अलावा गुन्टूर,गोदावरी खानी, नागार्जुनासागर के भी अभ्यासी उपस्थित थे। विजयवाड़ा के अभ्यासियों का उपस्थित न होना आश्चर्य का विषय था। सिटिंग चालीस मिनट चली जिसके उपरान्त मैंने बीस मिनट तक उन्हें सम्बोधित किया। मेरे उपरान्त वक्ताओं में एन. कुमारास्वामी, आर. महेन्दरकर (हैदराबाद) मुख्य थे। सुबह का सत्र बहुत अच्छा रहा तथा 10.30 बजे तक चला। सत्र के प्रारम्भ से लेकर अन्त तक मालिक की उपस्थिति का आभास बना रहा।

शाम 4.00 बजे– प्रशिक्षकों की एक बैठक आयोजित की गयी थी जिसमें हैदराबाद के एन. कुमारास्वामी तथा आर.एन.महेन्द्रकर, पालवानचा के टी. कृष्णाराव, कोथागुडे के डी. वी. पी. रामाराव, बेलमपल्ली के डी.

राधाकृष्णाराव, तथा मनुगुरू के सी.एस.चारी उपस्थित थे। बैठक में सभी ने माँग कि प्रशिक्षकों की संख्या बढ़ायी जाय विशेषतौर पर करीमनगर जैसे केन्द्रों के लिये जहाँ पर कोई प्रशिक्षक उपलब्ध नहीं था। मैंने उन्हें बताया कि वर्तमान में जितने भी प्रशिक्षक हैं, मालिक उनमें से अधिकतर से अप्रसन्न हैं। मालिक का कहना है कि वे लेशमात्र भी अपने कार्य के प्रति जिम्मेदार नहीं हैं, अतः मालिक के मतानुसार नये प्रशिक्षक बनाने की कोई उपयोगिता नहीं है। मालिक ने इसके प्रति स्पष्ट रूप से अपनी अनिच्छा प्रकट की है और मुझे निर्देशित किया है कि मैं किसी को भी अग्रिम अनुमति न दूँ।

शाम 5.00 बजे – श्री एन.कुमारास्वामी ने सायंकालीन सामूहिक सत्संग कराया। सिटिंग चालीस मिनट चली।

शाम 6.00 बजे एक सार्वजनिक बैठक आयोजित की गयी थी जिसमें मैंने श्रोताओं के समक्ष अपने विचार व्यक्त किये। तत्पश्चात् एन. कुमारास्वामी और डी.राधाकृष्णाराव ने अपने विचार व्यक्त किये। रात्रि भोजन के पश्चात् पूज्य मालिक की स्लाइड परदे पर दिखायी गयी जिसका जनसमूह ने भरपूर आनन्द लिया । कार्यक्रम का समापन रात्रि 10.30 बजे हुआ।

मुझे रात्रि 11.00 बजे से ही सिर में तेज दर्द प्रारम्भ हो गया था। इस दौरान सुबह 4.00 बजे मुझे उल्टी भी हुयी। दर्द मस्तिष्क के अलग अलग हिस्सों में केन्द्रित था। इसके कारण सुबह 4.30 बजे ही मेरी नींद लग पायी।

25 दिसंबर 1979 – मंगलवार

मेरी अस्वस्थता के कारण न तो मैं सुबह 8.00 बजे सत्संग में उपस्थित हो सका और न ही मैं भाई सी.एस.चारी के साथ मनुगुरू ही जा सका, जैसाकि कल हमारे बीच तय हुआ था। सुबह 9.00 बजे के पश्चात् मेरी नींद खुली मैंने, हल्का नाश्ता किया और स्थानीय प्रमुख व्यक्तियों से मुलाकात की जो सहज मार्ग के बारे में रुचि रखते थे और इसके सम्बन्ध में जानकारी चाहते थे।

दोपहर 2.00 बजे टी. कृष्णाराव के निवास पर दोपहर का भोजन किया। हम श्री सी.एस.चारी की महेन्द्रा वैन में सवार होकर शाम 5.30 बजे पालवानचा से रवाना हुये और शाम 7.30 बजे खम्मम पहुँचे। खम्मम से हमने हैदराबाद–मद्रास एक्सप्रेस ट्रेन से रात्रि 9.00 बजे प्रस्थान किया। भाई चारी हमारी ट्रेन के चलने तक हमारे साथ ही रहे, तत्पश्चात् वे मनुगुरू की ओर रवाना हुये जो वहाँ से 160 किलोमीटर दूरी पर स्थित था। हमारी यात्रा सार्थक और अच्छी रही ।

31 दिसंबर 1979 – सोमवार

आज तक मैंने पूज्य मालिक की रंगीन स्लाइड के चालीस सेट उन दान कर्ताओं को दिये हैं जो स्वेच्छा से 250 रुपये अथवा उससे अधिक राशि का दान मिशन को दे रहे हैं। प्रत्येक सेट में लगभग 252 स्लाइड हैं। इसके अच्छे परिणाम सामने आये हैं और मिशन के अधिकतर बड़े केन्द्रों और अनेक छोटे केन्द्रों के पास भी यह सेट उपलब्ध हैं।

1980

1 जनवरी 1980 – मंगलवार

आज एक नये वर्ष का शुभारम्भ हुआ है। इसके साथ ही टी.टी. कृष्णामचारी एण्ड कंपनी के साथ मेरे सेवाकाल का छब्बीसवाँ वर्ष भी प्रारम्भ हुआ।

8 जनवरी 1980 – मंगलवार

हॉलैण्ड के आंद्रे रोमबॉट तथा उसके एक मित्र फ्रॉक अलीदे पोरथॉस शाम 5.00 बजे जी.टी.एक्सप्रेस से दिल्ली से मद्रास पहुँचे । ट्रेन पाँच घंटे विलम्ब से यहाँ पहुँची थी। आंद्रे ने बताया कि शाहजहाँपुर में उनकी मुलाकात म्यूनिख के डॉ. कॉर्ल गुचे से हुयी थी। कॉर्ल को मालिक के चिकित्सकीय परीक्षण के दौरान उनके उदर में एक ट्यूमर का पता चला है तथा आंद्रे ने यह भी बताया कि कॉर्ल इस बात से अत्याधिक चिंतित थे कि यह घातक भी हो सकता है। यद्यपि वह कैन्सर जैसी किसी भी सम्भावना से इन्कार कर रहा था। कार्ल ने आंद्रे को बताया कि इसकी सम्पूर्ण ज़ाँच यूरोप में होगी तथा यदि आवश्यकता पड़ी तो मालिक ने इसकी शल्य चिकित्सा के लिये भी अपनी सहमति दे दी है। इससे पूर्व मुझे कभी भी यह जानकारी नहीं हो पायी कि मालिक को ट्यूमर है। मैं उनके अच्छे स्वास्थ्य तथा दीर्घायु होने के लिये प्रार्थना करता हूँ।

9 जनवरी 1980 – बुधवार

अप्पा ने आज सुबह 7.35 बजे वृन्दांवन एक्सप्रेस से बैंगलोर की ओर प्रस्थान किया।

10 जनवरी 1980 – गुरुवार

हैंस गैंगलोफ ने अप्पा को भेजे गये पत्र में इस बात का खुलासा किया कि ट्यूमर मालिक के आमाशय के बाहर है। उन्होंने लिखा था कि गहन चिकित्सीय परीक्षण के उपरान्त ही यह पता चल सकेगा की ट्यूमर कैन्सर का है अथवा सामान्य। उन्होंने पत्र में यह भी जानकारी दी थी कि

मालिक इस वर्ष मई–जून के महीने में यूरोप की यात्रा के लिये सहमत हो गये हैं तथा इस दौरान उनका प्रवास केवल कोपेनहेगन तथा म्यूनिख में ही रहेगा।

12 जनवरी 1980 – शनिवार

तड़के सुबह का स्वप्न– बहुत से व्यक्ति जिनमें पुरुष तथा महिलायें दोनों ही सम्मिलित हैं, एक हॉल में मेरे अध्यक्ष टी.टी. नरसिंहमन की अगवानी के लिये एकत्रित हैं। मैं एक दीवार के साथ सटकर खड़ा हूँ तभी उनकी एक महिला रिश्तेदार मुझे धकेलकर एक तरफ कर देती है। मेरा अनुमान है कि वे पधार चुके हैं लेकिन जहाँ मैं खडा हूँ वहाँ से मेरी नजर उन तक नहीं पहुँच रही है । उन्हें बहुत से लोग घेर कर खड़े हुये हैं। जो मुझसे परिचित हैं वे मेरा अभिवादन करते हैं तथा ग़ेरी ओर इशारा कर मुझे बुलाते हैं। मैं नरसिंहमन के अभिवादन के लिये उनकी कुर्सी के समीप पहुँचता हूँ लेकिन उससे पूर्व मैं एक चाबी की तलाश कर एक कमरे को खोलकर उसमें प्रवेश करता हूँ तथा देखता हूँ कि मालिक एक कुर्सी पर बैठे हुये हैं। मालिक मुझसे कहते हैं "मुझे शीघ्र डॉक्टर के पास ले चलो। लेकिन पहले मुझे दाँतों की सफायी करनी है", अतः मैं उनका टूथ ब्रश इत्यादि लेने जाता हूँ तथा अपने आपको एक ऊँचाई वाले स्थान पर खड़ा पाता हूँ जहाँ से नीचे की ओर देख रहा हूँ, तथा इस पशोपेश में हूँ कि मैं किस ओर जाऊँ क्योंकि न तो वहाँ कोई सिढ़ियाँ हैं और न ही कहीं कोई मार्ग मुझे नजर आ रहा है। अतः मुझे कूदते हुये नीचे उतरना पड़ेगा। एक लड़का मुझे किस तरह कूदना है, इसके बारे में जानकारी देता है, तभी मेरी नींद खुल जाती है। इस समय घड़ी में सुबह के 5.50 बज रहे होते हैं।

आज आंद्रे रोमबॉट को हॉलैण्ड में मिशन के सचिव के पद पर नियुक्ति के लिये पत्र जारी किया। वह तथा फ्रॉक कल दिल्ली के लिये रवाना हो रहे हैं।

16 जनवरी 1980 – बुधवार

सुलोचना, मेरा साला टी. टी. जगन्नाथन, पच्चीस अन्य अभ्यासी तथा मैंने आज शाम 7.10 बजे ग्रांड ट्रंक एक्सप्रेस से दिल्ली की ओर

प्रस्थान किया जहाँ से हम बसंत पंचमी के उत्सव समारोह के लिये शाहजहाँपुर जायेंगे।

18 जनवरी 1980 – शुक्रवार

निर्धारित समय से आधा घंटा विलम्ब से सुबह 8.45 बजे हम न्यू दिल्ली स्टेशन पहुँचे तथा दोपहर तक स्टेशन पर ही रहे एवं दोपहर 1.55 बजे हम काशी विश्वनाथ एक्सप्रेस से शाहजहाँपुर की ओर रवाना होकर रात्रि 8.00 बजे शाहजहाँपुर पहुँच गये। भाई काशीराम अग्रवाल ने स्टेशन पर हमारी अगवानी की तथा स्टेशन से हम बस में सवार होकर आश्रम पहुँचे। क्रिस्टिन लैंगस्टाफ (कनाडा) विबे तथा फ्लेमिंग रीस (डेनमार्क) एनी मेरी वेन स्टीवन (हॉलैण्ड), जैंस क्लासन तथा यूरोप से अन्यलोग पहले ही यहाँ पहुँच चुके थे।

19 जनवरी 1980 – शनिवार

सुबह 7:00 बजे – आश्रम के ध्यान कक्ष में सामूहिक सत्संग कराया। साठ अभ्यासी उपस्थित थे। सिंटिग बहुत अच्छी रही।

पूज्य मालिक शाम 4:00 बजे आश्रम पधारे तथा आधे घंटे वहीं रहे। वे अत्यन्त प्रसन्न लग रहे थे तथा इस दौरान हमने उनकी उपस्थिति का भरपूर आनन्द लिया।

20 जनवरी 1980 – रविवार

मैंने सुबह 7.00 बजे सामूहिक सत्संग कराया जिसमें लगभग चार सौ पचास से पाँच सौ के बीच अभ्यासी उपस्थित थे। सिटिंग चालीस मिनट चली तथा बहुत अच्छी रही।

मैंने शाम 6.40 बजे सायंकालीन सामूहिक सत्संग कराया। हॉल अभ्यासियों से खचाखच भरा हुआ था। सिटिंग चालीस मिनट चली तथा बहुत अच्छी रही।

मालिक ने एच.एम. सबनिश तथा उनकी पत्नी ऊषा सबनिश को आज रात्रि 10.00 बजे अपने निवास पर दीक्षा प्रदान की।

21 जनवरी 1980– सोमवार

सुबह 6.30 बजे – पूज्य मालिक ने बसंत पंचमी उत्सव समारोह

के कार्यक्रम का शुभारम्भ हॉल में प्रथम सिटिंग देकर किया । सिटिंग पैंतीस मिनट चली तथा बहुत अच्छी रही । सिटिंग के दौरान मैंने अत्यंत गहरायी का अनुभव किया तथा मेरी गर्दन बारम्बार मेरे बाँयी ओर लुढ़क रही थी।

सुबह 10.00 बजे मैं दिल्ली केन्द्र के अभ्यासियों की एक बैठक में उपस्थित हुआ जो 30 अप्रैल के मालिक के जन्मोत्सव कार्यक्रम की व्यवस्था पर चर्चा करने के लिये आयोजित की गयी थी।

सुबह 11.00 बजे – बैंगलोर केन्द्र की वित्त व्यवस्था तथा आश्रम निर्माण के सम्बन्ध में एक बैठक आयोजित की गयी जिसमें बैंगलोर के अभ्यासी उपस्थित थे ।

दोपहर 2.00 बजे – मिशन की कार्यकारिणी समिति की बैठक शाम 4.45 बजे तक चली ।

शाम 6.30 बजे मालिक के निर्देशानुसार मैंने हॉल में सायंकालीन सामूहिक सत्संग कराया। सिटिंग पचास मिनट चली तथा बहुत अच्छी रही । देर रात तक मैं कार्य में व्यस्त रहा।

22 जनवरी 1980 – मंगलवार

आज बसंत पंचमी का दिन है।

सुबह 6.30 बजे मालिक ने मात्र पैंतीस मिनट के लिये सत्संग कराया। उनमें अब एक घंटे की सिटिंग देने की क्षमता नहीं रही है जैसाकि पूर्व के वर्षों में वे अक्सर दिया करते थे । इसके बावजूद वे कवितागायन एवं व्याख्यान इत्यादि के कार्यक्रम में सुबह 9.30 बजे तक उपस्थित रहे। मैं आज दोपहर भोजन तक अभ्यासियों के विभिन्न समूहों से बैठक करने में व्यस्त रहा।

विजयवाड़ा के दो अभ्यासी श्री के. वी. सुब्बाराव तथा श्री सत्यनारायण ने पालवानचा के एक अन्य अभ्यासी श्री कृष्णार्नुजन राव के साथ मुझसे सम्पर्क किया । वे सत्तर शौचालय तथा सत्तर स्नानगृह का निर्माण मय बोरवेल पम्प, ओवर हेड टैंक इत्यादि के साथ करने का प्रस्ताव लेकर आये थे जिस पर कुल लगभग ढाई लाख रुपये की लागत अनुमानित थी । मैंने

उन्हें अपना प्रस्ताव लिखित में देने का आग्रह किया तथा प्रस्ताव में इसका भी उल्लेख करने को कहा कि खर्च अधिक होने के कारण कार्य बाधित होने अथवा शौचालयों की संख्या में कमी करने इत्यादि की कोई शर्त मान्य नहीं होगी । तत्पश्चात् इस प्रस्ताव पर मैंने मालिक से अनुमोदन प्राप्त किया।

दोपहर 3.00 बजे से आधे घंटे तक प्रशिक्षकों की बैठक हुयी जिसमें मालिक उपस्थित नहीं थे।

रात्रि 8.45 बजे – मालिक के आदेश पर प्रशिक्षकों की बैठक पुनः आयोजित की गयी जिसमें उनके सचिव जे. आर. के. रायजादा ने अंग्रेजी में कुछ नये निर्देश तथा मार्ग निर्देशिका के सम्बन्ध में जानकारी दी जिसका गुण्डेराव द्वारा हिन्दी में अनुवाद किया किया ।

विदेश से आये अभ्यासियों के साथ मैं देर रात तक व्यस्त रहा।

23 जनवरी 1980 – बुधवार

सुबह 6.30 बजे – मालिक द्वारा बसंत समारोह की अंतिम सिटिंग दी गयी जो चालीस तक मिनट चली तथा बहुत अच्छी रही। तत्पश्चात् "आफताबे मारफत" का गायन हुआ जिससे मैं भावविहोर हो गया तथा मेरी आँखों से बरबस ही आँसू छलक पड़े। अक्सर ही मेरे साथ ऐसा हो जाता है जब मैं अपने आवेग पर काबू नहीं रख पाता। नाश्ते के पश्चात् अभ्यासियों की रवानगी प्रारम्भ हो गयी तथा सुबह 11.00 बजे तक मात्र दो सौ पचास अभ्यासी ही परिसर में बाकी रह गये थे। मालिक आज शाम को 4.00 बजे अपने घर के लिये प्रस्थान करने वाले थे किन्तु वे विनम्रता पूर्वक आग्रह करने पर अगले दिन के प्रस्थान के लिये राजी हो गये।

सुबह 10.00 बजे – मालिक द्वारा एस. काली मोहन तथा वी. एस. नारायनन (मद्रास) को दीक्षा प्रदान की गयी।

रात्रि 9.00 बजे मालिक द्वारा सत्यप्रकाश कुलश्रेष्ठ और कृष्णा स्वरूप निगम को दीक्षा प्रदान की गयी ।

दिन में मैंने मालिक से पी.के., पी.एन. तथा आर.एल. की तिकड़ी द्वारा दक्षिण भारतीयों के विरुद्ध उत्पन्न किये जा रहे घृणा के वातावरण

के सम्बन्ध में विस्तार से एकांत में चर्चा की । मालिक ने कहा उन्हें मिशन के मसलों को व्यवस्थित रूप से सुलझाने के लिये थोड़े वक्त की आवश्यकता है

सुबह 6.30 बजे – मैंने आश्रम में सुबह का सत्संग कराया। सुबह 10.00 बजे पूज्य मालिक ने कलकत्ता के रमनलाल मिमानी को पूर्ण अनुमति प्रदान की तथा मालिक दोपहर 2.30 बजे अपने निवास की ओर रवाना हो गये।

शाम 5.30 बजे – मैंने आश्रम में सत्संग कराया जिसमें लगभग एक सौ पचास अभ्यासी जो अभी भी यहाँ मौजूद थे, उपस्थित हुये। सिटिंग तीस मिनट चली और बहुत अच्छी रही।

25 जनवरी 1980 – शुक्रवार

मालिक सुबह 9.30 बजे कुछ अन्य अधिकारियों के साथ आश्रम पधारे, उन्हें चायपान कराया गया, तत्पश्चात् उनके द्वारा आश्रम परिसर का निरीक्षण किया गया। मालिक अधिकारियों के रवाना होने के शीघ्र उपरान्त घर वापस लौट गये।

शाम 5.30 बजे– मैंने शाम का सत्संग कराया।

26 जनवरी 1980– शनिवार

हम सुबह 10.00 बजे मालिक के निवास पर पहुँचे जहाँ जैंस क्लॉसन और मैंने उनके साथ चर्चा कर उनके आगामी यूरोप के दौरे के कार्यक्रम को अंतिम रूप प्रदान किया । इस कार्यक्रम के अनुसार मालिक का कोपेनहेगन में दस दिवस का प्रवास, बारह से अठारह दिवस का प्रवास म्यूनिख में तथा स्वदेश वापस लौटने से पूर्व पुनः एक सप्ताह का प्रवास कोपेनहेगन में रखा गया । दिल्ली से प्रस्थान की तिथि 2 मई निर्धारित की गयी।

दोपहर में हम आश्रम वापस लौट आये । मालिक शाम 4.00 बजे आश्रम पधारे तथा शाम 5.30 बजे तक आश्रम में ही रहे ।

मद्रास के तेरह अभ्यासियों का हमारा दल देर रात्रि में लखनऊ मेल से दिल्ली की ओर रवाना हुआ ।

27 जनवरी 1980 – रविवार (दिल्ली)

सुबह 7.30 बजे हम दिल्ली पहुँच गये। भाई रामशरण चोपड़ा ने

स्टेशन पर हमारी अगवानी की तथा हमें अपने साथ अपने निवास पर ले गये जहाँ पर स्नानादि करने के पश्चात् हमने नाश्ता किया ।

सुबह 9.00 बजे – बसंत विहार में एम.एस. सुन्दरा के निवास पर सत्संग कराया। इसके पश्चात् आगामी 30 अप्रैल के मालिक के जन्मोत्सव समारोह कार्यक्रम के आयोजन के सम्बन्ध में रखी गयी बैठक में भाग लिया । तत्पश्चात् स्थल निरीक्षण के लिये वे मुझे भारत स्काउट कैंपिंग ग्राउंड ले गये जो जंगल की भाँति प्रतीत हो रहा था। चारो ओर झाड़ झंखाड़ उगे हुये थे तथा यदि अभ्यासियों के लिये यहाँ टेन्ट में ठहराने की व्यवस्था की जानी है तो काफी मशक्कत करने की आवश्यकता होगी। मुझे यह क्षेत्र सर्प ग्रसित भी दिखाई पड़ रहा था। निरीक्षण इत्यादि के उपरान्त हम दोपहर भोजन के लिये श्री चोपड़ा के घर पर वापस लौट आये।

शाम 4.00 बजे – श्री चोपड़ा के निवास पर सत्संग कराया ।

शाम 7.25 बजे हमने ग्रांड ट्रंक एक्सप्रेस से दिल्ली से मद्रास की ओर प्रस्थान किया । मेरे तथा सुलोचना के अलावा त्रिची के के. आर. सुब्रामनियम, वाई. वी.एस. लक्ष्मी, जगन तथा मद्रास के नौ अन्य अभ्यासी भी इस ट्रेन में यात्रा कर रहे थे ।

दिल्ली के लगभग पन्द्रह अभ्यासी हमें विदाई देने के लिये दिल्ली रेलवे स्टेशन पर उपस्थित थे । अबकी बार का बसंत उत्सव बहुत अच्छा रहा। सर्दी भी अधिक नहीं थी तथा मालिक भी अपेक्षाकृत प्रसन्न तथा स्वस्थ लग रहे थे।

29 जनवरी 1980 – मंगलवार

सुबह 8.30 बजे हम मद्रास में अपने घर पहुँच गये, हमारे घर पर पहुँचने के शीघ्र उपरान्त क्रिस्टन लेंगस्टॉफ तथा उनका एक मित्र विमान द्वारा दिल्ली से मद्रास पहुँचे। हवाई अड्डे से वे सीधे गायत्री पहुँचे। वे 3 फरवरी 1980 तक मद्रास में रहेंगे। इस दौरान उनके ठहरने की व्यवस्था गायत्री में ही रहेगी।

1 फरवरी 1980 – शुक्रवार

अप्पा आज रात्रि 8.10 बजे वृन्दांवन एक्सप्रेस से बैंगलोर से मद्रास पहुँचे, ट्रेन एक घंटे विलम्ब से यहाँ पहुँची थी ।

3 फरवरी 1980 – रविवार

क्रिस्टिन लैंगस्टॉफ तथा जॉन शाम 7.00 बजे की उड़ान से दिल्ली की ओर रवाना हो गये।

6 फरवरी 1980 – बुधवार

पूज्य मालिक की आगामी मई में प्रस्तावित यूरोप की यात्रा पर सुलोचना को साथ ले चलने की अनुमति के लिये मालिक को एक पत्र लिखा। बेशक उसकी यात्रा पर होने वाले खर्च को मुझे स्वयं वहन करना होगा।

8 फरवरी 1980 – शुक्रवार

तड़के सुबह का स्वप्न – एक विशाल जन समूह, निश्चित ही यह मिशन का कोई भण्डारा कार्यक्रम है जो किसी परिसर में आयोजित किया गया है। मैं व्यवस्था इत्यादि का निरीक्षण कर रहा हूँ, तभी मैं एक लम्बी सी गुफा में प्रवेश करता हूँ। गुफा के दूसरे सिरे पर मुझे प्रकाश दिखायी पड़ रहा है। जैसे ही मैं गुफा में आगे की ओर बढ़ता हूँ मुझे अपने दाहिनी तरफ एक छोटी गुफा दिखायी पड़ती है जो शायद इसी बड़ी गुफा की ही शाखा है तथा इसकी लम्बाई लगभग पचास फीट के आसपास होगी। इसमें एक ऊँचा मचान सा बना हुआ है जिस पर बैंगलोर के गुप्ता बंधु तथा कुछ अन्य व्यक्ति बैठे हुये हैं। गुफा की दीवार पर बिजली के तार के सहारे के लिये लकड़ी के हुक कीलों के माध्यम से लगे हुये हैं। मैं ऐसी कई गुफाओं में प्रवेश करता हूँ तथा देखता हूँ कि प्रत्येक गुफा में यहाँ वहाँ हर जगह अभ्यासी ही अभ्यासी मौजूद हैं।

9 फरवरी 1980 – शुक्रवार

तड़के सुबह का स्वप्न– मैं एक विशाल तथा ऊबड़ खाबड़ मैदान में खड़ा हुआ हूँ जिसका क्षेत्रफल कई एकड़ तक फैला हुआ है। मैदान में एक विशाल दोमंजिला इमारत है जिससे मैं निकल कर मैदान में पहुँचा हूँ। चहलकदमी करते हुये मैं मैदान के बीचोंबीच स्थित एकमंजिला इमारत

में पहुँचता हूँ। मैं देखता हूँ कि बसों द्वारा अभ्यासी यहाँ पहुँच रहे हैं तथा अभ्यासी अपने हाथों में सूटकेस इत्यादि लेकर उनके ठहरने के लिये आवंटित किये गये स्थान की ओर जा रहे हैं। वस्तुतः यह हमारा आश्रम परिक्षेत्र ही है लेकिन यह शाहजहाँपुर का आश्रम नहीं है ।

सुबह 8.00 बजे एस.के.मोहन, वी.एस.नारायणन तथा जे.श्रीनिवासन के साथ कार से वृधाचलम की ओर प्रस्थान कर मैं दोपहर 12.00 बजे सदाशिवम के निवास पर पहुँच गया ।

दोपहर 1.00 बजे मैंने श्रीमती शान्ता सदाशिवम को व्यक्तिगत सिटिंग दी ।

दोपहर 2.00 बजे – सदाशिवम को साथ लेकर हमने जयमकोंडम होते हुये एरियालूर की ओर प्रस्थान किया तथा दोपहर 3.40 बजे वहाँ पहुँच गये।

शाम 5.00 बजे – बाबूजी महाराज के जन्मोत्सव समारोह के उपलक्ष्य में मेरे द्वारा सामूहिक सत्संग कराया गया जिसमें लगभग अस्सी अभ्यासी उपस्थित थे। सिटिंग बहुत अच्छी रही। सत्संग के उपरान्त एक सार्वजनिक बैठक आयोजित की गयी थी। वक्ताओं द्वारा अच्छे व्याख्यान इत्यादि दिये गये। कार्यक्रम का समापन रात्रि 10.00 बजे हुआ। हमारे ठहरने की व्यवस्था यात्री विश्रामगृह'' में की गयी थी।

10 फरवरी 1980 – रविवार (एरियालूर)

सुबह 7.30 बजे मैंने एरियालूर में सामूहिक सत्संग कराया जिसमें बहत्तर अभ्यासी उपस्थित थे। सिटिंग पैंतालिस मिनट चली तथा प्राणाहुति अत्यंत गहरी तथा अच्छी रही । इसके पश्चात् नाश्ता, तदुपरांत वक्तव्य इत्यादि दिये गये। समापन सम्बोधन मेरे द्वारा दिया गया।

थिरू पकियम, यहाँ सन् 1979 में डिप्टी कलेक्टर थे। सात माह के अपनें कार्यकाल के दौरान उन्होंने यहाँ पर मिशन के केन्द्र की स्थापना कर अत्यंत ही प्रशंसनीय कार्य किया था।

हम दोपहर 2.00 बजे जे0 आर0 दोरेस्वामी अय्यर, श्री पी0पलानी अप्पन तथा श्री पकियम के साथ कार से प्रस्थान कर शाम 6.20 बजे मदुरई

पहुँच गये ।

11 फरवरी 1980 – सोमवार

सारा दिन विरुदनगर में मैं कंपनी के कार्य में व्यस्त रहा ।

शाम 7.00 बजे – मदुरई में वालमजी मेंशन में सामूहिक सत्संग कराया। लगभग अट्ठाइस अभ्यासी उपस्थित थे। सिटिंग पैंतालिस मिनट चली तथा प्राणाहुति में अत्यंत गहरायी का अनुभव हुआ।

12 फरवरी 1980– मंगलवार

अस्वस्थता के कारण आज विरुदनगर नहीं जा सका ।

शाम 7.00 बजे – वालमजी में सामूहिक सत्संग कराया। पच्चीस अभ्यासी उपस्थित थे।

13 फरवरी 1980 – बुधवार

सुबह 6.00 बजे स्वप्न के पश्चात् मेरी नींद खुल गयी। स्वप्न में मैंने देखा कि मैं अभी अभी किसी स्थान से विमान की यात्रा कर यहाँ पहुँचा हूँ। हवाई अड्डे पर मैं अपनी पत्नी सुलोचना को सीटी बजाकर बुलाता हूँ। वह एक भवन के ऊपरी तल पर स्थित एक कक्ष में मालिक के साथ हैं। मैं किस स्थान पर हूँ तथा यह किसका घर है, मुझे इसकी कोई जानकारी नहीं है। मालिक की विदेश यात्रा पर प्रस्थान के लिये तैयारी चल रही है जबकि मैंने अभी तक कोई तैयारी नहीं की है, क्योंकि मैं अभी अभी ही यहाँ पहुँचा हूँ। मालिक से मेरी कुछ बातचीत होती है लेकिन मुझे याद नहीं है कि मैंने उनसे क्या कहा है। वे विदेश यात्रा के लिये प्रस्थान कर जाते हैं। अगले दृश्य में मैं अगले कमरे में पहुँचता हूँ और देखता हूँ कि मेरा छोटा भाई कोदण्डरमन खड़ा हुआ है जो नग्न है और निकर पहनने जा रहा है। मैं एक अन्य कक्ष में पहुँचता हूँ तथा वहाँ मौजूद कुछ लोगों से पूछता हूँ कि क्या मालिक मेरे लिये कोई टिकट इत्यादि छोड़ कर गये हैं ताकि मैं भी उनका अनुशरण कर सकूँ। वे चिढ़कर मुझसे कहते हैं कि यदि उनकी देखभाल की मुझे इतनी ही फिक्र थी तो मैं उनके साथ ही क्यों नहीं गया। मैं अत्यंत बेचैन हो जाता हूँ कि मालिक मुझे अकेला छोड़कर (शायद फेंककर) यात्रा पर रवाना हो गये हैं।

दोपहर तक कम्पनी के कार्य से विरुदनगर में रहा।

शाम 7.00 बजे – मदुरई केन्द्र में थस्मा स्वामी के निवास पर सामूहिक सत्संग कराया।

14 फरवरी 1980 – गुरुवार

दोपहर तक विरुदनगर में रहा तथा दोपहर 2.30 बजे मदुरई वापस लौट आया। दोपहर बाद 3.30 बजे मैं त्रिची के लिये रवाना होकर शाम 5.40 बजे त्रिची पहुँच गया।

शाम 7.00 बजे – अशोक भवन में सामूहिक सत्संग कराया। प्रशिक्षक के. सुब्रामनियम, के.आर.सुब्रामनियन तथा एस. राजू के साथ कुल पन्द्रह अभ्यासी सत्संग में उपस्थित थे। सिटिंग बहुत अच्छी रही।

के. आर. सुब्रामनियन के निवास 45 लेबर डिपार्टमेंट क्वार्टर काजामलई कालोनी में मेरे ठहरने की व्यवस्था की गयी थी।

15 फरवरी 1980 – शुक्रवार

सुबह 7.00 बजे – के.आर.सुब्रामनियन के निवास पर छः अभ्यासियों को सिटिंग दी जिसमें के.आर.सुब्रामनियन, एस. राजू तथा के. सुब्रामनियम भी सम्मिलित थे। नाश्ता करने के पश्चात् मैं सुबह 9.00 बजे त्रिची से रवाना होकर दोपहर 2.00 बजे मद्रास पहुँच गया।

16 फरवरी 1980 – शनिवार

मालिक का दिनांक 13 फरवरी का लिखा हुआ पत्र आज प्राप्त हुआ जिसमें उनकी आगामी यूरोप की यात्रा पर मेरी पत्नी सुलोचना को साथ ले चलने के मेरे प्रस्ताव पर उन्होंने अपनी सहमति दे दी थी। उन्होंने पत्र में लिखा था "यदि बहू की विदेश के देशों के भ्रमण की अभिलाषा है तो वह यह कर सकती है। उसका यह सुझाव मुझे पसन्द आया।"

17 फरवरी 1980 – रविवार

विगत दो दिनों से मैं अत्यन्त ही निराश महसूस कर रहा हूँ। मैं सोच रहा था कि चहुँ ओर विपत्तियाँ व्याप्त हैं तथा ऐसे में हमारे प्रकृति पर विजय प्राप्त करने के क्षणभंगुर प्रयास मुझे निरर्थक से प्रतीत हो रहे हैं। आखिर हम किस दिशा की ओर अग्रसर हो रहे हैं।

22 फरवरी 1980 – शुक्रवार

दोपहर 1.30 बजे – अप्पा, एस. के. मोहन, एस. नारायणस्वामी, तथा साइन्टिफिक एसोसिएट्स के देशीकन के साथ मैने कार से बैंगलोर की ओर प्रस्थान किया। बैंगलोर में इन्दिरा नगर में कोदण्ड के निवास पर शाम 7.15 बजे पहुँचा। कोदण्ड तथा जैना भी शाम 4.00 बजे मद्रास से रवाना होकर रात्रि 9.15 बजे यहाँ पहुँच गये।

23 फरवरी 1980 – शनिवार

दोपहर तक होसर में कंपनी के कार्य से व्यस्त रहा ।

दोपहर बाद 3.30 बजे हम एस.के.सुन्दरम के निवास पर पहुँचे तथा वहाँ से बहन कस्तूरी की अगवानी के लिये बैंगलोर के सिटी रेलवे स्टेशन पहुँचे। बहन कस्तूरी शाम 4.30 बजे बेल्लारी से मीटर गेज ट्रेन से यहाँ पहुँचीं।

शाम 7.45 बजे – आश्रम में कस्तूरी द्वारा सत्संग कराया गया। सिटिंग पैंतालिस मिनट चली जो विशेष प्रभावशाली नहीं थी। मैंने बेचैनी महसूस की। एस.के.सुन्दरम के निवास पर हमारे रात्रि भोजन की व्यवस्था की गयी थी जिसके पश्चात् हम इन्दिरा नगर वापस लौट आये।

24 फरवरी 1980 – रविवार

सुबह 8.15 बजे – आश्रम में कस्तूरी ने सत्संग कराया। सिटिंग पैंतालिस मिनट तक चली।

सुबह 10.00 बजे – पूज्य मालिक के जन्मोत्सव समारोह के उपलक्ष्य में एक सार्वजनिक बैठक का आयोजन किया गया। जहाँगीरदार के संक्षिप्त स्वागत सम्बोधन के उपरान्त, एस.ए.सरनाड ने कन्नड़ भाषा में पचपन मिनट तक दिये अपने सम्बोधन से सभी को मंत्रमुग्ध कर दिया। कस्तूरी ने बीस मिनट तक हिन्दी में अपने विचार व्यक्त किये, तत्पश्चात् कोदण्ड ने अपना सम्बोधन दिया। पूर्वानुसार ही मेरे द्वारा कार्यक्रम समाप्ति पर अपना सम्बोधन दिया गया। राघवेन्द्र राव जो कार्यक्रम की अध्यक्षता कर रहे थे, द्वारा अपना समापन सम्बोधन देने के साथ ही सुबह के सत्र का समापन हुआ ।

शाम 4.00 बजे – प्रशिक्षकों की एक बैठक आयोजित की गयी थी जिसमें सब कुछ पूर्वानुसार ही था। इन बैठकों में अक्सर एक ही सुसंगत तरीका अपनाया जाता है तथा बारम्बार वही के वही प्रश्न दोहराये जाते हैं जिसके कारण प्रशिक्षकों की बैठक के प्रति किसी में कोई उत्साह नजर नहीं आता। मैंने पूज्य मालिक की जानकारी में अनेकों बार यह बात लायी है। उन्होंने इस पर अपना खेद प्रेकट किया। एस.के. सुन्दरम के निवास पर रात्रि भोजन करने के पश्चात् हम कोदण्ड के निवास पर वापस लौट आये।

25 फरवरी 1980 –सोमवार

दोपहर तक कंपनी के कार्य में व्यस्त रहा ।

मैंने दोपहर 1.00 बजे एस.नारायणस्वामी, एस.के.मोहन तथा देसिकन के साथ कार से मद्रास की ओर प्रस्थान किया। अप्पा बैंगलोर में ही रुक गये।

शाम 7.15 बजे मैं मद्रास में अपने घर पहुँच गया ।

3 मार्च 1980 – सोमवार

हैदराबाद के प्रशिक्षक भाई एच. जोगा राव आज मद्रास पहुँचे। उन्हें पूज्य मालिक द्वारा मुझसे व्यक्तिगत सिटिंग प्राप्त करने के निर्देश प्राप्त हुये थे। शाम 7.00 बजे मैंने उन्हें व्यक्तिगत सिटिंग दी।

4 मार्च 1980– शुक्रवार

सुबह 8.00 बजे– मैंने एच. जोगाराव को व्यक्तिगत सिटिंग दी।

7 मार्च 1980– शुक्रवार

मेरे कार्यालय के व्यक्तिगत सहायक श्री टी.एस.राजगोपालन के साथ रात्रि 7.30 बजे मद्रास त्रिवेन्द्रम मेल से कोयम्बटूर की ओर प्रस्थान किया। वी.एस.नारायणन, जे.विश्वनाथन, आर. जी. विश्वनाथन, एस. विश्वनाथन, एस. के. मोहन तथा प्रशिक्षक आर. शेषाद्रि, ये सब भी इसी ट्रेन से कोयम्बटूर जा रहे हैं। नारायण स्वामी एवं दो अन्य अभ्यासी आज रात्रि 9.00 बजे नीलगिरी एक्सप्रेस से कोयम्बटूर के लिये रवाना होंगे।

8 मार्च 1980 – शनिवार

हम सुबह 3.30 बजे कोयम्बटूर पहुँच गये। कोयम्बटूर में हमारे

ठहरने की व्यवस्था डी.बी.रोड, आर.एस.पुरम में स्थित "सविता हाँथ" में की गयी थी जहाँ पूज्य बाबूजी महाराज के जन्मोत्सव समारोह कार्यक्रम का आयोजन किया जा रहा है।

समारोह का शुभारम्भ सुबह 7.30 बजे सत्संग के साथ हुआ जो अप्पा द्वारा कराया गया। इसके उपरान्त व्याख्यान इत्यादि दिये गये जिसमें मैंने भी तमिल भाषा में अपना सम्बोधन दिया।

शाम 5.00 बजे एक सार्वजनिक बैठक का आयोजन किया गया जिसमें मेरे द्वारा सत्संग कराया गया। मैंने मुख्य वक्ता के रूप में अंग्रेजी में तथा मेरे उपरान्त पी. पलानी अप्पन ने तमिल में उन्हें सम्बोधित किया। एक सौ पचास से भी अधिक संख्या में अभ्यासी इस समारोह में उपस्थित हुये तथा प्रशिक्षकों का भी यहाँ अच्छा खासा जमावड़ा है। मद्रास से मेरे अलावा डॉ. सी.ए.राजगोपालाचारी, आर. शेषाद्रि, मदुरई से जे.आर.दोरेस्वामी अय्यर, डब्ल्यू.एच.श्रीनिवासन, त्रिची से के.सुब्रामनियन तथा के.आर. सुब्रामनियन, सलेम से टी.एस.बाला सुब्रामनियम, कोयम्बटूर से डा.एस.एस. रामाकृष्णन तथा आर.वैंकटरमन, तिरुपति से बहन रंगानायकी, येरागुन्टला से एम. वेंकटसुबैया तथा तिरूतानी से वी. वैंकटपति, अर्थात् कुल तेरह प्रशिक्षक यहाँ उपस्थित हैं। यहाँ का आध्यात्मिक वातावरण अच्छा है तथा बैंगलोर के वातावरण से इसकी किसी मायने में भी तुलना नहीं की जा सकती । यह अत्यन्त खेद का विषय है कि जहाँगीरदार ने बैंगलोर केन्द्र की दुर्दशा कर रखी है। पूर्व में उनके द्वारा चन्नापटना तथा कोलेगल केन्द्रों की भी ऐसी ही दुर्दशा की गयी थी।

सायंकालीन सत्र की अध्यक्षता आर. शेषाद्रि ने की। उन्होंने अपने सम्बोधन में मालिक तथा मिशन के प्रति सच्ची तथा निस्स्वार्थ भावना से की गयी मेरी सेवाओं के लिये मेरी प्रशंसा की। उन्होंने मेरी तुलना स्वामी विवेकानन्द से करते हुए कहा "पार्थसारथी साये के समान मालिक के साथ रहते हैं तथा उनके प्रति उसमें सच्ची समर्पण की भावना है। जैसे रामकृष्ण के लिये स्वामी विवेकानन्द थे वैसे ही हमारे मालिक के लिये हमारे पार्थसारथी हैं। सच कहा जाये तो मेरे लिये वे हमारे मिशन के विवेकानन्द

ही हैं। इस प्रकार से उन्होंने मुक्त कंठ से मेरी प्रशंसा के पुल बाँधे। उनके द्वारा इस तरह से की गयी मेरी प्रशंसा पर कुछ व्यक्ति शशंकित थे।

9 मार्च 1980 – रविवार

सुबह 7:30 बजे –श्री आर. शेषाद्रि ने सुबह का सत्संग कराया, सिटिंग पैंतीस मिनट चली। सिटिंग के दौरान लगभग सुबह 7:35 बजे मेरे समक्ष एक चमकीले सफेद प्रकाश का पुंज दृष्टिगोचर हुआ जिसके घेरे का आकार बढ़ता गया तथा उसका व्यास लगभग एक तिहाई इंच के बराबर हो गया। यद्यपि यह अत्यंत चमकीला था लेकिन इससे आँखे चौंधिया नहीं रही थीं। इसके उपरान्त मेरे समक्ष घने बादलों से घिरा हुआ आसमान दृष्टिगोचर हुआ। मैंने देखा कि आसमान में बादल ऐसे उमड़ घुमड़ रहे हैं जैसे सागर की सतह पर लहरें अठखेलियाँ कर रही हों। तभी बादलों का कम्पन रुक जाता है तथा एक नदी जिसे एक छोटा झरना कहना ज्यादा उचित होगा, मेरे हृदय की ओर बहती हुई प्रतीत होती है। मेरी यह दशा दस से पन्द्रह मिनट तक बनी रहती है। इस दौरान मैं गहरे तक डूबा हुआ अनुभव करता हूँ। कुछ देर पश्चात् पुनः वही एक तिहाई इंच व्यास का चमकीला प्रकाश का वृत्त दृष्टिगोचर होता है जो लगभग डेढ़ इंच तक फैलता हुआ दिखायी देता है। मैं ध्यान की स्थिति में अत्यंत गहरायी में डूबा हुआ अनुभव करता हूँ। लगभग 7:55 बजे मैं ध्यान की सामान्य अवस्था पर लौट आता हूँ। मेरा ऐसा अनुमान है कि इस सिटिंग के दौरान मैंने केन्द्रीय क्षेत्र में प्रकाश के चौथे वृत्त को पार कर लिया है।

सिटिंग के पश्चात् मैंने शेषाद्रि से विस्तार से अपने अनुभव के बारे में चर्चा की। उन्होंने बताया "प्राणाहुति का प्रवाह मेरे बाँयी ओर केवल एक ही व्यक्ति अर्थात् तुम्हारी ओर केन्द्रित था। वर्तमान में स्थित तुम्हारे क्षेत्र का विस्तार किया जा रहा था तथा मेरा अनुमान है कि तुमने प्रकाश का चौथा अथवा पाँचवा वृत्त पार कर लिया है।"

इसके उपरान्त व्याख्यानों इत्यादि का दौर चला तथा जैसा कि अक्सर होता है उसी के अनुसार ही मेरे द्वारा कार्यक्रम की समाप्ति पर अपना सम्बोधन दिया गया। सुबह 10:30बजे समारोह समाप्ति की विधिवत

घोषणा की गयी।

शाम 5:30 बजे श्री शेषाद्रि ने डॉ. रामकृष्णन के निवास पर सत्संग कराया। सिटिंग बहुत अच्छी रही।

समारोह के समापन के पश्चात् हम सविता सभागृह से अपना सामान इत्यादि लेकर होटल अलंकार आ गये।

10 मार्च 1980– सोमवार

सुबह 7:20 बजे अलंकार होटल से सामान इत्यादि लेकर मैं डॉ. रामकृष्णन के निवास पर चला गया। सौ. एस. रामा देवी को व्यक्तिगत सिटिंग दी।

सुबह 8:00 बजे सामूहिक सत्संग कराया जिसमें परिवार के सदस्यों के अलावा त्रिची के के. आर. सुब्रामनियन, आर. वैंकटरमन, के आर. रामास्वामी, टी. एस. राजगोपालन इत्यादि उपस्थित थे। उसके पश्चात् हमने नाश्ता किया। आई. टी. पी. टी. फैक्ट्री का निरीक्षण करने के उपरान्त हम दोपहर 12:50 बजे कोयम्बटूर से रवाना होकर शाम 4:50 बजे मदुरई पहुँच गये।

शाम 6:45 से 7:30 बजे – वालमजी मेन्शन में सामूहिक सत्संग कराया। लगभग तीस अभ्यासी उपस्थित थे। सिटिंग अच्छी रही।

11 मार्च 1980– मंगलवार

शाम 4:00 बजे तक विरुदनगर में आई. टी. पी. टी. रजत जयन्ती समारोह के इन्तजाम के बारे में चर्चा की।

12 मार्च 1980– बुधवार

स्वास्थ्य ठीक नहीं था – अतः आज विरुदनगर नहीं गया।

पूज्य मालिक को रविवार 9–03–80 को कोयम्बटूर में आर. शेषाद्रि की सिटिंग के दौरान हुये अनुभव के बारे में एक पत्र लिखा तथा उनसे इस पर अपनी टिप्पणी करने के लिये निवेदन किया कि क्या मेरा अनुमान तथा शेषाद्रि द्वारा इसे प्रमाणित करना सही है ?

13 मार्च 1980 – गुरुवार

सुबह 8:00 बजे से 9:00 बजे तक विरुदनगर में रहा ।

14 मार्च – शुक्रवार

आई. टी. पी. टी. की रजत जयन्ती आज विरुदनगर में मनायी जा रही है। टी. टी. एन. का समस्त परिवार वर्षगाँठ के उपलक्ष्य में आयोजित कार्यक्रम में सम्मिलित हुआ है। कार्यक्रम शाम 6:30 बजे से प्रारम्भ होकर रात्रि 10:30 बजे तक चलता रहा। मैं मदुरई में वालमजी मेन्शन देर रात तक पहुँचा।

इस वर्ष मुझे तीन रजत जयंती समारोहों में सम्मिलित होने का अवसर प्राप्त होगा। 31 दिसम्बर 1979 को मैंने टी. टी. के. एण्ड कं. में अपने कार्यकाल के 25 वर्ष पूरे किये। आई. टी. पी. टी. क. की भी आज 25 वीं वर्षगाँठ है। यदि मालिक की इच्छा रही तो 25 जून को मेरी पत्नी सुलोचना के साथ मेरे वैवाहिक जीवन के पच्चीस वर्ष पूर्ण होंगे।

15 मार्च 1980 – शनिवार

स्वास्थ्य ठीक नहीं था। माइग्रेन का बुरा अटैक पड़ा जिसके कारण विरुदनगर में आयोजित कं. की वार्षिक सार्वजनिक बैठक में उपस्थित होने के लिये नहीं जा सका। आई. टी. पी. टी. के संचालक मंडल में सन् 1968 में मेरी नियुक्ति के पश्चात् से यह पहली वार्षिक बैठक है जिसमें मैं उपस्थित नहीं हो सका हूँ तथा यह पहली सार्वजनिक वार्षिक बैठक है जिसमें हमारे अध्यक्ष टी.टी.नरसिंहमन उपस्थित हुये थे।

16 मार्च– रविवार

सुबह 7:30 बजे – मदुरई केन्द्र में मेरे द्वारा सामूहिक सत्संग कराया गया। सिटिंग पैतालिस मिनट चली। आइ. ए. सी. की उड़ान से मैंने दोपहर 12:40 बजे मदुरई से प्रस्थान किया, मुझे आर. स्वामीनाथन ने विदाई दी। दोपहर 2:00 बजे मैं मद्रास पहुँच गया।

27 मार्च 1980 – गुरुवार

रात्रि 10:15 बजे अप्पा ने बॉम्बे मेल से एम. रविकुमार के साथ येरागुन्टला की ओर प्रस्थान किया ।

29 मार्च – शनिवार

सुबह 2:15 बजे से 2:50 बजे तक ध्यान किया। तत्पश्चात् मेरी नींद लग गयी, इसी दौरान मैंने एक स्वप्न देखा। मैंने देखा कि एक

विशाल परिसर है तथा मैं इसकी चारदीवारी पर बने द्वार से अंदर पहुँचकर एक भवन में प्रवेश करता हूँ। बाबूजी अन्दर बैठे हैं। उनके शरीर के ऊपरी भाग पर कोई कपड़ा नहीं है और उनकी धोती उनकी जांघों तक उठी हुयी है। शायद वे तेल मालिश करने की तैयारी में हैं। मैं उनसे उनकी मालिश करने के लिये मुझे अनुमति देने का आग्रह करता हूँ। वे मुस्कुराते हुये मेरे आग्रह को स्वीकार कर लेते हैं। मैं उनके पैरों से मालिश प्रारम्भ कर देता हूँ तथा धीरे–धीरे उनकी जंघाओं की मांसपेशियों को अपनी दोनों हथेली के बीच में लेकर मालिश करता हूँ। वे आनन्ददायक दीर्घ साँस लेते हैं तभी मेरा स्वप्न टूट जाता है ।

31 मार्च 1980 – सोमवार

बहुत लम्बे अंतराल के पश्चात् मालिक की ओर से उनके द्वारा लिखा हुआ 27 मार्च 1980 का पत्र क्रमांक 2806 प्राप्त हुआ जिसमें उन्होंने लिखा था।

मेरे प्रिय पार्थसारथी,

स्नेहपूर्वक लिखा गया तुम्हारा पत्र प्राप्त हुआ। पत्र के उत्तर में थोड़ा विलम्ब हो गया है, मुझे यह जानकर अति प्रसन्नता हुयी कि तुम्हारा दिव्यता से निरंतर सम्पर्क बना हुआ है। यह स्वतः ही स्पष्ट है तथा ठीक भी है। मेरा स्वास्थ्य अच्छा है।

प्यार एवम् आशीर्वाद के साथ,

उत्तम, उत्तम, अति उत्तम————————लेकिन अभी भी तुम्हे बहुत आगे तक जाना है।

आपका अनुरागी

राम चन्द्र

मेरे अनुमान से यह मेरे मदुरई से दि. 12 मार्च 1980 को उन्हें भेजे गये पत्र का उत्तर है जो मैंने उन्हें अपने कोयम्बटूर में हुये अनुभव के सन्दर्भ में उन्हें लिखा था ।

2 अप्रैल 1980 – बुधवार

अप्पा आज येरागुन्टला से बॉम्बे मेल से सुबह 5:00 बजे मद्रास

पहुँचे।

13 अप्रैल 1980 – रविवार

दोपहर 2:00 बजे, के. आर. सुब्रामनियन, टी. टी. श्रीधर तथा रामू के साथ मद्रास से कार से रवाना होकर रात्रि 8:00 बजे त्रिची पहुँच गया। रात्रि विश्राम के. आर. सुब्रामनियन के निवास पर किया।

14 अप्रैल 1980 – सोमवार

सुबह 6:15 बजे त्रिची से रवाना होकर सुबह 8:30 बजे मदुरई पहुँचा। सारा दिन विरुदनगर में कम्पनी के कार्य में व्यस्त रहा ।

शाम 7:00 बजे – वालमजी मेन्शन में सत्संग कराया। लगभग बीस अभ्यासी उपस्थित थे । सिटिंग अच्छी रही।

15 अप्रैल 1980 – मंगलवार

सुलोचना ने मालिक के पत्र के बारे में जानकारी देने के लिये मद्रास से फोन किया तथा फोन पर ही पढ़कर इसकी जानकारी दी जिसमें मालिक ने लिखा था जो मुख्य समस्यायें उनके द्वारा व्यक्तिगत रूप से सुलझायी जानी थीं वे सुलझायी जा रही हैं। वे अपने यूरोपियन दौरे की समाप्ति के पश्चात् मद्रास नहीं जायेंगे जिसके लिये मैंने उनसे विनम्र अनुरोध किया था। अब वे सीधे दिल्ली से शाहजहाँपुर लौट जायेंगे। अन्यथा वे अक्सर विदेश यात्रा की समाप्ति पर मद्रास अवश्य आते थे।

16 अप्रैल 1980 – बुधवार

स्वास्थ्य ठीक नहीं था। पेट के निचले हिस्से में दर्द था तथा आँव की भी शिकायत थी। आज विरुदनगर नहीं गया तथा सारा दिन बिस्तर पर पड़ा रहा।

शाम 7:00 बजे – मदुरई केन्द्र में सत्संग कराया। बहुत कम उपस्थिति रही।

17 अप्रैल 1980 – गुरुवार

स्वास्थ्य में कोई सुधार नहीं था। आज भी विरुदनगर नहीं गया।

शाम 7.00 बजे तिरूनगर केन्द्र में डबल्यू एच. श्रीनिवासन के निवास पर सत्संग कराया जिसमें बीस अभ्यासी उपस्थित थे।

18 अप्रैल 1980 – शुक्रवार

दोपहर 2:00 बजे विरुदनगर की ओर रवाना हुआ। रास्ते में मैंने तिरूनगर से डबल्यू एच. श्री निवासन को अपने साथ लिया।

शाम 6:00 बजे – विरुदनगर केन्द्र में सत्संग कराया जिसमें पच्चीस अभ्यासी उपस्थित थे। डबल्यू एच. श्रीनिवासन तथा पी. पलानी अप्पन द्वारा सत्संग के पश्चात् अपने विचार व्यक्त किये गये। तत्पश्चात् पूज्य मालिक की स्लाइड दिखायी गयीं। रात्रि 9:30 बजे मैं मदुरई वापस लौट आया।

19 अप्रैल 1980 – शनिवार

सुबह लगभग 4.00 बजे मुझे ऐसा आभास हुआ कि मेरा पलंग कम्पन कर रहा है जिसके कारण अचानक मेरी नींद खुल गयी। उठने के पश्चात् भी मैंने देखा की कम्पन जारी था। मैंने गद्दे तथा लोहे के पलंग को छूकर देखा। मुझे स्पष्ट हो गया कि वास्तव में पलंग कम्पन कर रहा था। उसी क्षण मुझे विचार आया कि कहीं यह भूकम्प तो नहीं है लेकिन भूकम्प की अपेक्षा कम्पन का आवेग अत्यंत सूक्ष्म स्तर का था। दस मिनट पश्चात् मुझे पुनः नींद लग गई ।

सुबह 8.15 बजे – प्रशिक्षक जे.आर.दोरेस्वामी अय्यर, मेरे साले टी. टी.श्रीधरन, पी.पलानी अप्पन तथा मुथ्थूकृष्णन के साथ तंजावुर की ओर प्रस्थान किया। हम सुबह 11.40 बजे तंजावुर (पुडुकोट्ट तथा मेलूर के रास्ते 100 मील दूर) पहुँच गये। तंजावुर पहुँचने के पश्चात् बिना समय व्यर्थ किये हम सीधे पश्चिमी मुख्य मार्ग पर स्थित कल्याण मंडप पहुँचे तथा बाबूजी महाराज के जन्मोत्सव समारोह कार्यक्रम में सम्मिलित हुये।

दोपहर 3.00 बजे – मि. जी.अशोकन को व्यक्तिगत सिटिंग दी।

शाम 6.30 बजे – एक सार्वजनिक बैठक का आयोजन किया गया था जिसमें अच्छी उपस्थिति रही। मैंने पैंसठ मिनट तक तमिल भाषा में अपना सम्बोधन दिया।

रात्रि 8.00 बजे – सामूहिक सत्संग कराया, सिटिंग पैंतालिस मिनट चली तथा अच्छी रही। रात्रि विश्राम हमने सफायर लॉज में किया।

20 अप्रैल 1980 – रविवार

सुबह 7.30 बजे – सांमूहिक सत्संग कराया सिटिंग की अवधि पैंतालिस मिनट की रही जिसके उपरान्त प्रसाद अर्पण किया गया।

सुबह 9.00 बजे – व्याख्यान इत्यादि दिये गये। अंत में मैंने सुबह 10.30 बजे अपना सम्बोधन दिया। मेरे मामा का पुत्र के.रंगामनी कल रात्रि में इरोड से यहाँ पहुँचा। वह मालिक के जन्मोत्सव समारोह में सम्मिलित होने के लिये हमारे साथ दिल्ली जायेगा।

हम हमारी कार से सुबह 11.40 बजे एस.के.मोहन, टी.टी.श्रीधरन, वी.एस.नारायणन तथा मुथ्थुस्वामी के साथ तंजावुर से मद्रास की ओर रवाना हुये। कार द्वारा यात्रा के दौरान अत्यंत गर्मी थी तथा लगातार धूल उड़ती रही। इसके बावजूद हमें ज्यादा परेशानी नहीं हुयी तथा हम शाम 6.00 बजे मद्रास पहुँच गये ।

23 अप्रैल 1980 – बुधवार

अप्पा ने सुबह 7.35 बजे वृंदावन एक्सप्रेस से बैंगलौर की ओर प्रस्थान किया। उन्हें के.रंगामनी ने बिदाई दी ।

24 अप्रैल 1980 – गुरुवार

मैं अपने पुत्र चि. पी.आर.कृष्णा के कारण चितिंत था। सन् 79 के अगस्त माह के अंत से वह अमेरिका में है। बारम्बार उसका चेहरा मेरी आँखों के समक्ष उभर कर आ रहा था जिसमें यदाकदा वह उदास तथा मलिन दिखायी पड़ता था। अनेकों मर्तबा जब उसका चेहरा मेरी आँखों के समक्ष आया तो मुझे ऐसा प्रतीत हुआ कि वह अत्यंत पीड़ा में है तथा कराह रहा है। मैं निरंतर उसकी कुशलक्षेम तथा देखभाल के लिये मालिक से प्रार्थना करता रहता हूँ।

26 अप्रैल 1980 – शनिवार

सुलोचना तथा मैंने गांड ट्रंक एक्सप्रेस से दिल्ली की ओर प्रस्थान किया। इस ट्रेन से कुल पचपन अभ्यासी यात्रा कर रहे हैं जिनमें बैंगलोर के बारह, नैल्लोर के आठ तथा कोदण्ड एवं उसका परिवार भी हमारे साथ यात्रा कर रहा है।

28 अप्रैल 1980– सोमवार

हम सुबह 9.00 बजे दिल्ली के हजरत निजामुद्दीन स्टेशन पहुँच गये। ट्रेन एक घंटे से भी अधिक विलम्ब से दिल्ली पहुँची थी। सी. रामकृष्णा ने स्टेशन पर हमारी अगवानी की। हमारे लिये बस की व्यवस्था की गयी थी। स्टेशन से हमें भारत स्काडट एंड गाइड कैम्पिग ग्राउंड ले जाया गया। मैदान में टेन्ट इत्यादि लग चुके थे तथा झाड़ झंखाड़ इत्यादि की भी सफायी कर दी गयी थी लेकिन अभी भी वहाँ तमाम कीड़े पंतगों एवं जीव जंतुओं की भरमार थी। टेन्ट के अन्दर अत्यंत गर्मी थी। अभ्यासियों हेतु खड्ड शौचालय की व्यवस्था की गयी थी तथा पानी इत्यादि की भी पर्याप्त व्यवस्था थी । दिल्ली केन्द्र के कार्यकर्ताओं ने वास्तव में प्रशंसनीय कार्य किया था।

दोपहर 2.00 बजे – सुलोचना तथा मैं फ्रेन्ड्स कालोनी में प्रो. हरनाम सिंह के निवास पर पहुँचे। मालिक यहाँ अभी अभी पधारे थे। वे अत्यंत कमजोर दिखायी पड़ रहे थे तथा थके हुये भी लग रहे थे। शाहजहाँपुर से वे कार का सफर कर यहाँ पहुँचे थे। यद्यपि उन्होंने कुछ समय के लिये बरेली और मुरादाबाद में विश्राम भी किया था, तथापि इस भयंकर गर्मी में उत्तर भारत में कार से यात्रा करने के बारे में कल्पना भी नहीं की जा सकती। यू.पी. में सड़कों की दुर्दशा तथा धूल भरे मार्ग सड़क यात्रा के लिये कतई उपयुक्त नहीं हैं। मेरे विचार से उन्हें कार से यात्रा नहीं करना चाहिये थी। मैंने उनसे कोयम्बटूर में मुझे ध्यान के दौरान हुये अनुभव तथा मेरे द्वारा प्रकाश के चौथे वृत्त को पार कर लेने के मेरे अनुभव के सम्बन्ध उनका मत जानना चाहा। उन्होंने कहा कि वे अभी भी मेरी स्थिति पर अध्ययन कर रहे हैं तथा किसी ठोस निष्कर्ष पर अभी तक नहीं पहुँचे हैं। तत्पश्चात् उन्होंने अपने एक स्वप्न के बारे में मुझे बताया जो उन्होंने कुछ दिन पूर्व ही देखा था। उन्होंने बताया कि स्वप्न में उन्होंने देखा कि उनके हाथ में शहद में डूबा हुआ एक कपड़ा है लेकिन ऐसा प्रतीत हो रहा है कि इसमें कुछ धूल भी मिश्रित है। वे अपने दोनों हाथों से इसे निचोड़ रहे हैं। उनकी एक हथेली ऊपर तथा दूसरी हथेली नीचे

की ओर है तथा वे मुठठी में भींच कर निरन्तर कपड़े को निचोड़ रहे हैं।

मैंने उन्हें मदुरई में हुये अपने 19 अप्रैल के स्वप्न तथा जाग्रत अवस्था में अनुभव के बारे में भी जानकारी दी। उन्होंने बड़े प्यार से मेरे कंधो को थपथपाया तथा मुस्कुराते हुये कहा "यह शब्द की अंतिम अवस्था है, मैं भी इस अवस्था से गुज़रा हूँ इसे 'ओंकार' की अवस्था भी कहते हैं।"

29 अप्रैल 1980– मंगलवार

सुबह तथा शाम दोनों समय का सत्संग राघवेन्द्र राव के द्वारा कराया गया । मेरा सारा समय आयोजन स्थल में ही व्यतीत हुआ । मात्र कुछ समय के लिये मैंने शाम के समय प्रोफे. हरनाम सिंह के निवास पर पहुँच कर मालिक से संक्षिप्त भेंट की ।

30 अप्रैल 1980 – बुधवार

पूज्य मालिक की आज बयासीवीं वर्षगाँठ है। सभी अत्यन्त स्नेहपूवर्क एवं उत्सुकता से साधारण लेकिन सुन्दर ढंग से सजाये गये पंडाल में उनका बेसब्री से इंजतार कर रहे थे। मैं उनके स्वागत के लिये मुख्य द्वार पर उनका इंतजार कर रहा था। तभी लगभग 9.00 बजे मुझे डॉ. हरनाम सिंह के घर से टेलीफोन पर सूचना प्राप्त हुयी कि मालिक अस्वस्थ हैं तथा कार्यक्रम में उपस्थित नहीं हो सकेंगे। मैंने गुलबर्गा के डॉ. एस. बी. श्यामराव तथा उनके साले डॉ. विजयकुमार से निवेदन किया कि वे शीघ्र जाकर मालिक का परीक्षण करें तथा मुझे टेलीफोन पर उनके बारे में सूचित करें। मालिक का परीक्षण करने के पश्चात् उन्होंने मुझे टेलीफोन पर जानकारी दी कि मालिक का ब्लड प्रेशर अत्यंत कम हो गया है (लगभग 48/18), यद्यपि उन्होंने यह भी कहा इसमें चितिंत होने जैसी कोई बात नहीं है तथा वे निरन्तर मालिक की देखभाल कर रहे हैं ।

शाम को मालिक की स्थिति में थोड़ा सुधार हुआ तथा मालिक शाम 6.00 बजे आयोजन स्थल पर पधारे एवं वहाँ एकत्रित अभ्यासियों को उन्होंने बहुत थोड़े समय (पाँच मिनट) के लिये सिटिंग दी। तत्पश्चात् लगभग पन्द्रह मिनट आयोजन स्थल पर व्यतीत करने के पश्चात् वे अपने घर की ओर रवाना हो गये। इस समय स्वागत समारोह कार्यक्रम चल रहा

था तथा लगभग 2200 अभ्यासी यहाँ एकत्रित थे जिन्होंने मालिक के प्रथम दर्शनों का लाभ प्राप्त किया ।

1 मई 1980 – गुरुवार

मालिक के जन्मोत्सव समारोह कार्यक्रम का समापन सत्र। मालिक द्वारा मुझे सुबह का सत्संग कराने का निर्देश प्राप्त हुआ लेकिन बहन कस्तूरी भी वहाँ उपस्थित थीं, अतः एम.एस. सुन्दरा ने सत्संग कराने हेतु उनसे आग्रह किया। कस्तूरी द्वारा दी गयी सिटिंग के दौरान मैं भी ध्यान में बैठा।

सुबह 10.00 बजे तक अधिकतर अभ्यासी अपने घरों की ओर रवाना हो चुके थे तथा आयोजन स्थल पर लगभग दो सौ अभ्यासी ही शेष रह गये थे। चहुँ ओर वीरानी सी छाई हुयी थी। मद्रास के अभ्यासियो का दल कल दोपहर तक यहीं रहेगा।

सत्संग के पश्चात् मैं मालिक से मिलने पहुँचा तथा उनका सूटकेस इत्यादि तैयार किया तथा वहीं पर रुका रहा। वे अत्यंत थके हुये और कमजोर नजर आ रहे थे। मैं अत्यंत दुविधा में था कि ऐसी परिस्थिति में वे विदेश यात्रा के दौरान होने वाली अनेक शारीरिक कठिनाइयों को कैसे सहन कर पायेंगे ?

2 मई 1980 – शुक्रवार

आज सुबह से ही मैं डॉ. हरनाम सिंह के निवास पर मालिक के साथ ही था। मैंने रसोई कक्ष के सभी स्वयं सेवकों को एकत्रित किया जिन्हें मालिक ने घर पर ही पच्चीस मिनट की सिटिंग देकर अनुग्रहीत किया। दोपहर भोजन के लिये मैं आयोजन स्थल पर वापस लौट आया।

दोपहर भोजन के पश्चात् भाई रामसरन चोपड़ा मुझे तथा सुलोचना को मोतीबाग स्थित अपने निवास पर ले गये जहाँ हमने दोपहर 3.30 बजे तक विश्राम किया। तत्पश्चात् हम उनकी बेटी माला चोपड़ा (लॉली) के साथ कुछ खरीददारी करने के लिये बाजार गये । रात्रि भोजन करने के पश्चात् मैंने सतदेव के निवास पर कस्तूरी के साथ पैंतालिस मिनट व्यतीत किये जो चोपड़ा के घर से सौ गज की दूरी पर ही स्थित था। रात्रि 10.

00 बजे मैं प्रोफे. हरनाम सिंह के घर वापस लौट आया । मालिक का सामान इत्यादि लेकर हम उड़ान के पूर्व की जाने वाली औपचारिकताओं को पूर्ण करने के लिये पहले ही पालम हवाई अड्डे पर पहुँच गये। मालिक हमारे पहुँचने के आधा घंटे पश्चात् वहाँ पहुँचे। मालिक को भावभीनी विदाई देने के लिये लगभग दौ सौ अभ्यासी हवाई अड्डे पर उपस्थित थे।

3 मई 1980 – शनिवार

हमारी एस.ए.एस. की उड़ान विलम्ब से चल रही थी । अतः हमारी उड़ान संख्या एस के 972 रात्रि 1.40 बजे रवाना हुयी। यह कोपेनहेगन तक की सीधी (नॉन स्टाप) हवाई सेवा है, इससे कोपेनहेगन तक पहुँचने में आठ घंटे चालीस मिनट का समय लगता है। यात्रा अत्यंत सुविधाजनक एवं आरामदायक थी। चार घंटे की यात्रा के पश्चात् मालिक के चेहरे पर थकावट के लक्षण दिखायी पड़ने लगे, उनकी तबियत बिगड़ गयी तथा वे दिग्भ्रमित हो गये। इस स्थिति में वे अपने बेटे प्रकाश को आवाज लगा कर बुलाने लगते थे जैसे कि वे शाहजहाँपुर में अपने घर पर हों उन्हें इस हालत में देखना अत्यंत दुःखद था। मालिक को इस स्थिति में देखकर सुलोचना जो मालिक के बगल में दाहिनी तरफ बैठी हुयी थी, अत्यंत चितिंत हो गयी थी। उसकी ज्यादा चिंता उनकी मानसिक स्थिति को लेकर थी। मालिक सो नहीं पा रहे थे तथा उनकी बेचैनी क्षण प्रतिक्षण बढ़ती ही जा रही थी। जैसे–जैसे समय व्यतीत हो रहा था उनकी स्थिति बिगड़ती जा रही थी। मेरे लिये यह सब एक भयावह स्वप्न के समान था।

स्थानीय समय के अनुसार सुबह 7.10 बजे हम कोपेनहेगन के कास्ट्रप हवाई अड्डे पर पहुँच गये। दिल्ली से यहाँ पहुँचने में हमें ठीक नौ घंटे का समय लगा। अनेक अभ्यासियों द्वारा मालिक का स्वागत किया गया। बच्चों ने फूलों के गुलदस्ते इत्यादि भेंट कर अनका अभिवादन किया। कस्टम इत्यादि की औपचारिकताएं पूर्ण होने तक मालिक इतना अधिक थक चुके थे कि वे मुस्कुराने के अलावा कुछ भी करने की स्थिति में नहीं थे। वातावरण अत्यंत सर्द था तथा बाहर का तापमान 2 डिग्री सेन्टीग्रेड था। अतः मालिक को तुरन्त पाले कॉसगार्ड की कार में बैठाकर

हेलेरप पहुँचाया गया। मालिक ने सारा दिन विश्राम किया। शाम 6.00 बजे सभी अभ्यासी मालिक के विधिवत स्वागत के लिये पाले के निवास पर एकत्रित हो गये। लगभग एक सौ से अधिक संख्या में अभ्यासी यहाँ पहुँच चुके थे। मैंने दोपहर 3.30 बजे मालिक का ब्लड प्रेशर चैक किया था जो बैठे में 100/70 तथा खड़े होने पर 80/50 था।

4 मई 1980 – रविवार

मालिक ने सुबह 10.30 बजे अभ्यासियों को सिटिंग दी ।

5 मई 1980 – सोमवार

मेरे चचेरे भाई, बी. चक्रपाणी पूर्वी जर्मनी के रॉसटॉक से आज यहाँ पहुँचे। वह यहाँ पर स्टीमर तथा ट्रेन की यात्रा करके पहुँचे थे। भारत जाने से पूर्व वह पाँच दिन यहाँ व्यतीत करेंगें। डॉ. कार्ल गुचे अगस्बर्ग से आज यहाँ पहुँचे हैं। उन्होंने मालिक के ब्लड प्रेशर की जाँच की थी जो 90/60 (बैठी अवस्था में) था। मालिक के चिकित्सीय परीक्षण के दौरान कार्ल को एक चमत्कारिक जानकारी मिली,मालिक का ट्यूमर जो 1979 के मध्य में मध्यम आकार के आलू के बराबर था वह अब घटकर उससे आधे आकार के बराबर का रह गया था तथा छूकर देखने पर मुलायम भी प्रतीत हो रहा था। कार्ल को इस पर विश्वास ही नहीं हो रहा था। जब उन्होंने मालिक को इसकी जानकारी दी, मालिक यह सुनकर अत्यन्त प्रसन्न हुये तथा हँसते हुये बोले मैंने तो तुम्हें शाहजहाँपुर में ही कह दिया था कि मेरे जर्मनी आने से पूर्व ही मैं भला चंगा हो जाऊँगा। अब तुम स्वयं ही कह रहे हो कि मेरी स्थिति पहले से बेहतर है। यह सब लालाजी की कृपा तथा तुम्हारे द्वारा मेरी बीमारी का तर्क पूर्वक इलाज करने का परिणाम है। इसके लिये मैं तुम्हें धन्यवाद देता हूँ। तुमने मेरी बहुत सेवा की है। अब मैं तुमसे आग्रह करता हूँ कि तुम अपनी भलाई के लिये सेवा करने का अवसर दो।

8 मई 1980 – गुरुवार

मालिक का आज विश्राम का दिन था। आसमान में बदली छायी हुयी थी, तेज हवा बह रही थी तथा वातावरण में ठंडक थी । शाम 5.00

बजे जीन माइकल पिक्वेमल तथा मैंने मालिक से फ्रांस में मिशन की भ्रमपूर्ण स्थिति के सम्बन्ध में विस्तार से चर्चा की। वे राम चन्द्र मिशन के अलावा एक अन्य संस्था का पंजीयन कराना चाहते थे तथा जीन माइकल का अनुमान था कि शायद ऐसी ही किसी संस्था का पंजीयन कराया भी जा चुका है लेकिन उन्हें इसकी ठोस जानकारी नहीं है। मालिक ने तुरन्त यह हिदायत दी कि यदि ऐसी किसी संस्था का पंजीयन कराया जा चुका है तो इसे शीघ्र ही रद्द किया जाना चाहिये। उन्होंने इस बात पर जोर देकर कहा कि वहाँ केवल राम चन्द्र मिशन ही अस्तित्व में रहना चाहिये तथा फ्रांस में इसी एकमात्र मिशन का पंजीयन होना चाहिये। इसके अलावा किसी अन्य संस्था का इससे कोई लेना देना नहीं होना चाहिये। कुछ देर पश्चात् जब मैं अकेले में मालिक के साथ था तब उन्होंने इन निर्देशो को पुनः मेरे समक्ष दोहराया।

शाम 7.30 बजे मैंने सामूहिक सत्संग कराया ।

मालिक ने फ्रांस के पॉल कोलम्बे को आज अंतरिम अनुमति प्रदान की।

9 मई 1980 – शुक्रवार

मालिक रात में बेचैनी में सोये। इस दौरान उन्हें भयानक स्वप्न परेशान करते रहे तथा यदाकदा वे दिग्भ्रमित भी हुये।

मेरे चचेरे भाई सुबह 10.00 बजे हवाई अड्डे की ओर रवाना हो गये। वह स्विस एयरवेज की उड़ान से बॉम्बे जा रहे हैं। आज सुबह का सत्संग मेरे द्वारा कराया गया ।

10 मई 1980 –शनिवार

सुबह तथा शाम दोनों समय का सत्संग मेरे द्वारा कराया गया। कार्ल गुचे दोपहर 2.00 बजे म्यूनिख की ओर रवाना हो गये। रात्रि 10.30 बजे कृष्णा ने मुझसे फोन पर बात की। दिन में प्रश्नोत्तरी सत्र रखा गया था। मालिक पूरे सत्र के दौरान अत्यन्त प्रसन्नचित्त तथा हाजिर जबाव रहे।

मालिकः– विचार वास्तविकता के वाष्पीकरण की स्थिति है।

प्रश्न :– जब हम विचार शून्य अवस्था में होते हैं, क्या उस समय चेतना बनी रहती है ?

मालिक :– हाँ, इसमें लगभग पशु जैसी अवस्था होती है इस दौरान मात्र तरंगों द्वारा प्रतिक्रिया होती है। मैं आपको यह बताना चाहता हूँ कि पूर्णरूपेण विचार शून्य अवस्था सम्भव नहीं है। इस अवस्था में जीवन सम्भव नहीं है। हमारी सबसे बड़ी आवश्यकता है कि हमें अपनी विचार शैली में परिवर्तन करना होगा । एक मर्तबा एक व्यक्ति मेरे पास आया और मुझसे बोला कि मैं किसी तरह उसे विचार शून्य अवस्था प्रदान करूँ। मुझे मजाक सूझा तथा मैंने उसे हामी भर दी, तत्पश्चात् मैंने उससे कहा कि मैं एक शर्त पर उसे यह अवस्था प्रदान कर सकता हूँ, यदि वह मुझे पूर्ण विचारशील अवस्था में ले आये तो मैं उसे विचार शून्य अवस्था प्रदान कर दूँगा।

मालिक के इस कथन के साथ ही वहाँ हँसी का फब्बारा फूट पड़ा।

प्रश्न :– मालिक मांसाहार के बारे में आपके क्या विचार हैं ?

मालिक :– मैं आपके सहयोग के लिये उत्तर दे रहा हूँ, मैं आपको इसकी तब तक के लिये अनुमति देता हूँ जब तक आप इन चीजों पर स्वयं बंदिश नहीं लगाते ।

प्रश्न :– मालिक यदि हम मांसाहार करेंगे तो क्या आपका काम बढ़ जायेगा ?

मालिक :– वह मेरा विषय है। आप वो करें जो आपके लिये आवश्यक है तथा मुझे मेरा काम करने दें ।

प्रश्न :– परिपूर्णता क्या है ?

मालिक :– जब शक्तियाँ इस तरह से विकसित हो जायें जिससे सर्वथा समभाव की स्थिति निर्मित हो जाये ।

प्रश्न :– क्या एक नवजात शिशु परिपूर्ण है ?

मालिक :–यह एक सुप्त अवस्था है। अब आप इसे क्या कहेंगे ? परिपूर्ण या अपूर्ण ?

प्रश्न :– परिपक्व सोच क्या है ?

मालिक :– एक लक्ष्य, एक ही मालिक और एक ही पद्धति होना चाहिये।

प्रश्न :– धर्म और आध्यात्मिकता में क्या अंतर है ?

मालिक :–यह मल तथा पॉलिश के अन्तर के समान है।

पश्न :– क्या भावनायें साक्षात्कार में बाधक हैं ?

मालिक :– यह भी धर्म परक विचार है ।

पश्न :– लेकिन भावनायें तो हमेशा ही रहती हैं, इसके लिये हमे क्या करना चाहिये ?

मालिक :– वे कहाँ हैं तुम्हारे घर में या कहीं और (हँसी)। मैं तो भावना का अर्थ ही नहीं समझता तो मैं इसके बारे में क्या बता सकता हूँ। अहसास वास्तविकता है तथा भावना अवास्तविकता।

प्रश्न :– धर्म क्या है?

मालिक :– कुछ निर्धारित सिद्धान्तों का एक स्थान पर इकट्ठा होना धर्म है। तत्पश्चात् मालिक ने एक अभ्यासी के बारे में जानकारी देते हुये बताया जो ध्यान छोड़ना चाह रहा था क्योंकि ध्यान के दौरान उसकी श्वास लेने की गति धीमी हो जाती थी जिसके कारण वह कम मात्रा में आक्सीजन ग्रहण कर पाता था तथा उसे भय था कि इससे उसका जीवन– काल घट सकता था। मालिक ने कहा "देखो, उसका यह अनुमान सही था कि ध्यान के दौरान श्वास की गति अत्यंत धीमी हो जाती है। अतः उसकी शिकायत वाजिब थी। मैंने स्वयं अपनी अवस्था का ध्यान के दौरान अध्ययन किया तथा पाया कि कई दफा तो साँस कई मिनट तक पूर्णतया रुक जाती थी, यह मेरा स्वयं का अनुभव था। तब मैं इस निष्कर्ष पर पहुँचा कि शरीर के भीतर ऐसा कोई न कोई अंग अवश्य होना चाहिये जो शरीर के अन्दर ही ऑक्सीजन उत्पादित करता हो। मैं नहीं जानता कि मैं इसमें सही हूँ अथवा नहीं", तत्पश्चात् मालिक एकदम शान्त हो गये तथा कुछ क्षण तक खामोश बैठे रहे। उसके पश्चात् उन्होंने हमारी ओर मुखातिब होकर कहा, "हाँ शरीर में ऐसा कोई अंग अथवा ऐसा ही कुछ है जो ऑक्सीजन उत्पादित करता है, अब मैं इसे प्रमाणिक तौर पर कह सकता हूँ, मुझे अभी अभी इसके यथार्थ का पता चला है।"

11 मई 1980 – रविवार

सुबह 8.30 बजे – मालिक ने सत्संग कराया। सिटिंग बहुत अच्छी रही। सुबह 9.15 बजे हम चिड़ियाघर गये तथा दोपहर 12.15 बजे वहाँ से

वापस लौट आये। मालिक की रेन्डियर देखने की बड़ी तमन्ना थी। कल वे विवे से रेन्डियर के बारे में बड़ी उत्सुकता से जानकारी ले रहे थे तथा आज के चिड़ियाघर भ्रमण का एक मात्र यही उद्देश्य था कि मालिक को किसी तरह एक रेन्डियर देखने को मिल जाये। लेकिन अफसोस चिड़ियाघर में एक भी रेन्डियर नहीं था। मालिक को व्हील चेयर पर चिड़ियाघर घुमाने में मुझे अच्छी खासी मशक्कत करनी पड़ी।

शाम 4.00 बजे प्रशिक्षकों की एक बैठक आयोजित की गयी थी जो लगभग एक घंटा चली।

शाम 8.00 बजे – मैंने सायंकालीन सत्संग कराया, सिटिंग पैंतीस मिनट चली।

12 मई 1980 – सोमवार

आज सुबह का सत्संग नहीं हुआ, मालिक का कहना था कि सभी अभ्यासियों को भरपूर दिया जा चुका है। यू. के. के अभ्यासी तथा आयरिश प्रशिक्षक बेइरब्रे मेडेन रेड्डी ने मालिक के साथ सुबह 9.00 बजे से 9.45 तक चर्चा की । एक प्रशिक्षक जॉन वेडलो ने मालिक से इंग्लैण्ड में सहज मार्ग पर किये गये कार्य के बारे में अपनी टिप्पणी देने के लिये निवेदन किया ।

मालिक : मेरा इंग्लैण्ड से अब कोई लेना देना नहीं है। वहाँ से अब मेरा सम्पर्क टूट चुका है।

जॉन : मालिक इसके पीछे क्या कारण है?

मालिक : मैं तुम्हें बताना चाहता हूँ कि मेरा ईश्वर से सम्पर्क है तथा आप लोग बुद्धिमत्ता से चिपके रहना चाहते हो। यदि मानसिकता सही हो तो समस्त विकारों को दूर किया जा सकता है। बुद्धिमत्ता में तो अँग्रेज लोग अग्रणी हैं, लेकिन आध्यामिकता के मामले में दिवालिये हैं।

ब्रेइरब्रे : आयरलैण्ड के बारे में आपके क्या विचार हैं ? क्या वहाँ पर कार्य प्रगति पर है ?

मालिक : यदि वे इच्छुक हों तो कार्य किया जा सकता है । मैं आपको एक बात बताना चाहता हूँ कि भारत में तो माँ बच्चे को पालने में

ही ईश्वर के बारे में बताना शुरू कर देती है। लेकिन यहाँ आप लोग क्या करते हैं ? हमारे पास शेक्सपीयर तथा मिल्टन के साहित्य का भंडार है लेकिन इससे कोई हल निकलने वाला नहीं है। एक बुद्धिमान व्यक्ति इसमें ऊँचाई तक पहुँच सकता है। मेरा कहने का तात्पर्य है कि वह आध्यात्मिकता में ऊँचाई तक पहुँच सकता है, लेकिन एक शक्ति उसे ऊपर की ओर खींचती है तो दूसरी उसे नीचे की ओर धकेलती है। इसलिये बुद्धिमत्ता में वे बहुत अच्छे हैं तथा आध्यात्मिकता में बौने।

जॉन : मालिक इसका क्या उपाय है ?

मालिक : अभ्यास । हमारे यहाँ करने के लिये अभ्यास है और इसे किया जाना आवश्यक है। आप लोग बहुत अध्ययन कर चुके हैं, लेकिन आज तक आपने क्या प्राप्त किया है? केवल जानकारी प्राप्त कर लेना ही पर्याप्त नहीं है। अब अभ्यास पर आइये। इसे करिये तत्पश्चात् इसका परिणाम देखिये ।

ब्रेइरब्रे : क्या आध्यात्मिक उन्नति के लिये तकलीफें आवश्यक है?

मालिक : नहीं वे भी अब पीछे छूट गयी हैं। लेकिन मैं आपको एक बात बताता हूँ। भारत वर्ष में ऐसे अनेक संत हुये हैं जिन्होंने अपने आपको ईश्वर के सम्मुख रख कर यह प्रार्थना की कि सारे संसार की तकलीफें उन्हें दे दी जायें। मेरे इस कथन के लिये मैं आपसे क्षमा चाहता हूँ लेकिन अब आप समझ गये होंगे कि उनकी तुलना में आपकी क्या स्थिति है ।

सुबह 10.00 से 11.00 बजे तक अमेरिका के दल के साथ मालिक की बैठक थी जिसमें लगभग पच्चीस अभ्यासी थे। सभी मौन बैठे हुये तथा चुप्पी साधे थे। तभी मालिक ने मौन भंग करते हुये उनसे प्रश्न किया "क्या आपको कोई व्यवहारिक दिक्कतें पेश आ रही हैं ? यदि ऐसा है तो वे इसका स्पष्टीकरण प्राप्त कर सकते हैं।"

डेव वोलेवाइस : जैसे जैसे अभ्यासी साल दर साल अभ्यास करता जाता है तो क्या प्रक्रिया आसान होती जाती है अथवा विचारों का आना निरन्तर जारी रहता है ?

मालिक : निरन्तर अभ्यास से विचारों का आवेग कम हो जाता है।

लेकिन यह एक दिन का काम नहीं है। अधिक समय तक ध्यान करिये तथा इस अवधि को एक घंटे तक बढ़ायें, तत्पश्चात् इसका परिणाम देखें।

डेव : यह अत्यंत कठिन है ।

मालिक : केवल इसलिये, क्योंकि आप इसे कर नहीं रहे हैं, मैं इसे आसानी से कर सकता हूँ। मैं कोई विशेष व्यक्ति नहीं हूँ और यदि मैं इसे कर सकता हूँ तो आप भी इसे कर सकते हैं ।

डेव : क्या सतत् स्मरण स्वतः स्थापित हो जाता है अथवा इसके लिये प्रयास करना पड़ता है ?

मालिक : यदि प्रेम की परिपूर्णता है तो यह स्वतः ही स्थापित हो जाता है।

ग्रेस किम्बाल : यदि अभ्यासी इस पद्धति को छोड़ देता है तो क्या दण्डित किया जाता है ?

मालिक : कोई दण्ड नहीं। मैं तुम्हें एक बात बताना चाहता हूँ। इसमें केवल सहयोग की आवश्यकता है न कि ज्यादा त्याग आदि की।

स्टीव श्वॉर्ज : विशेष व्यक्तित्व क्या होता है ?

मालिक : हाँ यह गोपनीय है ।

स्टीव : क्या अभ्यासियों को अपने आध्यात्मिक लाभ के लिये भारत जाना आवश्यक है ।

मालिक : हाँ, वास्तविक स्थिति की जानकारी तथा प्राणाहुति के लिये यदाकदा इसकी आवश्यकता पड़ती है ।

दोपहर के भोजन के पश्चात् कनाडा तथा हॉलैण्ड के अभ्यासियों ने सामूहिक रूप से मालिक से मुलाकात की। मालिक अत्यंत प्रसन्न नजर आ रहे थे। वह कुछ रहस्यपूर्ण विषयों पर बताने के उत्सुक थे। प्राणाहुति के विषय पर जानकारी देते हुये उन्होंने बताया, "समय के पार से भी प्राणाहुति दी जा सकती है"। मालिक ने कहा, "बेशक प्राणाहुति अनन्त के पार से दी जा सकती है लेकिन इसे सहन करने की क्षमता किसमें है? यदि ऐसा किया जाता है तो एक ही क्षण में उसे समस्त बिन्दुओं तथा क्षेत्रों को पार करा कर उसे उच्च अवस्था प्रदान की जा सकती है। ईश्वर न

करें ! यदि कोई व्यक्ति मृत्यु शय्या पर पड़ा है तथा उसके जीवन के पाँच मिनट अथवा ऐसा ही कुछ समझ लीजिये, समय शेष है। उस स्थिति में अनन्त पार से दी गयी एक ही प्राणाहुति से उसे सारे बिन्दुओं तथा क्षेत्रों से पार करा कर उसे उच्च अवस्था प्रदान की जा सकती है।"

डॉन सेबोरियन : मालिक, क्या एक ही मिनट में ?

मालिक : तत्क्षण ही। लेकिन ऐसे व्यक्ति हैं कहाँ ? मैं यह भी बताना चाहता हूँ कि प्रकृति की शक्तियाँ भी इस पर कार्य कर रही हैं।

मालिक ने एक पुरानी घटना का जिक्र करते हुये बताया कि एक बार किसी अभ्यासी ने लालाजी साहब से कहा, "महाराज आप निरन्तर हमारे ऊपर कार्य करते रहते हैं तथा हम भी अपनी समझ के अनुसार अपना तुच्छ सा योगदान आपको देते रहते हैं । क्या ऐसी कोई युक्ति नहीं है जिससे आपका काम शीघ्र अर्थात् एक घंटे भर में पूर्ण हो जाये तथा आपकी तथा हमारी मेहनत बच सके ?" लालाजी साहब ने उत्तर दिया, "पूर्णता की स्थिति तो इतने क्षण भर में ही दी जा सकती है जितने में कि आँसू की एक बूँद आँख से निकलती है लेकिन उस स्थिति में सम्पूर्ण स्नायु तंत्र ध्वस्त हो जायेगा।" मालिक और भी कुछ कहना चाहते थे, किन्तु उन्होंने विनोदपूर्वक मुस्कुराते हुये कहा, "नहीं अब इसके आगे मैं कुछ नहीं कहूँगा।"

कुछ देर शान्त रहने के पश्चात् मालिक ने कहा, "यदि मैं जल्दबाजी में कुछ कर भी दूँ तथा बेशक, यह किया जाना सम्भव भी है लेकिन व्यक्ति इसका अनुभव ही नहीं कर पायेगा, अतएव उसके लिये इसका कोई महत्व ही नहीं रह जायेगा कि उसने क्या प्राप्त किया है। यह मात्र विचार शक्ति के सही उपयोग का प्रश्न है। यदि व्यक्ति अपनी विचार शक्ति का उपयोग मालिक में पूर्ण लय अवस्था के लिये करता है, तो यह सम्भव है कि अगले विश्व का निर्माण वह अपने अनुरूप कर सके।"

मालिक रात भर आराम से सोये ।

13 मई 1980 – मंगलवार

एक शान्त सुबह। मालिक रात में अच्छी नींद सोये थे, अतः सुबह

तरोताजा नजर आ रहे थे। मालिक को म्यूनिख प्रस्थान के लिये तैयारी इत्यादि करनी थी, अतः आज कोई सत्संग नहीं रखा गया था।

मालिक, सुलोचना, टॉम व्हीटलम तथा मैंने एस. ए. एस. विमान सेवा की उड़ान संख्या एस के 635 के विमान डी सी–9 से कोपेनहेगन से म्यूनिख की ओर प्रस्थान किया। उड़ान निर्धारित समय से पन्द्रह मिनट विलम्ब से दोपहर 2.55 पर रवाना हुयी। हमारा विमान शाम 4.05 बजे फ्रैंकफर्ट हवाई अड्डे पर उतरा तथा शाम 4.40 बजे वहाँ से रवाना होकर शाम 5.25 बजे म्यूनिख पहुँचा। म्यूनिख पहुँचने पर भी मालिक तरोताजा नजर आ रहे थे ।

हैंस गैंगलोफ तथा लगभग पच्चीस अन्य अभ्यासियों के दल ने मालिक का पुष्प इत्यादि से स्नेह पूर्वक अभिवादन किया। मालिक, मैं तथा सुलोचना, हवाई अड्डे से हैंस गैंगलोफ के निवास पर पहुँचे तथा रात्रि भोजन हमने वहीं किया। तत्पश्चात् हैंस सुलोचना को वेइजेनफेल्ड स्ट्रास स्थित तिल्दे माइकल के निवास पर ले गये। म्यूनिख में हमारे प्रवास के दौरान उनके ठहरने की व्यवस्था वहीं पर की गयी थी। वह इस बात को लेकर अत्यंत परेशान थी कि उसे मालिक से विलग अकेले में रुकना पड़ रहा था, यद्यपि मालिक उससे भी ज्यादा परेशान एवं चिंतित थे कि उनकी बहू विदेशी धरती पर अकेली पड़ गयी है। कार्ल गुचे ने शाम का सम्पूर्ण समय मालिक के साथ व्यतीत किया।

14 मई 1980– बुधवार

डॉ. कार्ल गुचे –सुबह 7.30 बजे मालिक के खून तथा पेशाब की जाँच के नमूने के लिये उनके पास पहुँचे। तत्पश्चात् मैं, सुलोचना,कार्ल तथा हैंस गैंगलोफ सुबह 8.30 बजे मालिक को लेकर डॉ. वुल्टेक के शाचस स्थित रेडियोलोजिकल इन्स्टीट्यूट पहुँचे। जहाँ पर मालिक के अनेक एक्सरे लिये गये, तत्पश्चात् सोनोग्राम तथा अंतिम परीक्षण के अन्तर्गत एक कम्प्यूटर टोमोग्राफी बनायी गयी जिसमें फिलिप्स टोमोस्कैन–200 का उपयोग किया गया। समस्त चिकित्सीय परीक्षण दोपहर 1.00 बजे तक पूर्ण हो गये। मालिक ने एक गिलास दूध पिया, जिसके तत्पश्चात्

हम तिल्दे माइकल के निवास की ओर रवाना हो गये तथा दोपहर का भोजन हमने वहीं किया। भोजन के पश्चात् मालिक ने शाम 5.30 बजे तक विश्राम किया। तदुपरांत हम ह्यूलियनप्लेज स्थित हैंस गैगलोफ के निवास की ओर रवाना हो गये। शाम तक हैंस को प्रारम्भिक जाँच की सम्पूर्ण जानकारी उपलब्ध हो चुकी थी जिसके अनुसार मालिक के उदर में एक छोटे आकार का ट्यूमर था जो ज्यादा घातक नहीं था तथा अमीबायोसिस (उदर में संक्रमण) होने का संदेह था।

हमें सूचना मिली कि बड़ी संख्या में इटली तथा अमेरिका के अभ्यासी यहाँ पहुँच चुके हैं। उनके साथ–साथ मेरी युगोस्लाविया की बहन जोरा ट्यूनर के भी यहाँ पहुँचने की खबर थी जो ब्रिगिट स्मिथ के यहाँ ठहरी हुयी थीं। रत्ना देवानन्थन तथा उनकी पुत्री (बैंगलोर) आकेन से यहाँ पहुँच चुकी थीं।

मालिक निश्चिंत तथा प्रसन्नचित्त दिखायी पड़ रहे थे एवं दोपहर लगभग 1.00 बजे वे विश्राम करने के लिये अन्दर चले गये, बल्कि हमने उनसे आग्रह किया कि अब उन्हें थोड़ा विश्राम करना चाहिये।

15 मई 1980 – गुरुवार

विगत शनिवार से मालिक को रात्रि में अच्छी नींद आ रही है। जब से उन्होंने दवाइयाँ इत्यादि लेना बंद कर दी हैं तथा मालिक के बिस्तर पर लेटने के पश्चात् मैं प्रतिदिन उनकी सफाई करता हूँ। अब उन्हें डरावने स्वप्न तथा रात में बड़बड़ाने की शिकायत नहीं है। आज सुबह उनका ब्लड प्रेशर 125/75 था।

सुबह 9.00 बजे हम ह्यूलियनप्लेज से तिल्दे के निवास की ओर रवाना हुये। मालिक की म्यूनिख यात्रा का विधिवत् रूप से आज प्रथम दिवस है। तिल्दे के निवास पर लगभग एक सौ पचास से भी अधिक अभ्यासी एकत्रित हो चुके थे जिसमें युगोस्लाविया की जोरा ट्यूनर के अलावा पच्चीस अभ्यासी अमेरिका के, पच्चीस इटली के तथा अन्य स्थानीय अभ्यासी थे।

सुबह 10.30 बजे – मालिक ने प्रथम सिटिंग दी। प्राणाहुति बहुत

अच्छी रही। अनेक अभ्यासियों ने अपने अनुभव में बताया कि ध्यान के दौरान उन्हें अपने स्वयं का भान तक नहीं रहा। सिटिंग समाप्त होने के तुरन्त पश्चात् मालिक ने चर्चा प्रारम्भ कर दी।

मालिक : "मैं आपको जानकारी देना चाहता हूँ। प्रत्येक व्यक्ति समाधि के पश्चात् उसी अवस्था में रहना चाहता है लेकिन क्रमिक विकास के लिये यह आवयक नहीं है। मेरा तात्पर्य आध्यात्मिक उन्नति से है, जिसके लिये इसकी कोई आवश्यकता नहीं है। मेरे कथन का अक्सर ही कोई आधार अवश्य होता है तथा यदाकदा विचार स्वतः ही आ जाते हैं। यह विचार भी स्वतः ही निरन्तर मेरे मन में आ रहा था, अतएव मैं इसके बारे में आपको जानकारी दे रहा हूँ।" मालिक ने आगे कहा, "यदि समाधि की अवस्था स्वतः ही प्राप्त हो जाये तो इसमें कोई हर्ज नहीं है, लेकिन उस दौरान दिव्य चेतना का बना रहना आवश्यक है तथा उसकी सहायता से ही आपको आगे बढ़ना चाहिये। यदि उसमें दिव्य चेतना का अभाव है तब तो यह सब व्यर्थ है।" हैंस गैंगलोफ ने मालिक से लक्ष्य के सम्बन्ध में विस्तार से जानकारी देने के लिये आग्रह किया। मालिक ने उत्तर दिया, "मैं लक्ष्य में गुम हो गया हूँ! " ऐसा कहकर वे बच्चों की भाँति खिलखिलाकर हँसने लगे, उनके साथ–साथ वहाँ उपस्थित सभी व्यक्ति भी हँसने लगे।

दोपहर 12.00 बजे से 3.00 बजे तक मैं अभ्यासियों के विभिन्न दलों की सिटिंग में व्यस्त था जिसमें, क्लीवलैंड, फाइरेंज तथा टोरिनो के अभ्यासी थे। मैंने कुछ अभ्यासियों को व्यक्तिगत सिटिंग भी दी ।

दोपहर बाद का सत्र 3.30 बजे प्रारम्भ हुआ। मैंने सहज मार्ग पर सामान्य जानकारी दी, तत्पश्चात् मेरे द्वारा उनके प्रश्नों इत्यादि के उत्तर दिये गये।

मालिक के निर्देश पर मैंने शाम का सत्संग 6:30बजे कराया। तिल्दे के निवास से हम रात्रि 8.30 बजे हैंस गैंगलोफ के निवास के लिये रवाना हो गये। मालिक सोने के लिये बहुत देर से गये, रात 2.00 बजे के लगभग। रात्रि भोजन के पश्चात् मालिक हैंस की नई नवेली पत्नी केरिन

के साथ व्यस्त रहे। वह अत्यंत संकोची स्वभाव की तथा अपने आपमें गुमसुम रहने वाली महिला थीं, लेकिन मालिक ने उन्हें उनके संकुचित दायरे से बाहर निकालकर हमारे साथ, अपने चुटकले तथा कहानियों पर हँसने हँसाने में व्यस्त रखा।

16 मई 1980 – शुक्रवार

मालिक को अच्छी नींद आयी तथा वे अपेक्षाकृत देरी से सुबह 8. 30 बजे उठे । सुबह 10.00 बजे मालिक ने मुझसे कहा, "देखो यहाँ के लोगों में तुम्हारे प्रति कितना उत्साह है। मैं अब तुम्हें कुछ देना चाहता हूँ (मालिक बाथ टब में थे)। जब मैंने लालाजी साहब से इसके बारे में पूछा तो उन्होंने कहा 'जो भी हमने अपने पास सहेजकर रखा हुआ है वह सब उसी के लिये ही है, और बेशक ही यह केवल उसी को ही प्राप्त होगा।' क्या तुम्हें मेरी बात समझ में आयी ? यह मात्र क्षमता का प्रश्न है। भाई तुमने तो आज बहुत बड़ी जीत हासिल की है।" मालिक अत्यन्त प्रसन्न थे तथा जब मैंने उन्हें बाथटब से बाहर निकाला, उन्होंने प्रेमपूर्वक मुझे गले से लगा लिया तथा मुझसे कहा "तुमने मेरी जितनी सेवा की है उतनी तो मेरे पुत्रों ने भी मेरी नहीं की, तुम चिरायु रहो।"

मालिक ने आज दिन में निम्न व्यक्तियों को अंतरिम अनुमति प्रदान की:

1) टोरिनो के साइरे डारियो ।
2) ओहियो के बेत्सी स्टेलार्ड– बारलो ।
3) म्यूनिख की सिल्विया हेविग ट्रांसर ।
4) म्यूनिक के डॉ. डर्क हेविग ।

तिल्दे के निवास पर मालिक ने कुछ प्रश्नों के उत्तर दिये।

प्रश्न : मालिक क्या आप मुझे बता सकते हैं कि 'स्व' क्या है ? ज्ञान को जब 'स्व' से जोड़ा जाये तो इसका क्या मतलब है ? क्या यही ईश्वर है ?

मालिक : यह ईश्वर नहीं है, यह ईश्वर से भिन्न है ।

हैंस : क्या स्व ईश्वर नहीं है ?

मालिक : अपने स्वयं के बारे में विचारना स्व है इसका परिणाम अहं होता है।

प्रश्न : मालिक मैं आपसे एक प्रश्न पूछना चाहता हूँ। आपने अपने दिल्ली के संदेश में बताया था कि भारत में अपने अन्तर्दर्शन के लिये आप अपने अन्तस का प्रयोग करते हैं, जबकि पश्चिम के लोग अपने अन्तर्दर्शन के लिये अपने स्व का उपयोग करते हैं। क्या आप इसके बारे में मुझे स्पष्ट कर सकते हैं कि ऐसा क्यों है ?

मालिक : इस प्रश्न में ही उत्तर छिपा हुआ है ।

प्रश्न : हाँ, लेकिन शायद मुझमें ही इतनी समझ नहीं है कि मैं इसे समझ सकूँ।

मालिक : क्योंकि तुममें उस स्तर की बुद्विमत्ता नहीं है, तुममें चतुराई है।

प्रश्न : आपने दिव्य व्यक्तित्व के बारे में लिखा है तथा यह भी बताया है कि उनकी उपस्थिति के कारण मुक्ति पाना अब अत्यन्त सरल हो गया है। दिव्य व्यक्तित्व से आपका क्या अभिप्राय है ?

मालिक : वे संत हैं तथा उन्हें संत ही कहा जाता है।

प्रश्न : क्या वे मानव शरीर में अवतरित हुये हैं ?

मालिक : मैं तुम्हें इतनी जानकारी तो अवश्य दे सकता हूं कि यह सत्य है।

प्रश्न : क्या वह अवतार है ?

मालिक : महान व्यक्तियों का जन्म कोई अकस्मात् ही नहीं होता। बल्कि उनका जन्म तब होता है जब संसार को उनकी आवश्यकता होती है तथा उनकी बेसब्री से प्रतीक्षा हो रही होती है ।

प्रश्न : उनका अवतरण कब हुआ ? क्या आप इसके बारे में मुझे जानकारी दे सकते हैं ?

मालिक : मैंने इसके बारे में लिखा भी है कि विशेष व्यक्तित्व से कैसे सम्पर्क किया जा सकता है। तुम क्यों नहीं इसके लिये प्रयास करते? तुम भी किसी समय इसके लिये प्रयास करके देखो तथा उसे समझने की चेष्टा

करो।

प्रश्न : सतत् स्मरण कैसे बढ़ाया जा सकता है ? क्या इसका कोई तरीका है?

मालिक : हमारे जेहन में एक तथा केवल एक ही विचार निरन्तर चलना चाहिए तथा जिसकी उत्पत्ति हृदय से होनी चाहिये। इसका मंत्र की तरह से उच्चारण नहीं किया जाना चाहिये। मैं नहीं जानता कि मैं सही हूँ अथवा नहीं।

प्रश्न : क्या मैं ऐसा विचार कर सकता हूँ कि मेरा शरीर मालिक का शरीर है तथा मेरे स्थान पर मेरे मालिक ही कार्य कर रहे हैं ? क्या यह मालिक के हृदय में होने के विचार के बनिस्पत बाह्य तौर पर विचारने का तरीका है?

मालिक : मैं ऐसा करने का परामर्श नहीं देता, अर्थात् मेरे कहने का तात्पर्य यह है कि मालिक हृदय में हैं तथा वह स्वयं ही उस स्थिति में रूपान्तरित होते हैं। यह मात्र एक विचार है।

हैंस : ऐसा लिखा गया है कि हमें यह समझना चाहिये कि मेरा शरीर मेरा न होकर मेरे मालिक का है तथा मेरे सारे क्रियाकलाप तथा सारा कुछ जो भी मैं कर रहा हूँ, वह मालिक के द्वारा किया जा रहा है। क्या यह मूलतः सही है ?

मालिक : इसमें भिन्नता है। यह अत्यंत समर्पित व्यक्तियों के लिये है, जो स्वयं अपना तरीका ढूँढ़ लेते हैं। शुरूआतीलोगों के लिये यह उपयुक्त नहीं है। इसके लिये किसी पर दबाव नहीं डाला जाना चाहिये। अपितु यह स्वतः ही विकसित होना चाहिये वरना यह कतिपय मूर्ति पूजा के समान ही हो जायेगा।

प्रश्न : विश्वास के बारे में यदि कहा जाय, क्या यह एक उपहार है? अथवा यह इच्छा का एक कार्य है ?

मालिक : दोनों ही कथन सत्य हैं ।

प्रश्न : आपके द्वारा बताया गया है कि लक्ष्य तक पहुँचने के लिये विश्वास तथा दृढ इच्छाशक्ति की आवश्यकता होती है। आपके द्वारा यह

भी कहा जाता है कि लक्ष्य तक पहुँचने के लिये समर्पण की भी आवश्यकता है। अतः दृढ इच्छा शक्ति एवं समर्पण में से प्राथमिकता किसे दी जानी चाहिये ? क्या एक के पश्चात् दूसरे का क्रम आता है अथवा दोनों समान रूप से आवश्यक हैं ?

मालिक : समर्पण तो अपने स्थान पर उचित है, लेकिन प्रथमतः इच्छाशक्ति का होना अति आवश्यक है। वास्तव में कहा जाये तो मेरा ऐसा अभिमत है कि दोनों एक ही चीज हैं, लेकिन देखने पर भिन्न भिन्न रंगो में दिखायी पड़ते हैं।

हमारे घर वापस पहुँचने पर कुछ व्यक्तियों द्वारा हैंस गैंगलोफ से टेलीफोन पर सम्पर्क किया गया। हमारे लिये एक दुविधा उत्पन्न हो गयी थी। तिल्दे माइकल मिशन के कार्यक्रम का संचालन अपने निवास से जारी रखे जाने के लिये तैयार नहीं थी, तथा हैंस गैंगलोफ को 21 मई 1980 के लिये किसी अन्य स्थान की व्यवस्था करना आवश्यक थी।

मालिक ने हैंस से कहा, "आप अपना यथा सम्भव प्रयास करें, मैं इसके लिये प्रार्थना करूँगा।

17 मई 1980 – शनिवार

तिल्दे द्वारा खड़ी की गयी समस्या के कारण मालिक रात्रि 2.00 बजे तक जागते रहे तथा सारी रात बेचैनी में काटी किन्तु सुबह उठने के पश्चात् वे तरोताजा एवं प्रसन्नचित्त नजर आ रहे थे ।

1) कसेरटा की मारिया रोसाती तथा 2) नेपल्स के पाउलो कोलांजिलो को अंतरिम अनुमति प्रदान की गयी।

प्रतिदिन की तरह ही हम आज भी सुबह 9.00 बजे तिल्दे के निवास पर पहुँच गये । मालिक उत्साहित तथा प्रसन्नचित्त नजर आ रहे थे। सुबह 10.30 बजे मालिक ने सत्संग कराया । शाम का सत्संग टोनी बरनारडी ने कराया। तत्पश्चात् हम हैंस के निवास पर वापस लौट आये।

18 मई 1980 – रविवार

सुबह 9.00 बजे हम तिल्दे के निवास पर पहुँचे। मालिक ने सुबह 10.30 बजे सत्संग कराया, सिटिंग पैंतालिस मिनट तक चली। आज दिन

में दो अन्य अभ्यासियों को अंतरिम अनुमति प्रदान की गयी।

1) बेड सेजीबर्ड की एल्सेबेथ स्टोलटन 2) म्यूनिख के डॉ. जेरट्रुड प्यूटर

आज सायंकालीन सत्संग नहीं रखा गया था ।

19 मई 1980 – सोमवार

सुबह 8.00 बजे – मालिक ने हैनोवर की मेरिटा शल्टर को अंतरिम अनुमति प्रदान की।

सुबह 9.50 बजे हम तिल्दे के निवास पर पहुँचे। मालिक के निर्देशानुसार प्रातःकालीन सत्संग मैंने कराया। मालिक अधिकांश समय जोरा ट्यूनर तथा टोनी बरनारडी से चर्चा करने में व्यस्त रहे। उन्होंने शाम 5.30 बजे सायंकालीन सत्संग कराया, तत्पश्चात् म्यूनिख आये अभ्यासियों के प्रथम बैच के समक्ष हैंस गैगलोफ ने कार्यक्रम समाप्ति पर अपना अंतिम सम्बोधन दिया जिसके पश्चात् इटली तथा अमेरिका के अभ्यासी एवं जोरा ट्यूनर, सभी अपने गंतव्यों की ओर रवाना हो गये। विदाई के वक्त सभी भावुक हो गये थे।

20 मई 1980– मंगलवार

आज मालिक के विश्राम का दिन है। केरिन तथा हैंस गैंगलोफ ने विनम्रतापूर्वक मालिक के साथ दोपहर भोजन पर सुलोचना को भी आमंत्रित किया। उज स्वयं तिल्दे के घर जाकर उसे अपने साथ ह्यूलियनप्लेज ले आये। मालिक का साथ पाकर वह अत्यन्त प्रसन्न थी।

आंद्रे पोरे शाम 5.00 बजे मालिक से व्यक्तिगत मंत्रणा करने के लिये यहाँ पहुँचे। फ्रांस में राम चन्द्र मिशन के सचिव के पद से जीन माइकल पिक्वेमल को हटवाने के पीछे उसी का हाथ था।

रात्रि 8.00 बजे से 10.30 बजे तक मालिक की अध्यक्षता में प्रशिक्षकों की एक बैठक आयोजित की गयी। बैठक में हैंस गैंगलोफ द्वारा दीक्षा के सम्बन्ध में एक प्रश्न उठाया गया जिसके सम्बन्ध में शायद अप्पा द्वारा उन्हें जानकारी दी गयी थी । मैंने किसी तरह सारे मामले को रफा दफा किया। मेरी समझ में नहीं आ रहा था कि अप्पा इस मामले पर

आपत्तिजनक है।

21 मई 1980 – बुधवार

शाम 4.00 बजे मालिक विला स्टॅक पहुँचे। द्वितीय सामूहिक बैठक यहीं पर आयोजित की गयी थी। सभाग्रह लगभग तीन सौ अभ्यासियों से खचाखच भरा हुआ था जिसमें तीन चौथाई अभ्यासी फ्रांस के थे। हैंस द्वारा स्वागत सम्बोधन दिया गया। आंद्रे का सम्बोधन सहज मार्ग पद्धति के विपरीत था। विगत दो वर्षो से फ्रांस में दो ग्रुप हो गये हैं। मैंने दोनों ग्रुयों में एकता लाने के लिये उन्हें एक निश्चित दायरे में रहकर कार्य करने की हिदायत देने के लिये मालिक से प्रार्थना की। पोरे ने सहज मार्ग के प्रति अपनी स्वच्छंद विचारधारा के कारण अत्यन्त निराश किया था। यद्यपि मेरे द्वारा प्रिय मालिक को पूर्व में ही इसके सम्बन्ध में आगाह कर दिया गया था, लेकिन उस समय उन्होंने मुस्कुराकर यह कहा "उसमें (पोरे में) मालिक के प्रति अगाध प्रेम है।" आज पुनः मैंने मालिक को उसके प्रति सचेत रहने के लिये आगाह किया तथा स्थिति को ध्यान में रखते हुये शीघ्र कार्यवाही करने का आग्रह किया। वे मुझे मंच के पिछवाड़े ले गये तथा मुझे एक संदेश लिखने के लिये कहा जिसे मेरे द्वारा सबके समक्ष पढ़ा जाना था, इस पूरी कार्यवाही में हमें तीन मिनट का समय लगा।

मालिक का म्यूनिख में दिया गया संदेश

"परमात्मा तक पहुँचने का मार्ग एक ही है, मात्र एक। उस तक पहुँचने की पद्धति भी हमेशा एक ही होगी, जो उसके लम्बवत होगी (उस तक सीधी पहुँच रखती होगी)। यदि आप इस पर ध्यान पूर्वक विचार करें तो पायेंगे कि ऐसी लम्बवत सीधी पहुँच मात्र एक ही है। ईश्वर एक लक्ष्य है तथा दिव्यता उस तक पहुँचने की एक विधि है। यही वह वस्तु है जो समुद्र में झाग उत्पन्न करती मदमस्त लहरों के बीच व्यक्ति को अपनी ओर आकर्षित करती है। अतः मालिक का यह परम कर्तव्य है कि वह वास्तविक सार तत्व में साँस लें तथा इसके लिये ही मालिक की अत्यन्त आवश्यकता पड़ती है। इस पर आपको विचार करना है।"

"मालिक से वास्तविकता तथा सार तत्व पाये बिना समस्या नहीं सुलझ सकती। मैं मालिक के अलावा आज तक किसी ऐसे व्यक्ति के सम्पर्क में नहीं आया जो मेरे लिये सर्वस्व हो, तथा मैं सोचता हूँ कि मैंने इसमें कोई भूल नहीं की है, क्योंकि मैंने सारी चीजों को सही दिशा प्रदान की है।"

घर पहुँचने पर हैंस, उज, फ्रेंकोइस डेरोलेड तथा मैं जीन मेरी बोटे क्वीन के साथ रात्रि 1:30 बजे तक बैठ कर उक्त संदेश का फ्रेन्च तथा जर्मन भाषा में अनुवाद करने का प्रयास करते रहे। जर्मन भाषा में अनुवाद के दौरान हम एक जगह पर अटक गये जिसके लिये मैंने एक शब्द सुझाया जबकि हैंस का सुझाव उससे भिन्न था। जब हम सभी इस पर चर्चा कर रहे थे, तब मालिक केरिन तथा ऐल्सबेथ इहलो के साथ चर्चा में व्यस्त थे, अचानक वे अपने स्थान से उठकर हमारी टेबल तक आये तथा हैंस से बोले "जो शब्द पार्थसारथी, मेरा मतलब चारी ने सुझाया है वह सही है।" मालिक के जर्मन शब्दकोश की इस जानकारी से सभी आश्चर्यचकित रह गये ।

22 मई 1980 – गुरुवार

विला स्टॅक में मैंने मालिक के म्यूनिख के संदेश को विस्तार देने के लिये एक वार्ता दी। प्रातःकालीन सत्र के समापन पर हम प्रिंजरेजेन्टीन स्ट्रेस से रवाना होकर दोपहर के भोजन के लिये तिल्दे के निवास पर पहुँचे। हैंस गैंगलोफ ने फ्रैंकफर्ट से दोपहर 2:22 बजे आने वाली ट्रेन पर मेरे पुत्र चि. कृष्णा की अगवानी की तथा स्टेशन से उसे अपने साथ लेकर दोपहर 2:45 बजे वह तिल्दे के निवास पर पहुँच गये। कृष्णा अमेरिका से तीन सप्ताह के लिये यूरोप आया है, ताकि उसे मालिक का सानिध्य प्राप्त हो सके। यहाँ आने से पूर्व उसने मालिक से अनुमति प्राप्त कर ली थी। वह लुफ्थान्सा हवाई सेवा से शिकागो से सुबह 8.00 बजे फ्रेंकफर्ट पहुँचा। उसके ठहरने की व्यवस्था सुलोचना के साथ तिल्दे के निवास पर की गयी थी ताकि वे दोनों एक साथ रह सकें।

दोपहर का पूरा सत्र आंद्रे पोरे ने अपने स्वयं के सम्बोधन के लिये रखा था, वह फ्रेंच ग्रुप के सम्मुख विस्तार से अपने विचार रखना चाहते थे। दिन प्रतिदिन वह मिशन के लिये एक समस्या बनते जा रहे हैं। उन्हें उन बातों को कहने में अब जरा भी हिचकिचाहट नहीं होती जिसके बारे में कुछ वर्ष पहले तक मालिक की उपस्थिति में वह सोचने का साहस भी नहीं कर सकते थे। अब वह अत्यन्त निर्भीक हो गये हैं लेकिन उनकी सारी छल कपट तथा धोखेबाजी, प्रेम तथा समर्पण की परत के नीचे छुपी रहती है। इस समस्या का निराकरण कैसे होगा? इसके लिए तो केवल मालिक ही कुछ कर सकते हैं।

23 मई 1980 – शुक्रवार

दो अभ्यासियों के सहज मार्ग से जुड़ने के साथ ही स्पेन भी सहज मार्ग के नक्शे में सम्मिलित हो गया। डायने ओलिवा मेना सांच तथा जुआन टुबाउ गेलीन्डो को आज अंतरिम अनुमति प्रदान की गयी।

सुबह 10:00 बजे मालिक ने सिटिंग दी। सिटिंग प्रारम्भ हुये मुश्किल से पन्द्रह मिनट व्यतीत हुये होंगे कि अचानक मालिक ने इस तरह से हाथ पैर मार कर चिल्लाना प्रारम्भ कर दिया जैसा कि मिंगी का

दौरा पड़ने पर होता है। सिटिंग बीच में ही स्थगित कर दी गयी तथा मैंने मालिक को सुलोचना के साथ तिल्दे के निवास की ओर रवाना कर दिया। तत्पश्चात् मैंने वहाँ एकत्रित सभी अभ्यासियों को सम्बोधित किया तथा उसके बाद तिल्दे के घर की ओर रवाना हो गया। मालिक विश्राम कर रहे थे। दोपहर लगभग 2:30 बजे मालिक सोकर उठे। अचानक कमजोरी सी आ जाने के कारण मालिक शाम तक तिल्दे के निवास पर ही रुके रहे। हैंस तथा मैं दोपहर के सत्र में शामिल होने के लिये विलास्टॅक पहुँचे। आंद्रे ने क्षमा याचना तथा मान मनौव्वल करते हुये पुनः अपनी बात सबके समक्ष रखी। सत्र समाप्ति के पश्चात् हम तिल्दे के घर वापस लौट आये तथा मालिक को साथ लेकर शाम 7:00 बजे हैंस के निवास की ओर रवाना हो गये। रात्रि में 11.00 बजे मालिक सोने के लिये अपने कक्ष में गये। रात्रि में मालिक पुनः डरावने स्वप्न के कारण परेशान रहे तथा प्रत्येक आधे घंटे के अंतराल से उन्हें स्वप्न आते रहे, दिग्भ्रमण की स्थिति भी परिलक्षित हो रही थी जिसके कारण मैं अत्यंत विचलित महसूस कर रहा था ।

24 मई 1980 – शनिवार

विला स्टॅक में आज मुझे पुनः सहज मार्ग पद्धति की सामान्य जानकारी पर अपना सम्बोधन देना था। मालिक सामान्यतः स्वस्थ थे तथा प्रसन्नचित्त नजर आ रहे थे। डॉ. कार्ल गुचे द्वारा नियमित रूप से प्रतिदिन उनका परीक्षण किया जा रहा था। आज दिन में कुछ समय के लिये मालिक पुनः दिग्भ्रमित हो गये थे तथा कुछ क्षणों के लिये वे यह भी भूल गये कि वे म्यूनिख में हैं। वे इस तरह से बर्ताव कर रहे थे जैसे कि वे शाहजहाँपुर में हों।

शाम को ब्रिगेट स्मिथ के निवास पर एक बैठक आयोजित की गयी थी, जिसमें केवल मैंने तथा हैंस गैंगलोफ ने भाग लिया। मालिक उज इहलो, उनकी पत्नी ऐल्सेबेथ तथा केरिन की देखरेख में घर पर ही रहे। सुलोचना तथा कृष्णा भी तिल्दे के घर से यहाँ पहुँच चुके थे। बैठक में मैंने विस्तार से अपने विचार उनके समक्ष रखे। मेरे पश्चात् हैंस की बारी थी, तत्पश्चात् आंद्रे पोरे ने अपना सम्बोधन दिया। रात्रि में उत्तम भोजन के

पश्चात् हम रात्रि 11:00 बजे घर लौट आये तथा आज भी हम देर रात्रि 1:00 बजे विश्राम के लिये गये।

25 मई 1980 – रविवार

विगत रात्रि मालिक को अच्छी नींद आयी तथा सुबह वे तरोताजा नजर आ रहे थे। इस दौरान मालिक से कुछ प्रश्न और उत्तर का सिलसिला चला।

प्रश्न : मालिक "सत्य का उदय" आपके द्वारा कई वर्ष पूर्व लिखी गयी थी तथा आपकी अन्य पुस्तकों के साथ भी कमोवेश यही स्थिति है। क्या आप इन पुस्तकों में कभी फेरबदल करेंगें ? इन पुस्तकों में आपके द्वारा उठाये गये कुछ बिन्दुओं का शायद अब कोई औचित्य नहीं रह गया है।

मालिक : मैं आपको बताना चाहता हूँ कि ये पुस्तकें, न तो वर्तमान के लिये, न ही एक वर्ष के लिये तथा न ही सौ वर्षों के लिये लिखी गयीं हैं। जो भी इनमें लिखा गया है वह हमेशा के वास्ते है तथा भविष्य के लिये है। इसी कारण से, यद्यपि यह अत्यन्त सरल है लेकिन व्यक्तियों को इसे समझने में अत्यंत कठिनायी होती है।

प्रश्न : ऐसा क्यों है मालिक? यदि यह सरल है तो क्या उसे समझने में आसानी नहीं होनी चाहिए?

मालिक : मैं तुम्हें वेदों का उदाहरण देना चाहूँगा। मेरा यह विचार है कि जब वे प्राचीन काल में ऋषियों द्वारा लिखे गये थे, तब केवल कुछ ही व्यक्ति उसे समझ सके थे, लेकिन आज उन्हें समझना आसान है तथा उनके भावार्थ को आज समझ पाना अत्यंत सरल है। ऐसा ही सहज मार्ग के सिद्धान्तों के साथ है। वे भविष्य के लिये हैं तथा भविष्य का व्यक्ति उन्हें आसानी से समझ लेगा।

प्रश्न : अर्थात् आप अपनी पुस्तकों में फेरबदल नहीं करेंगें ?

मालिक : मेर विचार से मैंने तुम्हारे प्रश्न का उत्तर पहले ही दे दिया है।

शाम का सत्संग मालिक ने कराया । सत्संग समाप्त होने के पश्चात् हॉल में भगदड़ सी मच गयी। सभी व्यक्ति उनका सामीप्य पाने

को आतुर थे किन्तु वे धैर्य पूर्वक उनके साथ बैठे रहे तथा मुस्कुराते हुये उनके प्रश्नों इत्यादि का उत्तर देते रहे। सभागृह से हम शाम 7:00 बजे घर के लिये रवाना हुये। द्वितीय बैच की बैठक आज समाप्त हो गयी तथा कार्यक्रम विधिवत् रूप से समाप्त घोषित कर दिया गया था।

26 मई 1980 – सोमवार

मालिक का आज अंतिम चिकित्सीय परीक्षण हुआ तथा सारे परीक्षणों की जाँच के बाद यह निष्कर्ष निकला कि मालिक को अल्सर की कोई शिकायत नहीं है तथा न ही उन्हें किसी तरह की अन्य कोई बीमारी है। मात्र एक छोटा सा ट्यूमर है जो नुकसानदेह नहीं है तथा जिसका आकार भी घटता जा रहा है, अतः इसमें चिंता करने की कोई आवश्यकता नहीं है। सारा दिन निश्चिंतता से व्यतीत हुआ, मालिक बेफिक्र थे। रात्रि को हम विश्राम के लिये अपने कक्ष में जल्दी चले गये।

27 मई 1980 – मंगलवार

मालिक ने अन्जे ग्राउन, श्रीमती हिल्देगार्ड तथा लूसी सिजल को व्यक्तिगत सिटिंग दी। जब उन्होंने लूसी का प्रकरण लिया तब मैं शयन कक्ष में था। वे अन्दर आये तथा बोले, "देखो पार्थसारथी ! मैंने ऐसा प्रकरण पहले नहीं देखा। यह बहुत अच्छा है। ऐसे व्यक्ति को मैं ब्रह्माण्ड मंडल तक की पहुँच देना चाहता हूँ।" उन्होंने, प्रातः उसे कुल तीन सिटिंग दी। मुझे हिदायत दी गयी थी कि वहाँ बैठकर मैं उनके द्वारा किये जा रहे कार्य पर नजर रखूँ तथा उन्हें इसकी जानकारी दूँ कि वे क्या कर रहे थे? उनके कथनानुसार वे मेरे द्वारा दी गयी जानकारी से संतुष्ट थे। प्रातः दी गयी सिटिंग के दौरान मालिक ने लूसी सिजल को पाँचवे बिन्दु तक पहुँचा दिया था ।

हैंस, सुलोचना तथा कृष्णा को दोपहर भोजन के लिये तिल्दे के घर से अपने साथ ले आया। भोजन के पश्चात् दोपहर 2.00 बजे हैंस, केरिन, उज, एल्सेबेथ, सुलोचना,कृष्णा, लूसी सिजल, जीन मेरी बोटेक्वीन, मालिक तथा मैं, हम सभी मि. बिगबर्ट लैंगयुथ की बड़ी मर्सडीज़ कार तथा दो अन्य कारों में सवार होकर उनके निवास (नं. 8131 बेर्ज, स्टार्नबर्गर सी

1, ह्यूब्रेटस्ट्रेस 4) पर पहुँचे तथा शाम वहीं व्यतीत की । दोपहर 3.30 बजे हमें राजसी अंदाज में चायपान कराया गया । मालिक ने हम सभी को शाम 6.30 बजे एक सिटिंग दी, सिटिंग बहुत अच्छी थी । मुझे ऐसा अनुभव हुआ जैसे कि मैं सर्पिल गति के साथ गहरायी दर गहरायी में उतरता जा रहा हूँ। रात्रि 8.00 बजे हमने भोजन किया तथा रात्रि 8.45 बजे हम लैंगयुथ के निवास से ह्यूलियनप्लेज की ओर रवाना हो गये जो वहाँ से चालीस किलोमीटर की दूरी पर था। लूसी सिजल को रात्रि 9.30 बजे मालिक ने अंतिम सिटिंग दी।

28 मई 1980– बुधवार

प्रातः मालिक केरिन, अन्जे, तिल्दे माइकल तथा लूसी सिजल को व्यक्तिगत सिटिंग देने में व्यस्त थे। हैंस को दो सिटिंग दी गयी। मालिक ने 1) हैंसे गैंगलोफ तथा 2) लूसी सिजल को पूर्ण अनुमति प्रदान की।

हैंस, मुझे, सुलोचना तथा कृष्णा को खरीददारी इत्यादि के लिये बाहर ले गये। लगभग तीन घंटे बाहर व्यतीत करने के पश्चात् हम दोपहर भोजन के लिये घर वापस लौट आये। जब हम घर से बाहर गये हुये थे उस दौरान उज तथा ऐल्सेबेथ मालिक के साथ चर्चा में व्यस्त रहे तथा प्रसन्न थे। शाम 4.30 बजे हम कैसर प्लाज में जीन मेरी बोटेक्वीन के निवास पर उनसे चर्चा करने के लिये पहुँचे। वह मालिक के चित्रों की एक पुस्तक के बारे में विचार कर रहे हैं। मैंने लगभग तीन घंटे का समय उनके साथ व्यतीत किया, तत्पश्चात् हम टहलते हुये लगभग एक किलोमीटर दूर उस स्थान पर पहुँचे जहाँ पर मालिक की जर्मन अभ्यासियों के ग्रुप से मुलाकात निर्धारित की गयी थी। मालिक रात्रि 8.00 बजे हैंस के साथ वहां पहुँचे।

बैठक रात्रि 8.30 बजे प्रारम्भ हुयी जिसमें जर्मनी के लगभग पचास अभ्यासी उपस्थित थे। हैंस गैंगलोफ ने स्वागत सम्बोधन दिया तथा मालिक को जर्मनी के भ्रमण पर आने के लिये धन्यवाद दिया। उसके पश्चात् लगभग आधा घंटे तक मैंने उन्हें सम्बोधित किया। रात्रि 10.15 बजे बैठक समाप्ति के पश्चात् हम वापस घर की ओर रवाना हो गये। म्यूनिख में मालिक की आज अंतिम शाम है। देर रात्रि 1.30 बजे तक हमारी गुफ्तगू

चलती रही।

मेरे पुत्र कृष्णा का आज जन्मदिवस है, तथा हमारे लिये यह अत्यन्त हर्ष का विषय था कि हम तीनों ने आज का सारा दिन अपने प्रिय मालिक के साथ व्यतीत किया।

29 मई 1980 – गुरुवार

सुबह उठने के पश्चात् मालिक ने कहा कि वे पूर्णतया स्वस्थ महसूस कर रहे हैं तथा पूछा कि कोपेनहेगन के लिये हमें कब रवाना होना है। कार्ल तथा हैंस ने मालिक का चिकित्सीय परीक्षण किया। उन्हें इस बात पर अत्यन्त आश्चर्य हो रहा था कि मालिक का ब्लड प्रेशर लेटे रहने पर 140/90 तथा बैठने पर 120/80 था।

डॉ. जेरट्रुड प्यूटर अपनी कार से कोपेनहेगन जा रही थी। उन्होंने कृष्णा को भी साथ चलने के लिये कहा जिसके लिये वह सहर्ष तैयार हो गया। वे दोनों सुबह 11.00 बजे हैनोवर के लिये रवाना हुये, जहाँ वे जेरट्रुड के भाई के यहाँ रात्रि विश्राम करेंगे, तत्पश्चात् कल वहाँ से कोपेनहेगन के लिये रवाना हो जायेंगे। अन्जे ग्राउन ने निश्चय किया कि वह कोपेनहेगन तक मालिक के साथ जायेंगे, उनकी देखा–देखी, हैंस हौच भी अन्तिम समय पर मालिक के साथ चलने के लिये तैयार हो गये।

सारा दिन विश्राम करने के पश्चात् हम दोपहर 4.30 बजे हवाई अड्डे की ओर रवाना हुये। सुलोचना को तिल्दे के घर से सीधे हवाई अड्डे पर पहुँचा दिया गया था। मालिक ने हवाई अड्डे पर एकत्रित लगभग तीस अभ्यासियों के साथ जो उन्हें विदाई देने के लिये उपस्थित थे, लगभग आधा घंटे का समय व्यतीत किया। फ्रेंकफर्ट में आँधी तूफान के कारण उड़ान विलम्ब से चल रही थी तथा म्यूनिख में भी आँधी तूफान के कारण उड़ान में और अधिक विलम्ब हो गया था। हमारी एस. ए. एस. की उड़ान संख्या एस. के. 635 के विमान डी. सी. 9 ने अपने निर्धारित समय के एक घंटे विलम्ब से रात्रि 7.20 बजे उड़ान भरी।

फ्रेंकफर्ट तक की पचास मिनट की दूरी घने बादलों की परत में तय हुयी थी जिसके कारण यात्रा के दौरान तेज झटके लग रहे थे। अतः

फ्रेंकफर्ट पहुँचने तक उनकी तबियत बिगड़ गयी। रात्रि 8.40 बजे हम फ्रेंकफर्ट से रवाना होकर रात्रि 10.00 बजे कोपेनहेगन पहुँच गये। मालिक अस्वस्थ थे, उन्हें अत्यन्त बेचैनी महसूस हो रही थी तथा वे दिग्भ्रमित लग रहे थे। उनकी इस दशा के कारण मैं अत्यन्त चिंतित था। यह सब उड़ान की दुर्गति के कारण हुआ था। उम्मीद है कि मालिक की यह स्थिति अस्थायी होगी । हैंस हॉच तथा अन्जे ग्राउन ने उड़ान के दौरान हमारी बहुत मदद की। उनका हमारे साथ आना हमारे लिये मददगार साबित हुआ। सुलोचना अत्यंत विचलित हो गयी थी तथा रो रही थी। मालिक की कोपेनहेगन वापसी पर बड़ी संख्या में अभ्यासियों की भीड़ हवाई अड्डे पर मालिक के स्वागत के लिये एकत्रित थी लेकिन मालिक वहाँ पर न होकर शाहजहाँपुर में अपने घर पर थे। हमारे लिये यह अत्यन्त दुःखद क्षण थे। हमने उन्हें पाले की कार में बैठाया तथा उन्हें घर पर ले आये। घर पहुँचने के पश्चात् वे और भ्रमित हो गये। उनकी यह दुर्दशा देखकर हमारी बेचैनी बढ़ गयी थी। हमने उन्हें थोड़ा दूध पिलाया तथा किसी तरह रात्रि 2.00 बजे उन्हें बिस्तर पर लिटाया।

30 मई 1980 – शुक्रवार

आज का दिन मालिक के विश्राम का दिन था। वे अपेक्षाकृत स्वस्थ नजर आ रहे थे, उनकी दिग्भ्रम की स्थिति ज्यादा समय तक नहीं रही। दोपहर तक मालिक स्वस्थ हो गये तथा उन्होंने आनन्दपूर्वक दोपहर का भोजन किया।

जेरट्रुड प्यूटर तथा कृष्णा कार से शाम 4.00 बजे यहाँ पहुँचे। आज की शाम अत्यंत सुहावनी थी। मालिक बिस्तर में बैठकर दो घंटे तक अभ्यासियों के साथ हँसते हँसाते रहे। उसके पश्चात् रात्रि 8.00 बजे उन्होंने मुझे अभ्यासियों को सिटिंग देने के लिये निर्देशित किया। सत्संग के पश्चात् मालिक ने रात्रि का भोजन किया तथा रात्रि 11.00 बजे तक वे अभ्यासियों के साथ ही रहे। उसके बाद सोने चले गये। इस बात को लेकर वे निश्चिन्त थे कि मैं, सुलोचना तथा कृष्णा अबकी बार एक ही जगह पर ठहरे हुये हैं।

31 मई 1980 – शनिवार

के. वी. रेड्डी जो पिछली रात्रि को ही कोपेनहेगन पहुँचे थे, आज सुबह मालिक से मिलने के लिये पहुँचे। मालिक रात की अच्छी नींद के पश्चात् तरोताजा नजर आ रहे थे तथा सुबह का सत्संग उन्होंने स्वयं कराया। सिटिंग कम समय की रही किन्तु अच्छी थी। कृष्णा की अपनी स्वयं की समस्या थी। वह अमेरिका के अनैतिक तथा भौतिकतावादी वातावरण में वापस नहीं लौटना चाहता था। मैंने इस विषय पर उसे मालिक से बात करने का सुझाव दिया। मालिक ने कृष्णा से कहा, "तुम अभी युवा हो। तुमको पढ़ाई तो करनी ही पड़ेगी। भविष्य ईश्वर के हाथों में है। पढ़ाई से भविष्य नहीं बनता है अपितु देने वाला तो ईश्वर ही है। अतः ईश्वर पर विश्वास रखो तथा लौट जाओ और अपनी पढ़ाई पूरी करो।"

के. वी. रेड्डी ने शाम का सत्संग कराया। मालिक रात भर बेचैन रहे। झटके के साथ बारबार उनकी नींद खुल जाती थी जिससे वे हड़बड़ा जाते थे तथा उनमें दिग्भ्रमित होने के लक्षण नजर आते थे।

1 जून 1980– रविवार

मालिक उठने के पश्चात् परेशान तथा चिंतित दिखायी पड़ रहे थे। दिग्भ्रम की स्थिति यथावत थी। उन्हें आराम मिल सके इस कारण सुबह का सत्संग मेरे द्वारा कराया गया। डॉ. जेरट्रुड प्यूटर ने उनका परीक्षण किया। उनका ब्लड प्रेशर लेटे हुये 100/70 तथा बैठने पर 90/60 था। जेरटी ने कहा कि चिंता की कोई बात नहीं है। निर्धारित कार्यक्रम के अनुसार 12 जून 1980 को हमारी स्वदेश वापसी की अपेक्षा मैं शीघ्र वापस लौटने के बारे में विचार कर रहा था। लेकिन जेरटी ने कहा घर जाने की जल्दी कोई आवश्यकता नहीं है, दिग्भ्रमित होना तथा घबराहट बढ़ती उम्र के लक्षण हैं। अपने परिवार तथा घर के वातावरण से दूर होने के कारण इस उम्र में अक्सर ऐसा हो जाता है। उनके द्वारा दिये गये सुझाव के अनुसार हम मालिक को दोपहर 3.00 बजे हेलेरप समुद्र तट पर ले गये तथा वहाँ लगभग एक घंटा व्यतीत किया। जेरटी का अनुमान था कि रक्त का संचालन ठीक से न होने के कारण दिग्भ्रमित होने तथा

डरावने स्वप्न आने की शिकायत हो सकती है। अतः रक्त को संचालित करने के लिये उन्हें खुले वातावरण में चहल कदमी करने का परामर्श दिया गया।

शाम का सत्संग डॉ. प्यूटर ने कराया । रात्रि भोजन के पश्चात् मालिक एकाएक ही हँसी खुशी सबसे बातचीत करने लगे तथा रात्रि 10. 30 बजे विश्राम के लिये जाने से पूर्व का समय अभ्यासियों के साथ ही व्यतीत किया।

2 जून 1980 – सोमवार

सारी रात अत्यन्त बेचैनी में बीती। मालिक की घबराहट बढ़ गयी थी तथा वे पूर्णतया दिग्भ्रमित हो गये थे, इसी कारण वे रात भर सो नहीं सके। वे बेतुकी बातें कर रहे थे, कभी कहते कि काशीराम अंधा हो गया है, फिर हाय हाय करते हुये उनके लिये रोने लगते। कभी कहते कि सर्वेश की पत्नी का प्रजनन का समय पास आ गया है तथा मुझे बुलाकर कहते कि मालिन को बुलाओ तथा उसे डॉक्टर के पास भेजो, इत्यादि–इत्यादि से लेकर बच्चे के जन्म उसके नामकरण संस्कार, संगीत तक के बारे में इधर उधर की बातें कर रहे थे। उनको इस मनः स्थिति में देखना वाकई हृदय विदारक था। मैं उनकी बुद्धि की स्थिरिता के लिये चितिंत था। कृष्णा ने रात हमारे कमरे में गुजारी तथा सारी रात हममें से कोई भी नहीं सो सका।

सुबह मैंने जैंस क्लॉसन तथा जेरट्रुड प्यूटर से मालिक के निर्धारित कार्यक्रम से पूर्व स्वदेश लौटने के सम्बन्ध में चर्चा की। जैंस ने इसके लिये सहमति दे दी लेकिन जब मैंने सुबह 8.00 बजे मालिक से इसके सम्बन्ध में चर्चा की तो उन्होंने उत्तर दिया, "रहने दो! अब तुम कार्यक्रम में क्यों फेरबदल कर रहे हो। जो कार्यक्रम तुमने निर्धारित किया है वह सब गड़बड़ हो जायेगा।" अतः बात जहाँ की तहाँ रह गयी। सुबह 9.00 बजे जब मैं नाश्ता कर रहा था, तब मालिक प्रत्यक्षतः अकेले ही शौचालय चले गये तथा वहाँ उन्होंने जोर जोर से चिल्लाते हुये रोना शुरू कर दिया, कुछ व्यक्ति दौड़कर मुझे बुलाने के लिये किचिन में आये, मैं तत्काल ही वहाँ पहुँचा तथा देखा कि मालिक खिड़की के सरिये को पकड़

कर बदहवास रो रहे थे तथा कह रहे थे, "दरवाजा खोलो! मैं यहाँ बाहर नहीं रह सकता। आस पड़ोस के लोग मेरा मजाक उड़ायेंगे, दरवाजा खोलो–दरवाजा खोलो!" वास्तव में वह यह समझ रहे थे कि वे शाहजहाँपुर में हैं तथा उनके परिवार के लोगों ने उन्हें बाहर से बंद कर दिया है। दिन के समय तो मालिक के दिग्भ्रमित होने की स्थिति और विकराल हो गई थी। वे बहुत कम समय के लिये शान्त रह पा रहे थे। जैसे जैसे समय बढ़ता जा रहा था, वैसे वैसे मेरी चिंता भी बढ़ती जा रही थी तथा मैं सोच रहा था कि उन्हें मैं इस अवस्था में घर सुरक्षित कैसे वापस ले जा पाऊँगा? मैं अत्यंत निराश हो गया था।

शाम 6.00 बजे मालिक ने मुझे बुलाया। उन्होंने कहा "मेरा मन घर वापस लौटने का हो रहा है। यहाँ का कार्य भी अब पूर्ण हो चुका है अतः तुम पाँच तारीख की हमारी वापसी की व्यवस्था कर सकते हो।" मैंने जैंस से शीघ्र ही एस. ए. एस. से सम्पर्क कर हमारी सीटें 12 जून के स्थान पर 5 जून परिवर्तित करने के लिये निवेदन किया। दिल्ली में एस. सी. किशोर से सम्पर्क कर उन्हें परिवर्तित कार्यक्रम के सम्बन्ध में सूचित कर दिया। सभी व्यक्ति अपने–अपने कारण से निराश तथा दुःखी थे। सुलोचना इस कारण दुःखी थी तथा रो रही थी कि उसे कृष्णा से एक सप्ताह पूर्व ही बिछुड़ना पड़ रहा था।

3 जून 1980 – मंगलवार

बीती रात अत्यंत कष्टप्रद रही। यह छोटे रूप में नर्क जैसा ही कष्ट था। मालिक लगातार पाँच मिनट के लिये भी नहीं सो पा रहे थे, क्योंकि जैसे ही उनकी नींद लगती, भयावह स्वप्न उन्हें घेर लेते थे। यह अत्यन्त ही कष्टदायक क्षण थे, लेकिन मालिक बेचारे अपनी इस मनोदशा में भी मुझे लेकर चितिंत थे तथा मुझे विश्राम करने के लिये कह रहे थे। उनका कहना था कि मुझे विश्राम की अति आवश्यकता है। उन्हें इस तरह तकलीफ में देखना मेरे लिये अत्यन्त कष्टदायक था। दिन में स्थिति अपेक्षाकृत बेहतर थी। दिन की तथा रात की स्थिति में एकमात्र असमानता यह थी कि रात्रि में, मैं तथा कृष्णा अकेले थे जबकि दिन में हमारे भय तथा

दुःख में बड़ी संख्या में अन्य अभ्यासी भी सम्मिलित थे।

4 जून 1980 – बुधवार

मालिक की मनः स्थिति मेरे लिये गम्भीर चिंता का विषय थी। मैं उनकी बुद्धि की स्थिरता के लिये भयभीत था। हमारी विगत तीन रातें नर्क में यातना भोगने के समान रही थीं। मैं मन ही मन सोच रहा था कि बेचारे मालिक को आखिर कब तक यह कष्ट भोगना पड़ेगा ? क्यों वे इतनी अधिक तकलीफें झेलते हैं ? हम मालिक की कैसे मदद कर सकते हैं? ऐसी परिस्थिति में अधिकतर सिटिंग मेरे द्वारा ही दी जा रही थीं ताकि सत्संग में व्यवधान न पड़े। मालिक ने अच्छी तरह से भोजन किया तथा रात में उन्हें अच्छी नींद आयी तथा जैसा कि मुझे निर्देशित किया गया था, मैंने मालिक को एक मिनट के लिये प्राणाहुति दी।

5 जून 1980– गुरुवार

सूटकेस इत्यादि की पैंकिग करने के लिये मैं सुबह जल्दी उठ गया। मालिक बेहतर लग रहे थे, मैं इस बात को लेकर आशान्वित था कि दिल्ली तक की उड़ान सुविधाजनक होगी। हेलेरप में मिकाला के घर से हम दोपहर 12.45 बजे कास्ट्रुप हवाई अड्डे की ओर रवाना हुये तथा दोपहर 2.00 बजे प्रस्थान क्षेत्र में पहुँचे। सभी अभ्यासी मालिक को इस तरह दुर्बल तथा कमजोर अवस्था में देखकर अत्यन्त दुःखी थे तथा रो रहे थे। ऐसी स्थिति में भी मालिक के चेहरे पर स्नेहमयी मुस्कान थी । जैसे ही मालिक ने प्रस्थान क्षेत्र से अन्दर प्रवेश किया सभी के चेहरे पर मायूसी छा गयी। फ्रांस के कुछ अभ्यासी भी हमारे साथ थे जिन्हें पेरिस के लिये उड़ान पकड़नी थी। वे मालिक के साथ प्रस्थान क्षेत्र में बैठे हुये थे। उनकी उड़ान में विलम्ब हो गया था अतः वे मालिक का साथ एक घंटा और मिल जाने के लिये प्रसन्न थे। दोपहर 3.00 बजे, जो हमारी उड़ान का निर्धारित समय था, एक उद्घोषणा हुयी कि हमारी उड़ान विलम्बित हो गयी है, अतः उड़ान अब कल सुबह 8.00 बजे रवाना होगी जिसके ऐवज में हमें निःशुल्क यातायात सुविधा तथा होटल शेरेटॉन में एक रात ठहरने की निःशुल्क व्यवस्था उपलब्ध करायी गयी थी। फ्रांस के अभ्यासियों ने होटल

पहुँचने में हमारी सहायता की। होटल में मैंने हमारे लिये तीन बिस्तर वाले एक कमरे की व्यवस्था की। मालिक पूरी तरह से दिग्भ्रमित हो चुके थे, उन्हें कुछ भी भान नहीं था। ऐसी परिस्थिति में फ्रांस के वे अभ्यासी जिनकी पेरिस की उड़ान में विलम्ब हो गया था वाकई धन्यवाद के पात्र थे। वे बहुत अच्छे तथा मदद करने वाले अभ्यासी थे। उन्हीं के कारण हमारा मनोबल बना हुआ था तथा उनकी सहायता के बगैर हमारा इस परिस्थिति से निपटना असम्भव होता ।

होटल पहुँचने के पश्चात् मैंने ब्रिथे के घर पर टेलीफोन करके कृष्णा को हमारे परिवर्तित कार्यक्रम के बारे में सूचित कर दिया। शाम 5. 00 बजे तक अधिकांश अभ्यासी मालिक से भेंट करने पहुँच चुके थे। वे अपने साथ समुचित मात्रा में भोजन तथा पेय इत्यादि लेकर आये थे। मालिक ने वहाँ उपस्थित अभ्यासियों को सत्संग कराया। हमारे साथ एक शाम और मिल जाने के कारण कृष्णा अत्यधिक प्रसन्न था तथा उसने रात्रि में हमारे साथ होटल में ही विश्राम किया। मालिक पूर्णतया दिग्भ्रमित हो चुके थे। उनका कहना था कि यह होटल उनकी जमीन पर बना हुआ है। वास्तव में वे यह समझ रहे थे कि वे शाहजहाँपुर में हैं तथा शेरेटॉन होटल का निर्माण गैर कानूनी तौर पर उनकी जमीन पर किया गया है। मैंने तथा कृष्णा ने बाहर ले जाकर लिफ्ट तथा कमरे इत्यादि दिखाये एवं उन्हें विश्वास दिलाया कि हम कोपेनहेगन के होटल में हैं। वे बोले "अच्छा अब मेरी समझ में आ गया है।" लेकिन जैसे ही हम कमरे में वापस पहुँचे समस्या जस की तस हो गयी। कमरे के बाहर आने–जाने का क्रम निरन्तर चलता रहा तथा हमारी सारी रात ऐसे ही व्यतीत हो गयी ।

6 जून – शुक्रवार

मालिक की स्थिति में कोई परिवर्तन नहीं आया । मिकाला द्वारा प्रेम पूर्वक लाया गया नाश्ता करने के उपरान्त हम सुबह 7.00 बजे हवाई अड्डे की ओर रवाना हुये। हवाई अड्डे पर लगभग बीस अभ्यासी मालिक को विदाई देने के लिये उपस्थित थे। हमने उनसे विदा ली तथा सीधे प्रस्थान क्षेत्र की ओर रवाना हो गये जहाँ मालिक के लिये मैंने व्हील चेयर

की व्यवस्था की।

विमान में प्रवेश करने पर हमने देखा कि विमान लगभग आधा खाली था, जिसका कारण यह था कि कल की उड़ान से जिन्होंने सीटें आरक्षित करवायी थीं, वे उड़ान के रद्द होने के कारण अपनी वैकल्पिक व्यवस्था कर कल ही रवाना हो गये थे। हमारी उड़ान एस. के. 971 सुबह 8.00 बजे वहाँ से रवाना हुयी। विमान के खाली होने के कारण हमारे बैठने की व्यवस्था में कोई परेशानी नहीं हुयी तथा हममें से प्रत्येक को एक ही क्रम में तीन तीन सीटें मिल गयीं। विमान में हमारा सारा समय विश्राम करते हुये व्यतीत हुआ लेकिन मालिक की स्थिति में कोई परिवर्तन नहीं आया। उन्हें ऐसी स्थिति में देखना अत्यन्त दुःखद था तथा यात्रा हमारे लिये दुःस्वप्न के समान थी। लगभग नौ घंटे की उड़ान के पश्चात् हमारा विमान स्थानीय समयानुसार शाम 7.50 बजे पालम हवाई अड्डे पर उतरा। बड़ी संख्या में अभ्यासी मालिक की अगवानी तथा स्वागत के लिये एकत्रित हुये थे लेकिन मालिक इस सबसे अनभिज्ञ थे। हमें भाई श्री रामसरन चोपड़ा के अरविंदो मार्ग पर स्थित आजाद अपार्टमेन्ट के नये निवास पर ले जाया गया, जो आई. आई. टी. के विपरीत दिशा में स्थित है। घर में हमारे प्रवेश करते ही सारे क्षेत्र की बिजली गुल हो गयी तथा पूरा क्षेत्र अंधकार में डूब गया। मोमबत्ती के प्रकाश के सहारे मालिक ने चोपड़ा के घर में अत्यन्त दुविधापूर्ण स्थिति में प्रवेश किया। श्री गुण्डे राव अपने गृहनगर से उदयपुर के रास्ते पहले ही दिल्ली पहुँच चुके थे। सारा प्रभार मैंने उनके सुपुर्द कर दिया।

7 जून 1980– शनिवार

पुनः एक बेचैनी भरी रात रही, लेकिन मालिक ने रात्रि 10.30 बजे दस मिनट के लिये एक सिटिंग दी तथा जैसे ही उनके दिग्भ्रमित होने के लक्षण परिलक्षित होने लगे हम मालिक को उनके कमरे में ले गये। सारा दिन दिल्ली में व्यतीत किया। इस दौरान मालिक निरन्तर घर जाने की बात करते रहे। दोपहर लगभग 2.00 बजे गुण्डे राव दौड़ते हुये मेरे कक्ष में आये तथा मुझे मालिक के पास चलने के लिये बोले। उन्होंने कहा

मालिक बेतहाशा रो रहे हैं, इसका क्या कारण हो सकता है ? मैंने मन ही मन सोचा कि मुझे इसकी जानकारी कैसे हो सकती है ? मैं तो अलग अपने कमरे में तनाव तथा तकलीफ से भरे विगत छः दिनों की थकान में चूर गहरी नींद सो रहा था। जैसे ही मैंने मालिक के कक्ष में प्रवेश किया, मैंने देखा वे अपने बिस्तर पर लेटे हुये हैं तथा फूट फूट कर रो रहे हैं। वे कह रहे थे, "मैंने इस संसार की कितनी सेवा की है लेकिन सब मुझसे घृणा करते हैं, किसी को भी मुझसे प्रेम नहीं है।" यह सुनकर मुझे गहरी ठेस पहुँची। मैंने उन्हें अपने आगोश में ले लिया तथा उन्हें सांत्वना दी। तत्पश्चात् उन्हें गुसलखाने में ले जाकर उनका चेहरा धुलवाया। इसके पश्चात् मैंने उनसे कहा कि मुझसे यदि कोई भूल हो गयी हो अथवा किन्हीं गलत शब्दों का प्रयोग हो गया हो जिसके कारण उन्हें दुःख पहुँचा हो तो इसके लिये वे मुझे क्षमा करें। वे बोले, "तुमसे कोई गलती नहीं हुयी है। तुम मेरे पुत्र हो तुम्हारे लिये माफी माँगने का प्रश्न ही नहीं उठता।" इस तरह उन्हें शान्त होने तथा सामान्य स्थिति में आने में लगभग आधा घंटे का समय लगा। मैं मन ही मन सोच रहा था कि क्या मुझसे कोई गलती हो गयी अथवा क्या अन्जाने में मैंने कुछ ऐसा कह दिया जिससे उनको दुःख पहुँचा हो ? क्या मैंने कभी उनका अनादर किया तथा यदि मुझसे ऐसा कोई कृत्य हो गया हो तो ईश्वर मेरी सहायता करे । मैं उनसे क्षमा के लिये प्रार्थना करता हूँ।

8 जून 1980 – रविवार

सुबह 9.00 बजे मालिक ने दस मिनट के लिये सत्संग कराया। उनके दिग्भ्रम की स्थिति यथावत् थी ।

दोपहर 1.00 बजे हम नई दिल्ली रेलवे स्टेशन पर पहुँचे, हमें काशी विश्वनाथ एक्सप्रेस से शाहजहाँपुर की ओर रवाना होना था। प्लेटफार्म भीड़ से खचाखच भरा हुआ था । अत्यन्त कठिनाई पूर्वक हम पुल पर से होते हुये किसी तरह प्लेटफार्म नं.5 पर पहुँचे। मैंने मालिक को गोद में उठाकर प्लेटफार्म तक पहुँचाया। बहुत देर इंतजार करने के पश्चात् भी ट्रेन नहीं आयी। गर्मी भयंकर थी, मालिक पुल के नीचे बैठे हुये

थे तथा दो अभ्यासी उन्हें पंखा कर रहे थे। वे थकान से चूर थे तथा पूर्णतया दिग्भ्रमित थे। दोपहर 2.00 बजे हमें सूचना प्राप्त हुयी कि ड्राइवरों की अचानक हड़ताल के कारण सारी ट्रेने रद्द कर दी गयी हैं। इस भयंकर गर्मी में हमें सीढ़ियाँ चढ़कर पुल पर होते हुये कार पार्किंग तक जाना था। यह अत्यंत ही कठिन कार्य था। दोपहर 3.00 बजे हम चोपड़ा के निवास पर वापस लौट आये। चोपड़ा के घर पर सफाई का कार्य चल रहा था तथा सारा सामान अस्त व्यस्त पड़ा हुआ था। सोफा, गलीचा इत्यादि यहाँ वहाँ रखे हुये थे। अचानक मालिक को सामने पाकर वे लोग चकित रह गये। हड़बड़ी में सामान को पुर्नव्यवस्थित किया गया तथा मालिक का शयनकक्ष व्यवस्थित किया गया। मालिक अत्यन्त खफा थे तथा निरन्तर एक ही राग अलाप रहे थे कि उन्हें घर जाना है। लेकिन किया क्या जा सकता था। हमें इस बात पर यकीन ही नहीं हो रहा था कि वे इस तरह से दिग्भ्रमित हो सकते हैं। उनको यह समझा पाना अत्यन्त कठिन था कि हम सभी रेलवे स्टेशन गये थे लेकिन अचानक हड़ताल हो जाने के कारण तथा सारी सेवायें ठप्प हो जाने के कारण हमें वापस लौटना पड़ा। एक बारगी तो उन्होंने आक्रोश में आकर श्री आर. एस. चोपड़ा से कहा कि वे उन्हें जबरदस्ती रोक रहे हैं। उन्होंने चोपड़ा से कहा, ''तुमने मुझे जेल में बंद करके रखा है, कृपया मुझे यहाँ से जाने दीजिये, मैं अपने घर वापस जाना चाहता हूँ।'' यह सुनकर चोपड़ा बेचारे मायूस हो गये तथा उनकी आँखो में आँसू छलक आये। मालिक का ब्लड प्रेशर लेटे में 114/90 तथा बैठे में 84/67 था। वे शारीरिक रूप से पूर्णतया स्वस्थ नजर आ रहे थे तथा शाम होने तक उनकी मानसिक दशा में भी काफी सुधार आ गया था।

9 जून 1980 – सोमवार

मालिक का ब्लड प्रेशर बढ़ गया था। आज सुबह बैठे में यह 120/80 था उनकी वेदना भी काफी कम हो गयी थी, तथा मैंने भी उन्हें आज का समाचार पत्र दिखाकर यह समझाने का प्रयास किया कि बी.आर. चोपड़ा ने उन्हें जबरदस्ती नहीं रोका, बल्कि रेलवे में हड़ताल होने के

कारण वे नहीं जा सके थे। रेल यातायात अवरोध समाप्त होने की सम्भावना नहीं दिख रही थी अतः परिस्थितियों को देखते हुये तथा मालिक की बेचैनी के मद्देनजर हमने कार से यात्रा करने का निर्णय लिया। इसके अलावा शाहजहाँपुर जाने का हमें कोई विकल्प समझ में नहीं आ रहा था। पूज्य मालिक, मैं तथा गुण्डे राव, बी. आर. चोपड़ा के साथ जो स्वयं अपनी फियेट कार चला रहे थे, दोपहर भोजन के पश्चात्, दोपहर 1. 00 बजे आजाद अपार्टमेन्ट से रवाना हुये। इस भयंकर गर्मी में फियेट में पाँच व्यक्तियों के साथ यात्रा करना दुश्कर था। अतः सुलोचना वहीं रुक गयीं। गर्मी भयंकर थी तथा बाहर का तापमान लगभग पचास डिग्री के आसपास रहा होगा।

हमारा पहला पड़ाव हापुड़ के थोड़ा आगे एक पेट्रोल विक्रेता के यहाँ पड़ा। मालिक थककर चूर हो चुके थे अतः मालिक के लिये एक चारपायी की व्यवस्था की गयी। मालिक के पैरों की मालिश की गयी एवं मालिक को ठंडक पहुँचाने के लिये उनके माथे पर खीरे के टुकड़े काट कर रखे गये। मालिक प्रसन्न थे तथा निरन्तर खिलखिलाकर हँस रहे थे। मालिक के जलपान के लिये हमारा दूसरा पड़ाव गजरौला में पड़ा। मुरादाबाद पहुँचने में शाम के 5.30 बज चुके थे तथा हमारा आज शाहजहाँपुर पहुँच पाना सम्भव नहीं था। अतः हमने रामपुर में भाई सुरेश चन्द्रा के निवास पर विश्राम करने का निर्णय लिया तथा बिना किसी पूर्व सूचना तथा जानकारी के उनके घर का पता लगा कर शाम 6.30 बजे उनके निवास पर पहुँच गये। घर पर श्रीमती सुरेश के अलावा कोई नहीं था। शीघ्र ही मालिक के आने की खबर फैल गयी तथा सुरेश बाबू, आर. एन. कंचन तथा रामपुर के अन्य अभ्यासी वहाँ एकत्रित हो गये, लेकिन मालिक मेरे तथा गुण्डे राव के अलावा किसी को भी नहीं पहचान पा रहे थे यद्यपि देखने में वे पूर्णतया सामान्य दिखायी पड़ रहे थे तथा चारपायी पर बैठकर हुक्का गुड़गुड़ाते हुये सबकी ओर देखकर मुस्कुरा रहे थे। लेकिन अचानक ही उन्होंने सुरेश चन्द्रा की ओर देखकर उससे पूछा, "आप कौन हैं तथा मेरे पास क्यों खड़े हैं ? प्रकाश को बुलाइये, चिंटू रो

रहा है!'' वगैरह वगैरह अर्थात् उनकी दिग्भ्रमित होने वाली स्थिति यथावत थी। रात्रि 10.00 बजे हम विश्राम करने के लिये अपने कक्ष में चले गये।

10 जून 1980 – मंगलवार

सुबह 7.00 बजे हम रामपुर से सुरेश बाबू के घर से रवाना हुये। शाहजहाँपुर की पचासी मील की यात्रा में हमें चार घंटे का समय लगा। शाहजहाँपुर पहुँचने पर घर में प्रवेश करते ही मालिक पूर्णतया सामान्य हो गये। ऐसा प्रतीत हो रहा था कि वे मानसिक रूप से शाहजहाँपुर में थे तथा उनका शरीर कोपेनहेगन अथवा दिल्ली में कहीं था तथा जैसे ही वे शारीरिक रूप से यहाँ पहुँचे, दोनों का एकाकार हो गया तथा वे चमत्कारिक रूप से एक हो गये।

शाम को मालिक के साथ हम आश्रम गये तथा उन्होंने भ्रमण कर आश्रम का निरीक्षण किया। कोपेनहेगन में अपनी परेशानी वाले क्षणों के दौरान उन्होंने मुझे बताया था कि उन्होंने देखा कि उनके घर की छत गिर गयी है, जबकि यहाँ आकर उन्होंने देखा सब ठीक ठाक है। उन्होंने देखा था कि मालिन की मृत्यु हो गयी है, जबकि यहाँ पर वह जीवित थी तथा अपने प्रिय स्वामी के घर लौटने पर प्रसन्न थी। एक रात्रि को उन्होंने देखा कि उनका कुत्ता टॉमी मर गया है तथा इसके कारण वे रोये भी थे, लेकिन यहाँ वह अपने मालिक के स्वागत में दुम हिला रहा था। मालिक ने आश्चर्य से मेरी ओर देखकर मुझसे कहा, ''पार्थसारथी मैं समझ नहीं पा रहा हूँ कि मेरी दृष्टि को क्या हो गया है। मैंने छत को गिरते हुये देखा था लेकिन यहाँ छत ठीक ठाक है। मुझे समझ नहीं आ रहा है कि आखिर मेरा दृष्टिबोध इतना गलत कैसे हो सकता है। चलो अब आश्रम चलकर देखते है कि वहाँ की क्या स्थिति है, क्या तुम मेरे साथ चलोगे ? भाई हमें उम्मीद करनी चाहिये कि आश्रम की छत हमें ठीकठाक मिले।'' लेकिन आश्रम में भी सारी चीजों को व्यवस्थित देखकर वे अचम्भित रह गये। मैंने कभी भी उनके अपने आपसे बड़बड़ाने के बारे में किसी से नहीं सुना था लेकिन उस शाम वे अपने आपसे बतिया रहे थे, ''आश्चर्य की बात है मेरा दृष्टिबोध इतना गलत कैसे हो सकता है।''

हमारे घर वापस पहुँचने तक शाम ढल चुकी थी। हमेशा की तरह हम उनके बरामदे में बैठे हुये थे। मैं रात भर सो नहीं सका।

11 जून 1980 – बुधवार

चोपड़ा साहब को गर्मी के कारण डायरिया हो गया था जिसके कारण वे परेशान थे। मैं भी थोड़ा परेशानी में था। सुबह 7.30 बजे हम उनकी कार से शाहजहाँपुर से रवाना हुये। बरेली में हम लस्सी पीने के लिये थोड़ी देर रुके। तत्पश्चात् रामपुर में हम ठंडा पीने के लिये रुके तथा पुनः लस्सी पीने के लिये हमने गजरौला में विश्राम किया तथा शाम 7.30 बजे हम आजाद अपार्टमेन्ट में चोपड़ा के निवास पर पहुँच गये। हम थकान से चूर थे तथा हमारा स्वास्थ्य भी गड़बड़ था।

12 जून 1980 – गुरुवार

अस्वस्थता के कारण सारा दिन मैं बिस्तर पर पड़ा रहा। शाम होने तक मेरी हालत और बिगड़ गयी तथा मुझे बुखार भी चढ़ गया था। सुलोचना ने शाम की सिटिंग दी। सिटिंग के पश्चात् मेरी हालत में थोड़ा सुधार हुआ, अतः मैंने एकत्रित अभ्यासियों से सत्संग के पश्चात् एक घंटे तक चर्चा की ।

13 जून 1980 – शुक्रवार

बहुत बीमार था। दोपहर में मुझे कंपकंपी आना प्रारम्भ हो गयी तथा बुखार धीरे धीरे बढ़कर दोपहर 3.00 बजे तक 103 डिग्री तक पहुँच गया। डॉ. पद्मिनी ने मेरा चिकित्सीय परीक्षण करने के पश्चात् कहा कि मेरे विमान से यात्रा करने में कोई अड़चन नहीं है । शाम 4.00 बजे तक बुखार 102 डिग्री तक पहुँच गया । हवाई अड्डा पहुँचने पर मुझे उल्टी–दस्त की भी शिकायत हो गयी। सुलोचना तथा मैं सायंकालीन उड़ान से शाम 6.30 बजे रवाना हुये तथा थोड़ी देर नागपुर में रुकने के पश्चात रात्रि 9.50 बजे मद्रास पहुँचे। यात्रा के दौरान मैं लगभग अचेत सा हो गया था। अपना तथा अपने आसपास का आभास मुझे विमान के नागपुर उतरने पर हुआ तथा उसके पश्चात् मद्रास पहुँचने पर।

अड़तालिस दिन तक यात्रा में रहने के पश्चात् आज हम अपने घर

वापस पहुँचे।

14 जून 1980 – शनिवार

बीमारी तथा अस्वस्थता के बावजूद घर को व्यवस्थित किया ।

21 जून 1980 – शनिवार

एच. एम. सबनीश, उनकी पत्नी उषा सबनीश तथा उनका पुत्र किरण रात्रि 8.00 बजे बैंगलोर से मद्रास पहुँचे। वे यहाँ पर दो दिन रुकेंगे।

22 जून 1980 – रविवार

सबनीश तथा उनका परिवार रात्रि 10.15 बजे की बस से बैंगलोर की ओर रवाना हो गया।

24 जून 1980 – मंगलवार

अप्पा वृन्दांवन एक्सप्रेस से शाम 7.05 बजे बैंगलोर से मद्रास पहुँचे।

26 जून 1980 – गुरुवार

सुलोचना तथा मैंने अपने वैवाहिक जीवन के आज पच्चीस वर्ष पूर्ण किये। मालिक की कृपा से आज हमारे वैवाहिक जीवन की पच्चीसवीं वर्षगाँठ है। सुबह 7.30 बजे हमने पूज्य मालिक को प्रसाद अर्पण किया।

1 जुलाई 1980 – मंगलवार

मेरे पुत्र कृष्णा ने रात्रि 9.30 बजे मेडिसन (विश्कोंसिन) से फोन किया। द्वितीय सत्र में उसका 3.1 जी. पी. ए. बना है । पहले सत्र में उसका जी. पी. ए. 3.2 था। विदेश के विद्यार्थियों के लिये मेडिसन के विश्कोंसिन विश्वविद्यालय द्वारा न्यूनतम जी. पी. ए. 3.5 निर्धारित किया गया है, जबकि सामान्यतः केवल 3.0 जी. पी. ए. की आवश्यकता होती है। कृष्णा द्वारा इस विशेष शर्त को समाप्त करने की अपील की गयी है।

2 जुलाई 1980 – बुधवार

कृष्णा के लिये मैं अत्यन्त चितिंत रहा तथा सारा दिन बेचैनी में व्यतीत हुआ ।

4 जुलाई 1980 – शुक्रवार

सारा दिन बेचैनी बनी रही, मन बोझिल महसूस होता रहा तथा

अन्दर ही अन्दर रुलाई सी फूट रही थी।

7 जुलाई 1980 – सोमवार

अहमदाबाद के अम्बु भाई सोनी तथा एस. शंकर नारायणन शाम को घर पर पधारे, मैंने उन्हें सिंटिग दी। शंकरनारायणन ने मुझे बताया कि उसने ऐसा अनुभव किया जैसे उसकी स्वयं की आकृति उसमें से निकलकर आगे की ओर बढ़ी तथा मुझ में समाहित हो गयी है।

9 जुलाई 1980 – बुधवार

सुबह 5:00 बजे एक स्वप्न के पश्चात् मेरी नींद खुल गयी। स्वप्न स्पष्ट नहीं था, अर्थात् स्वप्न में दिखने वाली आकृतियाँ स्पष्ट नहीं थी। लेकिन स्वप्न का तात्पर्य यह निकलता था कि काफी समय से मैं अपने कार्य को एक संरक्षक की हैसियत से कर रहा हूँ। कोई मुझसे कहता है अथवा मुझे ऐसा महसूस होता है कि मुझे अपनी पुरानी अथवा पहले जैसी कर्मठ कार्यकर्ता की छवि पुनः स्थापित करनी होगी न कि केवल संरक्षक की हैसियत से कार्य करना होगा। स्वप्न समाप्त।

गम्भीरता से विचार करता रहा। शायद।

11 जुलाई 1980 – शुक्रवार

शाम को अप्पा ने हमें सिंटिग दी । मैं दीन दुनिया से पूरी तरह बेखबर था। सिंटिग के पश्चात् अप्पा ने मुझे बताया "मुबारक हो! तुम केन्द्रीय क्षेत्र में प्रकाश के पाँचवें वृत्त पर हो। मुझे यह जानकारी नहीं थी कि तुम मेरे स्तर से भी आगे पहुँच चुके हो।

13 जुलाई 1980 – रविवार

दिन में मेरे अकेलेपन का अहसास मुझे खाने को दौड़ रहा था, मुझे ऐसा महसूस हो रहा था जैसा मेरा अपना कोई नहीं है। शाम 4:30 बजे अकेलेपन का अहसास मुझे कचोटने लगा तथा मैं अपने आवेग पर काबू नहीं रख सका। बरबस ही मेरी आँखों से आँसू निकल पड़े। मेरी स्थिति अत्यंत ही नाजुक थी। मुझे जीवन का कोई औचित्य ही नजर नहीं आ रहा था। वही उठना, खाना, काम करना, सो जाना यही सब सोचकर मेरा जी मिचलाने लगा।

15 जुलाई 1980 – मंगलवार

अपने असहाय, अकेले तथा दुःखी होने का अहसास निरन्तर बना हुआ था। दिन में कई बार इसके कारण मैं रो भी पड़ा ।

दोपहर 12:30 बजे उमेश मुझे भारतीय प्रशासनिक सेवा के अधिकारी तथा राजस्व मंडल के सदस्य श्री एस. नटराजन से मिशन की जमीन हेतु मिशन के लिये प्रस्तावित भूमि के सिलसिले में मिलवाने के लिये ले गये। इस भूमि पर शहरी भूमि अधिग्रहण नियम लागू होता था। श्री नटराजन ने जानकारी दी कि उन्होंने हमारे प्रकरण की अनुशंसा कर दी है तथा हमारी फाइल मंत्री जी के पास है। उन्होंने सुझाव दिया कि हमें अपने पक्ष में शीघ्र फैसला कराने के लिये मंत्री जी से सम्पर्क कर लेना चाहिए।

17 जुलाई 1980– गुरुवार

शाम 5:30 बजे– एस0 शंकर नारायणन को व्यक्तिगत सिंटिग दी। मालिक ने उन्हें पत्र लिखकर निर्देशित किया था कि वे मुझसे सिंटिग प्राप्त करें। उनके बिन्दु तीन तथा चार पर अत्यंत स्थूलता थी, विशेषकर बिन्दु चार पर। अतएव जितना मुझसे सम्भव हो सका मैंने उनकी सफाई की।

सिंटिग के पश्चात् उन्होंने मुझे अपने बायें हाथ की हथेली रखकर बताया "मुझे इस स्थान पर आज बहुत दबाव महसूस हो रहा है।" जिस स्थान पर उन्होंने हथेली रखी थी वह बिन्दु चार का स्थान था। बाद में उन्होंने मुझे बताया कि कुछ दिन पूर्व किसी अन्य प्रशिक्षक की सिटिंग के दौरान उन्होंने एक स्वप्न देखा। उन्होंने देखा कि – एक बड़ा सा काला केंकड़ा जिसका आकार एक बित्ते के बराबर का होगा उनके सिर पर बैठा है तथा उनकी खोपड़ी को उसने जबड़ों में जकड़ रखा है। बहुत प्रयास करने के पश्चात् वह खोपड़ी को चीरने में सफल हो जाता है। उन्होंने देखा कि उनकी खोपड़ी से खून रिस रहा है तथा उन्हें भयंकर पीड़ा हो रही है। स्वप्न समाप्त हो जाता है।

शंकरनारायणन ने मुझे बताया कि वास्तव में उनके सिर में दो दिनों तक दर्द बना रहा।

18 जुलाई 1980 – शुक्रवार

सुबह 3:00 बजे से 5:00 बजे तक नींद टूटने के कारण मैं जग गया था तथा सम्भवतया 5:00 बजे मेरी नींद लग गयी होगी क्योंकि सुबह 5:20 बजे मेरी विचित्र से स्वप्न के बाद नींद टूट गयी थी।

स्वप्न : एस. पार्थसारथी, टी. के. नरसिंहमन तथा मैं एक नदी के अन्दर चहल कदमी कर रहे हैं। वास्तव में यह सड़क है जिसमें कमर के ऊपर तक पानी बह रहा है, जिसके कारण यह नदी जैसा प्रतीत हो रहा है। वे सभी एक हाथ गाड़ी को धकेलने का प्रयास कर रहे हैं जबकि मैं तौलिये में मछलियाँ पकड़ने का प्रयास कर रहा हूँ तथा इसमें सफल भी हो जाता हूँ। यद्यपि मछली उछलती कूदती मेरे हाथों से फिसलकर पुनः नदी में चली जाती है। नदी के दोनों तरफ खुला मैदान है।

अगले दृष्य में अप्पा तथा मैं गाड़ी के साथ पक्की सड़क पर किसी कस्बे में एक मेढ़ के समीप हैं। एक बड़े से तिराहे पर तीन सड़कें मिल रही हैं, जहाँ से वे पुनः तीन पृथक दिशाओं की ओर जा रही हैं। एस. पार्थसारथी तथा टी. के. नरसिंहमन हमारे साथ नहीं हैं। वे कहीं रास्ता भटक गये हैं। अप्पा कहते हैं कि वे बहुत थक चुके हैं।

अगले दृष्य में हम एक लॉज में एक कमरे के अन्दर हैं जिसमें फर्श पर बिस्तर लपेटा हुआ पड़ा है तथा कुछ कपड़े वगैरह दीवार पर बनी हुयी अल्मारी में टंगे हुये हैं। अप्पा गुसलखाने में हैं। मैंने देखा कि मेरी चड्डी से मेरे शरीर के सामने का हिस्सा ढँका हुआ है तथा पिछला हिस्सा पूर्णतया नग्न है। मेरे शरीर का ऊपरी भाग भी पूर्णतया नग्न है। मैं चड्डी उतारता हूँ तथा इसका नाड़ा निकालकर पुनः व्यवस्थित रूप से नाड़ा डालता हूँ और इसे ठीक से पहन लेता हूँ। (मुझे जरा भी संकोच नहीं होता तथा न ही इसमें संकोच जैसी कोई बात ही है) कमरे में ठहरे हुये व्यक्ति कमरे में प्रवेश करते हैं। मैं उनके इस तरह अचानक कमरे में प्रवेश करने पर झेंप सा जाता हूँ, किन्तु यह देखकर अत्यन्त प्रसन्न हो जाता हूँ कि वे अभ्यासी हैं। अप्पा स्नानादि से निवृत्त हो चुके हैं। वहाँ से रवाना होने के लिये हम कमरे से बाहर निकलते हैं। हाथगाड़ी का कहीं अता पता नहीं

है। हम पैदल ही आगे बढ़ जाते हैं। हम देखते हैं कि हमारा एक पुराना मित्र पोलो के चक्कर के लिये घुड़सवारी कर रहा है।

अगले दृष्य में मैं एक टेबल पर अपने पुत्र कृष्णा के साथ बैठा हुआ हूँ तथा चॉकलेट खा रहा हूँ। एस. पार्थसारथी तथा टी.के.नरसिंहमन अन्दर प्रवेश करते हैं तथा कहते हैं कि उन्होंने दोपहर का भोजन कर लिया है। हम वापस जाने से पूर्व भोजन करने की तैयारी में हैं। तभी मैं अपने आपको एक हॉल में पाता हूँ। सोफे पर बाबूजी महाराज विराजमान हैं तथा मैं उनके दायीं तरफ.बैठा हूँ। हम ध्यान प्रारम्भ करने की तैयारी में हैं। स्वप्न समाप्त हो जाता है।

20 जुलाई 1980 – रविवार

मि. आर. शेषाद्रि ने सुबह का सत्संग कराया। सिटिंग चालीस मिनट चली तथा बहुत अच्छी तथा गहरी रही।

बिस्तर पर जाने से पूर्व जब मैंने मालिक से कृष्णा के कुशल क्षेम के लिये प्रार्थना की तब पहली मर्तबा उसका चेहरा मेरे समक्ष उभर कर आया। वह मुस्कुरा रहा था तथा उसने गले में फूलों की माला पहन रखी थी।

21 जुलाई 1980 – सोमवार

मालिक का पत्र प्राप्त हुआ जिसमें उन्होंने 1981 में अपने जन्मदिवस समारोह पर मलेशिया जाने के बारे में अपनी स्वीकारोत्ति भेजी थी। मालिक के पत्र क्रमांक 3440 दिनांक 19 जुलाई में मालिक ने लिखा था :

प्रश्न : उच्च स्तर के व्यक्ति में कमियाँ क्यों विकसित हो जाती हैं।

उत्तर : 1– अभ्यासियों की तरफ से सहयोग न मिलने के कारण;

2– प्रगति के साथ अपने आप में महानता की भावना का विचार आना;

3– प्रगति के साथ साथ समर्पण तथा त्याग की अपेक्षा अपने आपको महत्वपूर्ण समझने का विचार आ जाना।

यदि ये सारी कमियाँ दूर कर दी जायें तो रास्ता साफ हो जाता है। इसके अलावा अन्य कारण भी हो सकते हैं लेकिन ऊपर लिखी बातें मुख्य हैं।

25 जुलाई 1980 – शुक्रवार

तड़के सुबह का स्वप्न : टी. टी. जगन्नाथन तथा टी. टी. रघुनाथन मेरा हाल चाल पूछने के लिये आये हुये हैं। वे टी. के. नरसिंहमन के साथ मेरे निरन्तर गठजोड़ के बारे में मेरे विचार जानना चाह रहे थे। हमने इसके सम्बन्ध में विस्तार से चर्चा की तत्पश्चात् मैंने रघु से स्पष्ट तौर पर पूछा "क्या वाकई आई.टी.पी.टी. में तुम्हें मेरी आवश्यकता है?" वह रोना प्रारम्भ कर देते हैं तथा कहते हैं "मुझे तुम्हारी अत्यन्त आवश्यकता है। तुम मुझसे इस तरह का प्रश्न कैसे कर सकते हो ?" यह कहते वक्त उनका रोना जारी रहता है तथा मैं उन्हें शान्त करने का प्रयास कर रहा हूँ। स्वप्न समाप्त हो जाता है।

वी. रामचन्द्रन को शाम 6:30 बजे व्यक्तिगत सिटिंग दी। सिटिंग के पश्चात् उन्होंने कहा "मुझे कुछ भी अनुभव नहीं हुआ। मुझे ऐसा लगा कि सिटिंग हुयी ही नहीं है। मुझे ऐसा लगा कि आपने मुझे प्राणाहुति दी ही नहीं । मुझे कुछ भी आभास नहीं हुआ।" मैंने उन्हें रविवार सुबह तक अपनी स्थिति पर ध्यान देते रहने के लिये आग्रह किया तथा उसके पश्चात् मुझे इसकी जानकारी देने के लिये कहा।

27 जुलाई 1980 – रविवार

वी. रामचन्द्रन जिन्होंने मुझसे दो दिन पूर्व ही व्यक्तिगत सिटिंग प्राप्त की थी, अत्यंत प्रसन्न थे उन्होंने कहा, "श्रीमान् मुझे उस दिन तो कुछ भी महसूस नहीं हुआ था, लेकिन अगले ही दिन सिटिंग का परिणाम दिखायी पड़ने लगा। आपकी सिटिंग बिल्कुल मालिक के तुल्य थी, अब मैं बगैर किसी कठिनाई के चालीस मिनट तक अपना ध्यान कर सकता हूँ केवल उत्तेजना तथा कामुकता के विचार बने रहते हैं।"

30 जुलाई 1980 – बुधवार

सुबह 4.15 बजे – कृष्णा ने टेलीफोन किया। उसके विश्वविद्यालय ने उसकी अपील यह कारण बताते हुये खारिज कर दी है कि दाखिले के समय उसे 3.5 जी. पी. ए. की आवश्यकता के बारे में जानकारी दी गयी थी तथा उसके द्वारा बिना किसी शर्त के इसे मान्य भी कर लिया गया था।

अतः उनके अनुसार अब इसमें फेरबदल की कोई गुंजाइश नहीं है। अब उसे मेडिसन छोड़ना पड़ेगा। उसने बताया कि वह सॉयरेकस विश्वविद्यालय में प्रवेश के लिये प्रयास कर रहा है। यदि उसे प्रवेश मिल भी जाता है तब भी उसे अपनी एमएस की पढ़ाई के लिये अभी दो सत्र पढ़ाई और करनी पड़ेगी अर्थात् उसे पढ़ाई पूरी करने के लिये तीन की अपेक्षा चार सत्र लगेंगे। केवल मालिक ही इसमें हमारी मदद कर सकते हैं तथा कृष्णा का सही मार्गदर्शन कर सकते हैं।

2 अगस्त 1980 – शनिवार

अप्पा आज सुबह 8.00 बजे नैल्लोर के अपने एक सप्ताह के प्रवास के लिये रवाना हुये। इस दौरान वे श्री हरिकोटा तथा कावेली केन्द्रों का भी भ्रमण करेंगे।

3 अगस्त 1980 – रविवार

सत्संग के पश्चात्, जिसे आर. शेषाद्रि ने कराया था, सुलोचना तथा मैं सुबह 9.50 बजे कार से रवाना हो गये। थोड़ी देरे के लिये चिंगलपुट में रुककर सदाशिवम तथा प्रशिक्षक के. महालिंगम से भेंट की तथा सुबह 11.45 बजे चिंगलपुट से रवाना होकर शाम 4.50 बजे त्रिची पहुँच गये। रास्ते में अचारापक्कम पर हमारी कोदण्ड तथा सुदर्शन से भेंट हो गयी। वे त्रिची से मद्रास की ओर जा रहे थे।

शाम 7.00 बजे मैंने सत्संग कराया जिसमें बत्तीस अभ्यासी उपस्थित थे। के. आर. सुब्रामनियन तथा के. सुब्रामनियन भी सत्संग में उपस्थित थे। रात्रि भोजन की व्यवस्था लेखा परीक्षक (ऑडीटर) जी. सन्थानम के निवास सी–25 थर्ड क्रॉस वेस्ट तिल्लईनगर में की गई थी।

4 अगस्त 1980 – सोमवार

सुलोचना तथा मैं अभ्यासी बहन उमा को उनके निवास से साथ लेकर सुबह 7.30 बजे त्रिची से रवाना होकर सुबह 9.40 बजे मदुरई पहुँच गये। मैं सुबह 10.30 बजे विरुदनगर चला गया। शाम 4.00 बजे, नई एम्बेसडर मार्क–4 कार क्रमांक टीएनआर 3756 जो आई. टी. पी. टी. कंपनी द्वारा एक सप्ताह पूर्व ही मुझे आवंटित की गयी थी, से वापस मदुरई

लौट आया। मैंने अपनी पुरानी कार एमडीआर 5952 विरुदनगर में ही छोड़ दी जिसका उपयोग मैं जनवरी 1969 (लगभग बारह वर्ष) से कर रहा था।

शाम 7.00 बजे– वालमजी मेन्शन में सत्संग कराया जिसमें : जे. आर. दोरेस्वामी अय्यर, न्यायाधीश ए. श्रीनिवासन, मुथ्थुकृष्णन, तथा दो अन्य अभ्यासी उपस्थित थे। जे. आर. डी. ने रात्रि का भोजन हमारे साथ किया तथा रात्रि 9.00 बजे की बस से बैंगलोर की ओर रवाना हो गये।

5 अगस्त 1980– मंगलवार

शाम 7.00 बजे– वालमजी में सत्संग कराया जिसमें लगभग बीस अभ्यासी उपस्थित थे।

6 अगस्त 1980– बुधवार

आज विरुदनगर नहीं गया ।

शाम 7.00 बजे – मदुरई केन्द्र में सत्संग कराया। वहाँ लगभग तीस अभ्यासी उपस्थित थे। सिटिंग बहुत अच्छी रही, प्राणाहुति अत्यन्त गहरी तथा सूक्ष्म थी ।

7 अगस्त 1980 – गुरुवार

सारा दिन विरुदनगर में व्यतीत किया ।

शाम 7.00 बजे – मदुरई के तिरूनगर केन्द्र में सत्संग कराया। पन्द्रह अभ्यासी उपस्थित थे ।

8 अगस्त 1980 – शुक्रवार

सुबह 5.50 बजे – एक स्वप्न के पश्चात् मेरी नींद खुल गयी। स्वप्न : मालिक और मैं विमान से यात्रा कर रहे हैं । मैं इस विमान के पिछले हिस्से से चहल कदमी करता हुआ विमान के सामने वाले भाग में पहुँचता हूँ तथा देखता हूँ कि मालिक एक बड़ी, सोफे जैसी सीट पर एक केबिन की दीवार से सट कर बैठे हुये हैं। इसमें सीट बेल्ट की सुविधा उपलब्ध है। केबिन के सामने की ओर मध्य में एक मदिरालय (बार) है। मैं आश्चर्य में पड़ जाता हूँ कि यह सामान्य बैठक का अहाता है अथवा नियमित सीटें हैं। मुझे जानकारी दी गयी थी कि वे स्थायी सीटें हैं तथा मालिक उनमें से एक सीट पर बैठ सकते हैं। हमारा विमान गति पकड़ता

है, मैं खिड़की से बाहर झाँकता हूँ तो देखता हूँ कि हमारा विमान सड़क पर चल रहा है। अगल–बगल में मकान तथा रेल की पटरी भी दिखायी पड़ रही है। मैं मालिक को वह दृश्य देखने के लिए कहता हूँ। जब वह दृश्य देखने के लिये उठते हैं, मेरी कोहनी उनके सिर के बीचों बीच टकरा जाती है वे मेरी ओर देखकर मुस्कुराते हैं स्वप्न समाप्त हो जाता है।

सुबह 7.00 बजे – एस. सुब्रामनियम तथा केनरा बैंक के कृष्णन को सिटिंग दी। बीच में थस्मास्वामी भी आकर ध्यान में बैठ गये थे।

शाम 7.00 बजे – तालाकुलम में श्री पलानीचामी के निवास पर सत्संग कराया। यहाँ पर प्रत्येक शुक्रवार को नियमित सत्संग होता है तथा सामान्यतः इसमें पन्द्रह अभ्यासी उपस्थित होते हैं। एक प्रशिक्षक यहाँ सत्संग कराने के लिये उपस्थित रहता है।

9 अगस्त 1980 – शनिवार

सारा दिन विरुदनगर में व्यतीत किया ।

शाम 7.00 बजे – तालाकुलम में पलानीचामी के घर के पिछवाड़े स्थित एक अभ्यासी भाई श्री नालायीराम के निवास पर सामूहिक सत्संग कराया। सिटिंग की व्यवस्था खुली छत पर की गयी थी। सत्संग के एक घंटा पूर्व घनघोर बारिश हुयी थी। इसके बावजूद भी लगभग तीस अभ्यासी यहाँ उपस्थित थे। सिटिंग बहुत अच्छी रही।

10 अगस्त 1980 – रविवार

सुबह 7.30 – मदुरई केन्द्र में श्री थस्मास्वामी के निवास पर सामूहिक सत्संग कराया। मैंने आज से एक चर्चा सत्र का शुभारम्भ किया जिसमें मालिक की पुस्तक के एक–दो पृष्ठ पढ़े जायेंगे तथा उन पर चर्चा की जायेगी।

अपनी नयी कार टी. एन. आर. 3756 से सुलोचना तथा उमा के साथ सुबह 9.45 बजे रवाना होकर सुबह 11.45 बजे त्रिची पहुँचा। उमा छः दिन मदुरई में हमारे साथ रुकने के पश्चात् त्रिची लौट कर अपने घर चली गयी तथा सुलोचना और मैं अश्बी होटल में चले गये।

शाम 4.30 बजे मैं लेखा परीक्षक जी. सन्थानम से भेंट करने के

लिये उनके निवास पर पहुँचा।

शाम 7.00 बजे – सामूहिक सत्संग कराया जिसमें लगभग तीस अभ्यासी उपस्थित थे।

11 अगस्त 1980 – सोमवार

काजामलई कॉलोनी में प्रशिक्षक के. आर. सुब्रामनियन के निवास पर नाश्ता करने के उपरान्त सुलोचना तथा मैं सुबह 9.00 बजे त्रिची से रवाना होकर दोपहर 2.45 बजे मद्रास में अपने घर पहुँच गये । रास्ते में, चिंगलपुट में हमने प्रशिक्षक के. महालिंगम तथा एस. सदाशिवम के साथ आधा घंटा व्यतीत किया। वे दोनों यहाँ पर एस.बी.आई. में हैं। सदाशिवम का करूवेप्पीलानकुरीची से यहाँ पर लेखपाल के पद पर तथा महालिंगम का मद्रास से यहाँ प्रबंधक के पद पर स्थानांतरण हुआ है।

14 अगस्त 1980 – गुरुवार

दोपहर 3.30 बजे मैं एस. के. मोहन तथा आर. जी. विश्वनाथन के साथ बॉम्बे जनता एक्सप्रेस से गुलबर्गा की ओर रवाना हुआ ।

15 अगस्त 1980– शुक्रवार

रायचूर में हमारी ट्रेन सही समय पर पहुँची थी, किन्तु दादर अमृतसर एक्सप्रेस तथा नवजीवन एक्सप्रेस की क्रॉसिंग के कारण इसे यहाँ रोक दिया गया जिसके कारण हमारी ट्रेन निर्धारित समय से लगभग डेढ़ घंटा विलम्ब से सुबह 10.00 बजे गुलबर्गा पहुँची। केन्द्र के प्रभारी प्रशिक्षक भाई एस. ए. सरनाड, डॉ. श्याम राव तथा लगभग बीस अन्य अभ्यासियों ने रेलवे स्टेशन पर हमारी अगवानी की तथा हमें साथ लेकर डॉ. श्याम राव के घर पहुँचे जहाँ हमारे ठहरने की व्यवस्था की गयी थी। सुबह 10.30 बजे नाश्ता करने के उपरान्त हमने थोड़ी देर विश्राम किया तथा उसके तुरंत पश्चात् दोपहर का भोजन किया। शाम 5.30 बजे हम बी. एम. हेबल के निवास के लिये रवाना हुये जहाँ हमें शाम की चाय पर आमंत्रित किया गया था।

शाम 7.00 बजे– जेवारगी मार्ग पर स्थित श्री दत्ताराज के निवास पर मेरे द्वारा सामूहिक सत्संग कराया गया। लगभग पैंतीस अभ्यासी

उपस्थित थे। सिटिंग बहुत अच्छी रही तथा पैंतालिस मिनट तक चली। तत्पश्चात् पैंतालिस मिनट तक मैंने अंग्रेजी भाषा में अपना सम्बोधन दिया जिसका भाई सरनाड ने कन्नड़ में अनुवाद किया। तदुपरान्त रात्रि भोजन के लिए हम एल. टी. चौहान के निवास पर पहुँचे तथा रात्रि 10.30 बजे अपने घर पर वापस लौट आये। घर पहुँचने के पश्चात् वहाँ उपस्थित लगभग बीस अभ्यासियों के साथ चर्चा का लम्बा दौर चला जिसके कारण सोने के लिये अपने कक्ष में जाने के लिये मुझे रात्रि के 2.00 बज गये।

16 अगस्त 1980 – शनिवार

श्याम राव के निवास पर सुबह का नाश्ता करने के पश्चात् मैं भाई चौहान के साथ भाई ए.गुरून्था रेड्डी की कार से श्याम राव की माताजी का हालचाल जानने के लिये अस्पताल पहुँचा। वहाँ से हम उन दो आवासों को देखने के लिये पहुँचे जिसकी योजना एवं निर्माण का कार्य हमारे आर्कीटेक्ट भाई एल.टी. चौहान द्वारा किया गया था। हम सुपर मार्केट में स्थित बी.एम.हेबल के कार्यालय में पहुँचे तथा दोपहर 12.30 बजे अपने घर वापस लौट आये।

घर पहुँचने के तुरंत बाद ही श्री हनुमन्थप्पा अपनी वैन लेकर आ गये तथा हमें वहाँ से बारह किलोमीटर दूर बैंगलोर रोड पर केन्द्रीय जेल परिसर में स्थित अपने निवास पर ले गये। वैन में कुल मिलाकर दस–बारह व्यक्ति सवार थे। वैन के अंदर मैं एक कुर्सी पर बैठा हुआ था जो दचकों के साथ इधर उधर हिल डुल रही थी तथा मुझे कुर्सी को एक स्थान पर टिकाये रखने में काफी मशक्कत करनी पड़ रही थी। हनुमन्थप्पा के निवास पर दोपहर के भोजन की अच्छी व्यवस्था की गयी थी जिसमें लगभग पच्चीस अभ्यासियों को आमंत्रित किया गया था। दोपहर 2.30 बजे हम घर वापस लौट आये।

शाम 5.00 बजे श्याम राव ने मुझसे हमारे भाई श्री आर. जी. आर. के बारे में फैलायी जा रही अफवाह के सम्बन्ध में पूछताछ की। मैंने उन्हें एकान्त में ले जाकर विस्तार से सारी जानकारी दी। मैंने उन्हें बताया कि आर. जी. आर. की शराबखोरी तथा अन्य अनैतिक हरकतों ने हमारे पूज्य

मालिक को गहरी ठेस पहुँचायी है। उससे चर्चा के तुरंत पश्चात्, भाई सरनाड के निवेदन पर मैंने उनसे भी व्यक्तिगत रूप से एकान्त में चर्चा की वह भी इसी विषय पर मुझसे जानकारी चाह रहे थे। उन्हें भी मैंने वही सारी जानकारी दी जो मैंने श्याम राव को दी थी। उन्होंने कहा "शराबखोरी हमारे भाई की कमजोरी रही है तथा वह अपने आपको इससे मुक्त नहीं कर पा रहे हैं। क्या तुम्हें उनकी अन्य कमजोरियों के बारे में पक्की खबर है? यह अत्यन्त खेद का विषय है कि उनकी यह सब कारगुजारियाँ चर्चा का विषय बनी हुई हैं।"

शाम 6.00 बजे– श्याम राव के निवास पर लगभग बीस अभ्यासियों को सामूहिक सत्संग कराया। श्याम राव के निवास से हम भाई चन्ना बासप्पा से भेंट करने के लिये उनके निवास की ओर रवाना हुये। उनसे संक्षिप्त भेंट करने के पश्चात् हम रात्रि भोज हेतु भाई सरनाड के निवास की ओर रवाना हो गये। घर वापस लौटने में हमें रात्रि के 10.00 बज गये तथा आज भी हम रात्रि 2.00 बजे ही अपने शयन कक्ष में जा सके।

17 अगस्त 1980 – रविवार

सुबह 8.00 बजे– दत्ताराज के निवास पर सामूहिक सत्संग कराया जिसमें चालीस अभ्यासी उपस्थित थे। सिटिंग पैंतीस मिनट चली। तत्पश्चात् सुबह 9.00 बजे तक मैंने उनके समक्ष अपने विचार व्यक्त किये। तदुपरांत वापस लौट कर श्याम राव के निवास पर नाश्ता किया। बॉम्बे मद्रास मेल पकड़ने के वास्ते सुबह 10.00 बजे स्टेशन की ओर रवाना हो गया। ट्रेन का निर्धारित समय 10.40 बजे था किन्तु इसके विलम्ब होने के कारण यह सुबह 11.20 बजे स्टेशन पर पहुँची। मैं , एस. के. मोहन तथा आर. जी. विश्वनाथन इस ट्रेन से मद्रास की ओर रवाना हुये। हमें भाई एस. सरनाड, डॉ. श्याम राव, बी. एम. हेबल, चन्ना बासप्पा, हनुमन्थप्पा तथा तीस अन्य व्यक्तियों द्वारा बिदाई दी गयी।

23 अगस्त 1980 – शनिवार

डॉ. एस. बी. श्याम राव, श्रीमती नलिनी श्याम राव, उनके भाई डॉ.

कुमार तथा बी. एम. हेबल गुलबर्गा से बॉम्बे मद्रास जनता एक्सप्रेस से दोपहर 1.50 बजे मद्रास पहुँचे। ट्रेन निर्धारित समय से एक घंटा दस मिनट विलम्ब से यहाँ पहुँची। मैंने स्टेशन पर उनकी अगवानी की तथा उन्हें अपने साथ अपने घर 'गायत्री' ले गया। श्री सरनाड का भी इन सभी के साथ आने का कार्यक्रम था, किन्तु अस्वस्थता के कारण उन्हें अपना कार्यक्रम निरस्त करना पड़ा।

शाम 6.30 बजे – सायंकालीन सामूहिक सत्संग अप्पा ने कराया। सिटिंग उत्तम थी। मैं दीन दुनिया से पूरी तरह बेखबर, ध्यान में लीन हो गया था।

बैंगलोर के अभ्यासी एम. मुरूगेसन आज टिन्डीवनम से मद्रास पहुँचे। वह भी हमारे साथ हमारे घर पर ही ठहरेंगे।

24 अगस्त 1980 – रविवार

सुबह 7.30 बजे– डॉ. एस. बी. श्याम राव ने सिटिंग दी जो बहुत अच्छी रही। सत्संग के पश्चात् उन्होंने पन्द्रह मिनट तक सभी को सम्बोधित किया।

शाम 4.30 बजे – गुलबर्गा से आये सभी मेहमानों को उमेश से मिलवाने के लिये बसन्त नगर ले गया।

शाम 6.00 बजे – पैंतालिस मिनट तक पूज्य मालिक के चित्रों की स्लाइड दिखायी गयीं।

25 अगस्त 1980 – सोमवार

बी. एम. हेबल दोपहर 12.55 बजे एक्सप्रेस से बैंगलोर के लिये रवाना हो गये। डॉ. श्याम राव, श्रीमती नलिनी श्याम राव तथा डॉ. कुमार दोपहर 3.35 बजे बॉम्बे–जनता एक्सप्रेस से गुलबर्गा की ओर रवाना हो गये। मैंने सेन्ट्रल स्टेशन से उन्हें बिदा किया।

27 अगस्त 1980 – बुधवार

कृष्णा का मेडिसन से 19 अगस्त का लिखा हुआ पत्र आज प्राप्त हुआ जिसमें उसने लिखा था कि 25 अगस्त के आसपास वह सॉयरेकस चला जायेगा। मेडिसन में उसने इस योग्यता तक पढ़ाई पूरी कर ली है

कि उसे दूसरी यूनिवर्सिटी में स्थानांतरण की सुविधा मिल गयी है तथा इसी कारण वह सॉयरेकस जा रहा है। इसके लिये मैं मालिक का शुक्रगुजार हूँ।

3 सितम्बर 1980 – बुधवार

कोपेनहेगन के अभ्यासी श्री के. आर. श्रीनिवासन (राजा) आज मद्रास पहुँचे। उन्होंने म्यूनिख के उज इहलो की सात केसेट मुझे सौंपी जिसमें मालिक के मई माह में यूरोप यात्रा के दौरान दिये गये सम्बोधनों को रिकार्ड किया गया था। मैंने उसकी हस्तलिपि का कार्य आज प्रारम्भ किया ताकि मेरी अगली पुस्तक जिसमें मालिक की यात्रा का विवरण है, में इसका समावेश किया जा सके। यह अत्यन्त कठिन कार्य था। मैंने इस पुस्तक का शीर्षक '' द गार्डन ऑफ हार्ट्स'' रखा है।

6 सितम्बर 1980 – शनिवार

बी. एम. हेबल रात्रि 8.15 बजे बैंगलोर से मद्रास पहुँचे। वे अगले सोमवार की सुबह तक हमारे साथ ही ठहरेंगे।

सॉयरेकस से 5 सितम्बर रात्रि 10.05 बजे भेजा गया कृष्णा का तार संदेश प्राप्त हुआ जिसमें उसने लिखा था ''मैं सॉयरेकस में सकुशल हूँ, सोमवार को बात करूँगा, सप्रेम, कृष्णा।

12 सितम्बर 1980 – शुक्रवार

फ्रांस, नाइस की अभ्यासी बहन सोलंगे सॉनियर दोपहर 1.25 बजे बॉम्बे जनता एक्सप्रेस से कडप्पा से मद्रास पहुँची। ट्रेन पैंतालिस मिनट विलम्ब से यहाँ पहुँची थी। वी. एस. नारायणन ने स्टेशन पर उनकी अगवानी की तथा उन्हें अपने साथ घर ले आये। वे दोपहर 2.00 बजे तक घर पहुँच चुके थे। वह हमारे साथ तीन दिन तक 'गायत्री' में ही रहेंगी।

मैंने अपनी नई पुस्तक ''द गार्डन ऑफ हार्टस'' का पहला अध्याय आज पूर्ण किया।

13 सितम्बर 1980 – शनिवार

हैदराबाद के एस. बालाजी हमारे साथ रहने के लिये आज मद्रास पहुँचे। एम0 मुरूगेसन तथा बहन सोलंगे पहले से ही हमारे घर पर ठहरी

हुई हैं।

15 सितम्बर 1980 – सोमवार

बहन सोलंगे सॉनियर शाम की आईएसी की उड़ान से दिल्ली की ओर रवाना हो गयीं। बालाजी आज दोपहर 3.30 बजे उनसे पूर्व ही एक्सप्रेस से हैदराबाद के लिये रवाना हो चुके थे।

19 सितम्बर 1980– शुक्रवार

स्वास्थ्य ठीक नहीं था। कमर के मध्य से लेकर नितम्बों तक तेज दर्द था तथा बुखार जैसा भी महसूस हो रहा था। कल का सारा दिन तथा रात उदासी में व्यतीत हुयी। आज भी मैं अत्यन्त उदास था। विशेषकर आई. टी. पी. टी. के महाप्रबंधक बी. रामचन्द्रन, तथा एक अन्य अभ्यासी का व्यवहार मेरी क्षुब्धता का मुख्य कारण था। वह मेरी पीठ पीछे छुरा भोंक रहे हैं। मुझे इस बात का अत्यन्त खेद है कि जिसकी मैंने हर समय सहायता की, जीवन में उसे ऊँचाइयों तक पहुँचाने में उसका साथ दिया, वही आज मेरे विरोधी हैं तथा मुझसे विश्वासघात कर रहे हैं। बिस्तर पर लेटने के पश्चात् मैं थोड़ी देर तक रोता रहा। यह आत्मग्लानि तथा कमजोरी के लक्षण हैं जिनसे मुझे अपने आपको मुक्त करना होगा।

20 सितम्बर 1980 – शनिवार

स्वास्थ्य में कोई सुधार नहीं था तथा मैं अत्यन्त निराश महसूस कर रहा था। सुबह जगने के पश्चात् मेरा दिल भर आया। सफाई करने के पश्चात् थोड़ा ठीक महसूस हुआ। अभी तक "गार्डन ऑफ हार्ट्स" के सात अध्याय टाइप हो चुके थे।

सत्ताइस अभ्यासियों का एक दल जिसमें मदुरई के उन्नीस, राजा पलायम के चार तथा त्रिची के चार श्री थस्मास्वामी के नेतृत्व में आज शाम ग्रांड ट्रंक एक्सप्रेस से दिल्ली की ओर रवाना हो रहे हैं जहाँ से वे शाहजहाँपुर जायेंगे। वे सभी आज सुबह 11.00 बजे 'गायत्री' पहुँचे तथा दो घंटे तक हमारे साथ रहे। मद्रास के टी. एस. राजाराम भी उनके साथ दिल्ली जा रहे हैं।

23 सितम्बर 1980– मंगलवार

आज लेखन का कोई कार्य नहीं किया। ''गार्डन ऑफ हार्ट्स' के अभी तक दस अध्याय पूर्ण हो चुके हैं, लेकिन आज मैंने कलम को हाथ तक नहीं लगाया। मुझे आज मितली सी आ रही थी। मालिक का सामीप्य पाने की उत्कण्ठा महसूस हो रही थी। सारा दिन निराशा बनी रही। अक्सर ही मुझमें इस तरह चिड़चिड़ाहट का दौरा सा पड़ता है जिसका मुख्य कारण अधिकांशतः मेरे पिताजी होते हैं।

''ऑटोबायोग्राफी ऑफ राम चन्द्र'' का द्वितीय संस्करण प्रेस में छपने को दिया जा चुका है तथा अभी तक उसके छः अध्याय छप चुके हैं।

28 सितम्बर 1980 – रविवार

भाई राघवेन्द्र राव कडप्पा के रामचन्द्र रेड्डी के साथ रायचूर से बॉम्बे मेल से आज मद्रास पहुँचे। वे पूज्य मालिक के निर्देशों के पालनार्थ मुझसे चर्चा करने के लिये यहाँ पधारे हैं ।

सुबह 7.00 बजे – राघवेन्द्र राव ने सिटिंग दी। बहुत अच्छी रही

शाम 6.30 बजे – राघवेन्द्र राव द्वारा सायंकालीन सत्संग का विशेष कार्यक्रम रखा गया था जिसके पश्चात् स्लाइड दिखायी गयी। दोनों हमारे साथ ''गायत्री'' में ही ठहरे हुये हैं।

29 सितम्बर 1980 –सोमवार

इन्दिरा सुबह 7.00 बजे ''गायत्री'' पहुँची तथा अप्पा, राघवेन्द्रराव एवं रामचन्द्र रेड्डी को साथ लेकर सुबह 7.15 बजे कार से बैंगलोर के लिये रवाना हो गयी ।

1 अक्टूबर 1980 – बुधवार

यॉन कॉम्बे तथा उनकी पत्नी इवेलिन सुबह 10.00 बजे ''गायत्री'' पधारे। वे कल रात्रि में विमान द्वारा बॉम्बे से मद्रास पहुँचे थे तथा सीधे होटल कान्ची चले गये थे। दोपहर भोजन के पश्चात् हम उन्हें होटल से अपने साथ ''गायत्री'' ले आये। वे हमारे घर पर ही ठहरेंगे।

4 अक्टूबर 1980 – शनिवार

''गार्डन ऑफ हार्ट्स'' के लेखन का कार्य आज पूर्ण हो गया जिसमें कुल बारह अध्याय हैं तथा टाइप किये गये कुल पृष्ठों की संख्या

153 है अर्थात् कुल लगभग 61,200 शब्द । मैंने इस पुस्तक के लेखन का कार्य 3 सितम्बर बुधवार से प्रारम्भ किया था, अर्थात् इस तरह से इसके पूर्ण होने में लगभग बत्तीस दिनों का समय लगा जो संतोषजनक उपलब्धि है, विशेषकर उस स्थिति में जब मालिक की आत्मकथा (द्वतीय संस्करण) की छपाई का कार्य भी साथ साथ चल रहा है तथा इसकी प्रमाणित प्रति को जाँचकर इसमें सुधार करने का कार्य अत्यंत कठिनाईपूर्ण होता है।

5 अक्टूबर 1980 – रविवार

आज मुझे मदुरई जाना था किन्तु मैंने अपना कार्यक्रम निरस्त कर दिया।

सुबह 7.30 बजे – यॉन कॉम्बे ने सत्संग कराया । सिटिंग बहुत अच्छी रही।

तत्पश्चात् मैंने त्रिची जाने का निश्चय किया तथा एस. सन्थानम, एस.के. मोहन, यॉन कॉम्बे तथा इवेलिन को साथ लेकर सुबह 11.15 बजे त्रिची के लिये रवाना हो गया। सदाशिवम से भेंट करने के लिये हम चिंगलपुट में पैंतालिस मिनट के लिये रुके तथा शाम 5.45 बजे त्रिची में होटल आनन्द में पहुँच गये।

6 अक्टूबर 1980 – सोमवार

आज सुबह 6.45 बजे त्रिची से रवाना होकर सुबह 8.45 बजे मदुरई में वालमजी मेन्शन पहुँचा तथा सारा दिन मदुरई में व्यतीत किया। यॉन और इवेलिन भी हमारे साथ वालमजी में ही रुके।

7 अक्टूबर 1980–मंगलवार

दोपहर तक मैं विरुदनगर में रहा।

शाम 7.00 बजे – वालमजी में सामूहिक सत्संग कराया जिसमें पच्चीस अभ्यासी उपस्थित थे।

8 अक्टूबर 1980 – बुधवार

सुबह 8.00 बजे वालमजी से रवाना हुआ तथा यॉन तथा इवेलिन को हवाई अड्डे पर छोड़ा। वे विमान द्वारा मद्रास जा रहे हैं जहाँ से वे आज रात आई ए सी की उड़ान से दिल्ली की ओर रवाना हो जायेंगे।

दोपहर तक विरुदनगर में रहा ।

शाम 5.00 बजे – पी. पलानी अप्पन को व्यक्तिगत सिटिंग दी।

शाम 7.00 बजे – मदुरई केन्द्र में सामूहिक सत्संग कराया।

"गार्डन ऑफ हार्ट्स" की टाइप की हुयी एक प्रति यॉन कॉम्बे के साथ भेज दी है जिसे वह 10 अक्टूबर को शाहजहाँपुर पहुँचने पर मालिक के सुपुर्द कर देंगे।

9 अक्टूबर 1980– गुरुवार

सारा दिन विरुदनगर में व्यतीत किया।

शाम 7.00 बजे – वालमजी में सामूहिक सत्संग कराया।

10 अक्टूबर 1980–शुक्रवार

सारा दिन विरुदनगर में व्यतीत किया।

शाम 7.00 बजे – वालमजी में सामूहिक सत्संग कराया।

11 अक्टूबर 1980–शनिवार

सुबह 6.45 बजे मदुरई से रवाना होकर शाम 4.00 बजे मद्रास पहुँचा। रास्ते में त्रिची में बीस मिनट के लिये तथा चिंगलपुट में डेढ़ घंटा एस.सदाशिवम के यहाँ विश्राम किया ।

मालिक की आत्मकथा मास्टर्स ऑटोबायोग्राफी की प्रमाणित प्रति के समस्त चौदह अध्याय की जाँच का कार्य आज पूर्ण हो गया तथा जी. एस. प्रेस को इसकी छपायी का आदेश दे दिया।

15 अक्टूबर 1980 –बुधवार

"ऑटोबायोग्राफी ऑफ राम चन्द्र" के द्वितीय संस्करण की 600 प्रतियाँ जी. एस. प्रेस से प्राप्त हुयीं जिसकी छपायी पर प्रति कॉपी दस रुपये से कुछ अधिक का खर्च आया है तथा इसका बिक्री मूल्य 15 रुपया प्रति कॉपी रखा गया है। इसमें कुल 252 पृष्ठ हैं तथा छपायी हेतु पूर्णतया केलिको बॉण्ड कागज का उपयोग किया गया है।

16 अक्टूबर 1980 – गुरुवार

एक स्वप्न के पश्चात् घड़ी की घनघनाहट से सुबह 5 बजे मेरी नींद खुली।

स्वप्न – मैं अपने वरिष्ठ अधिकारी मि. टी. टी. नरसिंहमन, उनकी पत्नी पद्मा तथा उनके व्यक्तिगत सहायक टी. के. नारायणमूर्ति के साथ किसी कस्बे में हूँ । हम एक विश्रामगृह में ठहरे हुये हैं तथा हमें दोपहर 3.15 बजे कार्यालय के किसी कार्य हेतु ट्रेन से नागपुर की ओर रवाना होना है। दोपहर लगभग 1.00 बजे मैं रिक्शा पकड़कर किसी से भेंट करने के लिये अथवा किसी अन्य कार्य के लिये वहाँ से रवाना होता हूँ। लम्बा रास्ता तय करने के पश्चात् मुझे समय की कमी के कारण मजबूरीवश वापस लौटना पड़ता है। विश्रामगृह की ओर लौटते वक्त रास्ते में रिक्शावाला एक आवास से गुजरता है, ऐसा प्रतीत हो रहा है कि वह हमें किसी बहुत ऊँची पहाड़ी की ओर ले जा रहा है जिसके दूसरी ओर सीधी ढलान है। रास्ते में मैं एक बच्चे को तथा सुलोचना को साथ लेकर शीघ्रता से रवाना होता हूँ ताकि समयानुसार विश्रामगृह पहुँच सकूँ। मेरी घड़ी में इस समय दोपहर के 3.30 बज चुके हैं। मैं मन ही मन सोचता हूँ कि मि. नरसिंहमन तथा पद्मा वहाँ से रवाना हो चुके होंगे। मैं रिक्शेवाले से नागपुर के लिये अगली ट्रेन के बारे में जानकारी प्राप्त करता हूँ। वह मुझे जानकारी देता है कि शाम 6.30 बजे एक ट्रेन है। हम एक छोटे से विश्रामगृह की छोटी सी चार दीवारी से गुजर रहे हैं जहाँ एक पारसी महिला मुझसे कहती है, "मैं मलेशिया आ रही हूँ।" रिक्शावाले को मुझे तथा सुलोचना दोनों को बैठाकर रिक्शा खींचने में परेशानी हो रही है। मैं रिक्शे से उतर कर चहलकदमी करने लगता हूँ तथा इस पशोपेश में हूँ कि अपने अधिकारी टी. टी. एन. का सामना मैं कैसे कर पाऊँगा। तभी मेरी नींद खुल जाती है। मैं अत्यंत विचलित हो जाता हूँ तथा इस स्वप्न का कार्यालय में कोई परेशानी खड़ी होने के पूर्व संदेश के रूप में आंकलन करने लगता हूँ।

18 अक्टूबर 1980–शनिवार

हम सुबह 7.10 बजे तैंतीस अम्यासी तथा एक बच्चे के साथ मद्रास से तमिलनाडु एक्सप्रेस से दिल्ली की ओर रवाना हुये।

19 अक्टूबर 1980–रविवार

हमारी ट्रेन लगभग दो घंटे विलम्ब से दोपहर 3.30 बजे दिल्ली पहुँची। सी रामकृष्णा तथा वी. रामाभद्रम ने हमारी अगवानी की। तत्पश्चात् यॉन कॉम्बे और इवेलिन मुझसे भेंट करने के लिये पहुँचे। हम रात्रि 9.50 बजे लखनऊ मेल से शाहजहाँपुर की ओर रवाना हो गये।

20 अक्टूबर 1980– सोमवार

सुबह 5.00 बजे हम शाहजहाँपुर पहुँचे। श्री एन. एस. राव ने स्टेशन पर बसों के साथ हमारी अगवानी की। बम्बई के छः तथा बड़ौदा के छः अभ्यासियों का दल भी इसी ट्रेन से यहाँ पहुँचा था। हम सभी बस से आश्रम की ओर रवाना हो गये।

सर्वेश सुबह 10.00 बजे मुझे तथा सुलोचना को मालिक की फिएट कार में अपने घर ले गये। शाम 4.00 बजे तक हम मालिक के साथ रहे, तत्पश्चात् मालिक तथा गुण्डे राव के साथ आश्रम लौट आये। आश्रम में मालिक ने सभी उपस्थित अभ्यासियों को सात मिनट की बहुत कम अवधि की एक सिटिंग दी। सिटिंग के पश्चात् हॉल में वे आधा घंटे तक हमारे साथ ही रहे तथा शाम 5.00 बजे अपने घर की ओर रवाना हो गये।

मालिक ने श्री कांतिभाई वी. पटेल तथा उनकी पत्नी वीरबाला के. पटेल को अपने निवास में आज दोपहर 2.30 बजे दीक्षा प्रदान की।

21 अक्टूबर 1980 – मंगलवार

सुबह 6.30 बजे – मैंने आश्रम में आज सुबह का सत्संग कराया। तत्पश्चात् मैंने काशीराम अग्रवाल तथा जे.आर. के. रायजादा से मुख्यालय में आयी प्रशासनिक गिरावट, पत्रों के अशिष्टतापूर्ण जवाब, आश्रम के कर्मचारियों का अभद्रतापूर्ण व्यवहार तथा दक्षिण विरोधी वातावरण पैदा करना, इत्यादि के बारे में बातचीत की। दोनों इस तरह से प्रदर्शित कर रहे थे जैसे कि उन्हें इसके सम्बन्ध में कोई जानकारी ही नहीं है।

मालिक शाम 4.30 बजे आश्रम पधारे। उन्होंने हम सभी को पन्द्रह मिनट की सिंटिग दी जो बहुत अच्छी रही। सिटिंग के पश्चात् मालिक मेरे तथा सुलोचना के साथ घर की ओर रवाना हो गये। उनके घर पर आज

सर्वेश के पुत्र चिंटू के जन्मदिवस के उपलक्ष्य में एक पार्टी रखी गयी थी। रात्रि का भोजन हमने मालिक के साथ किया तथा रात्रि 9.00 बजे मालिक के घर से हम आश्रम के लिये रवाना हो गये। रवाना होने के पूर्व मैंने मालिक से कल आश्रम में आने के लिये निवेदन किया जिसे उन्होंने सहर्ष स्वीकार कर लिया।

22 अक्टूबर 1980 – बुधवार

सुबह 6.30 बजे– मैंने आश्रम में सुबह का सत्संग कराया। सिटिंग में लगभग सौ अम्यासी उपस्थित थे।

सुबह 9.15 बजे – मालिक, जगन रायजादा, काशीराम अग्रवाल तथा गुण्डेराव के साथ आश्रम पधारे। दोपहर भोजन के पूर्व तक हम गोपनीय चर्चा में व्यस्त रहे। मैंने मालिक को अपने अनुभव के आधार पर तथा साथ ही लगभग सभी अम्यासियों द्वारा की जा रही सामान्य शिकायतें जैसे मुख्यालय की प्रशासनिक गिरावट, पत्रों के उत्तर में अनैतिक शब्दों का प्रयोग, आश्रम के कर्मचारियों का असभ्य व्यवहार, दक्षिण विरोधी वातावरण पैदा करना, इत्यादि के बारे में अवगत कराया। मैंने उन्हें बताया कि एन.एस. राव तथा उनकी पत्नी इस पूर्वाग्रह तथा नफरत के कारण परेशानी उठा चुके हैं एवं वर्तमान में भी उनके साथ लगातार बुरा बर्ताव किया जा रहा है। मैंने मालिक को बताया कि उमाशंकर आर्या तथा दिनकर बाबू इसके लिये मुख्य रूप से दोषी हैं। प्रमाण के तौर पर मैंने एन. एस. राव तथा उनकी पत्नी को पूछताछ के लिये बुलाया। आते ही दोनों ने रोना शुरू कर दिया, लेकिन काशीराम तथा रायजादा के सामने वे कुछ भी कहने में डर रहे थे। उमाशंकर को बुलाकर इसके बारे में पूछताछ की गयी। मालिक यह जानकर अप्रसन्न थे कि उनकी पीठ पीछे इतना सब कुछ हो रहा है तथा उन्हें इसके बारे में जानकारी तक नहीं है। उन्होंने उमाशंकर से कहा, "मैं तुमसे भारतीय सभ्यता के सिद्धान्तों के अनुरूप, अतिथियों से व्यवहार करने की उम्मीद करता हूँ" मैंने देखा कि रायजादा विचलित हो गये थे क्योंकि मैंने मालिक के समक्ष उन्हें एस. सी. किशोर तथा काशीराम से मिलीभगत कर मिशन को हानि पहुँचाने वाली उनकी

कारगुजारियों का पर्दाफाश कर दिया था।

चर्चा समाप्त होने के उपरान्त एकांत में मैंने मालिक को निम्नलिखित सुझाव दिये :–

1) एन. एस. राव को पुनः आश्रम प्रबंधक के पद पर नियुक्त कर दिया जाय।
2) उमाशंकर आर्या को वापस सीतापुर भेज दिया जाय।
3) रायजादा को अध्यक्ष के व्यक्तिगत सहायक (सचिव) के पद से हटा दिया जाय।

मालिक ने उपरोक्त सभी पर अपनी सहमति व्यक्त की लेकिन उन्होंने कहा, "देखो तुम जो कुछ भी कह रहे हो वह सब सही है तथा मैं यह भी जानता हूँ तुमने मुझे जो कुछ भी जानकारी दी है वह सब सत्य है। मैं नहीं समझ पा रहा हूँ कि क्यों मैं जगन (जे. आर. के. रायजादा) को वापस मिशन में लेकर आया ? मैं यह भी जानता हूँ कि उसको पद मुक्त करना मिशन के हित में होगा, लेकिन मुझे इसके लिये थोड़ा वक्त चाहिये। जो कुछ भी होगा तुम्हारी इच्छा के अनुरूप ही होगा किन्तु कुछ समय पश्चात्। तुम सब कुछ मेरे ऊपर छोड़ दो।

मालिक ने मुझे, सुलोचना तथा गुण्डे राव को दोपहर 3.00 बजे अल्प अवधि की एक सिटिंग दी। जगन ने मुझसे शाम 4.00 बजे टेलीफोन पर बात की। वह तथा काशीराम हमारी बैठक के पश्चात् आश्रम से चले गये थे। मेरे द्वारा उनके विरुद्ध लगाये गये आरोपों से वह अत्यंत दुःखी तथा विचलित थे। मैंने उन्हें यह स्पष्ट किया कि उनके विरुद्ध आरोप मेरे द्वारा नहीं लगाये गये हैं, मैं तो मात्र इसे मालिक की जानकारी में लाया हूँ। शिकायत तो सर्व सामान्य द्वारा की गयी थी। जगन मेरे इस स्पष्टीकरण से सहमत थे।

शाम 5.00 बजे – मालिक ने अपने निवास के समक्ष बगीचे में वहाँ उपस्थित सभी अभ्यासियों को पन्द्रह मिनट की एक सिटिंग दी। तत्पश्चात् उन्होंने बीस मिनट के लिये विश्राम किया तथा घर की ओर रवाना हो गये।

मालिक ने अपने आत्मकथा के नये संस्करण की प्रशंसा की जिसकी 600 प्रतियाँ मैं अपने साथ यहाँ लेकर आया था । उनके द्वारा मेरी नयी पुस्तक का शीर्षक "सीक्रेट रिवील्ड" सुझाया गया, लेकिन गुण्डे राव के माध्यम से उन्होंने शाम 7.00 बजे टेलीफोन पर संदेश भिजवाया तथा मुझे निर्देश दिया कि पुस्तक का शीर्षक; "गार्डन ऑफ हार्ट्स" ही ज्यादा युक्तिसंगत है।

23 अक्टूबर 1980 – गुरुवार

हल्का बुखार तथा सर्दी के कारण मैं अस्वस्थ महसूस कर रहा था।

24 अक्टूबर 1980 –शुक्रवार

मालिक गुण्डे राव, जगन रायजादा तथा काशीराम अग्रवाल के साथ कार से फतेहगढ की ओर रवाना हो गये। वे आज सुबह 8.00 बजे रवाना हुये हैं तथा कल शाम लगभग 5.00 बजे तक वापस लौट आयेंगे। मालिक वहाँ अपने व्यक्तिगत कार्य से गये हैं जिसके पश्चात् वे कल वापस लौट आयेंगे ।

25 अक्टूबर 1980– शनिवार

एक बस भरकर अभ्यासियों का दल भी आज फतेहगढ़ की ओर रवाना हुआ। उन्हें कड़े निर्देश दिये गये थे कि वे मालिक को लेशमात्र भी परेशान न करें तथा उनसे किसी भी प्रकार से मिलने का प्रयास न करें और न ही स्थानीय केन्द्र को इसकी सूचना उपलब्ध करायी जाय, इत्यादि–इत्यादि। मद्रास के प्रशिक्षक श्री आर. शेषाद्रि इस बस यात्रा का नेतृत्व कर रहे थे। देर शाम उनके वापस लौटने पर मुझे जानकारी मिली कि उन्होंने किसी भी निर्देश का पालन नहीं किया तथा अनुशासन भंग किया। मिशन के एक वरिष्ठ सदस्य जो कि पूर्व में प्रशिक्षक भी रह चुके हैं तथा जिन्हें मालिक द्वारा केन्द्रीय क्षेत्र तक की पहुँच दी गयी है, उनके द्वारा इस तरह का अप्रत्याशित व्यवहार करना अत्यंत आपत्तिजनक है।

सुलोचना, मोहन तथा मैंने मालिक के निवास पर सर्वेश के साथ दोपहर का भोजन किया। कोयम्बटूर के वी. कन्डास्वामी नाइकर के साथ

होने के कारण हमारा समय अच्छा व्यतीत हुआ। कन्डास्वामी विशेष तौर पर सर्वेश को किसानी के सम्बन्ध में कुछ सुझाव इत्यादि देने के लिये यहाँ आये हुये हैं, तथा मालिक ने भी उनकी सेवाओं को सहर्ष स्वीकार किया।

मालिक तथा उनके साथ गये सभी लोग दोपहर 3.45 बजे फतेहगढ़ से वापस लौट आये। हम आज सुबह 9.00 बजे से मालिक के निवास पर ही थे तथा मालिक के लौटने के उपरान्त शाम 5.15 बजे तक वहीं रहे। तत्पश्चात् हम आश्रम वापस लौट आये। मालिक को कार यात्रा, गर्मी तथा फतेहगढ़ की सड़क की दुर्दशा के कारण अत्यंत थकान हो गयी थी। अच्छी सड़क पर 350 मील की यात्रा की अपेक्षा यह फतेहगढ़ की 48 मील की यात्रा ज्यादा थका देने वाली है।

26 अक्टूबर 1980– रविवार

सुलोचना तथा मैं सुबह 8.30 बजे मालिक के निवास की ओर रवाना हुये। अन्य अभ्यासियों ने हमारा अनुसरण किया तथा सुबह 10.00 बजे तक लगभग पैंतालिस अभ्यासी वहाँ एकत्रित हो चुके थे। मालिक ने हम सभी को सिटिंग दी। सिटिंग बहुत अच्छी रही। तत्पश्चात् मालिक ने इस सिटिंग के दौरान उनके द्वारा अपनायी गयी तकनीक के बारे में सभी को जानकारी दी। उन्होंने कहा, "दो या तीन झटके, झटकों का मतलब धक्कों से नहीं है बल्कि प्राणाहुति के बहाव से है जो आप अपने कंधो से बाहर की ओर लाकर दो या तीन मर्तबा इसे वातावरण में छोड़ते हैं, तो यदि वहाँ पर एक लाख व्यक्ति भी उपस्थित हों तब भी सभी को सिटिंग में शान्ति तथा गहरायी का अनुभव होगा।" दोपहर का भोजन हमने मालिक के साथ किया तथा दोपहर 3.00 बजे आश्रम लौट आये।

शाम 4.00 बजे मालिक आश्रम पधारे तथा मुझे अपने साथ लेकर सीधे ध्यान कक्ष में पहुँचे। अचानक मुझे ज्ञात हुआ कि रायजादा, प्रो. लक्ष्मी शंकर तथा काशीराम द्वारा वहाँ एक बैठक आयोजित की गयी थी जिसमें गुण्डे राव भी उपस्थित थे। बैठक के सम्बन्ध में मुझे कोई सूचना नहीं उपलब्ध करायी गयी थी। लक्ष्मी शंकर ने मुझ पर मालिक के कार्य में हेराफेरी करने का आरोप लगाया। उनका इशारा "टूवर्ड्स इनफिनिटी" के

तीसरे संस्करण की ओर था जिसकी छपाई की तैयारी का कार्य मैंने मद्रास में कराया था। उनका कहना था कि हिन्दी संस्करण की छपाई की तैयारी के दौरान उन्होंने अंग्रेजी लेखन में परिवर्तन पाया जिसके कारण पुस्तक अपने मूल विषय से हटकर आधारहीन हो गयी अथवा इसी तरह का ही कोई आरोप उनके द्वारा मेरे विरुद्ध लगाया गया। मुझे समझ में नहीं आ रहा था कि वे किस संदर्भ में बात कर रहे हैं, क्योंकि मुझे बैठक के सन्दर्भ में कोई जानकारी नहीं थी। आश्रम के बिक्री स्थल से "टुवर्ड्स इनफिनिटी" की एक प्रति मंगाई गयी तब जाकर मुझे समझ में आया कि क्या माजरा है। इस पुस्तक के पहले दो संस्करणों में बिन्दु "अ" तथा "ब"' को दो पृथक–पृथक बिन्दुओं में दर्शाया गया है, लेकिन इस संस्करण में केवल एक ही बिन्दु दर्शाया गया था अर्थात् मस्तिष्क तथा धड़ के चित्र में एक बिन्दु का दर्शाना छूट गया था। मैंने मूल प्रति में "ब" बिन्दु पर सहायक शब्द का उपयोग कर आंशिक परिवर्तन किया था जिसके कारण इसे ऐसा समझा जा रहा था कि यह हृदय स्थल के एक मुख्य बिन्दु का सहायक बिन्दु है। मैंने मालिक को इसका विवरण दिया तथा जानकारी देते हुये बताया कि चित्र में एक बिन्दु नहीं दर्शाया गया था। उन्होंने मेरे कार्य की सराहना करते हुये पूछा कि मुझे इसका पता कैसे चला कि बिन्दु कहाँ होना चाहिये। मैंने उन्हें बताया कि बिन्दु नौ तक मूल प्रति का विवरण एकदम सही था। वर्तमान चित्र में बिन्दु दस की स्थिति को बदलना आवश्यक था तथा इसकी स्थिति को बिन्दु नौ और दस के मध्य दर्शाये जाने की आवश्यकता थी । अतः पूर्व में दर्शित बिन्दु क्रमांक दस को बिन्दु ग्यारह, बिन्दु ग्यारह को बिन्दु बारह और बिन्दु बारह को बिन्दु तेरह के स्थान पर परिवर्तित करना होगा । लगभग एक मिनट तक इस पर मनन करने के उपरान्त मालिक इससे सहमत हो गये।

तब मैंने मालिक को जानकारी दी कि "टूवर्ड्स इनफिनिटी" के पहले दो संस्करण का कई प्रशिक्षकों तथा अन्य कई पाठकों द्वारा सन् 1963 से अध्ययन किया जा रहा है लेकिन किसी का भी इस गलती की

तरफ ध्यान नहीं गया। मैंने मालिक को बताया कि प्रमाणित प्रति की अंतिम जाँच के दौरान इसे छपायी हेतु देने के पूर्व यह गलती मेरी पकड़ में आयी। मुझे मूल प्रति में एक स्थान पर परिवर्तन करने की तथा नं. 9 की ग्रंथि के बाद का क्रम व्यवस्थित करने की आवश्यकता प्रतीत हो रही थी। (तीसरे संस्करण के भाग दो का पेज दस देखें : ''अब हम अगली सहायक ग्रथि पर पहुँचते हैं''। मैंने इसमें केवल सहायक शब्द जोड़ा है।) किसी भी तरह मुझे दृष्टांकित चित्र में कांट छांट करनी थी तथा मुझे समझ नहीं आ रहा था कि छूट गये बिन्दु को किस स्थान पर दर्शाया जाये अतः इस कारण से चित्र की छपायी नहीं की गयी। यह जानकारी पाकर मालिक अत्यन्त प्रसन्न हुये तथा उन्होंने स्नेह पूर्वक मेरी तरफ देखकर अपने दोनों हाथों से मेरे कंधों को थपथपाकर मुझे शाबासी देते हुये कहा ''शाबाश! तुमने बहुत अच्छा काम किया है।'' मैंने आवश्यक फेरबदल कर नया चित्र बनाया तथा इसे मालिक से अनुमोदित करवाया अब इसकी छपायी मेरे घर लौटने के उपरान्त होगी ताकि इसका वितरण प्रतियों के साथ किया जा सके। मालिक ने प्रोफे. लक्ष्मी शंकर को इस पुस्तक के किये जा रहे हिन्दी अनुवाद में इसका समावेश करने के लिये निर्देशित किया।

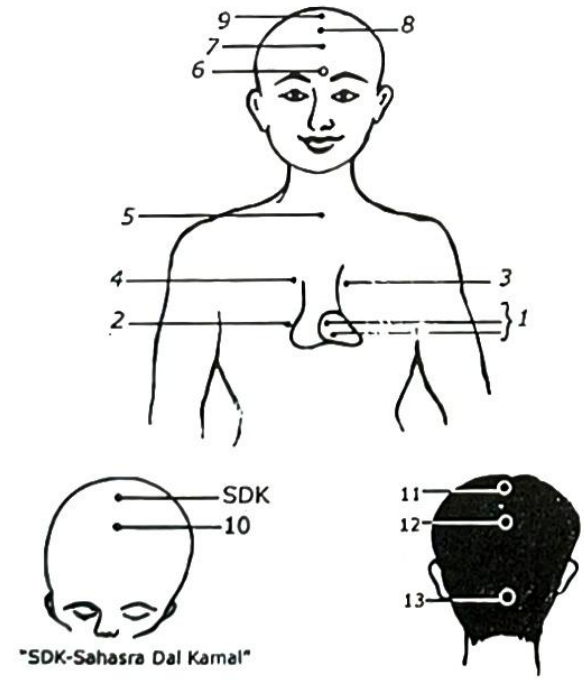

Towards Infinity Diagram

अब मेरी समझ में आ रहा था कि रायजादा, काशीराम तथा लक्ष्मी शंकर मुझे नीचा दिखाने के लिये एकजुट हुये थे। जब उनकी शिकायत खारिज हो गयी, तब वे अपने आपको ठगा सा तथा पराजित महसूस कर रहे होंगे। न केवल मैं सही साबित हुआ बल्कि मालिक ने मुक्त कंठ से मेरी सराहना भी की। यह सब उनकी ही कृपा है।

27 अक्टूबर 1980 – सोमवार

सुबह 6.30 बजे – आश्रम में सामूहिक सत्संग कराया।

सुबह 8.30 बजे, सुलोचना तथा मैं मालिक के निवास पर पहुँचे। दोपहर के भोजनकाल तक मालिक के साथ ही रहे। मालिक के निवास के ठीक पिछवाड़े सर्वेश के साले डॉ. विजय बरतारिया के साथ हमने दोपहर का भोजन किया। दोपहर 2.30 बजे हम वहाँ से आश्रम के लिये रवाना हो गये।

शाम 4.30 बजे मालिक आश्रम पधारे तथा हमें दस मिनट की एक सिटिंग दी जो बहुत अच्छी रही। मालिक के लौट जाने के उपरान्त मैं तथा प्रोफे. लक्ष्मी शंकर टहलने के लिये बाहर निकले। इस दौरान उन्होंने मेरी पुस्तक ''गार्डन ऑफ हार्ट्स'' के संदर्भ में चर्चा छेड़ी जिसकी हस्तलिपि का वह पूर्णरूपेण अध्ययन कर चुके थे। उन्होंने मेरी पुस्तक की मुक्त कंठ से प्रशंसा करते हुये मुझे सुझाव दिया कि किताब के प्रथम संस्करण की 3000 प्रतियाँ छपायी जानी चाहिये। उन्होंने कहा, ''पुस्तक के उत्तरार्द्ध के अंश का लेखन प्रशंसनीय है तथा इसमें बहुत से निर्देश एवं जानकारियाँ विस्तार से दी गयी हैं।''

28 अक्टूबर 1980 – मंगलवार

सुबह 6.30 बजे – आश्रम में सामूहिक सत्संग कराया । सिटिंग बहुत अच्छी रही ।

सुलोचना, आर. जी. विश्वनाथन (अप्पू), काकीनाड़ा के स्वामी तपस्यानन्द तथा मैं सुबह 8.30 बजे मालिक के निवास पर पहुँचे। सुबह 9.00 बजे मैंने मालिक के निर्देशानुसार वहाँ पर उपस्थित अभ्यासियों को सिटिंग दी।

सुबह 9.30बजे मालिक ने मद्रास के आर. जी. विश्वनाथन को दीक्षा प्रदान की। मालिक ने मुझे बधाई देते हुये कहा "तुमने अच्छा प्रकरण (केस) तैयार किया है।"

गुण्डे राव ने मुझे श्री राम चन्द्र मिशन के दिग्गजों के बीच सामर्थ्य के लिये चल रही आपसी खींचतान के बारे में विस्तार पूर्वक बताया तथा कहा कि मेरा नाम, राघवेन्द्र राव तथा कस्तूरी के साथ गद्दी की आकांक्षा रखने वालों में जोड़ा जा रहा है। उन्होंने बताया कि यह शुगूफा एस. सी. के. तथा जे. आर. द्वारा छोड़ा गया है। उन्होंने मुझे उनसे सचेत रहने की हिदायत दी। मैं अत्यन्त विचलित महसूस कर रहा था।

दोपहर 12.30 बजे हम आश्रम वापस लौट आये। मालिक शाम 4. 30 बजे आश्रम पधारे तथा उन्होंने हम सभी को छः मिनट की एक सिटिंग दी। तत्पश्चात् उन्होंने नये बोरवेल का निरीक्षण किया जिस पर आज सुबह ही कार्य प्रारम्भ हुआ था तथा जिसके स्थल का चयन मालिक के आदेश पर मेरे द्वारा किया गया था। इसके पश्चात् मालिक वापस घर लौट गये।

प्रकाश चन्द्र सक्सेना (मालिक के सबसे बड़े पुत्र), एस. सी. किशोर के साथ शाम 6.30 बजे आश्रम पधारे। मैं समझा कि शायद वे मेरे लिये कोई परेशानी खड़ी करने आये हैं, किन्तु प्रकाश का व्यवहार मित्रता पूर्ण था। मात्र सामान्य मुद्दों को लेकर हमारी आधे घंटे चर्चा हुयी जिसके पश्चात् वे वापस लौट गये।

आज तड़के सुबह 5.00 बजे मैंने एक स्वप्न देखा।

स्वप्न : सुलोचना तथा मैं एक पर्वत के एक तरफ हैं। मेरे दाहिनी ओर एक विशाल ज्वालामुखी पर्वत है। मात्र टहलने के उद्देश्य से हम बाहर निकले थे तथा रास्ता भटक गये। रात होने वाली थी तभी अचानक ही कोई वहाँ आता है। मैं उससे वापस जाने के मार्ग के बारे में पूछताछ करता हूँ। मैं यह समझ रहा था कि सुलोचना तथा मैं अभी कुछ ही दूरी तक गये होंगे किन्तु वह व्यक्ति हमें जानकारी देता है, "हम पर्वत में अत्यंत ऊँचाई तक चढ़ चुके हैं। आपको स्तर दर स्तर नीचे उतरना पड़ेगा तथा लम्बा

रास्ता तय करना पड़ेगा।'' हमें चितिंत तथा हताश छोड़कर वह वहाँ से चला जाता है। अब हम दोनो वहॉ अकेले हैं तथा अंधेरा भी हो चुका है। समाप्त।

29 अक्टूबर 1980– बुधवार

तड़के सुबह का स्वप्न : मैं अमेरिका में किसी स्थान पर हूँ तथा एक कस्बे में पंकजा की एक पुत्री के घर 'द लार्चेस' पर पहुँचता हूँ। उसे उसकी माँ पंकजा द्वारा उसके लिये भेजा गया उपहार उसके सुपुर्द करता हूँ। तभी मेरा बेटा कृष्णा घर के अन्दर प्रवेश करता है। मैं बेशक इस परिवार से उसे सहयोग करने के लिये विनती करने के लिये ही यहाँ आया हूँ। लेकिन मेरे विनती करने से पूर्व ही मेरी नींद टूट जाती है।

सुबह 6.30 बजे– मैंने आश्रम में सामूहिक सत्संग कराया।

सुलोचना तथा मैं सुबह 8.30 बजे मालिक के निवास पर पहुँचे जहाँ हमारी भेंट मलेशिया के के. वी. रेड्डी से हुई जो आज सुबह 5.30 बजे ही दिल्ली से यहाँ पहुँचे थे तथा परिसर में ठहरे हुये थे।

सुबह 9.30 बजे– मालिक ने तीन अभ्यासियों को दीक्षा प्रदान की।

मैंने के. वी. रेड्डी, एस. सी. किशोर तथा गुण्डे राव से संस्था के मुद्दों पर दोपहर तक विस्तार से चर्चा की। किशोर निरन्तर पुर्नव्यवस्था का राग अलाप रहे थे, किन्तु इसके लिये उनके पास कोई ठोस सुझाव नहीं था। मैं चाहता था कि मिशन के लेखा परीक्षक होने के नाते उन्हें मात्र अपने कार्य से मतलब होना चाहिये।

सुलोचना तथा मैंने सर्वेश और उसके परिवार के साथ दोपहर का भोजन किया। तत्पश्चात् दोपहर 2.00 बजे हम आश्रम लौट आये।

मालिक शाम 4.00 बजे आश्रम पधारे। हमने प्रकाशन इत्यादि के मुद्दे पर बैठक की। मालिक ने ''टुवर्ड्स इनफिनिटी'' के अंग्रेजी के तीसरे संस्करण में मेरे द्वारा किये गये सुधारों को अंतिम रूप से अनुमोदित किया। चित्र में बिन्दुओं इत्यादि की स्थिति के दर्शाने में सुधार करके, बिन्दु दस का समावेश कर दिया गया। काशीराम अग्रवाल मुझसे तथा मालिक से गोपनीय रूप से बैठक करना चाह रहे थे। उनकी किसी व्यक्ति विशेष

के आचरण में आये परिवर्तन तथा बर्ताव को लेकर शिकायत थी। उनका कहना था वह आजकल अत्यंत विचित्र व्यवहार करने लगी हैं। बाबूजी भी उसके व्यवहार में आये परिवर्तन को लेकर आश्चर्यचकित थे। उनके विरुद्ध जो भी आरोपित किया गया था, बाबूजी उससे सहमत थे। कुछ देर पश्चात् मालिक बोले, "हाँ, अब मेरी समझ में आ गया है। उसके इस व्यवहार परिवर्तन का मुख्य कारण उसका आकर्षक रूप है। इसी कारण से लोगबाग उसके आगे पीछे घूमते रहते हैं। इसके पीछे यही एक मात्र कारण है तथा मेरे मतानुसार यही सत्य है।" काशीराम ऐसा प्रदर्शित करना चाह रहे थे जैसेकि उनका व्यवहार सहयोगात्मक है तथा ऐसा करके वह मेरे द्वारा कुछ दिन पूर्व मालिक के समक्ष उनके विरुद्ध लगाये गये मुख्यालय प्रशासन में गड़बड़ी के आरोप की छवि से मुक्त होने का प्रयास कर रहे थे।

मालिक ने हम सभी को सात मिनट के लिये एक सिटिंग दी तथा घर लौट गये। उनके जाने के तुरंत पश्चात् बहन कस्तूरी शाम 6.30 बजे लखनऊ से यहाँ पहुँची। रात्रि में उन्होंने मालिक के निवास पर ही विश्राम किया।

30 अक्टूबर 1980 – गुरुवार

सुबह 6.30 बजे मैंने आश्रम में सत्संग कराया।

सुबह 8.30 बजे मालिक के निवास पर पहुँचकर कार्यालय की नियमित व्यवस्था की जाँच की तथा किशोर से विस्तार से चर्चा की। उन्होंने मेरा ध्यान आकर्शित करते हुये कहा, "बड़े भाई! तुमने मिशन के महासचिव होने के नाते सराहनीय कार्य किया है लेकिन मिशन के मुख्य कार्यालय में प्रशासन को व्यवस्थित करने का कार्य अभी शेष है।"

सुलोचना तथा कस्तूरी सुबह 11.00 बजे मालिक के निवास से आश्रम के लिये रवाना हो गयीं। मैंने मालिक के साथ दोपहर का भोजन किया तथा दोपहर 2.30 बजे आश्रम के लिये रवाना हो गया। लगभग एक घंटा मैंने कस्तूरी से एकांत में चर्चा की तथा उन्हें उनके क्रियाकलापों एवं बयानबाजी इत्यादि के प्रति सचेत रहने को कहा। उनके बारे में जो कुछ

भी कहा सुना जा रहा था उसकी उन्हें पूर्ण जानकारी थी, लेकिन उनका ऐसा मानना था कि वह कुछ भी गलत नहीं कर रही हैं। मैंने उन्हें अंतिम रूप से चेतावनी देते हुये कहा कि मालिक के भी उनके प्रति यही विचार हैं कि वह गुटबाजी को बढ़ावा दे रही हैं। उन्होंने कहा, "भाई! इसमें लेशमात्र भी संदेह नहीं है कि लोगबाग मेरी ओर आकर्शित होते हैं, लेकिन लोगों को स्वयं यह विचार करना चाहिये कि ऐसा क्यों हो रहा है ? उन्हें मुझसे कुछ प्राप्त होता है, तभी तो वे मेरी ओर खिंचे चले आते हैं, वे लोग बाबूजी महाराज के बारे में मुझसे कुछ सुनना चाहते हैं, वे ध्यान में बैठना चाहते हैं तथा यही आस लेकर लोग मेरे पास आते हैं, इसमें मेरी क्या गलती है ?" अंत तक मैं उन्हें यह समझाने में नाकामयाब रहा कि उन्हें अपना व्यवहार बदलने की आवश्यकता है।

मालिक शाम 4.30 बजे आश्रम पधारे तथा हम सभी को दस मिनट के लिये सिटिंग दी। तत्पश्चात् वे अपने आश्रम निवास के समक्ष बगीचे में लगभग एक घंटे तक बैठे रहे। इसके पश्चात् वे अपने घर की ओर रवाना हो गये।

शाम 8.30 बजे – हमारा पैंतीस लोगों का दल जिसमें एक बच्चा भी सम्मिलित था, आश्रम से बस से रवाना हुआ। हम मालिक से अनुमति लेने के लिये मालिक के घर पर पन्द्रह मिनट क़े लिये रुके एवं वहाँ से के. वी. रेड्डी को अपने साथ लेकर स्टेशन की ओर रवाना हो गये। के. वी. रेड्डी आज रात को दिल्ली की ओर रवाना हो रहे हैं। के. वी. रेड्डी काशी विश्वनाथ एक्सप्रेस से रात 11.15 बजे रवाना हुये। हमने उन्हें स्टेशन पर बिदाई दी।

रात्रि 12.20 बजे हम लखनऊ मेल से शाहजहाँपुर से रवाना हुये।

31 अक्टूबर 1980 – शुक्रवार

शाहजहाँपुर से रात्रि 12.20 बजे लखनऊ मेल से रवाना होकर सुबह 7.30 बजे हम नई दिल्ली पहुँचे। वहाँ पहुँचकर हमने सीलोन बुद्धिस्ट एसोसिएशन के सभागृह में विश्राम किया। सुबह 9.00 से दोपहर 1.00 बजे तक हम बाजार में खरीददारी में व्यस्त रहे।

मैंने सभागृह में प्रशिक्षक आर. कृष्णास्वामी, अभ्यासी भाई सी. रामकृष्णा, वी. रामाभद्रन तथा एन. आर. राव से चर्चा की। सत्यपाल शाम 6.00 बजे मुझसे मिलने के लिये स्टेशन पहुँचे। शाम 7.40 बजे हम ग्रांड ट्रंक एक्सप्रेस से दिल्ली से मद्रास की ओर रवाना हो गये।

1 नवम्बर 1980 – शनिवार

मद्रास के रास्ते में बेतूल स्टेशन पर इंजिन में खराबी आ गयी जिसके कारण ट्रेन एक घंटे से भी अधिक समय तक वहाँ खड़ी रही तथा आमला से सहायक इंजिन आने के उपरान्त ही ट्रेन वहाँ से रवाना हो सकी। हमारी ट्रेन ढाई घंटे विलम्ब से शाम 6.00 बजे नागपुर पहुँची।

2 नवम्बर 1980 – रविवार

जी. टी. एक्सप्रेस साढ़े चार घंटे विलम्ब से रात्रि 1.00 बजे मद्रास पहुँची ।

7 नवम्बर 1980 – शुक्रवार

सुबह 5.30 बजे – टेलीफोन द्वारा संदेश प्राप्त हुआ कि मेरी चाची गौरी भद्रन का विलिंगटन नर्सिग होम में आज सुबह 3.30 बजे देहावसान हो गया है।

मालिक द्वारा हस्ताक्षरित आदेशों के प्रपत्रों का बंडल प्राप्त हुआ। मालिक द्वारा समूचे भारत वर्ष में दो–दो राज्यों को मिलाकर कुल आठ जोन में जोनल सेक्रेटरी को नियुक्त किया था। के. वी. रेड्डी को विदेश में स्थित केन्द्रों का सेक्रेटरी नियुक्त किया गया था। महासचिव के अधिकारों में फेरबदल किया गया था जिसका सार यह निकलता था कि मुझे दरकिनार कर दिया गया था तथा समस्त अधिकार मालिक ने अपने पास सुरक्षित रख लिये थे। अब सभी सीधे उन्हें जानकारी उपलब्ध करायेंगे तथा उसकी एक प्रति महासचिव होने के नाते मुझे सूचनार्थ भेजेंगे। अर्थात् महासचिव को प्रशासन का अमली जामा पहना दिया गया था तथा एक ही झटके में महासचिव के अधिकारों एवं प्रभुत्व को अस्तित्वहीन कर दिया गया था। जोनल सेक्रटरी को उनसे सम्बन्धित जोन के कार्य के लिये समस्त अधिकार उन्हें निरूपित कर दिये गये थे

तथा अब वे सीधे अध्यक्ष के आदेशों के मातहत कार्य करेंगे एवं सीधे उन्हें जानकारी उपलब्ध करायेंगे। अतः महासचिव को अत्यंत योजनाबद्ध रूप से तथा चतुराई से दरकिनार कर दिया गया था। भारत में महासचिव का पद अब केवल नाम मात्र के लिये रह गया था।

विदेश के केन्द्रों के लिये भी उन्होंने अलग से सेक्रेटरी की नियुक्ति कर इसी योजना के अंतर्गत अपना मकसद पूरा कर लिया था, वह भी सीधे अध्यक्ष के अधिकार क्षेत्र में कार्य करेगा तथा सीधे उन्हें ही जानकारी भेजेगा। इस तरह महासचिव का कार्य क्लर्क की भाँति अब मात्र फाइलों के रखरखाव का रह गया था।

ग्यारह दिन के लिये जब मैं शाहजहाँपुर में था तब मुझसे इनमें से किसी भी विषय पर चर्चा नहीं की गयी थी जबकि पन्द्रह सोलह आदेशों के बंडल (वह भी टाइप किये हुये पूरे पेज के आदेश) का मेरे मद्रास लौटने के शीघ्र उपरान्त प्राप्त होने से यह स्पष्ट रूप से जाहिर होता है कि मेरे शाहजहाँपुर में रहते ही इस पर निर्णय लिया जा चुका था तथा समस्त आदेश भी शायद मेरे वहाँ रहते ही टाइप किये जा चुके थे, एवं किशोर, रायजादा तथा काशीराम मात्र मेरे वहाँ से निकलने तक का इंतजार कर रहे थे, ताकि मालिक से उन आदेशों पर हस्ताक्षर करवा कर उन्हें जारी करवा सकें। मुझे संदेह था कि कही के.व्ही.रेड्डी भी तो इस सबमें शामिल नहीं थे? क्या उनका वहाँ आना मात्र एक संयोग था? मेरे द्वारा मालिक से किशोर, जगन तथा काशीराम के विरुद्ध उनकी उपस्थिति में खुली चर्चा एवं शिकायत करने के कारण मुझे अब यह स्पष्ट हो गया था कि मैंने उन्हें अपने विरुद्ध खुले तौर पर मोर्चा खोलने के लिये मजबूर किया।

शाम की सिटिंग में मैंने अपनी मायूसी को दूर किया। मुझे आशा है मालिक को इसकी जानकारी है कि आखिरकार वे क्या कर रहे हैं। नयी नियुक्तियाँ निम्नानुसार हैं ।

जोन –1

आन्ध्र तथा उड़ीसा

डॉ. वी. पार्थसारथी, जोनल सेक्रेटरी

जोन –2

केरल तथा तमिलनाडु

के. महालिंगम, जोनल सेक्रेटरी

जोन – 3

कर्नाटक तथा महाराष्ट्र

एस. ए. सरनाड़, जोनल सेक्रेटरी

जोन – 4

गुजरात, राजस्थान तथा मध्यप्रदेश

देव राम चावड़ा, जोनल सेक्रेटरी

जोन – 5

उत्तर प्रदेश

प्रो. लक्ष्मी शंकर, जोनल सेक्रेटरी

जोन – 6

पंजाब, हरियाणा, दिल्ली तथा जे. एण्ड के.

श्री वाई. के. गुप्ता, जोनल सेक्रेटरी

जोन – 7

बंगाल तथा बिहार – रिक्त

जोन – 8

आसाम तथा उसके समीपवर्ती राज्य

रघुवीर प्रसाद अग्रवाल, जोनल सेक्रेटरी

विदेश के केन्द्रों के लिये :

के. वी. रेड्डी

10 नवम्बर 1980 – सोमवार

तड़के सुबह का स्वप्न : मैं एक विशाल कारखाने में हूँ जहाँ बोईंग विमान के किन्हीं कलपुर्जो इत्यादि का निर्माण होता है। यह स्पष्ट नहीं है कि मैं इस फैक्टरी का मालिक हूँ अथवा इसमें कार्य करता हूँ अथवा मैं मात्र इसका निरीक्षण कर रहा हूँ। कारखाने के अन्दर मैं एक वर्कशॉप

में किसी उत्पाद का निरीक्षण कर रहा हूँ तभी अचानक मेरा पुत्र कृष्णा अन्दर मेरे पास आता है। वह लम्बा, तगड़ा तथा स्वस्थ नजर आ रहा है उसने एक अच्छी सी कमीज पहन रखी हैं। हम एक दूसरे की ओर देखकर मुस्कुराते हैं तथा मैं उससे कहता हूँ "वह कमीज उतार दो" अर्थात् मैं उससे कहता हूँ कि वह अपनी कमीज उतार कर मुझे दे दे। इस बात में वह मुझ पर मात्र खिसियाकर रह जाता है। समाप्त।

11 नवम्बर 1980 – मंगलवार

रायजादा का हस्ताक्षर किया हुआ पत्र प्राप्त हुआ जिसमें उन्होंने स्पष्ट किया था कि जोनल सेक्रेटरी की नियुक्ति से महासचिव की स्थिति पर कोई असर नहीं पड़ेगा। कैसी विचित्र स्थिति है कि बखेड़ा खड़ा करने वाला अपने ही बखेड़े के बारे में स्पष्टीकरण दे रहा है। मैं सोच रहा था कि यदि मालिक इस प्रकार से पद के लालची लोगों से घिरे रहेंगे तथा उनके कहे अनुसार कार्य करेंगे तो यह मिशन कैसे चल पायेगा तथा इसकी तरक्की कैसे हो पायेगी । मैंने सोचा कि मालिक मुझे गच्चा दे रहे हैं। यह विचार मुझे हिन्दी में आया कि मालिक मुझे धोखा दे रहे हैं। यह अत्यन्त ही अनुचित विचार है।

पेट्रिक फ्लेयुरी तथा उनकी इटालियन पत्नी अल्ब्रेटा सुबह 10.30 बजे दिल्ली से विमान से मद्रास पहुँचे। वे एक सप्ताह शाहजहाँपुर में रुकने के पश्चात् यहाँ आये हैं।

13 नवम्बर 1980– गुरुवार

दिल्ली से टेलीफोन पर एक शुभ समाचार प्राप्त हुआ कि रेलवे बोर्ड ने 1981 के बसंत उत्सव पर शाहजहाँपुर की यात्रा के लिये रेल यात्रा की टिकट दरों में रियायत देने का हमारा निवेदन स्वीकार कर लिया है। जिसके अनुसार द्वितीय श्रेणी के टिकट पर 50 प्रतिशत तथा प्रथम श्रेणी के टिकट पर 15 प्रतिशत की रियायत देने की घोषणा की गयी थी।

17 नवम्बर 1980– सोमवार

अप्पा बैंगलोर के पी.रमेश के साथ शाम 4.30 बजे हैदराबाद एक्सप्रेस से हैदराबाद की ओर रवाना हुये। बीस नवम्बर को वे वहाँ

शंकुतला की बेटी के विवाह समारोह में उपस्थित होंगे। 23 नवम्बर को वहाँ से शाहजहाँपुर चले जायेंगे तथा 7 दिसम्बर 1980 के आसपास मद्रास वापस लौटेंगे।

19 नवम्बर 1980 – बुधवार

पेट्रिक फ्लेयूरी तथा अल्ब्रेटा आज सुबह 6.00 बजे की उड़ान से दिल्ली की ओर रवाना हुये जहाँ से उन्हें शाहजहाँपुर जाना है।

सुलोचना तथा मैं सुबह 6.45 बजे कार से मदुरई की ओर रवाना हुये। मदुरान्ताकम तक तेज बारिश हो रही थी तथा त्रिची पहुँचने तक घने बादल छाये रहे। त्रिची में दोपहर का भोजन किया तथा शाम 3.30 बजे हम मदुरई पहुँच गये ।

शाम 7.00 बजे मदुरई केन्द्र में सत्संग कराया जिसमें उपस्थिति बहुत कम रही। मात्र तीस के लगभग अभ्यासी सत्संग में उपस्थित थे जबकि आज यहाँ मुहर्रम के कारण अवकाश घोषित किया गया था ।

20 नवम्बर 1980 – गुरुवार

दोपहर तक विरुदनगर में रहा ।

मैं आजकल मिशन के विषय को लेकर अत्याधिक चितिंत रहता हूँ तथा रात को सो नहीं पा रहा हूँ। मेरे बहुत अधिक सोच विचार करने पर भी मैं निष्कर्श पर नहीं पहुँच पाया तथा मेरे मन में एक विचार आया कि आखिर मालिक मुझसे क्या चाहते हैं? मैं सोच रहा था कि मेरे लिये सबसे महत्वपूर्ण यह है कि मेरी अधिक से अधिक आध्यात्मिक उन्नति हो। अतः मैंने अपनी आध्यात्मिक उन्नति के लिये अपने स्वयं को समर्पित करने का निर्णय लिया तथा प्रतिरोध स्वरूप मैंने सुबह का ध्यान करना प्रारम्भ कर दिया जिसका मैंने बहुत लम्बे समय से त्याग कर रखा था, तब से जब मालिक ने सन् 1972 के प्रारम्भ में मिचिगन, अमेरिका के ईस्ट लान्सिग में मुझसे कहा था कि मुझे अब ध्यान करने की आवश्यकता नहीं है। लेकिन अब मैं अपना ध्यान प्रत्येक सुबह नियमित रूप से कर रहा हूँ।

मैंने संस्था के मुद्दे तथा संस्था में पदों की लड़ाई को दरकिनार कर दिया। मैंने सोचा कि मेरे लिये मिशन के इन व्यवहारिक मुददों की

अपेक्षाकृत मेरी आध्यात्मिक उन्नति अधिक महत्वपूर्ण है। जहाँ तक मालिक का प्रश्न है, मेरे विचार से वे भी यही चाहते हैं। यदि सम्भव हो सका तो संस्था के प्रति अपनी जिम्मेदारियों तथा कार्यो से मुझे अपना ध्यान हटाना होगा, लेकिन फिर भी मुझे निरन्तर यह विचार परेशान कर रहा था कि मालिक मुझे धोखा दे रहे हैं तथा मुझे सबक सिखाना चाहते हैं। इस कारण से मैं अपने आपको बेइज्जत महसूस कर रहा था।

21 नवम्बर 1980 – शुक्रवार

दोपहर तक विरुदनगर में रहा। आई. टी. पी. टी. में मुझे रुकने में बड़ी बेचैनी हो रही थी, कोई भी अधिकारी मेरे अभिवादन के लिये नहीं आया। महाप्रबंधक बी. रामचन्द्रन का व्यवहार भी मेरे प्रति अत्यन्त असहज था । प्रतिदिन रोज सुबह मिलने पर वे आजकल मेरा अभिवादन करना भी उचित नहीं समझते तथा जब तक उन्हें बुलाया न जाये वे मेरे पास आना तक नहीं चाहते। जब भी मैं कहीं भ्रमण पर जाता हूँ तो वे मुझे विदा तक करने के लिये नहीं आते। उनकी देखा देखी अन्य अधिकारी भी उनका अनुसरण करते हैं । अत्यन्त सोची समझी नीति के तहत मेरा तिरस्कार किया जा रहा है। केवल जकारिया अत्यन्त सावधानी पूर्वक अपने सम्बन्धों का सही तौर से निर्वाह कर रहे हैं।

आज तालाकुलम में पलानीचामी के निवास पर शाम 7.00 बजे के सत्संग में मैं उपस्थित नहीं हुआ जबकि मैं वहाँ आसानी से जा सकता था, किन्तु मैंने जानबूझकर अपने आपको इससे विलग रखा। ऐसा शायद पहली मर्तबा हुआ है कि मैं स्वेच्छापूर्वक सत्संग मैं उपस्थित नहीं हुआ हूँ। मुझे इस बात पर अत्यन्त आश्चर्य तथा ग्लानि हो रही थी कि मेरी शाहजहाँपुर में उपस्थिति के दौरान ही सारे निर्णय लिये जा चुके थे तथा मुझे इसकी भनक तक नहीं लगने दी गयी। मेरे मन में रह रहकर यही विचार आ रहा था कि कहीं न कहीं मालिक ने मुझे धोखा दिया है तथा मुझसे कपटपूर्ण व्यवहार किया है।

22 नवम्बर 1980 – शनिवार

सारा दिन मदुरई में व्यतीत किया । सारा दिन मेरा मन उचाट

रहा। मुझे ऐसा महसूस हो रहा था जैसेकि मैं सभी के द्वारा तिरस्कृत कर दिया गया हूँ। मैं सोच रहा था कि ईसाई रहस्यवाद के अनुसार क्या यह आत्मा की काली रात है ?

शाम 6.45 बजे – डब्ल्यू.एच.श्रीनिवासन, पी.पलानी अप्पन, हालाश्याम तथा दो अन्य अभ्यासियों ने मुझसे सिटिंग प्राप्त की ।

23 नवम्बर 1980 – रविवार

स्वप्न : यूगोस्लाविया की जोरा ट्यूनर को स्वप्न में देखा। स्वप्न में ऐसा कुछ भी नहीं था जिससे मुझे उसकी कुशलता के लिये चितिंत होना पड़े। लेकिन जगने के पश्चात् मेरे अन्तरमन में उसके कुशल क्षेम के प्रति चिंता बनी हुयी थी। मैंने उसे प्राणाहुति दी तथा उसे पत्र भी लिखा।

सुबह 7.30 बजे– मदुरई केन्द्र में सामूहिक सत्संग कराया जिसमें लगभग सत्तर अभ्यासी उपस्थित थे। सिटिंग अच्छी रही ।

शाम 6.30 बजे– टी. के. नरसिंहमन को वालमजी में व्यक्तिगत सिटिंग दी।

24 नवम्बर 1980 – सोमवार

दोपहर तक विरुदनगर में रहा ।

शाम 7.00 बजे– वालमजी में सत्संग कराया। तीस अभ्यासी उपस्थित थे, सिटिंग अच्छी रही ।

25 नवम्बर 1980 – गुरुवार

दोपहर तक विरुदनगर में रहा। दोपहर 2.00 बजे मदुरई लौट आया। दोपहर का भोजन करने के पश्चात् सुलोचना तथा मैं दोपहर 3.15 बजे कार से त्रिची की ओर रवाना हुये एवं शाम 5.10 बजे त्रिची पहुँच गये। होटल आनन्द में रुके।

शाम 7.00 बजे– त्रिची केन्द्र में सत्संग कराया। उपस्थिति उत्साह वर्धक थी तथा लगभग पचास अभ्यासी उपस्थित थे ।

मेरा भतीजा चि. सुदर्शन यहाँ पर रीजनल इंजीनियरिंग कॉलेज में शिक्षा प्राप्त कर रहा है, लेकिन मैं उससे मिल नहीं सका।

26 नवम्बर 1980 – बुधवार

नाश्ते के पश्चात् सुलोचना तथा मैं कार से सुबह 7.20 बजे त्रिची से रवाना हुये। रास्ते में चिंगलपुट में एस. बी. आई. के के. महालिंगम तथा एस. सदाशिवम के साथ पैंतालिस मिनट व्यतीत करने के पश्चात् हम दोपहर 2.30 बजे घर पहुँच गये ।

2 दिसम्बर 1980 – मंगलवार

मैं सुबह 10.40 बजे एयरबस द्वारा उड़ान संख्या आईसी 172 से बॉम्बे की ओर रवाना हुआ तथा दोपहर 12.30 बजे बॉम्बे पहुँच गया। एस. शंकर तथा चित्तूर के अभ्यासी के. राधाकृष्ण ने शान्ताक्रूज हवाई अड्डे पर मेरी अगवानी की। तत्पश्चात् हम इरला ब्रिज स्थित डॉ. ए. बी. जाजोदिया के निवास पर पहुँचे तथा सारा दिन वहीं व्यतीत किया। सर्वप्रथम देवराम चावड़ा तथा उसके पश्चात रमनलाल भट्टर भी डॉ. जाजोदिया के निवास पर पधारे।

मैं रात्रि 8.30 बजे डॉ. जाजोदिया के निवास से टैक्सी द्वारा बॉम्बे सेंट्रल की ओर रवाना हुआ तथा रात्रि 9.55 बजे बीरामगम पैसेंजर ट्रेन से भरूच की ओर प्रस्थान किया। वहाँ से मुझे अंकलेश्वर जाना है। मैं हमेशा की तरह इस बार भी कार्यालय तथा मिशन दोनों ही के कार्य हेतु संयुक्त रूप से भ्रमण पर था।

3 दिसम्बर 1980 – बुधवार

सारा दिन अंकलेश्वर में रहा। भरूच में नर्मदा गेस्ट हाउस में रात्रि विश्राम किया।

4 दिसम्बर 1980 – गुरुवार

सारा दिन अंकलेश्वर में व्यतीत किया। दोपहर का भोजन प्रशिक्षक आर.वर्धन के निवास पर किया। दोपहर 3.30 बजे बड़ौदा की ओर रवाना हुआ तथा वहाँ पहुँचकर होटल एक्सप्रेस में ठहर गया। तत्पश्चात् बड़ौदा के प्रभारी प्रशिक्षक श्री मधुभाई टी. अमीन से भेंट करने के लिये उनके निवास पर पहुँचा लेकिन वे घर पर उपलब्ध नहीं थे । सूचना प्राप्त होने पर रात्रि 8.30 बजे वे मुझसे मिलने होटल आये तथा 11.30 बजे तक वहीं रहे। शाहजहाँपुर आश्रम कॉम्पलेक्स के मास्टर प्लान के सम्बन्ध में

हमने विस्तार से चर्चा की।

5 दिसम्बर 1980 – शुक्रवार

बड़ौदा से सुबह 8.05 बजे आईएसी की उड़ान से बॉम्बे की ओर रवाना हो गया। हवाई अड्डे पर मधुभाई अमीन ने मुझे विदाई दी। सुबह 9.30 बजे बॉम्बे पहुँचकर मैं हवाई अड्डे के समीप स्थित होटल सेन्टूर में ठहर गया। सारा दिन कंपनी के कार्य में व्यस्त रहा तथा रात्रि 8.00 बजे वापस होटल लौट आया। रमनभाई देसाई रात्रि 9.00 बजे मुझसे भेंट करने के लिये होटल पहुँचे तथा रात्रि 1.00 बजे तक मेरे साथ रहे। चित्तूर के अभ्यासी के. राधाकृष्ण रात्रि में होटल में मेरे साथ ही रुके।

6 दिसम्बर 1980 – शनिवार

सुबह 8.00 बजे होटल से रवाना होकर श्री रमनभाई के साथ मैं एन.आई.टी.आई.ई. में अपनी भतीजी से मिलने पहुँचा। तत्पश्चात् सुबह 11. 00 बजे हवाई अड्डे के समीप स्थित रमनभाई के निवास पर पहुँचा तथा सारा दिन वहीं व्यतीत किया।

शाम 6.00 बजे – रमनभाई देसाई के निवास पर सामूहिक सत्संग कराया। लगभग पैंतीस अभ्यासी उपस्थित थे। सिटिंग अच्छी रही।

रात्रि 8.40 बजे आईसी 171 एयरबस द्वारा बॉम्बे से रवाना होकर रात्रि 10.30 बजे मद्रास पहुँच गया।

9 दिसम्बर 1980 – मंगलवार

अप्पा दोपहर 3.10 बजे तमिलनाडु एक्सप्रेस से दिल्ली से मद्रास पहुँचे। ट्रेन दो घंटे विलम्ब से यहाँ पहुँची थी। सलेम का एक अभ्यासी मि. शिवन जो आई.आई.टी. बॉम्बे में एम. टेक. का छात्र है, भी दिल्ली से उनके साथ आया था।

इस बार अप्पा को शाहजहाँपुर रुकने का कटु अनुभव हुआ। शाहजहाँपुर पहुँचने पर मालिक ने उनसे कहा था कि वे जब तक चाहे यहाँ रुक सकते हैं। लेकिन अचानक ही एक दिन उनसे आग्रह पूर्वक जगह खाली करने के लिये कहा गया, ताकि "अन्य अभ्यासियों के ठहरने की व्यवस्था की जा सके।" जबकि अप्पा अपना दिल्ली वापसी का आरक्षण भी

नहीं करा पाये थे तथा वहाँ पर मात्र तीन दिवस रुकने के पश्चात् उन्हें अत्यन्त अशिष्टता पूर्वक वहाँ से जाने के लिये कह दिया गया था। मुझे इस बात का अत्यन्त दुःख था कि मेरे पिताजी के साथ इस तरह का दुर्व्यवहार कर उन्हें वहाँ से चलता कर दिया गया । इससे परिवार के प्रति मेरी आसक्ति परिलक्षित होती है जो अनापेक्षित है।

पूज्य मालिक के मार्च 1981 में दक्षिण अफ्रीका के दौरे के कार्यक्रम की एक प्रति डाक से प्राप्त हुयी। खूसलभाई ने अपनी पकड़ बना ली है तथा मालिक पर उन का प्रभाव बढ़ता जा रहा है।

12 दिसम्बर 1980 – शुक्रवार

मेरे भाई सीना के पुत्र चि.श्रीवात्सा के स्वास्थ्य को लेकर कोई परेशानी खड़ी हो गयी थी जिसके कारण उन्हें चिकित्सीय परामर्श हेतु परिवार समेत न्यूजीलैंड, ऑकलैन्ड जाना पड़ गया था। सीना ने ऑकलैंड से टेलीफोन पर मुझे जानकारी दी कि डॉक्टरों ने ओपन हार्ट सर्जरी के लिये मना कर दिया है। उनके मतानुसार वे आपरेशन द्वारा फेफड़ों के माध्यम से इसे बॉयपास कर देंगे। ऑपरेशन दिनांक 15 दिसम्बर 1980 को दोपहर 1.30 बजे होगा।

15 दिसम्बर 1980 – सोमवार

सीना ने आंकलैंड से टेलीफोन पर अत्यन्त ही दुःखद तथा आघात पहुँचाने वाला समाचार दिया कि चि0 श्रीवात्सा का आपरेशन के तुरंत पश्चात् देहावसान हो गया है। यह सूचना आज दोपहर 2.30 बजे टेलिफोन से प्राप्त हुयी। मालिक से प्रार्थना है कि मेरे चिर युवा, प्रिय भतीजे, जिसकी उम्र अभी मात्र साढ़े अठारह वर्ष की थी, की दिवंगत आत्मा को गति प्रदान करें। ध्यान के प्रति वह अत्यन्त रुचि रखता था, बल्कि छः–सात वर्ष की आयु में ही वह मुझे कानों में बुदबुदाते हुये ध्यान के बारे में कहता तथा अपनी आँखें बंद करके दस पन्द्रह मिनट के लिये बैठ जाता था। पन्द्रह दिन पूर्व जब सीना से मुझे उसके ऑपरेशन के बारे में पता चला था, मैंने प्रार्थना करना प्रारम्भ कर दिया था। लेकिन जब भी मैं ध्यान में बैठता था मुझे उस अभागे लड़के का शव दिखायी देता था। यह संकेत

इतना शक्तिशाली था कि मैं जब जब प्रार्थना के लिये बैठता था मुझे बारम्बार यही अनुभव होता था, इसी कारण मैं सीना को तार द्वारा सूचित करना चाहता था कि ऑपरेशन न कराये, लेकिन मैं उसे सूचित नहीं कर सका। इस प्रकार एक तरुण जीवन का जिसने अपने छोटे से सांसारिक जीवन में अनेकों दुःखों का सामना किया था, आज अंततः अंत हो गया। मालिक उस पर कृपा करें।

18 दिसम्बर 1980 – गुरुवार

"गार्डन ऑफ हार्ट्स" की छपायी का कार्य आज पूर्ण हो गया तथा जिल्द चढ़ाई का कार्य प्रारम्भ हो चुका है । सीना ने हमें दोपहर 3.00 बजे सिंगापुर से टेलीफोन पर बताया कि वह आज रात को सिंगापुर एयरलाइन के विमान से रात्रि 11.15 बजे मद्रास पहुँचेंगे। लेकिन रात्रि 9.30 बजे उन्होंने पुनः फोन पर सूचित किया कि उन्हें सीटे उपलब्ध न होने के कारण वे आज नहीं आ सकेंगे।

20 दिसम्बर 1980 – शनिवार

सीना, कोमला तथा बालक श्रीराम एयर इंडिया के विमान से रात्रि 10.15 बजे सिंगापुर से मद्रास पहुँचे। सीना,श्रीवात्सा के निधन से अत्यन्त दुःखित थे। लेकिन पुरुष होने के नाते वह अपने दुःख को प्रदर्शित नहीं होने दे रहे थे।

आज सुबह 6.00 बजे इंदिरा, सुदर्शन तथा नारायण बस द्वारा बैंगलोर से मद्रास पहुँचे।

21 दिसम्बर 1980 – रविवार

सुबह 7.30 बजे – मैंने प्रातःकालीन सामूहिक सत्संग कराया।

मेरी पुस्तक "गार्डन ऑफ हार्ट्स" की प्रथम 101 प्रतियाँ जी.एस. प्रेस से आज प्राप्त हुयीं। पुस्तक बहुत अच्छी छपी है तथा मुख पृष्ठ पर मालिक का चित्र भी अत्यन्त आकर्षक है।

In North America
Shri Ram Chandra Mission
Route 1, Box 122-5
Highway 109
Molena, GA 30258, U.S.A.

In Europe
Shri Ram Chandra Mission
Chateau D' Augerans
39380 Augerans
FRANCE

In Asia
Shri Ram Chandra Mission
"Gayathri"
19, North Street, Shri Ram Nagar
Chennai-600 018, INDIA

www.srcm.org